THE CRAPLER

The Central Reserve Police News Letter & Magazine

1988

THE CRAPLER

The Central Reserve Police News Letter & Magazine

1988

Contents

29 February 1988 Vol 2: Number 1

31 March 1988 Vol 2: Number 2

30 April 1988 Vol 2: Number 1

31 May 1988 Vol 2: Number 3

30 June 1988 Vol 2: Number 4

31 July 1988 Vol 2: Number 2

31 August 1988 Vol 2: Number 5

30 September 1988 Vol 2: Number 6

31 October 1988 Vol 2: Number 3

30 November 1988 Vol 2: Number 7

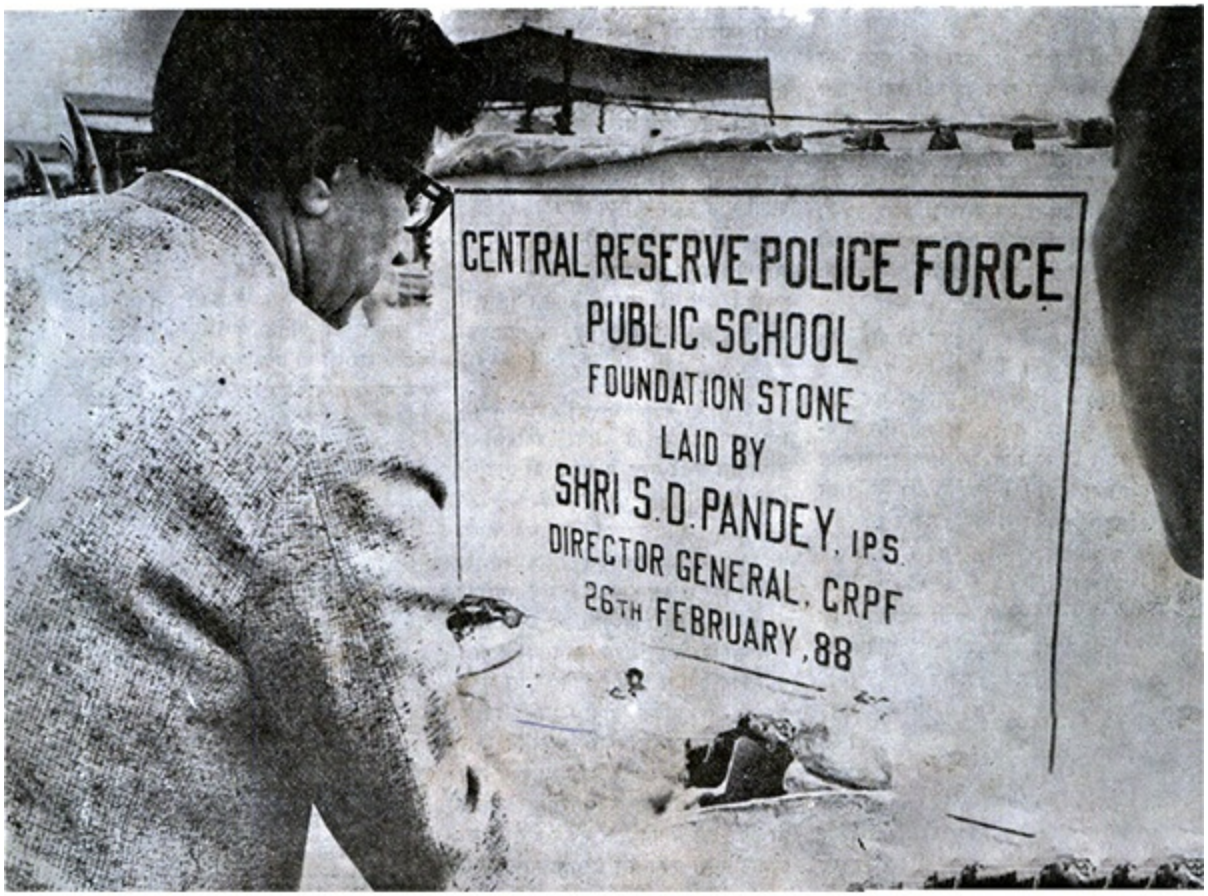
31 December 1988 Vol 2: Number 8

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की मासिक पत्रिका

सीआरपीएफ समाचार

खंड II अंक I

मूल्य—1.60 रुपए 29 फरवरी, 1988 10 फाल्गुन, शक संवत् 1909



केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल पब्लिक स्कूल का शिलान्यास करते बल के महानिदेशक श्री सतीश दत्त पांडेय

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल पब्लिक स्कूल का शिलान्यास

डी० एन० तिवारी
आवरण छाया :

26 फरवरी, 1988 को दिल्ली के रोहिणी क्षेत्र में महानिदेशक श्री सतीश दत्त पांडेय ने के० रि० पू० बल पब्लिक स्कूल की आधारशिला रखी।

इस अवसर पर बोलते हुए महानिदेशक ने कहा कि यह स्कूल राजधानी के नागरिकों के लिए एक वरदान होगा और केन्द्रीय रिजर्व पुलिस के कार्मिकों के लिए, जिनके कि निरन्तर तबादले होते रहते हैं, यह एक स्वप्न के साकार हो जाने जैसा ही है।

श्री पाण्डेय ने कहा कि स्कूल की स्थापना का पूरा श्रेय वह नहीं लेना चाहेंगे क्योंकि इस परियोजना में उनके पूर्व अधिकारियों के प्रयास भी शामिल हैं, तथा इस परियोजना के लिए विभिन्न स्तरों पर कई विचार विमर्श एवं परिक्षण किए गए हैं, लेकिन इस संस्था के प्रति अपने प्रेम की भावना प्रकट करने में उन्होंने संकोच नहीं किया।

बल के अपर महानिदेशक श्री पी० जी० हलनकर ने कहा कि के० रि० पु० बल के इतिहास में स्कूल की स्थापना एक स्वर्ण दिवस है, यह बल के जवानों और अधिकारियों के कल्याण के लिए उठाया गया एक बड़ा कदम है। उन्होंने कहा कि पिछले दो सालों में श्री पांडेय लगातार इस स्कूल की स्थापना के लिए बल को प्रेरणा व निर्देश देते रहे हैं।

श्री हलनकर ने आशा व्यक्त की कि बल के कार्मिक इस अद्वितीय सुविधा का उचित उपयोग करेंगे।

महानिरीक्षक (मुख्या०) श्री बी० जे० एस० स्याल ने बल की ओर से महानिदेशक व उनकी धर्म पत्नी श्रीमती कमला पाण्डेय को धन्यवाद दिया।

अर्द्ध सैनिक बलों में अपनी तरह की अकेली 2 करोड़ रुपये की यह योजना पूरी तरह के० रि० पु० बल इम्पलोईस एजुकेशनल सोसाइटी द्वारा संचालित होगी। यह स्कूल सैंट्रल बोर्ड आफ सैकेंडरी एजुकेशन द्वारा स्वीकृत एवं मान्यता प्राप्त है।

स्कूल के लिए सैक्टर-14 रोहिणी में लगभग साढ़े छः एकड़ भूमि अधिग्रहित की गई है। इसका श्रेय आर० के० दुआ, संयुक्त सहायक निदेशक (कल्याण) को जाता है जिन्होंने डी० डी० ए० से सम्पर्क बनाकर इतनी भूमि स्कूल के लिए ली।

स्कूल की स्थापना तीन चरणों में की जाएगी। पहले चरण में के० जी० से लेकर 7वें

दर्जे तक की कक्षाएं होंगी। स्कूल में बल के कार्मिकों के अतिरिक्त अन्य नागरिकों के बच्चों को भी दाखिले मिल सकेंगे। दाखिले प्रारंभ हो चुके हैं।

अगले दो चरणों मे दों की संख्या 12 तक बढ़ा दी जाएगी तथा प्रयोगशाला, तरणताल आदि अन्य सुविधाएं भी जुटा ली जाएंगी।

बिना किसी सहायता के चलने वाला यह स्कूल पूरी तरह बल द्वारा चलाया जाएगा। स्कूल बल के कार्मिकों एवं नागरिकों की जरूरतों को पूरा करेगा। बल के कार्मिकों के बच्चों के लिए शुल्क सामान्य होगा। तथा नागरिकों से लिए जाने वाला शुल्क सामान्य से अधिक होगा। इसके बावजूद भी यह शुल्क राजधानी में चलने वाले अन्य पब्लिक स्कूलों की अपेक्षा कम होगा। बल के मृत कर्मचारियों के बच्चे भी इस स्कूल में प्रवेश पा सकेंगे। स्कूल का छात्रावास-जो केवल बल के कार्मिकों के बच्चों के लिए हैं-इसी शैक्षिक सत्र से प्रारंभ हो जायेगा, इसमें 350 छात्रों के रहने की व्यवस्था होगी। इस सत्र से यह सुविधा 50 छात्र पा सकेंगे।

शुरू में स्कूल बने-बनाये स्टील के कमरों में चलेगा। स्कूल की इमारत के निर्माण का कार्य साथ साथ ही प्रारंभ हो जाएगा और इसके अगले दो सालों में पूरा हो जाने की आशा है, स्कूल के छात्रावास का निर्माण 1991 तक पूर्ण हो जाएगा।

फिलहाल स्कूल का होस्टल राजधानी के महावीर नगर क्षेत्र में होगा। इसका शुल्क बल के कार्मिकों के लिए अत्यधिक सुविधाजनक होगा।

कुछ महान व्यक्तियों के प्रेरक जीवन प्रसंग

बालक सूर्य मल्ल ने केवल तीन दिन में संस्कृत की प्रसिद्ध पुस्तक 'अमरकोष', कंठस्थ कर ली थी तथा 10 वर्ष की आयु में एक काव्य ग्रन्थ की रचना कर डाली थी।

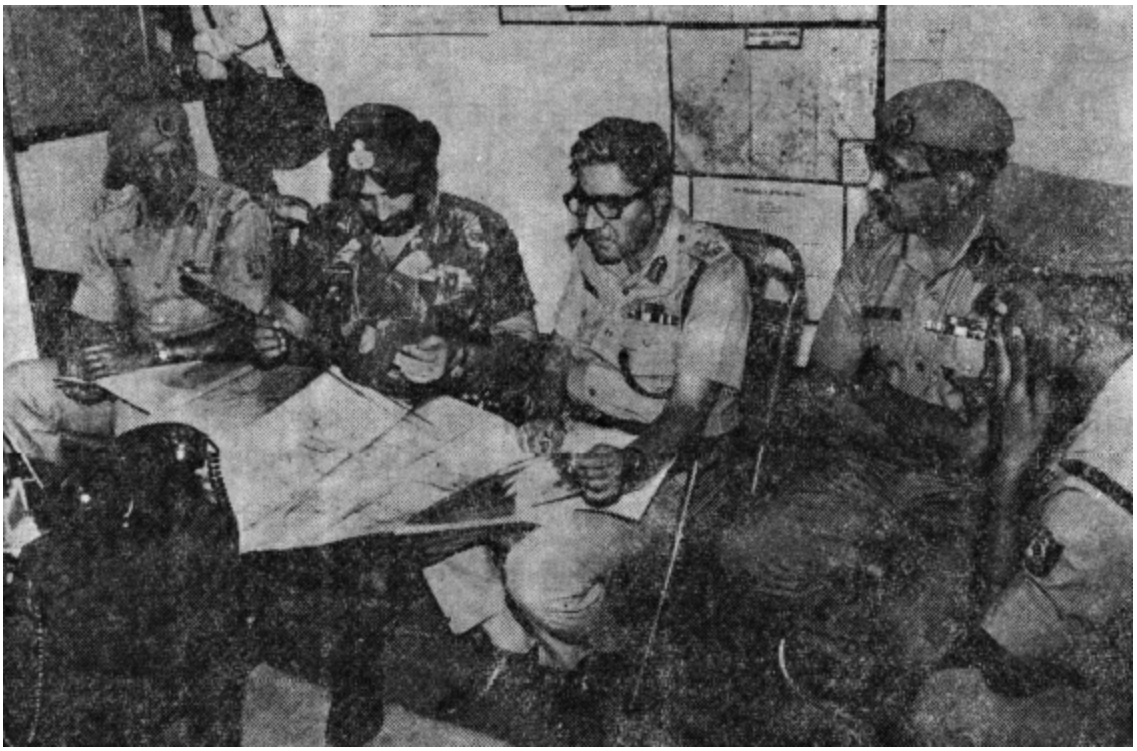
जोधपुर के राजकुमार पृथ्वीसिंह ने 11 वर्ष की आयु में द्वंद युद्ध में शेर को मार दिया था।

ब्रसली के चार वर्षीय पुत्र ने कराटे कला में ब्लैक बैल्ट प्राप्त कर ली थी।

यूनान के प्रसिद्ध दार्शनिक प्लेटो ने अपने जीवन की पहली पुस्तक 8 वर्ष की आयु में लिखी।

भारत के आदि गुरु शंकराचार्य जब 6 वर्ष के थे तब उन्हें संपूर्ण गीता याद थी और 10 वर्ष की आयु में तो वह बड़े-बड़े पंडितों को शास्त्रार्थ में हराने लगे थे।

महानिदेशक का श्रीलंका दौरा



श्रीलंका में सेना व बल के अधिकारियों के साथ विचार विमर्श करते महानिदेशक महोदय

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक श्री सतीशदत्त पांडेय 7 जनवरी, 1988 को श्रीलंका में तैनात बल की टुकड़ियों का जायजा लेने के लिए दौरे पर श्रीलंका पहुंचे। श्रीलंका में इस समय बल की 35वीं तथा 58वीं बटालियन तथा महिला बटालियन की एक कंपनी तैनात हैं। बल के ये जवान श्रीलंका में भारतीय सेना के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य कर रहे हैं।

महानिदेशक के साथ दक्षिणी क्षेत्र के महानिरीक्षक श्री सी० सुब्रह्मण्यम, उपनिदेशक (आपरेशन) श्री एम. पी. सिंह तथा मद्रास रेंज के उपमहानिरीक्षक श्री के० आर० के० प्रसाद भी थे।

आतंकवाद से सर्वाधिक प्रभावित श्रीलंका के जाफना प्रायद्वीप के हवाई अड्डे पर श्री पाँडेय का स्वागत भारतीय सेना के ब्रिगेडियर आर० आई० एस० कहलों तथा ब्रिगेडियर मंजीत सिंह ने किया। उसके बाद महानिदेशक को भारतीय शांति रक्षक सेना के क्षेत्रीय मुख्यालय में सेना के उच्चाधिकारियों के साथ विचार विमर्श के लिए ले जाया गया।

अपने दौरे के दौरान महानिदेशक ने जाफना में धीरे-धीरे लौटती शांति के कई चिह्न देखे। बल की कई टुकड़ियों को सैनिक सम्मेलन के दौरान उन्होंने संबोधित भी किया। इन सैनिक सम्मेलनों के दौरान सैनिकों ने उन्हें अपनी समस्याओं से अवगत कराया और महानिदेशक ने तत्काल निर्णय लेकर उन्हें जवाब दिए।

जाफना में उन्होंने 35 बटालियन की - 'ए' कंपनी (जहां 58 बटालियन की 'ई' तथा 'एफ' कंपनी के कार्मिक भी मौजूद थे), 88 बटालियन की 'बी' कंपनी तथा 35

बटालियन के तैनाती के स्थानों पर तीन सम्मेलनों को संबोधित किया।

इन सम्मेलनों के दौरान उन्होंने कहा कि बल के सैनिकों को अपनी गौरवशाली परम्पराओं को जीवित रखना है। इन परम्परागों में जिम्मेदारी की भावना, जो उसे समय के साथ प्राप्त हुई है, ईमानदारी, सहयोग, स्थानीय कमांडरों के साथ समन्वय तथा राष्ट्रीय अखंडता की रक्षा है।

महानिदेशक महोदय ने कहा कि श्रीलंका में तैनात बल के कार्मिकों को इस बात पर गर्व होना चाहिए कि वह देश के लिए एक बहुत महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। उन्होंने कहा, "यह आप सबके लिए परीक्षा की घड़ी है।'

महानिदेशक महोदय ने यह महसूम किया कि जाफना प्रायद्वीप में धीरे-धीरे लौट रही शांति एवं व्यवस्था भारतीय शांति रक्षक सेना-के० रि० पु० बल जिसका एक अंग है-के प्रत्येक सदस्य की निष्ठा का प्रतीक है।

महानिदेशक महोदय ने बल के जवानों को हर समय सतर्क रहने की सलाह दी। उन्होने चेतावनी दी कि जरा सी भी असाव धानी मौत का कारण बन सकती है।

उन्होंने बल की महिला बटालियन की स्वेच्छा से यहाँ आने की इच्छा का आदर किया और उसकी प्रशंसा करते हुए आशा व्यक्त की कि आगे भी यह उत्साह बना रहेगा। महानिदेशक ने उन्हें सावधान रहने की सलाह दी क्योंकि वे महिलाएं हैं, लेकिन वे डरेंन और हर समय अपनी आँखें खुली रखें।

जाफना से महानिदेशक एवं अन्य अधिकारी त्रिंकोमल्ली होते हुए भारत लीट आए।

हास परिहास

एक बुढिया भारी सा गट्ठर लेकर बस में चढ़ी। कंडक्टर बोला, "माता जी एक रुपया अपनी टिकट का तथा एक रुपया इस गट्ठर का भाड़ा दीजिए।"

"बेटा, मैं बहुत गरीब हूं, मेरा टिकट दे दे, गट्ठर का भाड़ा छोड़ दे।" बुढ़िया ने बहुत बिनती की, किन्तु कंडक्टर नहीं माना। अंत में बुढिया गट्ठर खोलती हुई बोली "बेटा अभय बाहर आ जा, ऐसे तेरे 50 पैसे ही लगेंगे।"

एक व्यक्ति ने होटल के मैनेजर से पूछा, "क्या यह होटल आरामदायक है ?"

मैनेजर बोला, "जी हां, घर जैसा आरामदायक।"

"घर जैसा !" उस व्यक्ति ने नाक भौं सिकोड़ी और वापस चला गया।

एक मित्र ने अपने दूसरे मित्र से कहा, "मैं अपना जन्म दिन नहीं मनाता।"

"क्यों, जन्म दिन क्यों नहीं मनाते ?

"क्योकि मैं दिन मैं नहीं रात में पैदा हुआ था।"

पुलिस खेलों में के० रि० पु० बल का बोलबाला

6से 14 फरवरी, 1988 तक त्रिवेंद्रम में आयोजित 37वें अखिल भारतीय पुलिस खेलों में एक बार फिर से केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल लगातार दसवीं बार चैंपियन शिप ट्राफी पर अधिकार जमाने में सफल रहा। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की टीम ने कुल 189 अंक प्राप्त किए। सीमा सुरक्षा बल 165.5 अंक प्राप्त कर दूसरे स्थान पर रहा, जबकि 131 अंक प्राप्त कर केरल को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ। महिलाओं के वर्ग में बिहार को 104 अंक प्राप्त हुए और वह प्रथम रहा, जबकि केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल और मध्य प्रदेश क्रमशः 38 और 37 अंक प्राप्त कर दूसरे व तीसरे स्थान पर रहे।

इन खेलों का उद्घाटन 6 फरवरी को केरल के राज्यपाल श्री पी० रामचन्द्रन ने किया।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की झोली में स्वर्ण पदकों की शुरूआत बल की जूडो टीम ने की जिसने कुल आठ स्वर्ण पदकों में से तीन पर कब्जा कर लिया। बल के खिलाड़ियों को दो रजत तथा तीन कांस्य पदक भी प्राप्त हुए। सीमा सुरक्षा बल को दो स्वर्ण, एक रजत तथा दो कांस्य पदक प्राप्त हुए।

सीमा सुरक्षा बल ने पंजाब पुलिस को 3-1 से हरा कर हाकी के स्वर्ण पदक पर कब्जा किया। उससे पहले मध्य प्रदेश ने के०रि०पु० बल को 2-1 से हरा कर कांस्य पदक प्राप्त किया था।

कबड्डी के फाइनल्स में, के० रि० पु० बल को पंजाब पुलिस से 35 के मुकाबले 38 अंकों से पराजय सहनी पड़ी। सीमा सुरक्षा बल ने मध्य प्रदेश पर 37-20 अंकों से विजय प्राप्त कर कांस्य पदक पर अपना अधिकार जमाया।

बास्केटबाल फाइनल में केरल पुलिस ने पंजाब को 86-85 से हराकर स्वर्ण पदक प्राप्त किया। के० रि० पु० बल ने सीमा सुरक्षा बल के मुकाबले 73-56 अंक प्राप्त कर आसानी से कांस्य पदक प्राप्त कर लिया।



महानिदेशक श्री पांडेय एवं अन्य अधिकारियों के साथ बल की विजेता टीम

के० रि० पु० बल के चौगडे-दलजीत सिंह, सुरेन्द्रसिंह, बी० के० घोस और देब आशीष राय-ने 4x100 मीटर रीले दौड में एक नया रिकार्ड कायम किया। उन्होंने यह दौड़ 41.4 सै० में पुरी कर, केरल टीम के 41.8 सै० का दो साल पुराना रिकार्ड तोड़ दिया। सीमा सुरक्षा बल और केरल पुलिस ने 42.2 सै० में अगले दो स्थान पर कब्जा पाया।



4x100 मीटर रिले में नया रिकार्ड स्थापित करने वाले बल के (बायें से) दलजीतसिंह. देव आशीष राय, सुरेन्द्रसिंह तथा बी० के० घोष

पोल वाल्ट में पिछले साल के विजेता के० रि० पु० बल के बलजीत सिंह को इस बार दूसरे स्थान पर ही संतुष्ट रहना पड़ा हांलाकि उन्होंने छः साल पुराने पिछले रिकार्ड (4.40 मीटर) को तोड़ डाला। बलजीत सिंह ने 4.41 मीटर ऊँचाई को पार किया। केरल पुलिस के एम० राजन ने 4.45 मीटर की ऊँचाई पार कर प्रथम स्थान प्राप्त किया। केरल के ही गोपा कुमार ने 4 मीटर की ऊंचाई के साथ कांस्य पदक पाया।

200 मीटर दौड़ में 22.1 सैकन्ड का समय लेकर के० रि० पु० बल के सुरेन्द्र सिंह प्रथम रहे। उडीसा के एस० के० सिंह तथा सीमा सुरक्षा बल के बलविन्दर सिंह को क्रमशः दूसरा व तीसरा स्थान प्राप्त हुआ।

400 मीटर की बाधा दौड़ में उत्तर प्रदेश के मुन्ना सिंह को स्वर्ण पदक, के० रि० पु० बल के गुरदयाल सिंह को रजत व केरल के० पी०वी० राजू को कांस्य पदक प्राप्त हुआ।

हैमर थ्रो में 62.72 मीटर तक हैमर फेंक कर के०रि०पु० बल के अर्जुन पुरस्कार विजेता आर० एस० बल स्वर्ण पदक प्राप्त करने में सफल रहे। दिल्ली के एम० अजय पाल सिंह तथा हरियाणा के प्यारे लाल को क्रमशः रजत व कांस्य पदक मिले।

महिलाओं की 4X100 मीटर की रिले दौड़ में बिहार की टीम 51.8 सैकन्ड का समय लेकर प्रथम रही। मध्य प्रदेश और के० रि० पु० बल की टीम क्रमशः द्वितीय व तृतीय रही।

जिमनास्टिक प्रतियोगिताओं में भी भारत तिब्बत सीमा पुलिस को परास्त कर के० रि० पु० बल चैपियनशिप पर कब्जा जमाने में सफल रही। हालांकि इस बार बल के बलरामशील होरिजेंटल बार पर पकड़ छूट जाने के कारण 3 अंक गंवा बैठे अतः इस बार के सर्वश्रेष्ठ जिमनास्ट का खिताब उन्हें न मिलं कर भारत तिब्बत सीमा पुलिस के इनाओबी को प्राप्त हो गया।

कुश्ती प्रतियोगिताओं में केन्द्रीय पुलिस बल को दूसरा स्थान प्राप्त हुआ। सीमा सुरक्षा बल प्रथम व केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल तीसरे स्थान पर रहे।

केरल के मुख्यमंत्री श्री ई०के० नायनार ने पुरुस्कार वितरित किये।

बल का शूटर प्रथम

भोपाल में आयोजित अखिल भारतीय पुलिस ड्यूटी मीट की शूटिंग प्रतियोगितामों में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के हैड कांस्टेबल हिम्मत सिंह सर्वश्रेष्ठ शूटर रहे। यह प्रतियोगिताएं पिछले नवंबर में आयोजित की गई थीं।

पिस्तौल शूटिंग में हिम्मत सिंह ने कुल 229 अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान पाया।

पिस्तौल की टीम चैम्पियनशिप में के० रि० पु० बल के शूटरों ने 667 अंक प्राप्त कर चैंपियनशिप ट्राफी पर कब्जा कर लिया। भारत तिब्बत सीमा पुलिस 24 अंकों से पिछड़ कर दूसरे स्थान पर रही, जबकि सीमा सुरक्षा बल 638 अंकों के साथ तीसरे स्थान पर रहा।

ओवर आल चैंपियनशिप ट्राफी पर भी के० रि० पु० बल के शूटरों ने कब्जा जमा लिया। उन्होंने इस खिताब को पाने के लिए कुल 1172 अंक बटोरे। भा० ति० सी० पुलिस (1155) द्वितीय रही। और सीमा सुरक्षा बल को 1148 अंकों के साथ तीसरा स्थान प्राप्त हुआ।



है० कां० हिम्मत सिंह

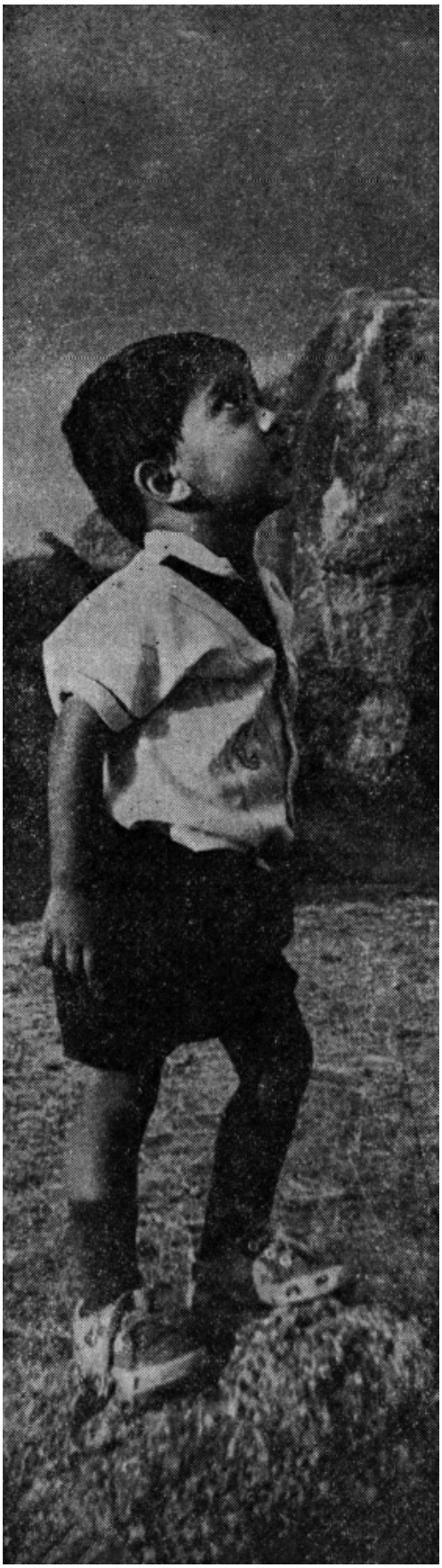
केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की शूटिंग टीम का नेतृत्व सहायक कमांडेंट तेजिंदर सिंह ढिल्लन ने किया।

उप राष्ट्रपति शंकर दयाल शर्मा ने विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए।

जोखिम निधि लाभ

माह जनवरी, 1988 में बल के अन्दर 15 मृत्यु के मामलों में जोखिम निधि फंड से 2,55,000 रुपए देने स्वीकृत किए गए।

आक्षमता के 4 मामलों में 60,000 रुपए दिए गए।



मंजिल अभी दूर है।
प्रथम : छायाचित्र स०उ०नि०बी०एस० पाटिल



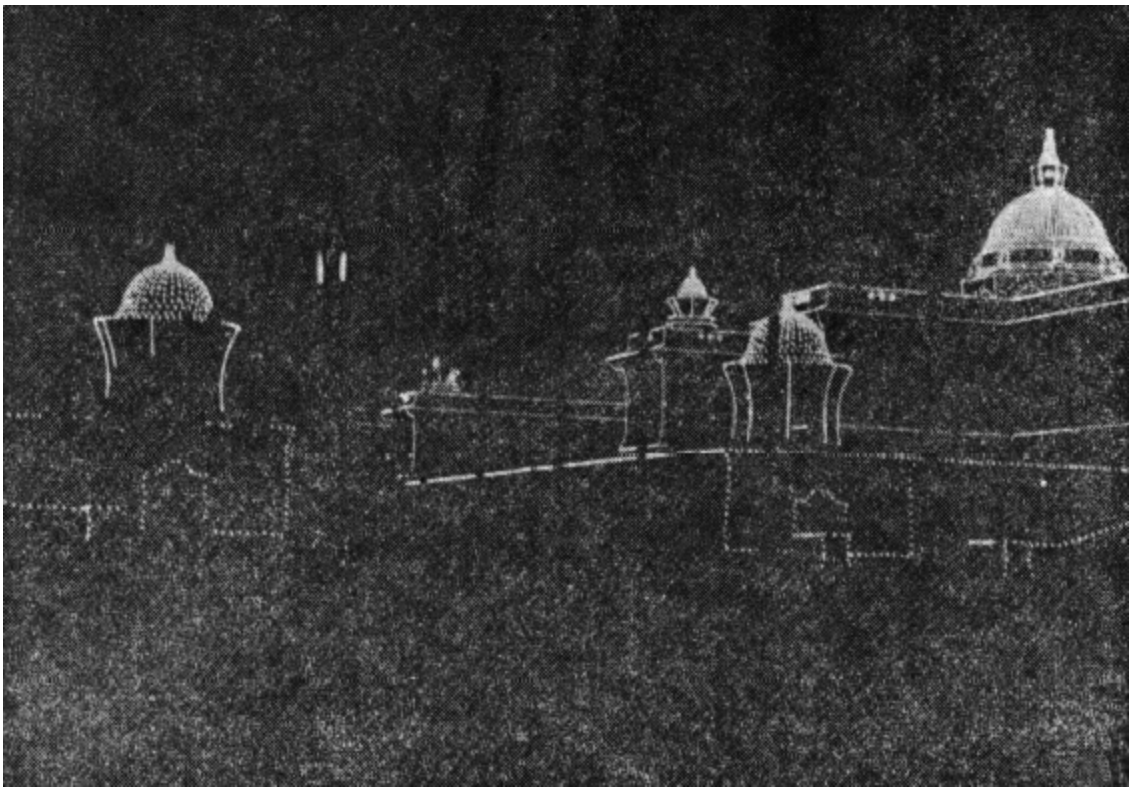
अब महिलाएं सुरक्षा में।
द्वितीय :-छाया पी० वी० बेलगामकर, 50 बटालियन

छायाचित्र प्रतियोगिता परिणाम

इस वर्ष की छायाचित्र प्रतियोगिता में हमें केवल चार ही प्रविष्टियां प्राप्त हुई थीं। प्रतियोगिता की दष्टि से ये प्रविष्टियां पर्याप्त नही थीं। फिर भी बल के अन्दर फोटोग्राफी को प्रोत्साहन देने के लिए निर्णय लिए गए। प्राप्त चित्रों में 300 रुपए का पहला पुरस्कार स० उ० नि० बी० एस० पाटिल के चित्र को, 200 रुपए का द्वितीय पुरस्कार 50 बटालियन के पी० वी० बेलगामकर को तथा 100 रुपए का तीसरा पुरस्कार 62 बटालियन के डा० शेख हमीदुल्लाह को दिया गया।

आशा हैं अगले वर्षों में और अधिक प्रविष्टियाँ प्राप्त होंगी।

—मुख्य संपादक



आजादी की रोशनी
तृतीय —छाया डा० शेख हमीदुल्लाह, 62 बटालियन

पंजाब से

मुठभेड़ में दो जवान मरे

3 जनवरी, 1988 को अमृतसर जिले के वालेर गांव में आतंकवादियों से हुई एक मुठभेड़ में अवतार सिंह ब्रह्मा ग्रुप के दो आतंकवादी तथा के०रि०पु० बल के दो जवान-हैड कांस्टेबल वाल्टर गुरिया तथा कांस्टेबल जयसिंह मारे गए।

पट्टी स्थित 19वीं बटालियन के कमांडैट को कुख्यात आतंकवादी अवतारसिंह ब्रह्मा के बारे में सूचना प्राप्त हुई। अवतार सिंह ब्रह्मा खालिस्तान लिबरेशन फोर्स का स्वयंभू अध्यक्ष है।



कां० जयसिंह, हे० कां० वाल्टर गुरिया

सूचना प्राप्त होने पर स्वयं कमांडेंट एम० के० धगत के निर्देशन में 12 सदस्यों का एक सेक्शन दो गाड़ियों में सवार होकर इलाके की रेक्की करने भिक्खी विंड गांव की ओर चल पड़ा। गाड़ियों को हारिके और भिक्खी विंड मार्ग पर खड़ा करने के बाद पैट्रोल पार्टी ने भिक्खी विंड बालेर क्षेत्र में रेक्की का काम शुरू किया। करीब 30 घरों की 4 जनवरी को छापा मारने के लिए निशान देही की गई। ये घर ब्रह्मा ग्रुप के आतंकवादियों के अड्डे थे। रेक्की के बाद पैट्रोल पार्टी गाड़ियों की ओर लौट रही थी। वापसी पर रास्ते में एक निहंग एक ऊंट पर चारा लादे तथा उस पर एक बच्चे को बैठाए खड़ा था। उसने पैट्रोल पार्टी से उसके उद्देश्य के बारे में पूछताछ की। उसे पैट्रोल पाट्री द्वारा कोई जवाब नहीं दिया गया। और पट्रोल पाट्री आगे बढ़ गई। वह तब तक सड़क पर खड़ा रहा जब तक कि हैड कॉंस्टेबल वाल्टर गुरिया तथा कांस्टेबल जयसिंह के अलावा पूरी पार्टी आगे नहीं बढ़ गई। ये दो जवान उससे आगे बढ़ पाएं, इससे पहले ही वह पास ही स्थित फार्म हाऊस की तरफ भाग खड़ा हुआ और वहां छिपे आतंकवादियों को पैट्रोल पार्टी के बारे में सूचना दे दी। तत्काल कंबलों को ओढ़े चार निहंग अपने हथियारों को छिपाए फार्म हाऊस के बाहर निकल आए और पार्टी को रुकने के लिए कहने लगे। लेकिन पार्टी आगे बढ़ती रही क्योंकि पैट्रोल का उद्देश्य केवल रेक्की ही था। जब आतंकवादियों के ललकारने पर भी पार्टी आगे बढ़ती रही, तो आतंकवादियों ने आगे बढ़ कर हैड कांस्टेबल वाल्टर गुरिया तथा कांस्टेबल, जयसिंह पर केवल 15-20 गज के फासले से ए.के. 47 रायफल से फायर कर दिया। दोनों जवान तत्काल मारे गए। पैट्रोल पार्टी ने तत्काल पोजिशन ले ली। लगभग 20-25 मिनट तक दोनों ओर से गोली बारी होती रही। इस गोली बारी में अवतार सिंह ब्रह्मा ग्रुप के दो आतंकवादी मारे गए। बाद में घटना स्थल की छानबीन के दौरान घटनास्थल से अवतारसिंह ब्रह्मा ग्रुप के दो घोड़े तथा एक भैंस मरी पाई गई। एक 40 राउण्ड सहित कार्बाइन स्टेनगन, ए.के.-47 के 9 चार्जर भी घटनास्थल से बरामद किए गए।

मुठभेड़ में बल का जवान व आतंकवादी मरे

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 86वीं बटालियन के जवानों तथा आतंकवादियों के

बीच छापामारी के दौरान हुई एक मुठभेड़ में बल का एक कांस्टेबल मुहम्मद हनीफ घटनास्थल पर ही मारा गया। तथा बल के तीन अन्य कार्मिक और भी घायल हो गए। इस मुठभेड़ में कुख्यात आतंकवादी जगराज सिंह उर्फ राजू मारा गया।

13 फरवरी, 1988 को थानाध्यक्ष मलौत, जिला फरीदकोट से सूचना प्राप्त होने पर 86 बटालियन के दो सेक्शन, जिन में एक उप निरीक्षक, एक नायक, दो लांस-नायक तथा 12 कांस्टेबल थे, पुलिस स्टेशन मलोत के अन्तर्गत आने वाले कुछ गांवों में आतंकवादियों की तलाश में निकल पड़े। स्थानीय पुलिस के साथ बल के जवानों ने मलौत फाजिल्का मार्ग पर स्थित रत्ता टिब्बा -गांव के कुछ घरों की तलाशी ली। इस गांव के कुछ घरों की तलाशी लेने के बाद पार्टी लगभग 10 बजे रानीवाला गांव में पहुंची। कुछ घरों की तलाशी के बाद पुलिस दल रणजीत सिंह, पुत्र पालासिंह के घर पर पहुंचा। घर में अन्दर से कुन्डी लगी हुई थी। घर को पुलिस दल द्वारा चारों ओर से घेर लिया गया। घर वालों को दरवाजा खोलने की चेतावनी दी गई। जब पुलिस दल घर के अन्दर घुसा, तो घर के अन्दर बैठे लोग पुलिस दल को देखते ही तत्काल पोजिशन लेकर गोलियां चलाने लगे। गोलियां संभवतः ए० के० 47 रायफल से चलाई गई। कुछ गोलियां .38 रिवाल्वर से भी चलाई गई। परिणामस्वरूप पुलिस दल के तीन कांस्टेबल जोकि पार्टी के आगे थे गोलियों से घायल हो गए। लेकिन साहस पूर्वक उन्होंने भी सामना करते हुए अपने रायफल से जवाबी फायर कर दिया। आतंकवादी अपनी ए० के० 47 रायफल से चारों ओर गोलियां चलाते हुए बाहर को भागे। उनमें से एक आतंकवादी ने एक दीवार की आड़ ले ली। लेकिन इससे पहले कि वह नायक बलबीर सिंह पर गोली चलाता उपनिरीक्षक गुरदयालसिंह ने उस पर गोली चला दी। परिणाम स्वरूप आतंकवादी घटनास्थल पर ही मारा गया। तीन अन्य आतंकवादियों ने भी भागने का प्रयास किया, लेकिन कांस्टेबल मुहम्मद हनीफ ने उनका पीछा किया। उन तीन में से एक कांस्टेबल हनीफ की फायरिंग से जख्मी हो गया। पीछा करते हुए हनीफ ने हिप पोजीशन से फायर किया। इसी दौरान भागते आतंकवादियों में से एक ने आड़ लेकर अपनी ए. के. 47 रायफल से हनीफ पर फायर किया। परिणामस्वरूप कांस्टेबल हनीफ घटनास्थल पर ही मारा गया। मौके का फायदा उठाते हुए आतंकवादी गलियों में से हो कर भाग निकले। घायलों को तत्काल अस्पताल पहुंचा दिया गया। बाद में पूरे इलाके की छानबीन की गई। घटना स्थल से निम्न गोला बारूद बरामद किया गया-दो ए० के० 47 रायफल, एक पाक निर्मित रिवाल्वर, तथा अन्य हथियारों सहित ए. के. 47 रायफल की एक मैगजीन 15 सजीव राउन्ड तथा 20 खाली केस के साथ इसी क्षमता की एक खाली मैगजीन, तथा 38 रिवाल्वर के 6 खाली केस।

बाद में की गई छानबीन के दौरान कई संदिग्ध आतंकवादी गिरफ्तार किए गए। मारे गए आतंकवादी की बाद में जसराज सिंह उर्फ राजू के रूप में शिनाख्त कर ली गई। यह खालिस्तान कमांडो फोर्स का एक कुख्यात आतंकवादी था।

दो कुख्यात आतंकवादी मारे गए

22 फरवरी, 1988 को 48 बटालियन की "सी" कम्पनी के साथ पंजाब के खाबे डोगरा गाँव के पास एक पेट्रोल ड्यूटी के दौरान रात्रि 2.15 बजे हुई एक मुठभेड़ में भिडरवाले टाइगर फोर्स का स्वयंभू नेता "बी" प्लस श्रेणी का आतंकवादी पूरन सिंह उर्फ पुन्ना एवं भिडरवाले टाइगर फोर्स आफ खालिस्तान के स्वंयभू अध्यक्ष तथा पंथक कमेटी के सदस्य गुरबचन सिंह मनोचल का व्यक्तिगत अंगरक्षक गुरदेव सिंह मारा गया। यह भी एक दुर्दात आतंकवादी था।

पूरनसिंह उर्फ पुन्ना के सिर पर 50,000, रुपये का इनाम था। उस पर लगभग 50 हत्याओं के आरोप थे। दिसम्बर 1986 में 29 बटालियन की एक टुकड़ी पर घात लगा कर किए आक्रमण के लिए भी ये आतंकवादी ही जिम्मेदार था। इस घात में 29 बटालियन का एक उप निरीक्षक तथा चार जवान मारे गये थे।

22 फरवरी को जब 48 बटालियन की "सी" कम्पनी पेट्रोल ड्यूटी पर थी, तो उसे खाबे डोगरा गांव के बाहरी छोर से कुछ गोलियों की आवाज सुनाई दी। टुकड़ी ने तुरंत युनिट को इस की सूचना भेजी। वहाँ से असिस्टैंट कमान्डेन्ट (आपरेशन) तत्काल 30 बटालियन की "एफ" कम्पनी के साथ चल पड़े। गाँव के रास्ते में उनकी मुलाकात 48 बटालियन की "सी" कम्पनी की टुकड़ी से हो गई। वहाँ उन्हें बताया गया कि अभी तक किसी भी तरह की सूचना प्राप्त नहीं हुई है। बाद में ये दोनों टुकड़ियां गांव में गई। लेकिन गाँव में किसी ने भी दरवाजा नहीं खोला। अतः वे लोग पच्छिमी छोर से पखोके की ओर जाने वाले कच्चे रास्ते पर चल पड़े। जैसे ही वे नहर के किनारे पहुँचे उन्हें 3-4 लोगों का एक झंड ट्यूबवेल के पास संदेहास्पद स्थिति में दिखाई दिया। उनसे पूछने पर कि वे क्या कर रहे हैं, उन्होंने कोई जबाव नहीं दिया, उन्हें फिर चेतावनी दी गई तो उन्होंने बल की टुकड़ी पर फायर कर दिया और खेतों की ओर भागने लगे। अपनी सुरक्षा में बल की टुकड़ी ने भी फायर किया। वे संदेहास्पद व्यक्ति नंगल गुरु, जंडियाला की तरफ के खेतों की ओर भाग रहे थे। पार्टी द्वारा उनकी तरफ रोशनी करने वाले बम फेंके गए, इन बमों की रोशनी में देखा गया कि उन लोगों के पास हथियार थे। बल की टुकड़ी ने उन पर फिर फायर किया और अगले 30-40 मिनट तक फायर करती रही, जिसके परिणामस्वरूप पूरन सिंह उर्फ पुन्ना तथा गुरदेवसिंह मारे गए।

मुठभेड़ में जवान घायल

गोरखा लिबरेशन फ्रंट के आतंकवादियों की बल के जवानों के साथ हुई दो अलग-अलग मुठभेड़ों में कांस्टेबल सिंहराज मारा गया तथा कांस्टेबल जीतचांद सिंह बुरी

तरह घायल हुआ।

पश्चिम बंगाल के कुसियांग क्षेत्र से 15 किलोमीटर दूर बागोरा जंगलात के एक बंगले में गोरखा लिबरेशन फ्रंट के आतंकवादियों द्वारा आग लगा दी गई। 22 दिसम्बर को के० रि० पु० बल की 34 बटालियन की एक टुकड़ी स्थानीय पुलिस के साथ दो गाड़ियों में सवार होकर इस नुकसान का जायजा लेने जा रही थी। रास्ते में इस टुकड़ी पर गोरखा लिबरेशन फ्रंट के आतंकवादियों द्वारा घात लगा कर हमला किया गया। पार्टी पर आगे व पीछे से .303 राइफलों द्वारा तथा बम फेंक कर हमला किया गया। गाड़ियों के रास्ते में भी विस्फोटक बिछाए गए थे, मगर गाड़ियां उनसे सकुशल निकल आई। आतंकवादी पहाड़ियों के ऊपर से फायर कर रहे थे।

पुलिस दल ने भी गाड़ियों से उतर कर पोजिशन ले ली। लगभग 15 मिनट तक दोनों ओर से गोलियां चलती रही। उसके बाद आतंकवादी भाग खड़े हुए। पुलिस दल ने उनका पीछा किया तथा उन पर फायर किया। जिससे एक आतंकवादी घायल हो हो गया, मगर बाकी आतंकवादी गोलियों की आड़ में उसे उठा कर जंगल में गायब हो गए। जंगल की तलाशी लेने पर 4 बम, स्विच वायर, फ्यूज डेटोनेटर, .303 के खाली केस तथा एक .22 रायफल बरामद की गई।

इस मुठभेड़ में बल का कांस्टेबल जीत चांद सिंह बुरी तरह घायल हुआ। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक की जीप में बैठे एक नागरिक को भी गोलियों से चोटें आईं। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक भी मामूली रूप से घायल हुए।

कांस्टेबल जीत चांद सिंह को सिलिगुड़ी अस्पताल में भर्ती कराया गया।

गोरखा लिबरेशन फ्रंट के विद्रोहियों तथा के०रि०पु० बल के जवानों के बीच हुई एक अन्य मुठभेड़ में बल की 39 बटालियन की 'सी' कम्पनी का कांस्टेबल सिंह राज मारा गया।



कां० सिंह राज



कां० जीत चाँद सिंह

29 दिसम्बर, 1987 को केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 39 बटालियन की 'सी' तथा 'एफ' कम्पनियों की दो टुकड़ियाँ स्थानीय पुलिस के साथ कलिपोंग के जोरधारा एवं रौउसी बाजार क्षेत्र में छापामारी के बाद लौट रही थीं कि उन पर गोरखालिबरेशन फ्रंट के विद्रोहियों द्वारा घात लगाकर आक्रमण किया गया। आतंकवादियों द्वारा माईनस् तथा बमों के विस्फोट किए गए तथा पहाड़ के ऊपर से पुलिस दल पर गोलियां बरसायी गई। इस गोलीबारी में कांस्टेबल सिंह राज बुरी तरह जख्मी हो गया। उसे तत्काल अस्पताल पहुंचाया गया जहां उसे मृत घोषित कर दिया गया।

समाचार

तीन हत्यारे पकड़े

3 जनवरी, 1988 को हुई त्रिपुरा पुलिस के एक कांस्टेबल वीरूदेव बर्मा की हत्या के एक अभियुक्त दीना मुन्दा को के०रि०पु० बल की 70 बटालियन की 'बी' कम्पनी के जवानों ने 8 जनवरी गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार व्यक्ति तलाश शुदा अभियुक्त था।

इसी कम्पनी द्वारा 9 जनवरी को इसी हत्याकांड के एक ओर अभियुक्त फानी देव बर्मा को उसके गांव डी. सी. पारा से गिरफ्तार कर लिया गया। फानीदेव बर्मा टी.एन.वी. उग्रवादी गतिविधियों में सक्रिय रहा है।

12 जनवरी को भी इसी कम्पनी द्वारा स्थानीय पुलिस के साथ गांव किशंग बारी तथा बीरबल बारी में छापामारी की गई। जिसमें हत्याकांड का तीसरा अभियुक्त टी. एन. वी. उग्रवादी दुरन्तादेव बर्मा को भी गिरफ्तार कर लिया गया। तीनों गिरफ्तार अभियुक्तों को स्थानीय पुलिस को सौंप दिया गया। 70 बटालियन की 'बी' कम्पनी के इस सराहनीय कार्य की पुलिस उच्चाधिकारियों ने भूरी भूरी प्रशंसा की।

अच्छे कार्य के लिए ईनाम

जनवरी माह में त्रिपुरा के पुलिस अधीक्षक (पश्चिम) ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 70 बटालियन को क्षेत्र में उसके द्वारा किए गए सराहनीय कार्यों के लिए 2,900 रुपये का पारितोषिक प्रदान किया।

10 अतिरिक्त बटालियनें

केन्द्र सरकार ने केन्द्रीय रिजर्व बल की 10 अतिरिक्त बटालियनें गठित करने की अनुमति प्रदान की है। इन बटालियनों का गठन 1 अप्रैल, 1988 से निम्न स्थानों पर किया जाएगा। दक्षिणी क्षेत्र में ग्रुपकेन्द्र नीमच में उप महानिरीक्षक नीमच के अधीन 89 बटालियन, नागपुर में उप महानिरीक्षक हैदराबाद के अधीन 90 बटालियन, बंगलौर में उप महानिरीक्षक मद्रास के अधीन 91 बटा०, पूर्वी क्षेत्र में ग्रुपकेन्द्र रामपुर में उप महानिरीक्षक रामपुर के अधीन 92 बटालियन, ग्रुपकेन्द्र दुर्गापुर में 93 बटालियन तथा ग्रुपकेन्द्र भुवनेश्वर में 94 बटालियन उप महानिरीक्षक कलकत्ता के अधीन। ग्रुप केन्द्र मोकामाघाट में 95 बटालियन उप महानिरीक्षक पटना के अधीन। उत्तरी क्षेत्र में 96 बटालियन ग्रुप केन्द्र II अजमेर में उप महानिरीक्षक अजमेर के अधीन। 97 बटालियन ग्रुप केन्द्र गांधी नगर में उप महानिरीक्षक नई दिल्ली के अधीन। उत्तर पश्चिम क्षेत्र में 98 बटालियन ग्रुपकेन्द्र बनतलाब में उप महानिरीक्षक श्रीनगर के अधीन कार्य करेंगी।

मुख्य मंत्री द्वारा बल के कार्यों की प्रशंसा

अरुणाचल प्रदेश के मुख्य मन्त्री श्री गेगोंग अपाँग ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस की 8वीं बटालियन के नव निर्मित क्वार्टर गार्ड भवन का जनवरी 1988 को इटानगर में उद्घाटन किया। इस अवसर पर सैनिक सम्मेलन में बोलते हुए मुख्य मन्त्री ने जवानों को शुभकामनायें दी। उन्होंने के०रि०पु० बल द्वारा राज्य में शांति व व्यवस्था बनाए रखने में दिए जा रहे योगदान की प्रशंसा करते हुए जवानों को 1,000 रुपए का अनुदान भी दिया।

जवानों ने आग बुझाई

अरुणाचल प्रदेश इटानगर के खानेता क्षेत्र में 16 जनवरी, 1988 को दोपहर लगभग 12 बजे एक शिक्षक के घर में आग लग गई। सूचना मिलने पर 8वीं बटालियन की 'सी' कम्पनी के जवान तत्काल घटना स्थल पर पहुंच गए और उन्होंने शीघ्र ही आग पर काबू पा लिया।

मृत जवानों को अनुदान

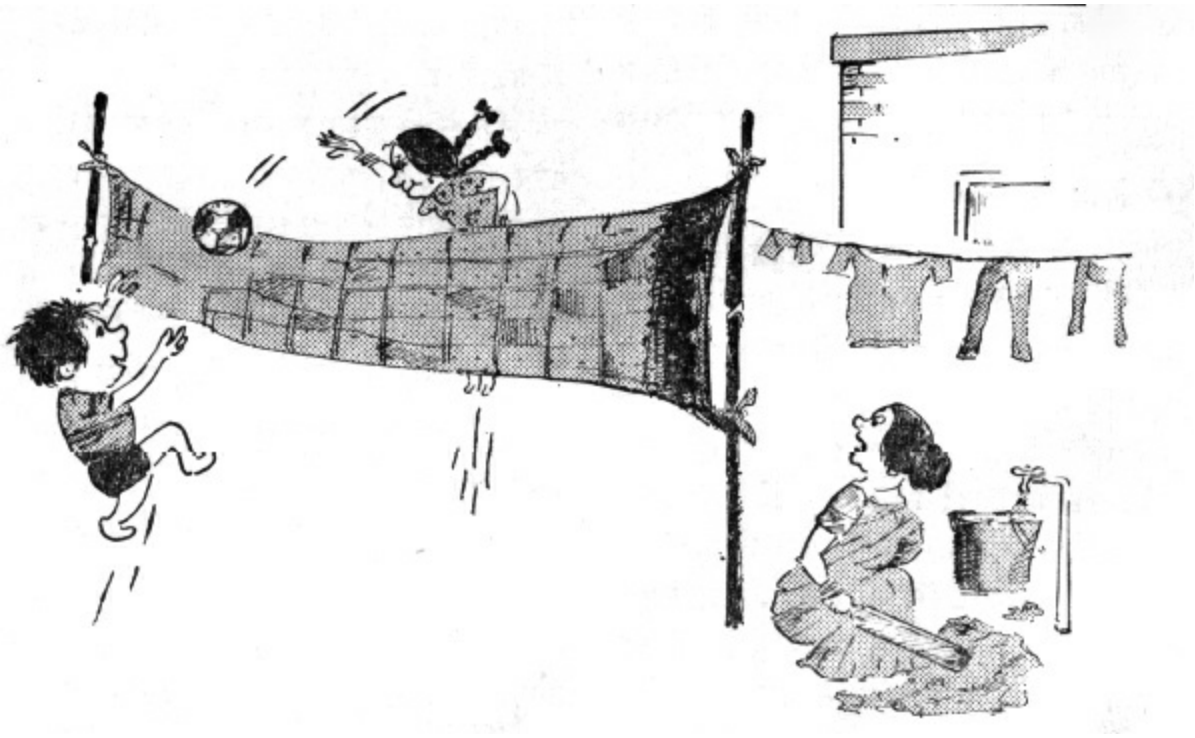
कर्तव्य पर घायल/मृत केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों को अनुदान के रूप में बिहार सरकार के गृह (आरक्षी) विभाग ने एक लाख रुपये देने का निर्णय लिया है।

यह अनुदान केवल उन्हीं कामैयों को दिया जाएगा जो कि इस राज्य में कार्य के दौरान मारे जायेंगे।

यह आदेश 22 सितंबर, 1987 से प्रभावी माना जाएगा।

जनवरी माह में मृत बल के कार्मिक

जनवरी, 1988 में के० रि० पु० बल के निम्न कर्मचारियों की मृत्यु हुई : है। का० वाल्टर गुरिया और जयसिंह (19 बटा०), उपाधीक्षक बी. एस. देव (7 बटा०), ना० जगदीशचन्द (51 बटा०), ला० ना० वी. जी. के० नायर (65 बटा०), कां० करमवीर सिह (6 बटा०), कां० रतनलाल (58 बटा०), कां० विजेंदर सिंह (68 बटा०), है० का० बिरेंदर सिंह (72 वटा०), सहा० कमाडेन्ट एच० एस० राय, (53 बटा० जोकि पंजाब पुलिस में एस० एस० पी० के पद पर नियुक्त थे), कां० हिमामसाब (69 बटा०), है० का० रतन चन्द (आर० टी० सी० 3), उ०नि०ई० जयराज (50 बटा०), सफाई कर्मचारी रामचन्दर ग्रुप केन्द्र, रामपुर, कां० मोहम्मद रफीक (69 बटा०), ना० राम कमल यादव (67 बटा०) और निरीक्षक महासिंह (2 बटा०)।



अगर खेलने की चाह है, तो उसके लिए राह भी है।

भाग—2

आतंक और आंसू

दो ब्रिटिश सैनिकों द्वारा अपने आयरलैंड के अनुभव के आधार पर लिखे गए संस्मरण का दूसरा भाग इस संस्मरण की पहली कड़ी आप सी. आर. पी. एफ. समाचार के दिसम्बर, 1987 अंक में पढ़ चुके हैं।

हम लोगों ने फिर कूच कर दिया। इस बार हम बेलफास्ट से करीब 65 किलोमीटर दक्षिण में सीमा से केवल पाँच मिनट की दूरी पर स्थित काउन्टी डाउन में नेवरी के एक औद्योगिक कस्बे में पहुँचे। हमारी चौकी आधे देहाती और आधे कस्बाई इलाके में स्थित थी। वहां के ग्रामीणों में हमारे प्रति जिज्ञासा पूर्ण मित्र भाव था। वे इस सम्बन्ध में काफी सावधानी बरतते थे। बच्चे हमारी बन्दूकों को छूना चाहते थे। मैं उनके साथ मजाक करता था और कभी कभी उन्हें कुछ सिक्के भी दिया करता था। इस घोर अमानवीय वातावरण में वे बच्चे मुझे मानवता का बोध कराते थे।

यह क्रिसमस के नजदीक का समय था और कुछ लोगों ने हमें ह्विस्की और केक के उपहार दिए। लेकिन सड़क के नीचे से आती कार की आवाज ने उनके बीच में सनसनी फैला दी। "भागो, भागो" अंग्रेज सैनिको का उनके घर में देखा जाना उनकी जान के लिए भारी बन सकता था।

कस्बे की पेट्रोल ड्यूटी बहुत ही गंदी हुआ करती थी। बच्चे अपने मां बाप के कहने पर हम पर पत्थर फेंका करते थे। एक दिन हमें उस समय बेहद आश्चर्य हुआ, जब एक बुढ़िया सड़क पर हमारे लिए चाय और सैंडविच लाई। हमने उसे धन्यवाद दिया ओर चाय के साथ सैंडविच खाने लगे। लेकिन अचानक टैफी, जो एक छोटा मगर मजबूत वैल्स निवासी नौजवान था, चीखने चिल्लाने और गालियाँ बकने लगा।

मार्क लिनैल व राबर्ट कालिस अनु० अनिल गुप्त

"उस कुतिया ने मेरी डबलरोटी में काँच मिला दिए हैं," वह चिल्लाया। उसके मुंह से खून बहने लगा था। उसकी जीभ और मसूडे कट गए थे। सैंडविच में पिसा हुआ कांच मिला दिया गया था। मैं उस घर की ओर भागा, जिस में वह औरत गई थी और बार-बार दरबाजा खटखटाने लगा। दरवाजा अन्दर से बन्द नहीं था, अतः में घर के अन्दर चला गया, लेकिन जैसी कि मुझे उम्मीद थी घर के अन्दर कोई नहीं था।

टैफी वैल्स के गीतों का अच्छा गायक था, लेकिन इस घटना के बाद वह फिर कभी गा नहीं पाया।

आतंकवादी भयानक रूप से अपने शस्त्रों के भंडार को बढ़ाते जा रहे थे। 1971 के एक टूर के दोरान एक शाम मैं एक सशस्त्र सेरेकन कार की कमांड कर रहा था जो नए शस्त्रों के बारे में पता लगाने के लिए जा रही दो लैन्ड रोलर गाड़ियों की सुरक्षा में चल रही थी। एक मोड के पास हम एक बस को निकल जाने देने के लिए थोड़ा रुके।

अचानक शांत वातावरण में आटोमैटेक बन्दूक की गोलेयों की गूंज भर उठी।

हमने गाडियों को दीवार के पीछे ले जाकर पार्क कर दिया। गोलियां एक लैंड रोवर पर लगी थी जहां दो मैरीन (नौ सैनिक) अपनी आँखें पकड़े बैठे थे। और बस में बैठे पाँच यात्रियों को भी गोलियों ने घायल कर दिया था। हमने हमलावरों को देख लिया। वे बन्दूक लिए एक निर्माणाधीन इमारत की आड़ में बैठे थे। जैसा कि बाद में पता चला उनके पास अमरीकन आर्मी की एम 16 आटोमैटिक राइफलें थीं। मेरे तीन आदमियों ने जवाबी फायर किया। जब कि मैंने पाँच आदमियों को लेकर उनको घेरते हुए गोलियां चलाईं। इससे वे बन्दूक धारी व्यक्ति घबरा कर कार की ओर भागे। हमारे द्वारा तत्काल चलाई गई गोलियों के कारण पहले एक आदमी और थोड़ी ही देर में दूसरा आदमी भी घायल हो गया।

“हेलो, सभी स्टेशन”। में रेडियो पर चिल्लाया। “यह एल्फा डेल्टा फाइव है। हथियारबन्द आतंकवादी, सीमा की और दक्षिण को मुड़ती सड़क पर ब्लू फोर्ड कोरटिना में कम से कम दो घायल। रेट ट्रैप ओवर” “रेट ट्रैप” का मतलब था सभी सड़कों को सील कर दिया जाए। लेकिन बन्दूकधारी हमें चकमा देकर निकलने में कामयाब हो गए।

मोड़ पर वापस पहुंचने पर हमने देखा कि बस के यात्री हिस्टीरिया की स्थिति में थे। दो सिपाही सड़क के किनारे पत्थर पर बैठे थे। उनकी आखों पर पट्टियां बन्धी थीं। गोलियों से छलनी हुए लैंड रोवर के शीशे के टुकड़ों ने उनकी आखों को घायल कर दिया था, लेकिन सौभाग्यवश वे अंधे होने से बच गये। लैंड रोवर का ड्राइवर अपने लोहे के टोप पर बने गोलियों के निशानों को अविश्वनीय नजरों से घूर रहा था। कई गोलियों ने उसकी जैकेट को छेद दिया था। स्टियरिंग ह्विल पर झुक जाने के कारण उसकी जान बच गयी थी। एक गोली उसके बैरेट टोपी को छेदती हुई उसके सिर के केवल एक सेंटीमीटर के फासले से गुजरी थी।

संस्मरण

ये रायल मैरीन्स (शाही सैनिक) अपनी छुट्टियों के प्रति बहुत उत्सुक रहते थे। एक हफ्ते का अवकाश अलस्टर के हर टूर से तत्काल पहले, दो हफ्ते टूर के बाद तथा चार दिन बीच में आराम तथा मनोरंजन के लिए मिलते थे। इन छुट्टियों में हमें पूरे ब्रिटेन में कहीं भी जाने के लिए मुफ्त हवाई यात्रा की सुविधा रहती थी। हम इन छुट्टियों का उसी तरह इन्तजार करते थे, जिस प्रकार छोटे बच्चे क्रिसमस की छुट्टियों का किया करते हैं, हालांकि कई बार हमारी समझ में नहीं आता था कि इन छुट्टियों का क्या करें। पर वापस जाने के बाद मैं लोगों से आयरलैंड के बारे में कम ही बात किया करता था। ब्रिटेन में नागरिक इस बात को समझ नहीं पाते थे कि आयरिश समुन्द्र से कुछ ही किलोमीटर दूर वियतनाम की ही तरह हम आयरलैंड में एक युद्ध लड़ रहे थे।

“मैं अभी आयरलैंड से वापस आ रहा हूं,” मैं अपने दोस्तों से कहता था।

“अच्छा ? तो तुम वहाँ शराब पीने कहाँ जाते थे ?”

अब उन लोगों को क्या बताता कि हम वहाँ बार में या डाँस करने या सिनेमा देखने नहीं जाते। और न ही लड़कियों के साथ बेलफास्ट या बाहर के कस्बों में जाते। हम कभी अपने दरवाजे के बाहर अपनी फ्लैक जैकेट और बन्दूक के बिना नहीं निकलते। और ये कि कितने ही ब्रिटिश सैनिक दर्जनों की तादाद में या तो मारे गए या गम्भीर रूप से घायल हुए।

छुट्टियों के शुरू के कुछ दिन हम बेहद चिड़चिड़े से रहते थे। मेरी कोई विशेष महिला मित्र नहीं थी, मैंने अल्स्टर के तनाव से कई शादियां टूटते देखी थीं।

मैं काफी सारा समय सोने या फिर गाने सुनने और बार में बिताया करता था। एक बार, एक बहुत ही कठिन दौरे के बाद हम लोगों का एक दल बेहद तनाव ग्रस्त होकर घर लौटा। हमने दो बजरे किराए पर लिए और खुद चलाते हुए ब्रिटिश कैनाल से निकले। हम सारी छुट्टियाँ बीयर पीते रहे। हम नहीं चाहते थे कि हम अपने तनावपूर्ण मूड को दूसरों के सामने जाहिर करें।

जुलाई 1972 में हम एक और विशेष दौरे के लिए बेलफास्ट वापस आ गए जोकि ब्रिटिश सैनिकों के लिए वार्षिक कार्य बन चुका था और वह कार्य था मार्चिंग सीजन के दौरान शांति व्यवस्था बनाए रखना। 12 जुलाई की ओरंज डे परेड गर्मियों का सबसे बड़ा मार्च होता है, जिसमें प्रोटेंस्टेट प्रर्दशनकारी कैथोलिक आबादी की गलियों से गुजरते हैं। आमतौर पर इस अवसर पर दंगे भड़क उठते हैं।

21 जुलाई को जिसे बाद में “खूनी शुक्रवार” के रूप में याद किया जाता है हम कुछ मकानों के उपर बनी ओ० पी० (आवजर्वेशन पोस्ट) पर चाय के लिए रुके और वहां से शहर को देखने लगे। धुएं की एक काली चादर आकाश पर छा रही थी। हम वहाँ से टाऊन हाल तथा 13 मंजिले यूरोपा होटल को देख सकते थे, जो पिछले 10 सालों में 29 बम विस्फोटों से बुरी तरह ध्वस्त हो चुका था।

ये सभी जानी पहचानी इमारतें, उसी तरह खड़ी थीं, लेकिन अपने खंडित स्वरूपों के साथ, क्योंकि पूरा शहर आग में जल कर झुलस चुका था। हर नए विस्फोट के साथ भयंकर लपटें उठती थी और अगल बगल के अन्धेरे को हटा देती। उनसे उठे धुएं के कारण शहर के ऊपर तनी काली चादर और घनी होती जाती थी। केवल एक घन्टे के अन्दर ही 20 बमों के बड़े विस्फोट हुए। पूरे शहर से काले घने धुएं के बादल उठने लगे।

समय समय पर हम अपने ही पेट्रोल क्षेत्र में आने वाली छः निरीक्षण चौकियों में से एक पर 48 घन्टे के लिए तैनात रहते। हमारा यह क्षेत्र लगभग ढाई वर्ग किलोमीटर क्षेत्र का एक जिला था। निरीक्षण चौकियां फ्लैट्स की छतों पर या पुराने घरों में बनी हुई थी। मुझे खास तौर से एक बैठक की याद हैं, यह एक पुराना शोक स्थल था, जिसमें चार मीटर ऊंचे एंटी राकेट मेस लगे थे तथा जिसकी दीवारें आधा मीटर मोटी थीं।

निरीक्षण चौकी के अंधेरे कमरे में जहाँ की हमें कोई आतंकवादी देख नहीं सकता

था, हम इंफ्रा रेड टागों, रात में उपयोग में आने वाली टेलेस्कोपिक बन्दूकों के साथ काम करते थे। हमारा उद्देश्य था कि इस आस पास के वातावरण को वहाँ के नागरिकों से ज्यादा जानें। हमारे पास अल्स्टर के सबसे अधिक तलाश वाले व्यक्तियों की तस्वीरें थी। तलाश वाले या चोरी गए वाहनों के नम्बर थे। हम हर घर को उनके नम्बर से जानते थे, उसमें कौन रहता है, कौन अपनी पत्नि के प्रति वफादार नहीं है, किन की कार बाहर की है। यदि कोई अजनवी कार दिखाई दे जाती तो हम रेडियो द्वारा तत्काल केन्द्रीय कम्प्यूटर से जानकारी प्राप्त करते थे।

हम हर दिखाई देने वाली चीज का अपनी निरीक्षण चोकियों पर उपलब्ध फोटोग्राफों और जानकारियों से मिलान करते थे। सामान्य से भिन्न दिखाई देने वाली हर चीज का। अलार्म घन्टी की जरा सी आवाज हमें तत्काल अपनी पोजीशन की ओर दौड़ा देती थी, हमारे साथ-साथ पिछले दरवाजे पर लगी मशीनगन भी हरकत में आ जाती थी।

एक शाम मैं निरीक्षण कक्ष में तैनात टैफी के लिए काफी ले जा रहा था।

“सब शान्त है, टैफी ?”

“कोई समस्या नहीं है। कुछ पियक्कड हैं। 31 ए के पैडी का अपनी पत्नि के साथ फिर झगड़ा हुआ।”

नीचे उत्तर कर मैंने डिनर शुरू किया। मेरे अन्य साथी मोनोपली खेल रहे थे। अचानक, अलार्म बजा, ऊपर से टैफी चिल्लाया “सड़क पर बाधायें। न्यू लाज रोड और एडलिंगहैम स्ट्रीट के जक्शन पर।”

वहाँ एक बड़ी भीड़ एकत्र हो गई थी, जो समस्या पैदा कर रही थी। भीड़ ने सड़क को एक डबल रोटी ले जाने वाली गाड़ी तथा कोयले के ट्रक से अवरुद्ध कर दिया था। इन दोनों ही गाड़ियों का अपहरण किया गया था। जल्दी ही दोनों वाहन आग की लपटों से घिर गये। जब दोनों गाड़ियों की ईंधन की टंकियों से विस्फोट हुये तो भीड़ खुशी से चिल्ला उठी।

हमें अपने स्थान से बाहर निकालने का यह एक प्रयत्न था, जिससे कि छिपे हुए बन्दूकधारी स्नाइपर हमें मार सकें। अनिच्छा से हमारे कंपनी कमान्डर ने तत्काल 45 आदमियों को आगे भेजा। हम उन्हें दिवारों तथा दरवाजों की आड़ में आगे बढ़ते देखते रहे। 1970 की तरह वे अब सीधे लाइनों में आगे नहीं बढ़ते थे। वे अपनी बेटनगन से फायर करते जा रहे थे। बेटनगन से (जो छोटी शाट गन की तरह ही थी) 12 सेन्टीमीटर व्यास की रबड़ या प्लास्टिक की गोलियाँ छोड़ी जाती थीं। दंगों के समय यह एक कारगर हथियार था, क्योकि यह घबराहट पैदा करती हैं और जब तक इसे नजदीक से न छोड़ा जाए या यह किसी नाजुक हिस्से पर न लगे इससे कोई मारा नहीं जाता।

भीड़ पत्थर और पेट्रोल बम फेंकती हुई धीरे धीरे पीछे हटने लगी। अचानक एक सीटी बजी। जादू की तरह भीड़ में एक आदमी प्रकट हुआ जोकि आटोमैटिक बन्दूक से लैस था और एक गाड़ी में सवार था। हमारे सैनिकों ने आड़ ली और गाड़ी के वहाँ से

चलने के बाद राइफलों के बटों से भीड़ को धकेलते हुए गिरफ्तारियां शुरू हुइ। अगले ओ० पी० के सैनिकों ने उस बन्दूकधारी को मार गिराया। उसके बाद इलाके में निस्तब्धता छा गई। अक्सर ओ० पी० ड्यूटी के बाद हम सड़कों पर निकल आते थे। पूरा इलाका छोटी-छोटी दुर्गम गलियों वाला था, जिनमें घुसते भी डर प्रतीत होता था। घरों की छतें आपस में मिलीं थीं, गलियों के अन्दर ही अन्दर से रास्ते बने थे। एक आतंकवादी सड़क के बिलकूल शुरू में एक घर में अदृश्य होकर सड़क के दूसरी प्रोर बिलकुल अन्तिम घर से निकल जाता।

क्रमशः

(© 1983 दि रिडर्स डाइजेस्ट एसोसिएशन (कनाडा) लिमिटेड की अनुमति से मुद्रित।)

रजि० नं० 47167/87

स्वर्णिम है इतिहास हमारा

(रचयिता-मुरारी लाल 'सत्य', पुलिस उपाधीक्षक, बनतलाव)

ऐसा, 'बल' है यह भारत में, करते जिसका सब सम्मान ।
शान्ति - व्यवस्था की वेदी पर, अंकित है बल का बलिदान ।
सेवा-निष्ठा से प्रेरित - यह, सेवा-निष्ठा 'बल' का प्राण ।
राष्ट्र-समर्पित यह दृढ़ बल है, जन हित का करता कल्याण।
अन्य अनेक यहाँ पर बल हैं, के. रि. पु. बल है सब से न्यारा।
स्वर्णिम है इतिहास हमारा। ॥1॥

परम्परायें हैं गौरवमय, 'सेवा-भक्ति' व बल का ध्यान ।
उच्च कोटि का है अनुशासन, खेल भावना यहाँ प्रधान ।
दृढ़ निष्ठा इसकी ध्रुव जैसी, कुशल दक्षता ध्वजा निशान ।
क्षुद्र भावना स्वार्थ तत्व का, करता है यह सही निदान ।
राष्ट्र सुरक्षा संकेतों पर, प्राण सहर्ष सदा-न्यौछारा ।
स्वर्णिम है इतिहास हमारा। ॥ 2 ॥

यहाँ प्रशिक्षण है अतिउत्तम, व्यवहारिकता का है सब ज्ञान।
स्पष्ट रूप में करते परिणित, बढ़ती जिससे बल की शान।
जन-जन में है भाई चारा, सर्व धर्म सुरभित उद्यान।
सर्वोपरि है राष्ट्रभावना, प्रगति, दया, सहयोग दुलारा।
स्वर्णिम है इतिहास हमारा ॥3॥

सदा निषट निष्पक्षभावना, दृढ़ता बल को करे प्रदान।
विषम परिस्थिति में भी संयम, उच्च मनोबल जीवन दान।
संचालन गति तीव्र अधिक है, अभिलेखों में रहा प्रमाण।
ऊँचा मान सदा इस बल का, धैर्यरूप जनता का प्राण।
'सत्य' कर रहा भाव समर्पित, उज्ज्वल सदा विकास हमारा।
स्वर्णिम है इतिहास हमारा ॥ 4 ॥

मनोरंजन

"क्या यह सच है कि केले के साथ छिलका खाने से हाथ-पैर स्वस्थ रह सकते है।"

"जी हां, मगर खाने वाले के नहीं, रास्ते पर चलने वालों के।"

पत्नी ने अपने हॉकी के खिलाड़ी पति - को सोते में झकझोरते हुए कहा, "अजी सुनते हो, राशन की दुकान पर राशन आ गया।"

"पेनल्टी कार्नर लगाओ जाकर।" पति ने जवाब दिया।

एक लेखक ने अपने परिचित को बताया, "मेरी नई पुस्तक का नाम है, मैं और मेरी पत्नी"।

"तब तो जरूर आप ने इस बार कोई युद्ध कथा लिखी है।" परिचित ने दृढ़ विश्वास के साथ कहा।

मुख्य सम्पादक : एच०एस० सेठी। **सम्पादक :** एम०पी० नथैनियल तथा अनिल गुप्ता।

मुद्रक : सी०आर०पी०एफ० प्रेस, झड़ौदा कलाँ, नई दिल्ली-110072

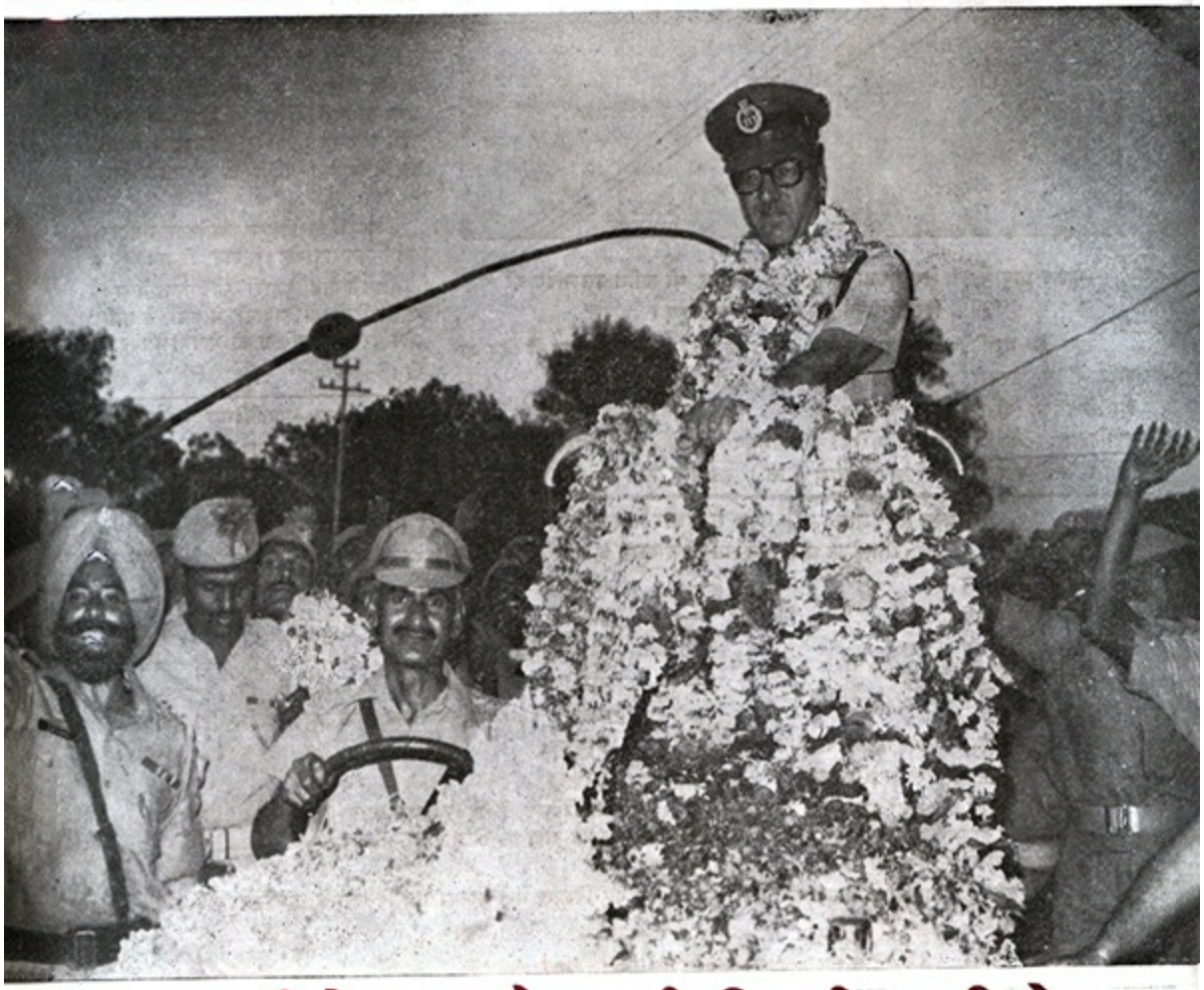
मुद्रक तथा प्रकाशक : महानिदेशक, के०रि०पु०बल, ब्लाक-1, सी०जी०ओ० काम्पलेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से एच०एस० सेठी।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की मासिक पत्रिका

सीआरपीएफ समाचार

खंड II अंक 2

मूल्य—1.60 रुपए 31 मार्च, 1988 11 चैत्र, शक संवत् 1910



महानिदेशक महोदय की विदाई पर विशेष

अलविदा महानिदेशक



माऊंट आबू में आंतरिक सुरक्षा अकादमी के निदेशक, श्री सतीश दत्त पांडेय को विदाई से पूर्व गुलदस्ता भेंट करते हुए।

बल के महानिदेशक श्री सतीश दत्त पांडेय ने 18 फरवरी, 1988 को नीमच ग्रुप केन्द्र का दौरा किया । नीमच में महानिदेशक स्टेशन अस्पताल के मरीजों से मिले। उसके बाद उन्होंने परिवार कल्याण केन्द्र का दौरा किया और केन्द्र में किए जा रहे कार्यों की जानकारी ली।

महानिदेशक महोदय ने उनके विदाई सम्मान में आयोजित एक परेड की सलामी ली। इस मौके पर उपस्थित समुदाय को संबोधित करते हुए महानिदेशक ने अधिकारियों व जवानों द्वारा की गई इस व्यवस्थित परेड के प्रति प्रसन्नता जाहिर की।

उन्होने कहा कि इस बल से उन्हें काफी सम्मान प्राप्त हुआ है। उनके नाम को एक सच्चे सिपाही की सूची में रखा जाए यही उनके लिए गौरव की बात होगी।

महानिदेशक महोदय ने त्रेगंजा पार्क में स्थित शहीद स्मारक पर अपनी श्रद्धांजलि भी अर्पित की।

तद्पश्चात उन्होंने लगभग 5,000 जवानों और अधिकारियों को एक सैनिक सम्मेलन में सम्बोधित किया। उन्होंने कहा कि 31 मार्च को सेवा निवृत्त होने तक वह बल के नीचे के तबके के कर्मचारियों से ले कर उच्च अधिकारियों तक के हित कार्य करते रहेंगे और यदि सेवा निवृत्ति के बाद भी सेवाओं की आवश्यकता पड़ेगी तो वे उसके लिए भी तत्पर रहेंगे।

बाद में उन्होंने एक व्यक्तिगत जलपान एवं मिलन समारोह में भाग लिया।

इसके बाद हजारों की संख्या में खड़े अधिकारियों एवं जवानों ने फूलों से सजी जीप पर अपने मुखिया को भावभीनी विदाई दी।

पत्रिका सी० आर० पी० एफ० समाचार के स्वामित्व एवं प्रकाशन से सम्बन्धित अन्य विवरण

(रजिस्ट्रेशन आफ न्यूजपेपर्स सेंट्रल रूलस् के फार्म IV के नियम 8 के अधीन)

1. प्रकाशन का स्थान	—नई दिल्ली
2. प्रकाशन की अवधि	—वर्ष में आठ बार
3. प्रिंटर का नाम	—एच. एस. सेठी
4. नागरिकता	—भारतीय
5. पता	—ब्लाक-I, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड़, नई दिल्ली-110003
6. प्रकाशक का नाम, नागरिकता और पता	—उपर्युक्त
7. संपादक का नाम, नागरिकता और पता	—उपर्युक्त
8. उन लोगों के नाम व पते जो अखबार के मालिक या हिस्सेदार हों या जिनके पास कुल पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के शेयर हों।	—महानिदेशक, के०रि०पु० बल, ब्लाक-I, सी. जी. ओ. काम्पलेक्स, लोधी रोड़, नई दिल्ली-110003

मैं एच० एस० सेठी एतद द्वारा घोषणा करता हूं कि ऊपर दिए गए विवरण मेरी जानकारी व विश्वास के आधार पर पूर्ण सत्य है :

ह०
एच० एस० सेठी
प्रकाशक के हस्ताक्षर

31 मार्च, 1988

महानिदेशालय में हिंदी कार्यशाला

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, महानिदेशालय में उपनिदेशक एवं सहायक निदेशक स्तर की प्रथम हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्घाटन 22 फरवरी, 1988 को बल के महानिदेशक महोदय द्वारा किया गया । यह कार्यशाला चार दिन तक चली। उद्घाटन समारोह के अवसर पर महानिदेशालय के अपर महानिदेशक श्री पी० जी० हलर्नकर सहित सभी उच्च अधिकारी उपस्थित थे। महानिदेशक महोदय ने कार्यशाला की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए आशा व्यक्त की कि इससे वरिष्ठ अधिकारियों के मन में हिन्दी में कार्य करने की झिझक दूर होगी तथा उन के मन में इसके प्रति विश्वास एवं जागृति पैदा होगी।

कार्यशाला के दौरान अधिकारियों को राजभाषा नीति, राजभाषा संबंधी प्रादेश, राजभाषा नियम, 1976 तथा 1963 अधिनियम की व्यवस्थाओं की जानकारी दी गई, साथ ही साथ वार्षिक कार्यक्रम के लक्ष्यों को स्पष्ट किया गया। अधिकारियों द्वारा प्रयोग किए जाने वाले वाक्यांश, सामान्य टिप्पणियां तथा मार्जिनल नोटिंग, भारत सरकार के कार्यालयों के नाम पदनाम तथा हिन्दी वर्तनी संबंधी जानकारी सभी अधिकारियों को दी गई । कार्यशाला में ई० डी० पी० के संयुक्त सहायक निदेशक श्री विकास शरण तथा हिन्दी अधिकारी श्री प्रेमचन्द्र धस्माना ने पाठ पढ़ाए । कार्यशाला के समापन के अवसर पर अपर महानिदेशक महोदय ने अधिकारियों को संबोधित करते हुए आशा व्यक्त की कि सभी अधिकारी राजभाषा में दी गई व्यवस्थाओं का गंभीरतापूर्वक पालन करेंगें ।

“याद रहेगा बल !”

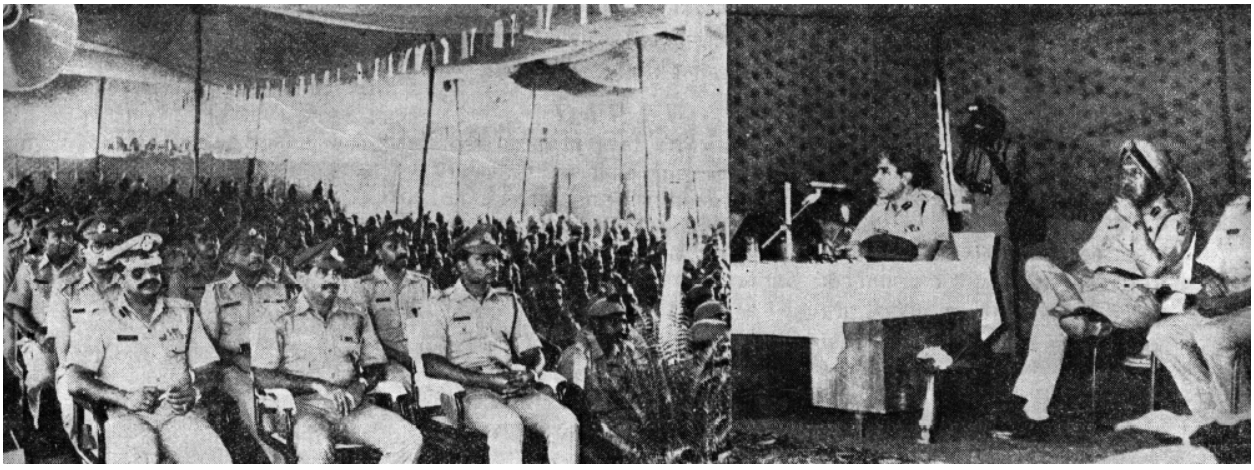
ग्रुप केन्द्र पल्लीपुरम एवं आर.टी. सी-3 में अपने दौरे के दौरान के० रि० पु० बल के महानिदेशक महोदय ने 15 फरवरी को एक सैनिक सम्मेलन को सम्बोधित किया।

सम्मेलन के दौरान 8 उच्चाधिकारी, 40 अराजपत्रित अधिकारी तथा 360 अन्य कार्मिक उपस्थित थे।

जवानों के सम्मुख अपने भाषण में महानिदेशक महोदय ने बल की महान परम्परा और उसकी उपलब्धियों का जिक्र किया। उन्होंने नए रंगरूटों से कहा कि उन्हें बल की परंपराओं को याद रखना चाहिए। उन्होंने कहा कि हमारी कुछ कमजोरियां हैं, लेकिन इसके बावजूद हिन्दुस्तान भर में इतना साफ-सुथरा और ईमानदार दूसरा कोई फोर्स नहीं है। उन्होंने ध्यान दिलाया कि आजकल देश में खतरे के जो बहुत गंभीर संकेत मिल रहे हैं, खास कर अलगाव व बंटवार की जो प्रवृत्तियां प्रतिदिन दिखाई दे रही हैं उनकी तरफ ध्यान देना आवश्यक है, क्योंकि सी.आर.पी. का सारा संगठन देश में

शांति व व्यवस्था बनाए रखने के लिए ही है ।

अन्त में महानिदेशक महोदय ने कहा कि बल से उन्हें जो सहयोग और प्यार मिला है वह उन्हें सदैव याद रहेगा।



ग्रुप केन्द्र पल्लीपुरम में जवानों व अधिकारियों को संबोधित करते महानिदेशक

पंजाब से

तीन डकैतियों का अभियुक्त गिरफ्तार

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 48 बटालियन के जवानों द्वारा 30 जनवरी, 1988 को तीन डकैतियों के एक अभियुक्त परमजीत सिंह को गिरफ्तार कर लिया गया।

आतंकवादियों की सूचना प्राप्त होने पर तरन तारन स्थित 48 बटालियन की एक टुकड़ी तथा स्थानीय पुलिस ने बुगा और गोरखा गांव के बीच एक कच्चे रास्ते पर एक नाका लगाया।

दोपहर लगभग 1.30 बजे खाकी कपड़ों में नाका पार्टी के पास स्थित एक ट्यूब वैल की ओर से एक व्यक्ति आता दिखाई दिया । पार्टी द्वारा जब उसे रुकने के लिए कहा गया तो उसने कहा कि वह होम गार्डस् से संबंध रखता है, उसकी तलाशी लिए जाने पर उससे एक .303 देशी पिस्तौल तथा .303 के चार राउंड बरामद हुए।

उसे गिरफ्तार कर लिया गया। बाद में पूछताछ के दौरान इस व्यक्ति ने बताया कि उसने अब तक तीन डकैतियों में 35,000 रुपए लूटे हैं, उसका संबंध प्रगट सिंह तथा हरी सिंह के दल से है।

बम बनाने की सामग्री के साथ आतंकवादी पकड़ा

52 बटालियन की 'ई' कम्पनी द्वारा 17 फरवरी, 1988 की लुधियाना के नूरपुर गांव

में पैट्रोल ड्यूटी के दौरान सुखविंदर सिंह उफ पेंटा नाम के उग्रवादी को गिरफ्तार किया गया । उक्त उग्रवादी स्कूटर पर सवार था। पैट्रोल पार्टी को देखते ही उसने भागने की कोशिश की, लेकिन बल के जवानों ने तत्परता से उसे गिरफ्तार कर लिया। उसके पास से 65 बोतल पिकरिक एसिड, 2 टिन अल्युमिनियम नाईट्रेट, 3 टिन अल्युमिनियम पाउडर, 5 किलो चारकोल पाउडर, पांच जोड़ी दस्ताने तथा एक स्केल बरामद किया गया।

पूछताछ के दौरान उससे ज्ञात हुआ कि वह कई आतंकवादी गतिविधियों में शामिल रहा है। तथा उक्त सामग्री वह अपने तथा अपने साथियों के लिए बम बनाने के लिए ले जा रहा था। वह स्वयं बब्बर खालसाः, का सक्रिय सदस्य है। उक्त सामग्री बम्बई से लाई गई थी तथा उस से रेलवे ट्रेक्स, सरकारी इमारतों आदि को उड़ाने के लिए बम बनने थे। उसने बताया कि उसे । लुधियाना कोर्ट काम्पलैक्स, तथा अन्य भीड़ भरे इलाकों में बम फिट करने के लिए नियुक्त किया गया था।

उक्त आतंकवादी की गिरफ्तारी पर स्थानीय प्रशासन व प्रेस ने बल के जवानों की काफी प्रशंसा की है।

संदिग्ध आतंकवादी गिरफ्तार

लुधियाना स्थित 52 बटालियन की 'ए' कम्पनी के एक सेक्शन ने 16 फरवरी, 1988 को इंस्पेक्टर जे० एस० धूत के निर्देशन में सरबनगर नए पुल पर नाकाबंदी की। इस नाकाबंदी के दौरान उन्होंने एक संदिग्ध व्यक्ति कुलदीप पाखरी को गिरफ्तार कर उससे एक .315 रिवाल्वर तथा 5 राउंड बरामद किए। उससे पूछताछ के दौरान ज्ञात हुआ कि वह बब्बर खालसा का सक्रिय सदस्य था तथा कई अपराधों में उस का हाथ था तथा आगे भी उसकी योजना लुधियाना में कई गंभीर अपराध करने की थी। गिरफ्तारी से पहले उसका मुख्य उद्देश्य पुलिस अधिकारियों, के० रि० पु० बल पैट्रोल तथा महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों को अपना निशाना बनाना था।

बम पकड़ा

19 फरवरी, 1988 को जब 32 बटालियन की 'सी' कंपनी का एक सेक्शन जालंधर अदालत में सुरक्षा ड्यूटी पर तैनात था, तो उसके जवानों को अदालत के अहाते में खड़ी एक साइकिल में छिपा हुआ एक बम दिखाई दिया। उन्होंने तत्काल सारे क्षेत्र को घेर लिया। बाद में सेना व इस युनिट के दो कार्मिकों द्वारा बम को निष्क्रिय कर दिया गया।

एक व्यक्ति गिरफ्तार

48 बटालियन के जवानों द्वारा एक नाकेबंदी के दौरान एक व्यक्ति को गिरफ्तार

कर उससे हथियार तथा कारतूस बरामद किए।

तरनतारन जिले के ढंड, जगतपुरा, बसेरका तथा मल्लुवाल क्षेत्र में आतंकवादी गतिविधियों की सूचना प्राप्त होने पर 48 बटालियन के सहायक कमांडेंट (आपरेशन) द्वारा 25 फरवरी को एक नाका लगाया गया। स्थानीय पुलिस के साथ यह नाका, मल्लुवाल तथा ढंड के बीच एक कच्चे रास्ते पर एक मोड़ के पास लगाया गया। सायं 6 बजे के लगभग कच्चे रास्ते पर एक व्यक्ति आता हुआ दिखाई दिया। नजदीक आने पर उसे पार्टी द्वारा रुकने के लिए कहा गया। वह व्यक्ति खेतों की तरफ भागने लगा। सहायक कमांडेंट ने तत्काल उसका पीछा किया और उसे पकड़ लिया। तलाशी लेने पर उस व्यक्ति से खाद का एक प्लास्टिक का थैला प्राप्त हुआ, जिसमें एक डी. बी. बी. एल. गन, गन कट बैरल तथा 3 कारतूसों सहित बट पाया गया।

बाद में पूछताछ करने पर ज्ञात हुआ कि उस व्यक्ति का नाम चरनसिंह था। उसका कहना था कि किसी अनजान व्यक्ति द्वारा उस पर इन हथियारों को गांव के एक फार्म हाऊस तक ले जाने के लिए दबाव डाला गया था।

एक जवान की मृत्यु

तरनतारन जिले के एक गाँव में आतंकवादियों से हुई एक मुठभेड़ में 48 बटालियन के०रि०पु० बल के एक जवान की मृत्यु हो गई थी तथा दो जवान मामूली रूप से घायल हुए।

48 बटालियन की 'बी' कम्पनी का एक सेक्शन 2 मार्च, 1988 को उप निरीक्षक हरी सिंह के नेतृत्व में तरनतारन जिले के एक इलाके में पैट्रोलिंग ड्यूटी पर था। पार्टी दो जीपों में सवार थी। गागुआ बुआ गाँव का दौरा करने के बाद पार्टी जब सिसीरीवाल की तरफ मुड़ रही थी, तो आतंकवादियों ने यूकेलिप्टस के पेड़ों के पीछे से पार्टी पर घात लगाई। आतंकवादियों द्वारा किए गए फायर से दूसरी जीप में बैठे कांस्टेबल केसीलाल के चेहरे पर गोलियाँ लगी, और अस्पताल ले जाते हुये उनकी मृत्यु हो गई।

लांस नायक धरमसिंह को कन्धे पर तथा कांस्टेबल/ड्राइवर बालकृष्ण के हाथ पर घाव हुए। दोनों को तत्काल चिकित्सा सहायता दी गई। दोनों चोटें मामूली थीं। पार्टी ने तत्काल वाहनों से उतर कर पोजिशन ले ली और आतंकवादियों को ललकारा मुठभेड़ करीब 30 मिनट तक चली। सूचना प्राप्त होने पर कमांडेंट तथा सहा० कमांडेंट (आपरेशन) तत्काल घटनास्थल पर पहुंच गए।

उप महानिरीक्षक भी घटना स्थल पर पहुंच गये। पूरे इलाके की छानबीन और आतंकवादियों के छिपने के संभावित स्थानों पर छापामारी की गई। लेकिन किसी आतंकवादी को गिरफ्तार नहीं किया जा सका।

दो संदिग्ध व्यक्ति गिरफ्तार

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों द्वारा तरनतारन जिले से दो तलाशशुदा आतंकवादियों को गिरफ्तार किया गया । इन आतंकवादियों से दो एच-ई-36 प्राइम्ड ग्रेनेड भी बरामद हुये।

पंजाब के तरनतारन जिले के अलाउद्दीन पुर, चुटाला और रसूलपुर क्षेत्र से आतंकवादी गतिविधियों के समाचार प्राप्त होने पर 48 बटालियन के कमांडैंट ने अपने सहयोगियों और स्थानीय पुलिस की मदद से 25 जनवरी, 1988 को प्रातः लगभग 3.30 बजे रसूलपुर कैसल पुर पर नाका लगाया। लगभग 5.30 बजे दो संदिग्ध व्यक्ति पुल की तरफ आते हुए दिखाई दिए। सहा० कमांडैंट (आपरेशन) द्वारा उन्हें रुकने के लिए कहा गया, लेकिन रुकने के स्थान पर वह दो विपरीत दिशाओं में भागने लगे। दल द्वारा खेतों से होते हुए दोनों का पीछा किया गया और उन्हें पकड़ लिया गया । उन दोनों के पास से दो एच ई-36 प्राइम्ड ग्रेनेड प्राप्त हुए । बाद में पूछतांछ के दौरान पता चला कि वे जसबीर सिंह उर्फ जस्सा तथा लखविंदर सिंह थे। दोनों ही तलाशशुदा आतंकवादी हैं।

बल के जवानों द्वारा रक्तदान

6 मार्च, 1988 को तरनतारन जिले के मालूवाल पोस्ट के अधीन आने वाले पादरी कलाँ गांव में आतंकवादियों द्वारा लगाई गई एक घात के कारण पंजाब पुलिस का एक कांस्टेबल मारा गया तथा दो कांस्टेबल घायल हो गये । बल के जवानों व अधिकारियों द्वारा तत्काल सारे क्षेत्र की छान बीन की गई तथा बल के कुछ जवानों ने घायल सैनिकों को अपना खून भी दिया।

घायल आतंकवादी को उठा ले गए

एक नाकाबंदी के दौरान 48 बटालियन के जवानों की आतंकवादियों से हुई एक मुठभेड़ में एक आतंकवादी घायल हो गया जिसे उसके साथी अंधेरे का फायदा उठाते हुए अपने साथ ले भागे ।

पंजाब के तरन तारन जिले के कालेर गांव में 6 मार्च को 48 बटालियन की 'सी' कंपनी द्वारा एक नाका लगाया गया। रात लगभग 11 बजे कुछ संदिग्ध व्यक्ति एम्बुस पार्टी की तरफ आते हुए दिखाई दिए । पार्टी द्वारा जब उन्हें रुकने के लिए कहा गया, तो उन्होंने रुकने की जगह बल के कार्मिकों पर फायर कर दिया और गेहूं के खेतों की ओर भागने लगे। आत्म रक्षा में पार्टी ने भी फायर किया। सूचना मिलने पर 48 बटालियन के कमांडेंट और सहायक कमांडेंट (आपरेशन) तत्काल अपने बल के साथ घटनास्थल पर पहुंच गए और इलाके की छानबीन का कार्य शुरू हो गया। छान-बीन के दौरान पार्टी को कुछ खून से सने कपड़े प्राप्त हुए, जिनसे ऐसा प्रतीत होता है कि

कोइ आतंकवादी गोलियों से घायल हो गया था, जिसे अंधेरे का फायदा उठाते हुए उसके साथी अपने साथ लेकर भाग गए।

परिवार कल्याण आपरेशन कराए

पटियाला स्थित 53 बटालियन के हैड क्वार्टर में प्रधान मंत्री के 20 सूत्री कार्यक्रम के तहत 1 फरवरी को एक परिवार नियोजन कैंप का आयोजन किया गया। इस शिविर में इस यूनिट के 6 लोगों ने परिवार नियोजन के आपरेशन करवाए। ये आपरेशन पटियाला की सरकारी डिस्पैंसरी के डाक्टरों की एक टीम ने किए।

हास परिहास

एक सज्जन मच्छरों से परेशान होकर अपनी खाट के नीचे सो गए। थोड़ी देर के बाद खाट के नीचे कुछ जुगनु मंडराने लगे। यह देखकर वह सज्जन हताशा से बोले, "ये मच्छर भी बड़े चालाक हैं, मैं खाट पर नहीं मिला तो टार्च लेकर खाट के नीचे आ गए।"

दो व्यक्ति परस्पर बात कर रहे थे।

"गवे के कितने सींग होते हैं ?"

"दो।"

"मगर आपके तो एक भी नहीं हैं।"

एक पर्यटक भारत के एक छोटे नगर में एक होटल में गया और एक अंडे व एक चाय का आर्डर दिया। बाद में जब उसे बिल दिया गया, तो उसमें लिखा था,—15 रुपए। पर्यटक को बड़ी हैरानी हुई, उसने होटल के मालिक से पूछा "क्या आपके यहां अंडे बड़ी मुश्किल से मिलते हैं।"

"जी नहीं, मगर टूरिस्ट जरा मुश्किल से मिलते हैं," होटल मालिक का जवाब था।

प्रेमी प्रेमिका जब पति पत्नी बन गए तो एक दिन पत्नी ने शिकायत की, "प्रिय | अब तो तुम मेरे लिये कोई उपहार ही नहीं लाते।"

"अब उसकी क्या जरूरत है, उससे बचने के लिये ही तो मैंने तुम से शादी की है" पति का जवाब था।

"तुम मेहमानों की इतनी खातिर क्यों करती हो।" पति ने जिज्ञासा प्रकट की।

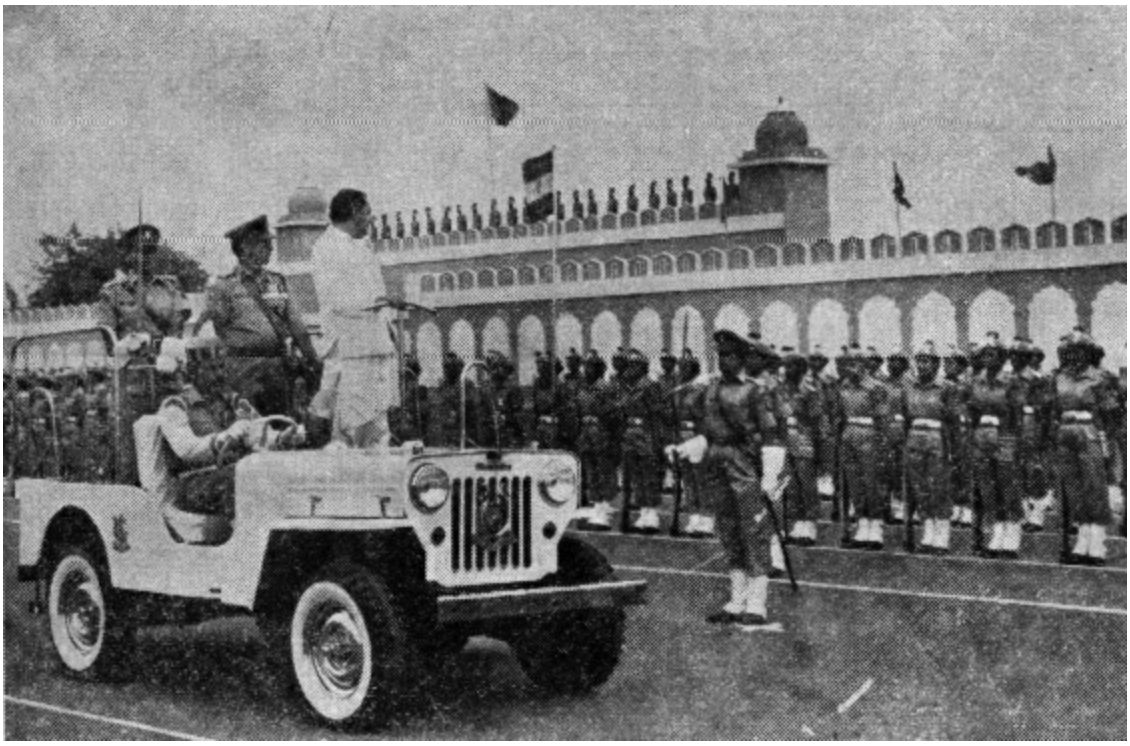
"क्यों न करूं, वे तुम्हारी तरह मेरे खाने की बुराई तो नहीं करते," पत्नी ने तुरंत जबाब दिया।

शादी के बाद एक लड़की की विदाई हो रही थी, उपस्थितों में कन्या की बजाए कन्या की एक सहेली रो रही थी। पड़ोस में रहने वाली एक स्त्री ने बगल में खड़ी दूसरी स्त्री से पूछा, "यह क्यों रो रही है ? इसकी तो विदाई नहीं हो रही है।"

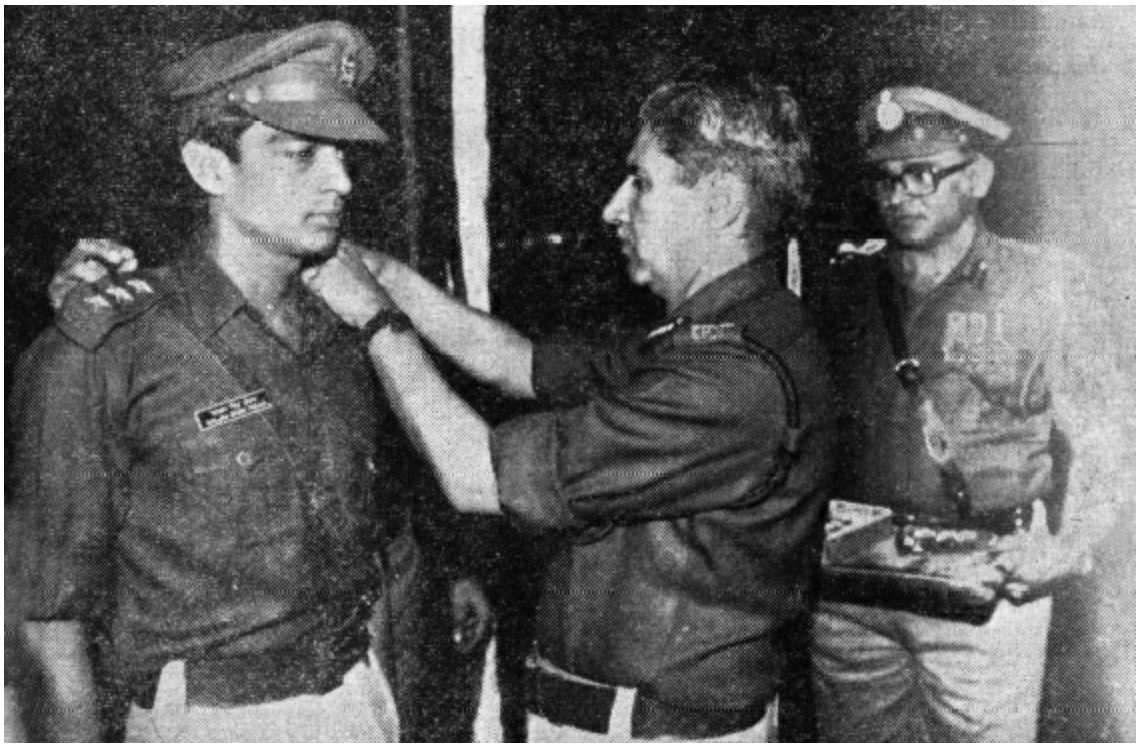
"इसीलिये तो..." दूसरी पड़ोसन ने जवाब दिया।

महानिदेशक श्री सतीश दत्त पांडेय और उनकी उपलब्धियां

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के वर्तमान महानिदेशक श्री सतीश दत्त पांडेय ने नवम्बर 1985 को बल में अपना कार्यभार संभाला था। आप 31 मार्च, 1988 को अवकाश कर रहे हैं। इनके सेवाकाल के दौरान बल ने कई महत्त्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की। 88वीं महिला बटालियन के गठन, रांची में सिगनल केन्द्र की स्थापना, 10 नई बटालियनों की स्थापना की स्वीकृति, बल में कंप्यूटर के प्रयोग, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल पब्लिक स्कूल की स्थापना, कई निर्माण योजनाओं, बल के थीम सांग की रचना तथा अन्य कई महत्त्वपूर्ण कार्यों के लिए बल में श्री पांडेय को सदैव याद किया जाएगा। सी० आर० पी० एफ० समाचार पत्रिका जो पहले त्रैमासिक थी, इसको मासिक करने की अनुमति भी श्री पांडेय ने ही प्रदान की। प्रस्तुत हैं श्री पांडेय की कुछ महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों की झलकियाँ।



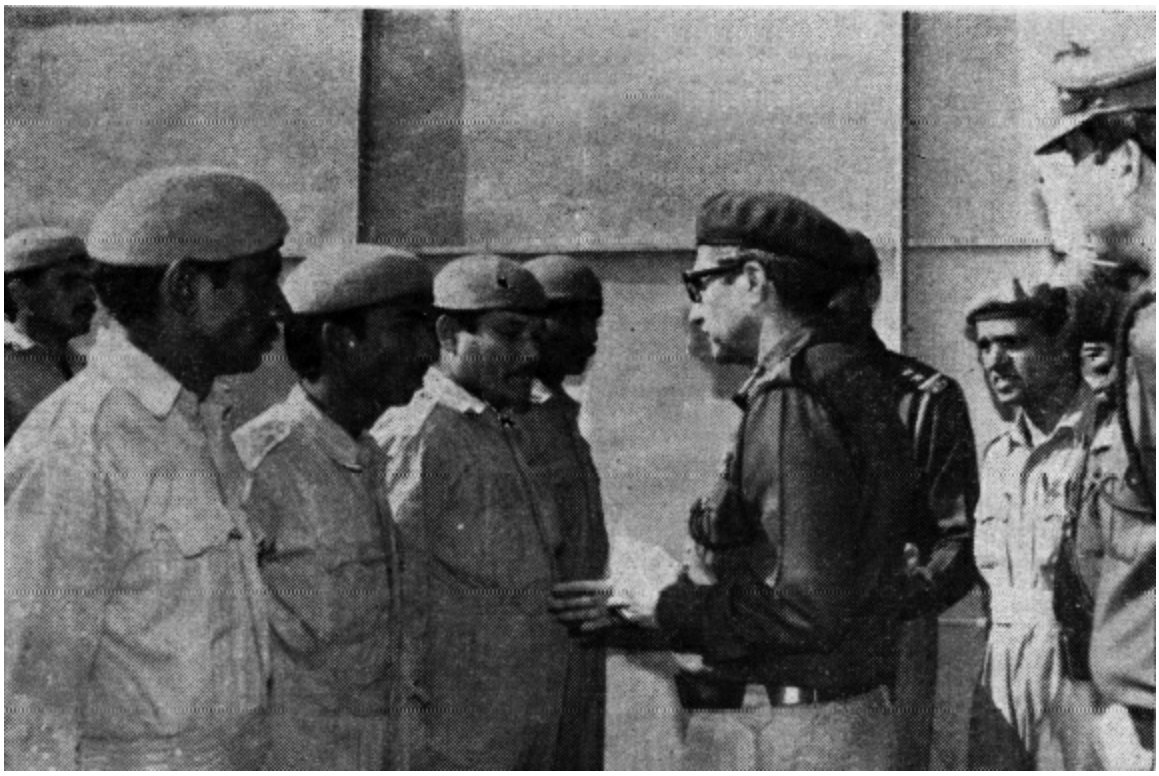
केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में महिला बटालियन का गठन एक महान उपलब्धि रही। महिला बटालियन का निरीक्षण करते प्रधानमंत्री।



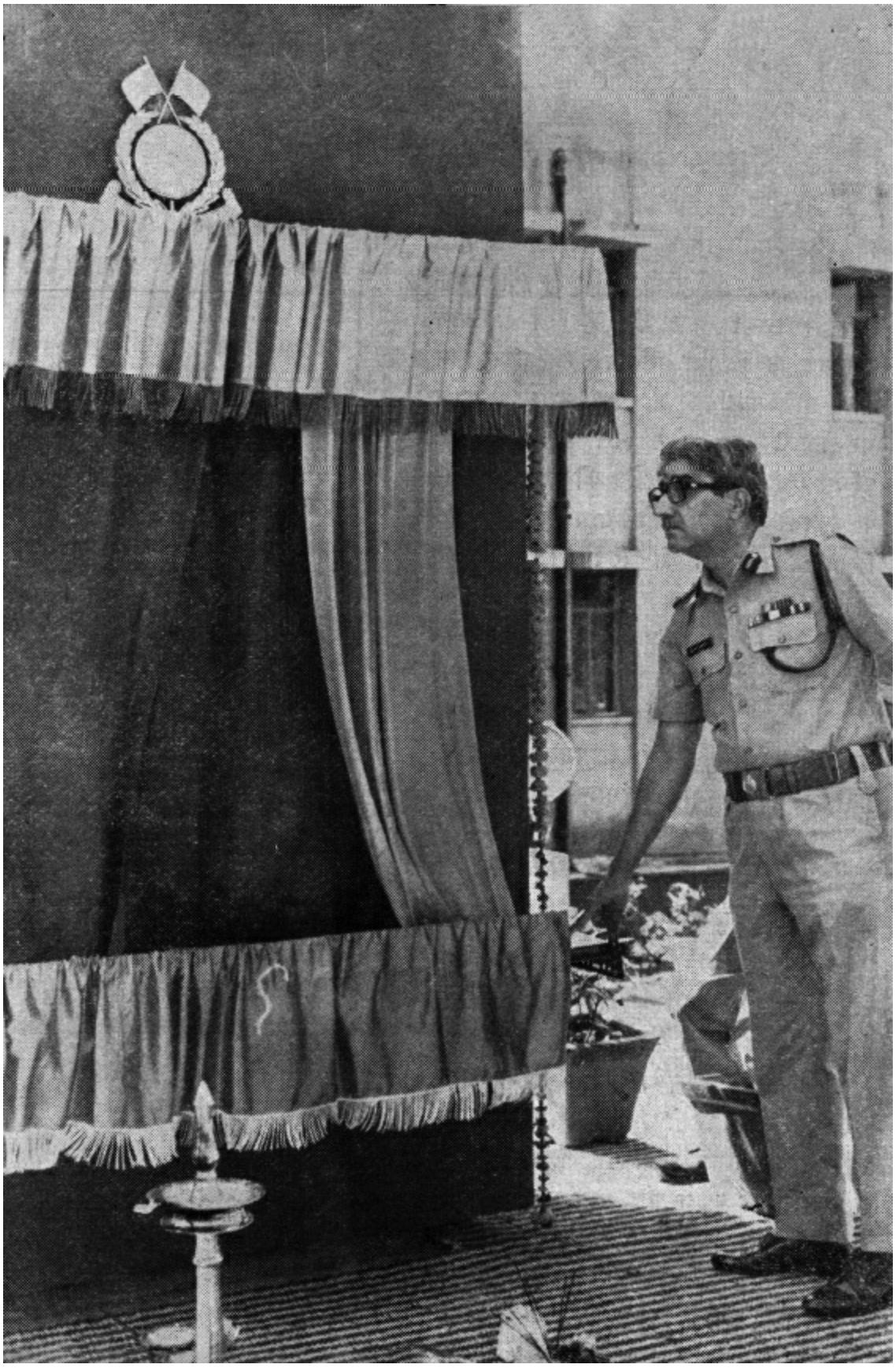
श्री पांडेय के कार्यकाल में खेलकूद को भरपूर प्रोत्साहन मिला। अंतर्राष्ट्रीय तैराक खजान सिंह को उपाधीक्षक पद पर पदोन्नत करते महानिदेशक ।



महानिदेशक महोदय श्री मोहन सिंह को सेवा निवृत्ति से पूर्व उनको अंतिम दिन ग्रेच्युटी राशि का चैक भेंट करते हुए।



श्री सतीश दत्त पांडेय ने बल में उत्तम निर्माण योजनाएं शुरू करवाई, ट्रांजिट अफसर मेस निर्माताओं को बधाई देते महानिदेशक ।



आधुनेकोकरण की ओर कदम । रांची स्थित सिगनल केन्द्र का उद्घाटन करते महानिदेशक।

समाचार

आग पर काबू

7 फरवरी,88 को यह सूचना प्राप्त होने पर कि खोआई से लगभग 10 कि० मी० दूर बाकुलाई बारी में स्थिति एक प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र की इमारत में आग लग गई है, त्रिपुरा स्थित 70 बटालियन की 'सी' कम्पनी के कुछ जवान तत्काल घटनास्थल की ओर चल पड़े। स्थानीय पुलिस एवं फायर ब्रिगेड की मदद से बल के जवानों ने जल्दी ही आग पर काबू पा लिया। अस्पताल में स्थित सभी बिस्तर जल कर राख हो गए। लेकिन बल के कार्मिकों की तत्परता के कारण सभी मरीजों को बचाकर सुरक्षित स्थानों पर पहुंचा दिया गया। बल के कार्मिकों के इस साहस पूर्ण कार्य की स्थानीय एवं अस्पताल के अधि कारियों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की।

चार संदिग्ध व्यक्ति गिरफ्तार

70 बटालियन की 'डी' कंपनी का एक सेक्सन जब त्रिपुरा स्थित जाँपईजाला बाजार में 11 फरवरी को अपनी पैट्रोल ड्यूटी पर था, तो उसे कालका कांता पारा आंगन बाडी से लपटें उठती हुई दिखाई दीं । दल तत्काल घटना स्थल पर पहुंच गया। यह प्राथमिक स्कूल जो आग में झोंक दिया गया था, पूरी तरह राख में बदल चुका था। दल द्वारा पूरे इलाके की छानबीन की गई, लेकिन उसे कुछ प्राप्त नहीं हुआ। दल पुनः जाँपईजाला बाजार में लौट आया। बाद में दल ने बाजार में घूमते एक संदिग्ध व्यक्ति को गिरफ्तार किया। उस आदमी से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर तीन अन्य व्यक्तियों के घरों पर छापा मार कर उन्हें गिरफ्तार किया गया। इन सभी लोगों के आग लगाने की घटना में शामिल होने का संदेह है।

दो हत्यारे गिरफ्तार

24 फरवरी, 1988 को त्रिपुरा स्थित । 70 बटालियन की 'बी' कंपनी को सूचना प्राप्त हुई कि पंचमूर्ति गांव के शांतिराजन भट्टाचार्य नाम के व्यक्ति की कुछ विद्रोहियों ने हत्या कर दी है। दल तत्काल स्थानीय पुलिस के साथ घटनास्थल की ओर चल पड़ा। दल ने पूरे इलाके की छानबीन की, लेकिन कुछ प्राप्त नहीं हुआ। मृतक का शव पोस्टमार्टम के लिए अस्पताल भेज दिया गया। क्षेत्र की आगे की छानबीन के दौरान दल द्वारा दो संदिग्ध व्यक्तियों—सपन दास तथा सुभाष सरकार को गिरफ्तार कर लिया गया। उनके पास से हत्या के लिए प्रयोग की गई लाठी एवं क्रीच भी बरामद कर ली गई।

जवानों को पुरुष्कार

पंजाब पुलिस के महानिदेशक ने 8 जनवरी, 1988 को जारी अपने एक आदेश के तहत 32 बटालियन की 'बी' कंपनी के 89 अराजपत्रित अधिकारियों व अन्य कार्मिकों को वर्ष 1987 में उनकी सराहनीय सेवाओं के लिए 7,475 रुपए पुरुस्कार स्वरूप प्रदान किए हैं। इन कार्मिकों को क्लास-I कमेंडेशन सर्टिफिकेट भी प्रदान किए गए हैं।

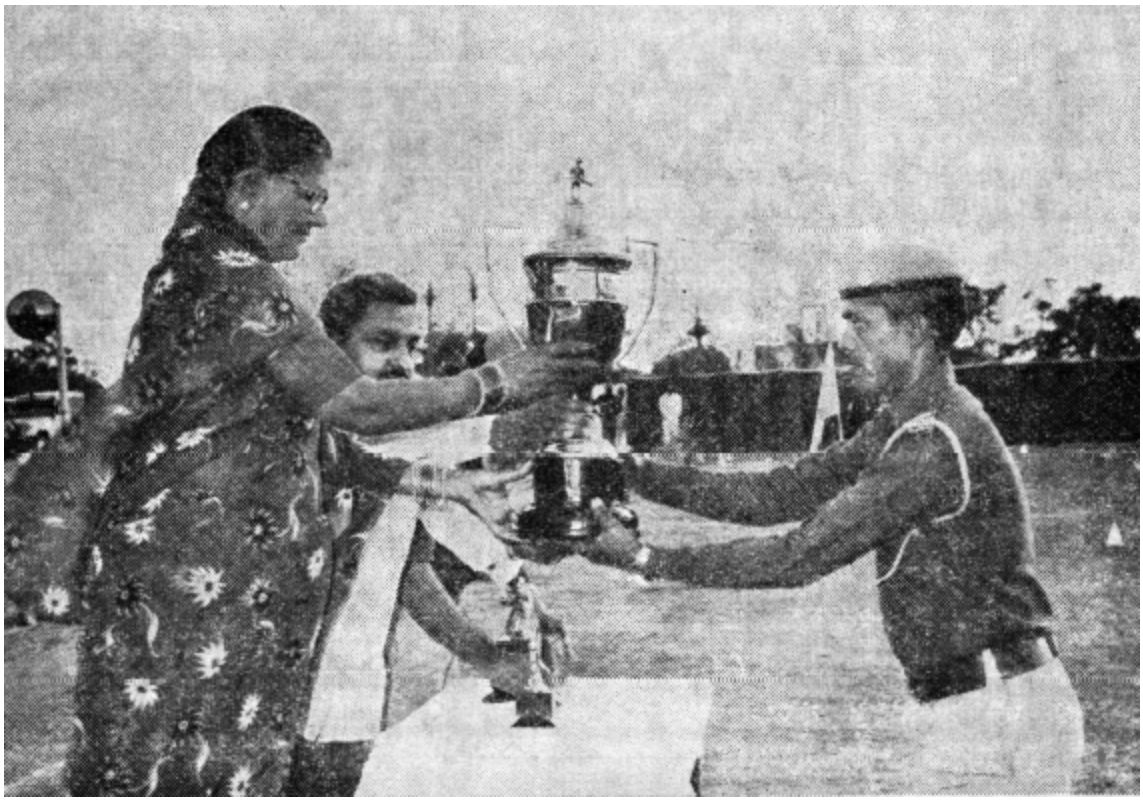
पटना रेंज विजयी

हाल ही में नीमच में आयोजित केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 22वीं अन्तर-रेंज शूटिंग प्रतियोगिताओं में पटना रेंज ने कुल 2,843 अंक जोड़ कर चैम्पियनशिप ट्राफी पर कब्जा जमाया। 2,814 अंकों सहित दिल्ली रेंज दूसरे स्थान पर तथा नीमच रेंज 2,779 अंकों सहित तीसरे स्थान पर रही।

पिस्तौल शूटिंग में, दिल्ली रेंज के प्रतियोगी 1,648 अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान पाने में सफल रहे जबकि हैदराबाद रेंज 80 अंकों से पिछड़ कर दूसरे स्थान पर रहा । केवल 13 अंकों से और पिछड़ कर नीमच रेंज तीसरे स्थान पर रही।

राईफल प्रेक्टिस में पटना रेंज 1,648 अंक दाग कर पहले स्थान पर आसानी से डटी रही। नीमच और हैदराबाद रेंज क्रमशः 1,549 और 1,534 अंकों सहित अगले दो स्थान पर कब्जा पा सके।

श्री पी० सी० जोशी, प्रिंसीपल, सी० टी० सी-1 ने चैम्पियनशिप का उद्घाटन किया। समापन समारोह की अध्यक्षता नीमच रेंज के उप महानिरीक्षक श्री इन्द्रासिंह ने की। श्रीमती इन्द्रासिंह ने पुरस्कार वितरित किये।



विजेता टीम के कप्तान को ट्राफी प्रदान करतीं श्रीमती इंद्रासिंह

के.रि. पु. बल विजयी

3 फरवरी, 1928 को अलवे कोचीन में हुए अखिल भारतीय कारमेल ट्राफी बास्केटबाल टूर्नामेंट फाइनल में के०रि०पु० बल की टीम ने पुरुष वर्ग के खिताब पर कब्जा जमा लिया।

सुपरलीग आधार पर खेले गए मैच में इंडियन बैंक, मद्रास ने के० रि० पु० बल को 65-58 से अन्तिम लीग मैच में पराजित किया, लेकिन अधिकतम अंक प्राप्त करने के कारण के० रि० पु० बल को ट्राफी का विजेता घोषित किया गया।

माह फरवरी, 1988 में दिवंगत बल के कार्मिक

माह फरवरी, 1988 में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्न कार्मिक दिवंगत हुए :—

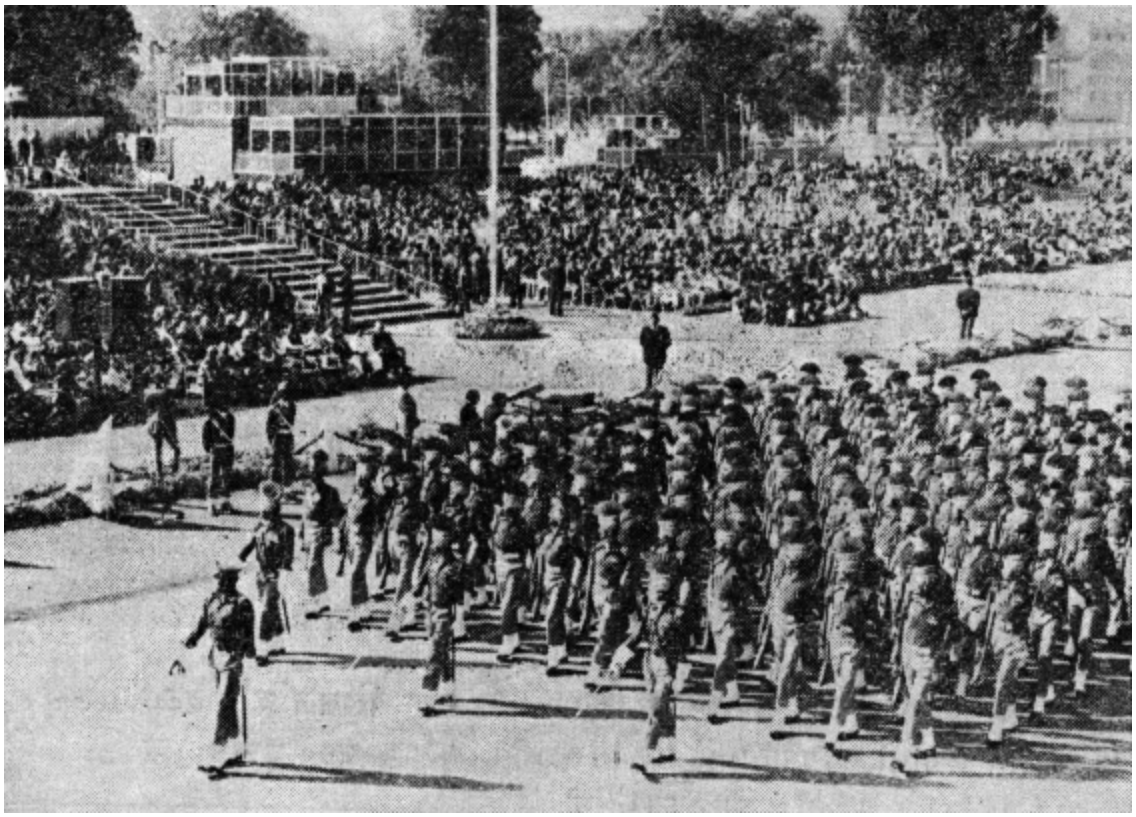
कां० मोहम्मद इलियास (9 बटा०), कां० सुराई चन्द्र सुरेन (43 बटा०), कां० चन्द्र बहादुर (34 बटा०), है० कां० अमर सिंह (67 बटा०), कां० सुरेन्द्रसिंह (53 बटा०), कां० मोहम्मद हनीफ (86 बटा०), अस्पताल सफाई कर्मचारी लालूराम (ग्रुप केन्द्र रामपुर), कां० सतपाल (ग्रुप केन्द्र बनतलाब), वाटर कैरियर मानसिंह (3 सिग० बटा०), कां० बानेसिंह (24 बटा०), नायक रेडियो आपरेटर शेख उस्मान (2 सिग० बटा०), लां० ना० ब्रह्मानन्द उपाध्याय (21 बटा०), लां० ना० वासुदेव सिंह (21 बटा०), नायक के ० के०

ासिंह (54 बटा०), लां० ना० ओमप्रकाश (54 बटा०), कां० ाविजय गजमेर (4 बटा०), कां० शम्भुनाथ शर्मा (21 बटा०)।

जोखिम निधि लाभ

माह फरवरी, 1988 में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल जोखिम निधि फंड के सामने मृत्यु के 10 मामले आए जिनके लिए एक लाख 70 हजार रुपए देने स्वीकृत किए गए

इसी प्रकार अक्षमता के 14 मामलों में 12 लाख 10 हजार रुपए देने स्वीकृत किए गए।



गणतंत्र दिवस परेड में बल के जवान

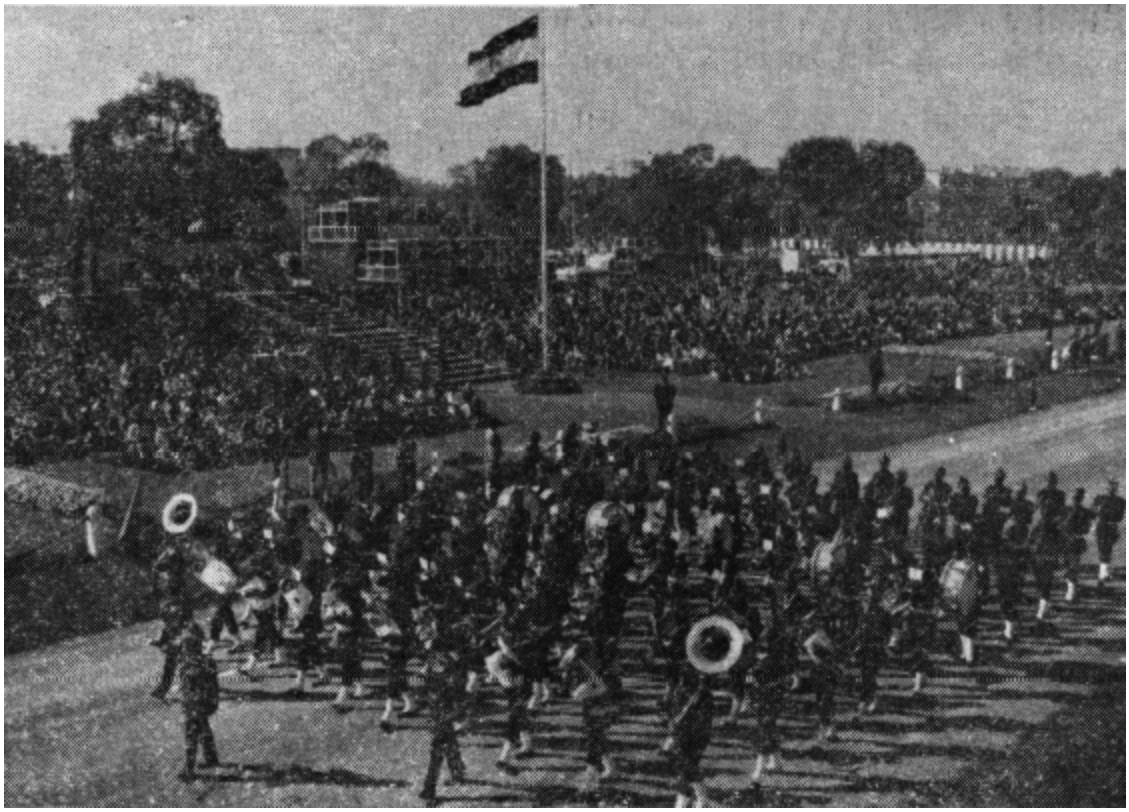
इस बार गणतंत्र दिवस की परेड में के०रि०पु० की टुकड़ियां काफी आकर्षक रहीं। के०रि०पु० बल की पुरुष व बैंड टुकड़ियों के अतिरिक्त 88 महिला बटालियन की टुकड़ी ने भी परेड में हिस्सा लिया।

बल की महिला बटालियन की टुकड़ी जब मंच के सामने से गुजरी, तो राजपथ के दोनों ओर उपस्थित जन समुदाय ने हर्षोंल्लास के साथ उसका स्वागत किया। जजों की एक समिति ने इस टुकड़ी को एक विशेष पुरस्कार प्रदान करने का प्रस्ताव किया है।

बल की पहली टुकड़ी में 144 कांस्टेबल तथा अधीनस्थ अधिकारी, और तीन उपनिरीक्षक थे। इन का नेतृत्व उपाधीक्षक डी. पी. त्यागी ने किया। टुकड़ी के जवानों की औसत ऊंचाई 6 फुट थी।

अर्द्ध सैनिक बलों में अपनी तरह की अकेली महिला बटालियन की टुकड़ी में 72 महिला कांस्टेबल एवं अधीनस्थ अधिकारी एवं तीन उप निरीक्षक थे जिनका नेतृत्व उप निरीक्षक रविकला ने किया। बल की टुकड़ियां अपनी आकर्षक वर्दियों में खूब फब रही थीं।

बल की टुकड़ियां के० रि० पु० बल के गीत 'चलते रहो प्यारे' की उपाधीक्षक बी. के. स्वामी द्वारा तैयार की गई धुन पर मार्च कर रही थीं।



भाग—3

आतंक और आंसू

मार्क लिनैल व राबर्ट कालिंस अनु० अनिल गुप्त

दो ब्रिटिश सैनिकों द्वारा अपने आयरलैंड के अनुभवों के आधार पर लिखे गए संस्मरण का तीसरा भाग । इस संस्मरण की पहली दो कड़ियां आप सी. आर. पी. एफ. समाचार के पिछले दो अंकों में पढ़ चुके हैं।

एक रात जब हम दो घंटे के लिए बाहर थे, एक गोली सनसनाती हुई मेरे सिर के पास से निकल गई। "टेक कवर" मैं चिल्लाया, इसके साथ ही छिपे हुए आतंकवादियों ने गोलियों की बौछार तेज कर दी। हम ने जैसे ही जवाबी फायर शुरू किया एक मोड़ से दो औरतें निकल कर सड़क पर आ गईं। सड़क पर आते ही जैसे ही उन्हें अपनी भूल का अहसास हुआ वे चीखने लगीं।

"वापस जाओ" मैं चिल्लाया, लेकिन वे भय से जड़ हो गई थीं। मेरे आदमियों में से एक जिसका नाम पिंचर था बाहर की ओर भागा। अपनी जिंदगी का खतरा उठाते हुए वह उन औरतों को एक गली में खींचकर ले गया। बदले में उन औरतों ने उसे ठोकर मारी। क्रोधित हो कर उसने एक की नाक पर मुक्का जड़ दिया।

बन्दूकधारी लौट गये । हमारे रेडियो ने खबर दी कि एक दूसरे सेक्शन ने उन्हें घेर लिया है। हम सिर से पांव तक पसीने से भीगे हुए पेट्रोल जारी रखे रहे।

अचानक कुछ और गोलियां चलीं। यथाक्रम हम एक दूसरे के नजदीक हुए और एक दूसरे को कवर करते हुए आगे बढ़े। सड़क के अन्त में 6 खाली कारतूस मिले । लेकिन कोई स्नाइपर नहीं दिखा। हम एक खाली मकान के पास रुके और कांपते हए सिगरेटें सुलगाई। कुछ हफ्ते बाद, एक स्नाइपर ने एक मकान की दूसरी मंजिल से सड़क पर गुजरती लैंड रोवर पर गोलियाँ बरसायीं। इसमें एक कारपोरल बुरी तरह घायल हो गया और एक 19 वर्षीय रेडियो आपरेटर ग्राहाम कोक्स की कई गोलियां लगने से मृत्यु हो गई। स्थानीय लोगों ने शोर गुल से हुई परेशानी पर आपत्ति की और मुझे सुनने में आया कि खेद प्रकट किया गया। क्या मालुम कि उस मृत नौजवान की जवान मंगेतर से किसने खेद प्रकट किया।

सौभाग्यवश अल्स्टर के अधिकतर लोग हृदयहीन नहीं थे। कभी-कभी आम जनता के बीच जब लोग आतंकवादियों की निगरानी में रहते तो उनका साथ देने का नाटक करते थे। इससे कुछ मालूम पड़ता है कि उस दिन पिंचर को उन दो औरतों ने क्यों मारा। आतंकवादियों का साथ न देने पर उन्हें अपने घुटनों पर गोलियां खाने या बरमे से छेद करवाने या सर पर गोलियां खाने के खतरे उठाने पड़ते थे। बेलफास्ट में हम एक कैथोलिक किशोर बिनसेंट से परिचित थे। अगले टूर पर जब हम वापस आए तो हमें पता चला कि उसकी छाती पर कई बार चीरा गया। शायद उसका हमारे साथ देखा जाना आतंकवादियों को पता चल गया था और यह उसके लिए चेतावनी थी। मैं अक्सर शांतिप्रिय नागरिकों से दोस्ती का इच्छुक रहता था और अक्सर सड़क से गुजरते लोगों का अभिवादन किया करता था। कुछ बदले में मुंह सिकोड़ते थे, कुछ अधूरी मुस्कान फेंक देते थे और कुछ उपेक्षा कर जाते थे।

एक दिन एक बूढ़ा आदमी नशे में झूमते हुए सड़क पर लड़खड़ा रहा था जब

हमारी लैंड रोवर उसके पास पहुंची, मैं नीचे उतरकर उसकी बाहों में अपनी बाहें डालकर गाते हुए आइरिश नाच नाचने लगा। उसे नशे की हालत में हंसते हुए छोड़ा और चल पड़े। शायद कुछ लोग समझते थे कि आखिरकार हम ब्रिटिश भी तो इन्सान ही हैं।

अभी भी अल्सटर में मेरे कुछ अच्छे दोस्त थे, लेकिन वे लोग यह बात जाहिर नहीं करते थे, लेकिन इनमें भी कुछ बूढ़ी औरतें ऐसी थी, जो हमेशा हमें चाय पेश किया करती थीं, बावजूद इसके कि उनकी इस हरकत पर आतंकवादी उनके घरों पर थूकते हुए भड़कीला रंग पोत दिया करते थे। ऐसी ही एक औरत ने एक बार कहा, "वे मुझे मेरे घर से बाहर नहीं निकाल सकते। मैंने अपनी पूरी जिंदगी इसी जगह पर बितायी है।" लेकिन मुझे यह बुरा लगता था कि हमारी मित्रता की वजह से उस पर मुसीबत आ सकती थी।

1974 में हम सब बेलफास्ट वापस लौटते हुए डर रहे थे। बन्दरगाह में जब हम तीन-तीन की कतारों में खड़े हो रहे थे तो किसी छुपे हुए स्नाइपर का निशाना बन सकते थे, हम में से हर व्यक्ति तनावग्रस्त था।

आतंकवादी पहले से कहीं अधिक प्राणघाती थे। वे मोर्टर बमों तथा अन्य कई आधुनिकतम विस्फोटक सामग्रियों से आक्रमण कर रहे थे, जो कि टार्च की रोशनी से ही भड़क उठते थे। उनकी निगरानी तथा इन्टेलिजेन्स कहीं बेहतर थी। उनको पिछले अनुभव तथा बाहरी मदद से बहुत फायदा हो रहा था।

संस्मरण

सेना ने वहां का चार्ज कमांडोज को सौंप दिया था। जैसे ही सुबह हुई और सुबह की धुंध फटी हमने जाने पहचाने चेहरों को बन्दरगाह में जाते देखा। दोस्त मुस्कानों के साथ कुछ-कुछ हमारा स्वागत कर रहे थे। आतंकवादियों के हितैषियों ने हमारे स्वागत में बेलफास्ट के उच्चारण में पूछा।

"तो क्या आप अच्छे हैं ?"

आतंकवादी हमसे डरते थे और भयवश हमारी इज्जत भी करते थे। हरी बैरेट, भूरे और हरे रंग की काम्बेट जाकेट, प्रेस की हुई पेंटे, चमकते जूते—हम काफी तेज और कठोर थे। और वे इस बात को जानते थे। वे हमें लगातार आजमाते थे। कुछ ही दिनों के अन्दर उन्होंने एक बार को बम से उड़ा दिया और लोगों में इस बात का प्रचार किया कि यह कार्य करने के लिए हमने प्रोटेंस्टेंट आतंकवादियों को संरक्षण दिया था। कोई मूर्ख आदमी ही इस बात पर विश्वास कर सकता था।

एक और दिन पेट्रोल के दौरान हम एक पीली कार में बैठे दो हथियार बंद व्यक्तियों का पीछा कर रहे थे। हमने लगभग उनको पकड़ ही लिया था कि उनमें से एक मुड़ा और उसने फायर कर दिया। हमारे ड्राइवर ने एकदम से ब्रेक लगा दी और इसके तत्काल बाद एक सुनियोजित भीड़ ने रास्ता रोक लिया। आतंकवादियों की युवाशाखा

ाफेयानाका का कमांडिंग आफिसर ाजिसे हम जेम्स के नाम से जानते थे, भीड़ को उत्तेजित कर रहा था।

हमारी गाड़ी आगे बढ़ी और इसी में दुर्घटनावश एक लड़का उसकी चपेट में आ गया। इस लड़के को किसी प्रकार की चोट नहीं लगी थी, लेकिन भीड़ हमारे खून की प्यासी हो उठी। जैसे ही हम उस भीड़ की दीवार से अलग हुए, किसी ने एक लकड़ी के लट्ठे से मेरे जबड़े पर प्रहार किया। भीड़ खुशी से चिल्ला उठी।

बैरक में वापस आकर हमने अपनी खरोंचे तथा नाक से बहते खून को देखा। मेरा जबड़ा बुरी तरह सूज रहा था।

"किसी ने देखा था कि यह किसकी हरकत थी?"

"जेम्स की।"

मैं तत्काल आपरेशन रूम में गया, ड्यूटी आफिसर को सारी रिपार्ट देने के बाद दंगे को भड़काने तथा आक्रमण करने के कारण जेम्स को गिरफ्तार करने की प्रार्थना की।

कुछ दिन बाद हमने उसे एक बस स्टाप पर देखा । मेरा एक आदमी तत्काल लेंडरोवर से कूदा और जाकर उसके जबड़े पर घूंसा जड दिया। जब हम सब अदालत के सम्मुख पेश हुए तो जेम्स पर थोड़ा सा जुर्माना लगा कर उसे छोड़ दिया गया और वह मुस्कराता हुआ अदालत से बाहर निकला। और जिस आदमी ने उसे गिरफ्तार किया था उसे अतिरिक्त बल प्रयोग करने के लिए चेतावनी दी गई।

आयरलैंड में पेट्रोल ड्यूटी के दौरान हम क्या करते थे? हम वहां पल पल जी रहे थे। बैरकों में हम टेलीविजन और फिल्में देखा करते थे। एक बार मैं एक पत्र मित्र क्लब का सदस्य बना। जवाब में मुझे एक खूबसूरत आयरिश लड़की का एक पत्र व चित्र प्राप्त हुआ। लेकिन उसका पता फाल्सरोड़ बेलफास्ट था, यह आतंकवाद से बुरी तरह प्रभावित क्षेत्र था। अतः मैंने उस पत्र को फाड़ दिया। हालाँकि वह आतंकवादियों के किसी प्लान का हिस्सा नहीं थी, लेकिन वह हम ब्रिटिश सैनिकों से पत्र व्यवहार करने के कारण खतरे में पड़ सकती थी ।

लंदन डेरी में वहां की कुछ औरतों ने एक आयरिश लड़की को पकड़कर एक स्तंभ से बाँध दिया और उसके सिर को मुँडकर उसके चेहरे पर तारकोल पोत दिया था। उस लड़की का दोष केवल इतना था कि उसने एक ब्रिटिश सैनिक के साथ मुलाकात तय की थी।

हम अपने परिवारों, पत्नियों और प्रियजनों के बारे में सोचते थे। हम अपने जीवित रहने के बारे भी बहुत सोचते थे, कि कैसे किसी गोली का जवाब दें या किसी दंगे के समय क्या करें और हम सोचते कि हम आयरलैंड में क्यों हैं ?

कुछ पैट्रोल बेहद बोर करने वाले होते थे। यदि शान्ति व सुरक्षा की कोई विशेष समस्या नहीं होती थी, तो अक्सर ऐसे समयों पर मैं धीरे-धीरे कुछ धुनें गुनगुनाया करता था । हलांकि हम नहीं जानते थे कि कब कहां से कोई गोली या विस्फोट पूरी रात को

एक भयानक भय में तबदील कर देगा।

हम हमेशा गतिशील थे। एक ठहरे हुए आदमी को आसानी से निशाना बनाया जा सकता है। यदि मैं अपने आदमियों को ठहरने का संकेत करता तो वे तत्काल हर तरफ नजर फेरते। आंखें अन्धेरे में किसी अज्ञात बंदूकधारी आतंकवादी को खोजती रहती। उनके शरीर स्प्रिंग की तरह तने रहते । कान मेरा अगला आदेश सुनने के लिए चौकन्ने रहते। एक आदमी की हल्की सी खांसी हर एक को सतर्क कर देती। पसीना बहता हुआ हमारी आंखों में घुस जाता । हम आंखों से पसीना पोंछते हुए भी डरते थे, क्योंकि एक क्षण की असावधानी भी हमें अतीत की कहानी बना सकती थीं।

हमारे चेहरे उतरे हुए होते। हम सड़कों और कारों की रोशनियों से बचकर खिड़कियों की रोशनियों से स्वयं को बचाते हुए तथा हमें मारने के लिए सफेद पोती गई दीवारों से हट कर चलते। हमारी उपस्थिति का पता लगाने के लिए दीवारों के सहारे पंक्तियों में रखी दूध की खाली बोतलों से स्वयं को बचाते हुए चलते थे।

हमें सड़क से कभी-कभी घर के अन्दर आग तापता परिवार दिखाई दे जाता। मेरे मन में ख्याल उठता मेरे माता पिता आज रात को क्या कर रहे होंगे। मैं यहां पर क्यों हूं ? हम अपनी घड़ियां देखते । दो घंटे बीत गए, दो बीतने बाकी हैं।

एक गोली की आवाज गूंजती है। एक साथ नौ चेहरे मेरी तरफ मुड़ते हैं। मुझे तत्काल कोई सही निर्णय लेना है। अन्त में हम अपने कैंप में वापस आ जाते हैं थके हुए और हमारी वर्दियां भीगी हुई । हमने कोई सफलता नहीं पाई। मैं यहां क्या कर रहा हूं?

कभी-कभी कोने में छिपे बच्चे अपनी खिलौना बंदूकों से हम पर सचमुच फायर करते थे । जब कोई परेशान हो जाए, तो उसके पास जवाबी फायर करने के अलावा और कोई चारा नहीं रह जाता । हम दुर्घटनावश किसी बच्चे के मारे जाने के भय से त्रस्त रहते थे । और सोचते थे कि आतंकवादी तो ऐसा चाहते हैं ताकि वे इसे हमारे खिलाफ प्रचार के लिये इस्तेमाल कर सकें। एक रात हमें ईंटों की एक दीवार में एक संदिग्ध छेद दिखाई दिया। पता नहीं क्या हुआ कि मैं अपनी ट्रेनिंग भूल गया, इसका परिणाम हम सब की मौत हो सकती थी। पहले मैंने अपनी टार्च से अन्दर रोशनी फेंकी। सौभाग्यवश यह लाईट सेन्सटिव बम्ब नहीं था। बाद में मैंने अपना हाथ बढ़ाया, बैग को छुआ और उसे मरोडा। वह मुझे गोलाबारूद जैसा लगा। अचानक मुझे अपनी गलती का अहसास हुमा।

“ओ मेरे भगवान ।” मैं चिल्लाया और तत्काल बोला, “चलो हम बढ़ें,

हमने सड़क अवरूद्ध कर दी। बम निरोधक दस्ते ने उस बम का विस्फोट किया जिससे 90 मीटर दूर तक की खिड़कियों के शीशे चटक गए। बाद में बम विशेषज्ञ ने मुझे बताया कि यदि मैंने थैला हिला दिया होता तो साढ़े चार किलो विस्फोटक वाले बम्म का विस्फोट हो गया होता। कम्पनी कमान्डर ने हमें हमारी इस सफलता पर बधाई दी। लेकिन मैं स्वयं इस बधाई के योग्य नहीं था। अल्सटर में पाँच साल हो गए थे और मैं अभी भी सीख ही रहा था।

के० रि० पु० बल के प्रहरी

आज है जन-जन की जिह्वा पर, के० रि० पु० का नाम
हे भारत के वीर जवानों, रखना अपनी आन।
फैल रहा आतंक देश में, उग्रवाद के नारे,
पग-पग पर भयत्रस्त सभी हैं, मां के लाल दुलारे,
फौलादी प्रहार से अपने, इन्हें मिटा डालो अब,
हे कर्मवीर ! अन्यायी जन को, दूर भगा डालो अब,
असहायों की रक्षा करना, 'शांतिदूत' का काम ॥ आज है...
धीर, तपस्वी, वीर सदा, निर्बल के बल हो,
निशा दिवा, नित लड़ने वाले, सर्वत्र तुम्हारी जय हो,
दुर्गम पथ पर चलने वाले, उद्भटकर्मी हो तुम,
अहम् भावना की रक्षा से मंजिल पा सकते तुम,
हे मानव के मित्र ! सदा संघर्ष है तेरा काम ॥आज है...
धूमिल न होवे देश का गौरव, ऐसे पथ पर चलना,
जाति धर्म का भेद मिटा कर, कठिनाइयों से नित लड़ना,
मानवता की रक्षा, सेवा, मरते दम तक करना;
देश द्रोही का मर्दन करके, अखंडता की रक्षा करना,
हे मातृ भूमि हित मरने वाले ! कतिपय रखना ध्यान ॥ आज है...

—स. उ. नि. हंसराज ओझा

रजि० नं० 47167/87

—क्रमशः

(©) 1983 दि रिडर्स डाईजेस्ट एसोसिएशन (कनाडा) लिमिटेड की अनुमति से मुद्रित।

रोचक प्रसंग

पुलिस अधिकारी मिट्ठू

जानवरों व पक्षियों के सम्बन्ध में यों तो सैकड़ों दंत कथाएं प्रचलित हैं । जब आधुनिक डाक व्यवस्था नहीं थी तब पत्र पहुंचाने और लाने का काम कबूतर किया करते थे, पक्षी की समझ का अगर सही विकास किया जाए, तो वह कितना उपयोगी हो सकता है, इस सम्बन्ध में हमारे इतिहास और प्राचीन ग्रन्थों में ढेरों उद्धहरण मिल जायेंगे। इन जानवरों में कुत्ते किस प्रकार पुलिस की मदद करते हैं यह किसी से छिपा नहीं हैं।

अमरीका के लास एन्जिल्स शहर का ऐसा ही एक और वाकया इस इतिहास में शामिल हो गया है। चार वर्षीय वामर्ड नाम का एक आर्कषक तोता यहाँ के एक पुलिस विभाग का एक अधिकारी है। 21वीं सदी की ओर जा रहे समाज में एक तोते की पुलिस अधिकारी के रूप नियुक्ति निःसंदेह चौंकाने वाली बात है, लेकिन इस तोते के कारनामे सुनने के बाद हमें इस आश्चर्यजनक घटना पर सहज ही विश्वास होने लगता है।

इस तोते के गले में सुनहरी प्लेट वाला तमगा तथा सरकारी परिचय पत्र टंगा रहता है, जिस पर इसका नाम, चित्र, क्रमांक तथा पुलिस चीफ के हस्ताक्षर हैं। यह तोता बच्चों के मन को जल्दी प्रभावित करता है, यह बच्चों और अन्य लोगों को सुरक्षित ढंग से साईकिल चलाने तथा स्कैटिंग की जानकारी देता है। आजकल पश्चिमी देशों में लोगों को सुरक्षा नियमों की जानकारी देना एक कठिन सा कार्य हो गया है। यह तोता इस कठिन कार्य को आसान बनाने में लगा है।

यह सार्वजनिक प्रदर्शनों के द्वारा बच्चों व बड़ों को साइकिलिंग व स्कैंटिंग के नियमों की जानकारी देता है। तोता अपनी छोटी सी गश्ती कार भी चलाता है। जब यह तोता अपना कार्यक्रम प्रस्तुत करता है, तो जनता को समझाने की जिम्मेदारी उसका सहयोगी माइकल सिमोनसन पूरी करता है । बच्चों के स्कूलों, अनाथालयों तथा अपंग बच्चों के बीच यह कार्यक्रम काफी लोकप्रिय हो रहे हैं। इस अफसर तोते द्वारा दिखाए गए कार्यक्रमों को लोग जल्दी ग्रहण कर रहे हैं ।

—साभार-पुलिस मानिटर

मुख्य सम्पादक : एच. एस. सेठी। **सम्पादक :** एम. पी. नथैनियल तथा अनिल गुप्ता।

मुद्रक : सी. आर. पी. एफ. प्रेस, झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-110072

मुद्रक तथा प्रकाशक : महानिदेशक, के०रि०पु० बल, ब्लाक-1, सी. जी. ओ. काम्पलेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से एच. एस. सेठी।

CRPF SAMACHAR

CRPF Newsletter & Magazine

April 30, 1988 (Vaisakha 10, 1910





A memento being presented to the former Director General Shri S. D. Pandey on behalf of 73rd Battalion, CRPF by the Commandant Shri H. S. Sandhu.

THE
CRPF Samachar



CRPF
Newsletter & Magazine

Vol 2. No. 1

Quarterly

April 30, 1988
Vaisakha 10, 1910

Chief Editor : H. S. Sethi

Cover : Shri S. D. Pandey taking leave of Shri P. G. Halarnkar after handing over reins of the office of Director-General, CRPF to the latter.

Photo : S. K. Khanna

Editorial Office :
C/o Director General,
Central Reserve Police Force,
Block 1, CGO Complex,
Lodi Road,
New Delhi-110003.

Printed and published by :
H. S. Sethi on behalf of
Director General, CRPF.
Printed at the CRPF Press,
Group Centre, New Delhi-110072

Letter from the editor

The last quarter witnessed the change of Chiefs in the Central Reserve Police Force. Although CRPF is a Force that runs on its intrinsic strength and follows the traditions, yet each Chief does leave his imprint on the sands of time and does, in his own way, contribute to the process of strengthening and maturisation of the Force. Shri S. D. Pandey was one such guiding force whose contribution was not less than that of any other Director General. The change-over of the chiefs forms the cover story of this issue and reflects as to how much respect and love did Shri Pandey command not only from the rank and file of the CRPF but also from the eminent men in field of law and order.

The last quarter has seen Punjab relapsing into the throes of violence as it never did before. Naturally, therefore, the focus of this issue is on the performance of the CRPF in meeting the challenge of terrorism in the Punjab.

In a situation like the one prevailing in the country, importance of communications can hardly be over emphasised. We feature in this connection an article showing how the signals set-up in the CRPF has been rising to the occasion in the past and what steps are being taken now to modernise signals.

Dr. K. M. Mathur has a peep into the 21st century and visualises developments that must come about in the police before it can effectively step into the future.

Plus reports about operations and laurels won in the field of sports and third part of the article “The Terror and the Tears”.



CONTENTS

The Terror & the Tears *by Mark Linnell with Robert Collins*
Police in the 21st Century *by Dr. K.M. Mathur*
CRPF in Punjab
An affectionate farewell
Modernisation of Signals *by Raghunatha Kurup*
All India Police Games

The Terror and the Tears

by

Mark Linnell with Robert Collins

Reproduced here is the third part of this article written by two British soldiers about their experiences in combating terrorism in Ireland. The first two parts were published in CRPF Samachar of October 31,1987 and January 31,1988.

The Provos feared and grudgingly respected us. Green berets at a jaunty angle, combat jackets in camouflage green and brown, creased trousers, glistening boots— we were sharp and tough, and they knew it. They tested us constantly, of course. Within a few days they blew up a bar and told the people we had escorted Protestant terrorists into the area to do the job. Only the more gullible believed it.

Another day, on mobile patrol, we went after two armed men in a yellow van. We almost had them when one leaned out and fired. My driver, braked momentarily, and a well-regulated crowd instantly blocked the road. Young James, known to us as commanding officer of the Fianna, youth wing of the Provos, was goading them on.

Our vehicle pushed forward and accidently knocked over a boy. The child seemed unhurt, but the crowd screamed for our blood. As we pulled away from the human wall, someone belted me in the jaw with a slab of wood. The crowd cheered.

Back at barracks we compared cuts, broken fingers and bloody noses. My jaw was badly swollen.

“Anyone see who did it ?”

“Yeah, it was our friend James.”

I wobbled into the operations room, reported to the duty officer and requested that James be arrested for assault and inciting a riot.

A few day later we spotted him at a bus stop. One of my men leapt from the Land Rover and knocked him out with a right to the jaw. When we all appeared in court, James received a small fine and left smiling. The man who tackled him got a reprimand from the court for using undue force.

WHAT did we do in Ireland between patrols ? We lived from day to day, meal to meal, sleep to sleep. We watched television and films in barracks. Once I joined a pen-pal club. Back came a letter and picture from a beautiful Irish girl. But her address was Falls Road, Blfast, a hotbed of terrorism, so I tore up the letter. Even if she wasn't a Provo "plant," she'd have got in trouble for corresponding with a Brit. In Londonderry some local women tied an Irish girl to a lamppost, shaved her head and coated her with tar for dating a British soldier.

We thought about our families, wives and sweethearts. We thought a lot about staying alive, how to react if shot at, or what to do in a riot. And we wondered why we were in Ireland.

Some patrols were sheer boredom. If silence and security weren't a factor, I hummed little tunes to lighten the routine. Yet we never knew when a shot or a blast could turn the night to horror.

We are always on the move. A. static man is an easy target. If I signal my men to pause, they immediately "balloon"—turning, always turning, eyes peering into shadows for a hidden gunman or booby trap, bodies tensed like springs, ears straining for my next command. A man coughs, setting every nerve on edge. Perspiration blurs our eyes; dare we wipe it off and maybe miss a tell-tale move ahead ?

Our faces are blackened. We shrink from street and car lights, duck under lighted windows, avoid the walls that terrorists have painted white to silhouette us. We dodge milk bottles deliberately lined along those walls to trip up and betray our presence.

We glimpse a family snug around a blazing fire. What are Mum and Dad doing tonight ? Why am I here ? We glance at our watches. Two hours gone; two more to go.

A shot sounds. Nine faces turn to me, expectantly. I must make the right decision, fast. Finally we go back to camp, worn out,our uniforms all stained

with sweat. We have accomplished nothing. What am I doing here?.....

SOMETIMES children fired toy guns around corners with realistic bangs. When you're keyed up, the instinct is to fire back. We lived in terror of accidently killing a child— and wondered if the terrorists wanted it to happen, for propaganda.

One night we found a suspicious-looking hole in a brick wall. Briefly, I forgot my training and almost killed us all. First, I shone my torch in. Luckily it wasn't a light-sensitive bomb. Then I stuck in my hand, touched a bag, squeezed it. It felt like ammunition. Suddenly I came to my senses.

"Oh, my God !" I sighed. Then, sharply, "Let's move !"

We blocked off the street. The bomb-disposal squad exploded the bag, shattering windows 90 metres away. Later the bomb expert said that if I had moved the bag the least bit I'd have set off a four and half kilo explosive device. The company commander congratulated us on the find, but I didn't deserve it. *Five years in Ulster and I'm still learning.*

Mixing With Killers

RE-TRAINING was mandatory for each new tour, and some of us began as early as six months before. We started with patrol practice around the streets of Plymouth and finished with two intensive months at a special training camp. We studied maps of Belfast streets; kept a "terrorists' corner" with clippings and memoranda on the newest Provo atrocities and tactics; learnt to handle a rifle with left or right hand, so that when firing around corners we offered as small a target as possible.

We came out of training in superb physical condition. But nothing can really prepare a man for the emotional strain: the constant threat of a shot in the back, or a bomb studded with long nails, or an incendiary mixture that clings to the body and burns.

In February 1976, I was back in Belfast as a "full" corporal with a company intelligence section with 42 Commando. For four months we would patrol Andersonstown, a Republican stronghold in the west end. We had to know each of the 200 or so terrorist suspects in our five-square-kilometre "patch" : his personal traits, whom he lived with, the make of his car, whom he conspired with and when. Our findings were screened by the Commando's main intelligence section; anything noteworthy passed on to higher authority.

Our main objective was to head off terrorism before it happened. Also our dossiers helped outwit the Provos. One of them got chatty with me one night. We knew he was cheating on his girl friend, so I said casually, “Hey, who was that women we saw you with in the back seat the other night ?” His eyes widened and he shut up like a clam, probably wondering, *What else does he bloody know ?*

We arrived a month ahead of our main unit so we could brief them the moment they landed. I had good men from past tours : Taffy, Willie, a huge man with a ribald sense of humour, and Rowdy, a 21-year-old with a photographic memory for names and faces.

We scrounged information everywhere. When we asked a suspect’s name —which by law he had to give us, on the street—we noted it along with the time of day and what he was doing. We also used informers, who ran the risk of terrible vengen-ce at the hands of the Provos.

Every night we toured the Provo drinking joints : Pubs and Clubs, we called it. Since the law did not require people in private premises to give us information, we had to use our wits.

Most such bars had a bomb-watcher outside (Protestant terrorists also threw explosives), and he doubled as Marine-watcher. On sighting us, his cry of “Brits!” caused the plotters inside to change chairs swiftly. But sometimes we sneaked past and caught them off guard, perhaps two Provo officers from different regions with heads together over some scheme.

“Aha, I see, I see !” I’d cry meaningfully. Sometimes the bomb-watcher would have a broken arm the next day.

Every night we mixed with suspected killers and rabble-rousers, chatting (if they deigned to talk), joking, needling, anything to make them drop their guard and give up a fragment of information.

I usually took four Marines inside on pubs and clubs. We always carried one baton gun, plus pistols and rifles. We tried to look non-aggressive—difficult when you’re wearing flak jackets and are armed to the teeth.

The crowds often tried to split us apart and aggravate us into a fight. Usually we moved in a tight pattern, covering one another at all times. But one night in a drinking hangout known to us as the PDF (for Prisoner’s Defence Fund), while showing a new sergeant the ropes, I got parted from my men. Instantly every man and woman in the bar rose, shouting out an IRA

anthem.

“Don’t oevrreact,” I murmured to the equally frightened sergeant. But then the crowd closed in, kicking and shoving. We waded out with the aid of rifle butts but it was a scary few minutes.

The Green Briar near the Glen Road was our biggest pub—and headache...

It is Friday, about 10 pm. The Briar is packed with drinkers and dancers. I leave one Marine at the top of the stairs to guard our escape route. As we step on the dance floor, jeers erupt around us. “Bastards !” “Dirty Brits!” Some try to trip us.

Jeff, a long-haired 17-year-old officer of the Fianna, is drunk at a table.

“What’re you doing here ?” I ask.

“Nothing to do with you, ye dirty English bastard!”

“Listen, son, when I ask a question I expect a reasonable answer.”

“Frig off, English bastard!”

It’s no time to start a riot. “See you later, boy”, I mutter meaningfully, turning away. A terrific smash to the head from a heavy beer mug drives me to my knees. I stagger upright, eyes watering, blood flowing from the gash.

“Who did that?”

Taffy has Jeff by the neck.

“It was him, Mark !”

The hall goes deadly quiet, I close my baton gun with a snap that rings through the room, and ram the big barrel under the youth’s nose.

“You’re under arrest, you little bastard !”

“Mark, look around !” yells Taff Every person in the room has a mug or glass raised, ready to pelt us.

”Let’s get out, lads,” I say quietly. We walk backwards slowly covering the crowd. As we reach the stairs, the air suddenly fills with flying glass-ware.

I fire one baton round and yell, “Run !

We get away with only scratches and bruises. I put out an order for Jeff’s arrest and take my head to the medics for treatment.

A STREET patrol scooped up Jeff 36 hours later. Even when handcuffed,

he fought like a tiger before an appreciative crowd. But at headquarters a different Jeff began to cry.

“Take it easy, son, I don’t hate you,” I said. He was only a boy, caught up in something he couldn’t handle. During his interrogation he gave us some information—just snippets, seemingly unimportant, but valuable when pieced together with other things we knew. Then he was released.

I’ve often wondered if he was knee-capped. That’s how the Provos usually dealt with informers.

“Bloody Hell a Bomb !”

THE terrorists were carrying the war to our doorstep. One night, walking back to my hut from the canteen, I saw bomb-shapes soaring through the darkening sky. Mortars! One plunged through the roof of a hut. Others landed all over the camp, resting upright, unexploded, like small spears. Later we learnt that the Provos had erred in the timing devices, but at that moment we feared they might all carry delayed-action fuses.

Our sergeant-major ran out to survey the damage. Just then our pet red setter—a stray dog that often marched on patrol with us—strolled out to unrinate on a bomb in the middle of the compound. We watched, breathless. Would the detonator be activated ?

“Get that bloody dog away from that bloody bomb!” yelled the sergeant-major. There were no volunteers. A few of us whistled feebly through dry lips. The setter finished its business and ambled off.

“Mark,” said the sergeant-major, “go in that hut where the bomb landed and clear those blokes out.”

It meant passing the bomb in the compound. I gritted my teeth and ran. In the hut, the other bomb stood primly upright in the floor. A television blared across the hall. I burst in to find ten Marines glued to the set.

“Everybody out, we’ve been mortared !” I screamed. “Bomb across the hall!”

“Aw, don’t fool around, Mark, this is a good show,” a corporal complained. I dragged him to the door and pointed.

“Bloody hell, a bomb!” he yelled. “Everybody out of the window!”

I cried. The window wouldn’t open wide enough so one Marine threw a

chair at it. It hit the frame, bounced back and broke his nose. We began to laugh hysterically. Somebody broke through with a rifle butt and we tumbled into the yard, still laughing like fools.

"What's so bloody funny ?" demanded the sergeant-major. When we told him, even he agreed that war had its lighter moments.

And its black moments. A few weeks later, our lovely red setter dragged itself to our gates one morning, howling with pain. Terrorist sadists had cut the tendons in its hind legs, crippling the animal beyond recovery.

WE FINISHED our tour and handed over Andersonstown to the King's Own Border Regiment (KOB). A few weeks later, on August 10, a KOB patrol was pursuing two gunmen who had fired on them. In the chase the gunmen's car swerved on to a pavement and killed an eight-year-old girl, a little boy and a baby out with their mother, Anne Maguire.

For Mrs Maguire's sister, Mai-read Corrigan, 32, and a friend, Betty Williams, 33, it was the last straw. They founded the Peace People, a movement that mobilized thousands of Protestants and Catholics all over Ulster for prayers, demonstrations and peace marches.

The provisional Sinn Fein, the lawful political arm of the Provisional IRA, mounted a propaganda campaign against them. The Peace People's marches were attacked by stone-throwing Provo youths. The 17-year-old son of a peace marcher was beaten unconscious and had the initial**s** "IRA" carved on his right leg and left palm by terrorists/ Williams' and Corrigan's car was set upon by a mob wielding clubs and pipes. But they kept on, and the two women shared the 1976 Nobel Peace Prize for their efforts.

(To be continued)

(C) 1983 by the Reader's Digest Association (Canada) Ltd. Reprinted by permission.

SLR training for Customs men in CRPF

Thirty eight officials of Customs and Central Excise underwent training in handling of Self Loading Rifles in CRPF's Recruits Training Centre-2 at Avadi from March 7 to April 5, 1988.

Police of 21st century

by

Dr. Krishna Mohan Mathur

How to prepare the police to meet the new challenges likely to be thrown up by the social, economic and political changes in the 21st century ? Will the present pattern of police need complete restructuring ? Recruitment, training, organisational pattern and goals, personnel management and career planning of police need a review in the light of the new tasks which are likely to be assigned to the police in the 21st century.

What will be the new role of police in the 21st century? Technological advance, computer technology, changing patterns of society, increase in white collar and victimless crime, terrorism, hijacking and violence, rising expectations of the people and rising urbanisation—all these factors demand a new and more professionally sound police system at grass-root level.

The issues

How can we prepare police for meeting the challenges ? How can police image be improved and how effective community support can be expected for the police ? Whether the present leadership in police is effective and responsive to the changing needs of the organisation ? How can more motivated and service-oriented police be created to meet the demands of our democratic society ? What are the available models of policing in the world and what changes are needed in these models to suit the demands of the 21st century ? How can rural policing be made more effective and how can people be made more co-operative ? What should be the appropriate police philosophy for the 21st century ? What sub-culture has to be built in the police organisation to make it more effective and responsive to the needs and requirements of the 21st century ? Some of the above issues need our immediate attention.

Social, political and economic challenges of the 21st century demand a new generation of policemen committed to the ideals of secularism,

democracy, social justice and human dignity. The transformation will require major adjustments and adaptations in the police structure, its value system, its training pattern and its personnel policies. New role for the police has to be identified. The dilemmas and paradoxes of police work are to be analysed to find out its limitations, problems and constraints in a more realistic and pragmatic manner.

The changes

Politicisation of Indian society and the planned economic development, scientific advancement and introduction of new technology, advent of computer and rapid rise of crime due to urbanisation—all these changes call for new tasks. The need for attitudinal change in the police and re-orientation of police philosophy in the context of change cannot be over emphasised. Greater professionalisation of police will have to take place to meet the emerging challenges. If we attempt to peep into the present situation, we see certain trends. These are :

(1) faster rate of increase in crime as compared to police strength and population, (2) the involvement of the young people in crime in increasing number, (3) increasing involvement of women and children in crime, (4) tendency of criminals to be armed and to involve women in crime, (5) increasing problems of internal security and disorders, (6) drift of people towards gambling, alcoholism, drug addiction, (7) caste and class conflicts, and (8) rise in terrorism and white collar crime. To respond to these in an effective, democratic and humane manner by itself is a big challenge.



"Hope you will bear me in mind. I am the contractor for supply of brickbats"

The role in future

The most important elements in policing are police performance, behaviour leadership, organisation, human resource development and police-community relations. The police have to be transformed into a more people-oriented and democratic outfit to act as agents of social welfare. The role of police in the 21st century will have to be ameliorative and promotive of a more just social order.

Unless our police arc adequately prepared for this role they will face emotional ambivalence and contradictions in the choice of alternatives in role performance and decisionmaking. Police will have to build up public trust on which alone the foundations of entire police work are built.

The efficiency

Police efficiency is generally measured in terms of crime cases, the

percentage of stolen goods recovered, the conviction rate, the number of traffic accidents, police popularity and police behaviour. Only highly motivated, well educated, properly trained, well directed and disciplined police officers can increase police efficiency. The policeman has to reconcile the two objectives of maintaining order and ensuring freedom and this is a very complex task requiring a mature and balanced approach.

Organisational behaviour depends on motivation, anxiety, incentives, psychological temperament and other factors. Unless organisational, personal, procedural and behavioural reforms are introduced in the police organisation, police officers can not be prepared to face the new challenges.

The Police Leaders

The entire area of police administration has to be studied in depth to evolve a well-planned strategy. Police leaders have a heavy responsibility in preparing the policeman to meet the new challenges. Goal-emphasis, social perception, work facilitation, supportive relationships, conflict resolution and deeper commitment are some of the essential factors needed in police leaders for their effectiveness. The professional leaders have to equip and train the police force adequately.

Organisational changes

Organisational designs require that the capabilities of the human resources should be properly matched with the environment, equipment and other non-human resources in an effective manner. Sound organisational structure is a pre-requisite. Police have to constantly build up good organisational health by constantly watching various ailments and symptoms of poor health. Organisational development in the police has to be planned to induce change in people, structure and policies in a planned manner.

Training

Strategies like team building, inter-group meetings, setting and planning of goals, skill building and laboratory training have to be constantly used with an eye on contingencies. Human resource development has to ensure personal growth and career development of employees along with organisational development. Training in police has to be a continuous process

and a vehicle for constantly improving the skills, techniques and knowledge of the individual to perform the assigned role. It calls for identifying objectives, selecting appropriate training strategies and creating suitable structural infrastructure.

"The future is not an overarching leap into the distance; it begins in the present," said Daniel Bell. So planning for the next century is not an act which requires crystal ball gazing; it is an activity which requires realistic attention. In words of Goldstein,' the ultimate objective of all efforts to improve the police is to increase their capacity to deliver high-quality services to the citizenry and to equip them to do so in ways that are consistent with and support democratic values.'

In order to meet the challenges of the twenty-first century, we have to review the goals, objectives, philosophies, missions and strategies of the police organisation and to carry out required innovations and reforms. Police leaders have to re-evaluate rules, procedures and policies on a continuing basis and should learn to view their functions in relation to a total system and a totally new environment.

Safeguarding the fabric of a changing society in a computer age will be the prime concern of the cops. Police will have to equip itself with the modern technology, it has to utilise latest generation computers, televisions and all other latest technological advances. Broad strategies have to be worked out in respect of training, selection of personnel, career development, behavioural styles ana motivation techniques of the police personnel to make them efficient, and responsive to the challenges of the time.

An awareness of the coming challenges within police organisation and a ready acceptance of the changing role are important factors for bringing required qualitative improvement in police peformance. This necessitates a more flexible and open organisational structure and an enlightened view of management. Active adaptation and management and a sense of commitment and service are needed to meet the future challenges.

VIR CHAKRA FOR CRPF MAN

Late Constable Thankappan Mohanan of 35 Battalion, CRPF has been

awarded Vir Chakra by the President, Shri R. Venkataraman.

Constable Mohanan is the first CRPF man to be honoured with Vir Chakra. The medal was awarded to him for his act of bravery against LTTE insurgents in Sri Lanka on October 15 last year, in the course of which he lost his life.

When two Companies of CRPF were proceeding to Karawadi East from Palai airfield, the convoy came under heavy fire from the northeastern side where LTTE insurgents had positioned themselves. The fire was returned by the men in convoy.



Late Constable Mohanan

Though Constable Mohanan was hit on his chest and his left shoulder was badly blown off, he gallantly held on to the machine gun that he was operating and fired effectively at the insurgents till he breathed his last.

The courage displayed by late Constable Mohanan averted further loss of lives of IPKF men in the ambush.

Shrimati Padmini, the wife of late Constable Thankappan Mohanan who received the Vir Chakra from the President on April 30, 1988 was felicitated by the officers and men of the Central Reserve Police Force at a simple function at Rabin-dra Rangshala the following day.

The Director General of Central Reserve Police Force, Shri P. G. Halarnkar presented her a cheque of Rs. 25,000 on the occasion. This is apart from the other financial benefits she gets from the Government and the CRPF. The father of the late Constable, Shri S. Thankappan, was also present

on the occasion.



Shrimati Padmini, wife of Late Constable T. Mohanan receives the Vir Chakra from the President Shri R. Venkataraman

INSPECTOR GETS SENA MEDAL

Inspector B. P. Sharma of 35 Battalion, CRPF has been awarded Sena Medal.

The medal has been awarded in recognition of his gallant action in Sri Lanka as part of the Indian Peace Keeping Force.

He is the third person from CRPF to be honoured with the Sena Medal. (Details of the action for which he has been honoured will be published in one of the forth coming issues of CRPF Samachar.)



Inspector B. P. Sharma

MANOCHAL GIVES A SLIP

Two terrorists—Daya Singh and Balbir Singh—were killed in an encounter with a patrol of 12th Battalion, CRPF in Jandiala in Batala on January 11, 1988.

When information was received that the chief of Bhinderanwale Tiger Force Gurbachan Singh Manochal with five other terrorists was camping in a farm house near Butt village, three sections of 'E' Company, 12th Battalion, CRPF along with the Detachment Commander and the Company Commander rushed to the spot.

As the house was being encircled, the terrorists spotted a CRPF party of three men and started firing at them. Gurbachan Singh Manochal immediately escaped on a horseback. The other five fled towards an adjoining drain while firing at the CRPF men.

Undeterred, the three CRPF men chased them. Three of the terrorists managed to escape towards Banchari village while two others hid themselves in a field of standing crop.

When the CRPF men neared them, one of them stood up and fired a burst

of eight to ten rounds. The CRPF men returned the fire, killing him on the spot. When the other terrorist tried to return to the drain to escape, he was spotted by one of the CRPF men, who immediately chased him. Taking cover in a drain, the terrorist hurled a grenade at the CRPF man. Though the grenade exploded, he escaped unscathed. The CRPF man then lobbed a grenade towards the terrorist's position and even fired at him, resulting in his death.

One Thomson machine carbine with some rounds and a grenade were recovered from the dead terrorists.

Of the two dead, Daya Singh was a plus 'B' category terrorist.

One killed in Tarn Taran

One terrorist was killed by a patrol of 48th Battalion, Central Reserve Police Force, in an encounter in Thatgarh in Tarn Taran on February 29, 1988.

On receipt of information that a hardcore terrorist was taking shelter in a house in Piddi village along-with another terrorist, the CRPF party led by the Officer Commanding, 'E' Company, 48 Battalion, CRPF rushed to the spot. The terrorists were, however, alerted by the barks of the dogs and escaped.

In a bid to apprehend them, the CRPF party went on foot towards Jagatpura and Thatgarh villages, after parking the vehicles at Kasel. When the CRPF men were between the two villages, they were fired upon by three terrorists. The CRPF men fired back at them and they fled towards Thatgarh. While persuing them, the CRPF men again came under heavy fire near a canal bridge. Exchange of fire continued for about 20 minutes, whereafter one of the terrorists was killed while two others managed to escape.

One 12 bore country-made pistol with three cartridges and some ammunition were recovered from the spot of encounter.

One held

One terrorist, Swinder Singh, was injured when he was fired upon by a patrol of 'C' Company, 48 Battalion, CRPF in Sanghe village area on

February 28 in Tarn Taran.

When two persons in a tractor were ordered to stop, they speeded towards Tarn Taran. Near a field, the suspects got down and started running. When the patrol ultimately fired, the injured one was held while the other managed to escape.

ONE KILLED IN ENCOUNTER

One terrorist was killed while two others escaped in an encounter with 12th Battalion, CRPF near Kalke village in Amritsar on April 2, 1988.

The CRPF party led by the Officer Commanding, 'B' Company of 12th Battalion was proceeding towards the Khitchian village from Kalke village side in a jeep, when three Sikh youths were seen in front of a farm house. One of them whipped out an AK-47 assault rifle and fired at the jeep when an effort was made to check them.

The youth then fled towards the adjoining fields in a bid to escape through the standing wheat crops, pursued by the CRPF men. While fleeing, they continued to fire at the, CRPF men. The fire was returned.

After covering about 1000 yards, one of the youths managed to escape while the other two continued to exchange fire. The Officer Commanding divided his party into two and attacked from two sides. While firing at the CRPF party, one of the terrorists was shot dead.

The other terrorist tried to get closer to his dead colleague but finding himself under heavy fire, fled, leaving his Thomson carbine and managed to escape.

During search of the area, one AK 47 assault rifle, lots of ammunition and one detonator were recovered.

The body of the terrorist was handed over to civil police.

Two terrorists, Kuldeep Singh and Manjit Singh, were arrested by a party of 29 and 30 Battalions led by Commandant of 29th Battalion in Verowal in Amritsar on April 1 1988.

They were held when the CRPF party carried out a raid in the village of Sangarkot. Two '315 rifles, a SB gun and some ammunition were recovered from them.



Minister of State for Internal Security, Shri P. Chidambram, congratulates the CRPF jawans who took part in an encounter at Rattaguda in Amritsar.

SIX TOP TERRORISTS ACCOUNTED FOR

Six dreaded terrorists including self-styled General Hari Singh were killed after a night long encounter with personnel of 19th and 63rd Battalions of Central Reserve Police Force near Rattaguda village in Amritsar on April 16 and 17, 1988. Three CRPF men also lost their lives in the encounter which has claimed a high number of terrorists in a single action.

A Section of 'C' Company, 63 Battalion while on patrolling duty in Rattaguda village was fired upon when they approached a farmhouse. CRPF men returned the fire and surrounded the house to prevent escape of the terrorists. Constable P. R. Arjunan was hit in the initial exchange of fire and

later died in the hospital.

On receiving information about the encounter, re-inforcements rushed to the area from 19th Battalion, CRPF including senior officers of that unit.

The exchange of fire continued for quite some time. As a result of the exchange of firing, hay inside the house was set on fire and the terrorists started running from room to room because of heat and suffocation.

Around midnight when the firing ceased, CRPF men crawled into the house stealthily and extricated all six bodies of the terrorists.

Hari Singh, alias Gulla, of Chola Sahib was believed to be involved in at least 70 killings in the past. The hit squad of this gang was also responsible for the killing of 18 members of a family of Pangota village on March 31 this year.

The other five terrorists were identified as Gurmukh Singh, Sarab-jeet Singh, Dharam Singh, Gurinder Singh and Jaswinder Singh.



Laxman Patil



P. R. Arjunan

Two other jawans of CRPF who were killed in the encounter are Constable Laxman Patil of 63 Battalion and Constable Ram Prakash of 19th Battalion.

One Chinese rifle, three AK-47 rifles, two 12 bore DBBL guns, one .315 rifle and one revolver along with 400 assorted ammunition were recovered from the dead terrorists.

Constable Gopal Kishan sustained bullet injuries on his left hand.

29 Battalion kills terrorist

Baldev Singh, a 'B' category terrorist involved in a number of killings in Tarn Taran, was killed in an ambush laid by personnel of 29 Battalion, Central Reserve Police Force in Verowal in Amritsar on February 28, 1988.

A 12 bore gun, some cartridges and fired cases were recovered in the incident.

We pardon as long as we love.

—La Rochefoucauld

Discipline is learnt in the school of adversity.

—Mahatma Gandhi

Those who malign others are maligned themselves.

—Rig Veda

SIX DIE IN ENCOUNTER

In yet another major success, six terrorists were killed in an encounter with a CRPF patrol in Boparai Kalan village in Amritsar district on April 18. Three CRPF men sustained injuries.

Men of 'D' Company, 47 Battalion, CRPF under the command of the Company Commander on near-ing a house saw some men running after seeing the CRPF patrol. When challenged, they took positions and fired at the CRPF patrol.

In the course of heavy exchange of fire, re-inforcement from 24 Battalion, CRPF also arrived.

The troops split themselves in two parts—one to seal the escape route of

terrorists and the other to deal with a lone terrorist who had taken up position near a water pump house and was firing accurately. However, these terrorists were completely taken by surprise and shot when the CRPF men approached the water pump house through a drain. Meanwhile the five terrorists who were entrenched in the wheat crop made a dash towards a bridge and were chased. In the resultant exchange of fire three of these were killed. The remaining two tried to escape towards a nearby drain but were cut off in the exchange of fire and both the terrorists were shot dead.

The six terrorists killed included three ‘B’ category terrorists. Their names were Nishan Singh Bichhoha, Darbara Singh of Ramdas, Sahib Singh, Jagdish Singh alias Jagga, Gulzar Singh alias Pappu and Rajinder Singh. They belonged to the Bhindranwale Tiger Force.

Five AK 47 rifles, one .32 pistol, one Thomson carbine, two grenades and 1500 rounds of various calibres were recovered.

Sub-Inspector R. B. Pal, Constables Rattan Singh and P. Rupaiah were injured in the encounter.

The Director General of CRPF has promoted 12 personnel of ‘D’ Company, 47 Battalion. In addition, a number of personnel have been recommended for promotion and other awards.



Good news. I will get family accommodation before my retirement !



The Director General of Punjab Police having a look at the recoveries made by CRPF in April. IGP, North West Sector, Shri Joginder Singh and Shri S S Virk, DIGP, CRPF also have a look at the arms.

KILLER OF 50 SHOT

Puran Singh, alias Punna, a self-“styled General of the outlawed Bhinderawale Tiger Force was killed alongwith his accomplice Gurdev Singh in an encounter with a party of 48th Battalion, CRPF in None area in Tarn Taran on February 21, 1988.

When the Officer Commanding, ‘C’ Company, 48 Battalion, CRPF heard some gun shots while on patrolling duty in None area, he informed his Unit Control Room of same. Re-inforcements from 48 Battalion and two Sections of ‘F’ Company, 30 Battalion also reached the area.

While searching the area, the party saw a group of three or four men near a canal. On being questioned they started firing at the CRPF party and began running through the fields.

The CRPF men returned the fire and ran after the terrorists. Since it was

dark, CRPF men fired para-illumination bombs and under the illumination fired at the terrorists.

After twenty minutes of exchange of fire, the firing ceased from the terrorists side.

In the subsequent combing operation, two dead bodies with an AK-47 rifle and a Spring-field carbine were recovered.

One of the dead was later identified as Puran Singh, a plus 'B' category terrorist who carried a reward of Rs. 50,000 on his head. He was involved in killing more than 50 persons and was also responsible for the killing of four men of 29 Battalion, CRPF.

Gurdev Singh, the other killed was a hard core terrorist and was the personal body guard of the self-styled chief of Bhinderwala Tiger Force, Gurbachan Singh Manochal.

Silence is one great art of conversation.

—Hazlitt

Speech is great, but silence is greater.

—Carelly

Dreaded Terrorist Killed

A dreaded hard core terrorist Jagraj Singh of Khalistan Commando Force who carried a reward of Rs. 20,000 on his head was killed in an encounter with a party of 12th Battalion, Central Reserve Police Force in Raniwala village in Muktsar sub-division of Faridkot district on February 13,1988. Constable Mohammed Hanif of the unit also lost his life in the encounter.

The CRPF party alongwith the Station House Officer (SHO) of Malout Sadar Police station searched Ratta Tibba village and then moved to Raniwala village.

After searching a few houses, they went to the house of Ranjit Singh who was suspected of having links with AISSF. Since the house was bolted from inside and there was no response to knocking, the house was encircled.

When three CRPF jawans forced their entry into the house they were fired

upon by some terrorists. As a result, all the three sustained bullet injuries. Yet the CRPF men fired at the terrorists who rushed out of the house in a bid to escape.

When two of the terrorists were running from the place where Constable Mohammed Hanif was on cordon duty, the Constable fired at them injuring one. The Constable then ran behind the terrorists firing from the hip. Sensing trouble from the Constable, one of the terrorists took cover behind a heap of mud and fired at the Constable from a close range resulting in his death.

One terrorist who had taken cover behind a wall and was keeping the CRPF men engaged to allow two of his comrades to escape, was shot dead by a Naik of the unit.

Three others including the one who was injured managed to escape. The dead terrorist was later identified as Jagraj Singh.

Two AK-47 rifles, one .38 revolver and some ammunitions were recovered from the spot.

Promotions for Punjab action

The Director General of Central Reserve Police Force, Shri P. G. Halarnkar, visited Amritsar on April 17, 1988 and congratulated the officers and men who took part in the encounter on April 16 for their valour and determination.

He announced the promotion of seven jawans of the Section ‘C’ Company, 63rd Battalion who chanced upon the terrorists gang and decided to take them on. It was largely due to their alertness and determination that a major success was achieved by CRPF in the anti-terrorist operations.



Officers and men of 12th Battalion CRPF with the arms and ammunition recovered by them in various operations in Punjab.

The seven promoted are Head Constable M. S. Bhandari, Lance Naik D. K. Singh and Constables Ram Kishan Yadav, Jerom Minj, C.B. Vijayan, J. S. Nair and Lingeha Chin.

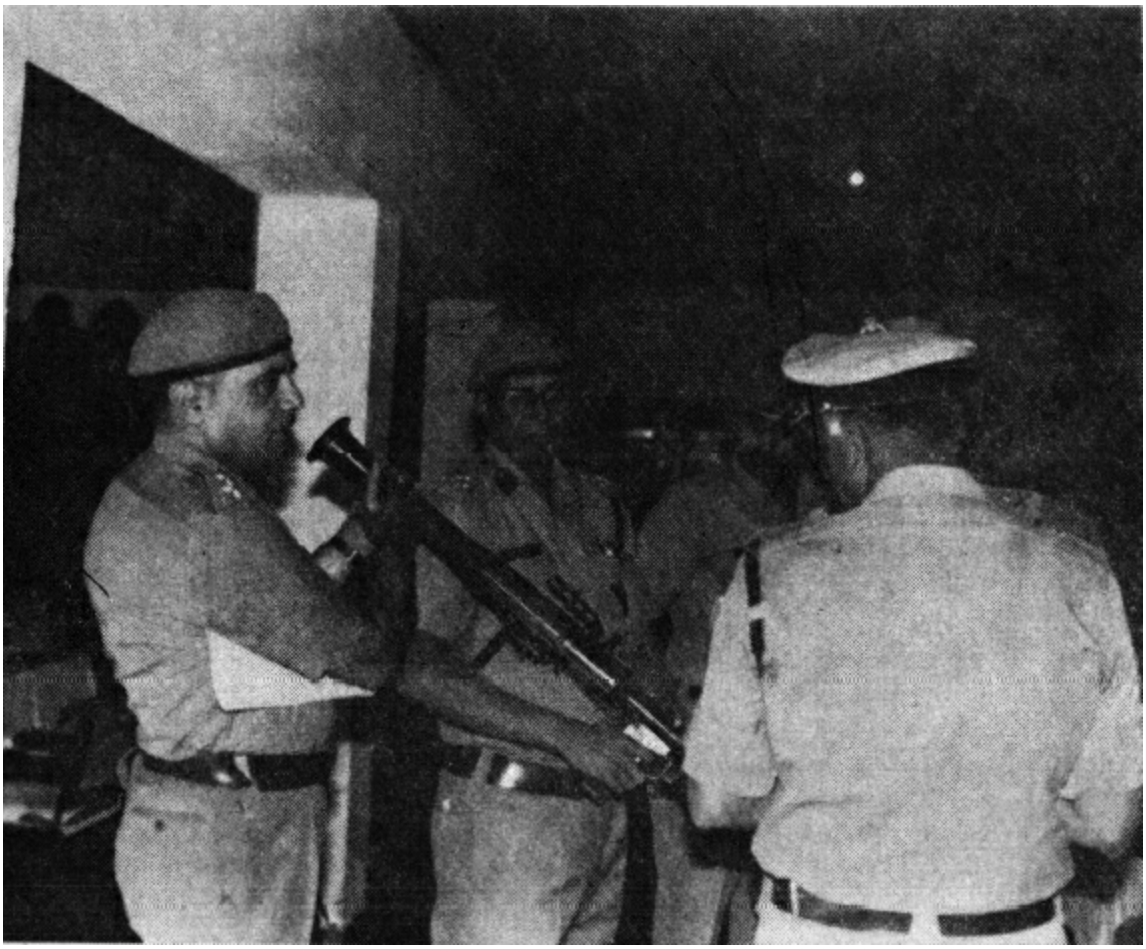
In addition to the promotion, Head Constable Bhandari has been sanctioned Rs. 5,000 while the remaining get Rs. 2,000 each as cash reward.

The Director General also ordered the promotion of Sub-Inspector Harswaroop Singh, Head Constable Gulam Hussain, Naik Puran Chand, Lance Naiks Pratap Singh and R.C. Pillai and Constables Roshan Lal, Bridha Singh, K. K. Mishra, Satish Kumar, Mohammed Rashid, Ramesh Chand and Ram Asre (all of 47 Battalion) for their role in the encounter on April 18, 1988. In addition, Sub-Inspector Harswaroop Singh was sanctioned Rs. 4,000 while the Head Constable and Naik were given Rs. 3,000 each as cash reward. The Lance Naiks and Constables were paid Rs. 2,000 each.

Among the officers who led various parties in the encounters on April 18, 1988, Shri S. S. Singh Dy.S.P. has been paid Rs. 5,000 as honorarium while Commandants A. C. Seetharam, Bachan Singh and M. K. Dhagat, Assistant Commandants R. P. Gautam and S. K. Sharma and Deputy Superintendents of Police D. P. Tyagi, S. S. Singh, Baren Singh, Ghana Shyam Pandey and Lekh Raj were given appreciation letters by the Minister of State for Internal Security, Shri P. Chidambaram.



Shri P. G. Halarnkar, Director General, CRPF congratulating Shri M. S. Sethi of 49 Battalion who led the operation. Also seen in the picture is Shri Joginder Singh, IGP, North-Western Sector, CRPF.



Commandant Nand Lal of 49 Bn, CRPF showing the rocket launcher recovered from Kulla Kalan to the Director General and Deputy Director (Operations), CRPF.

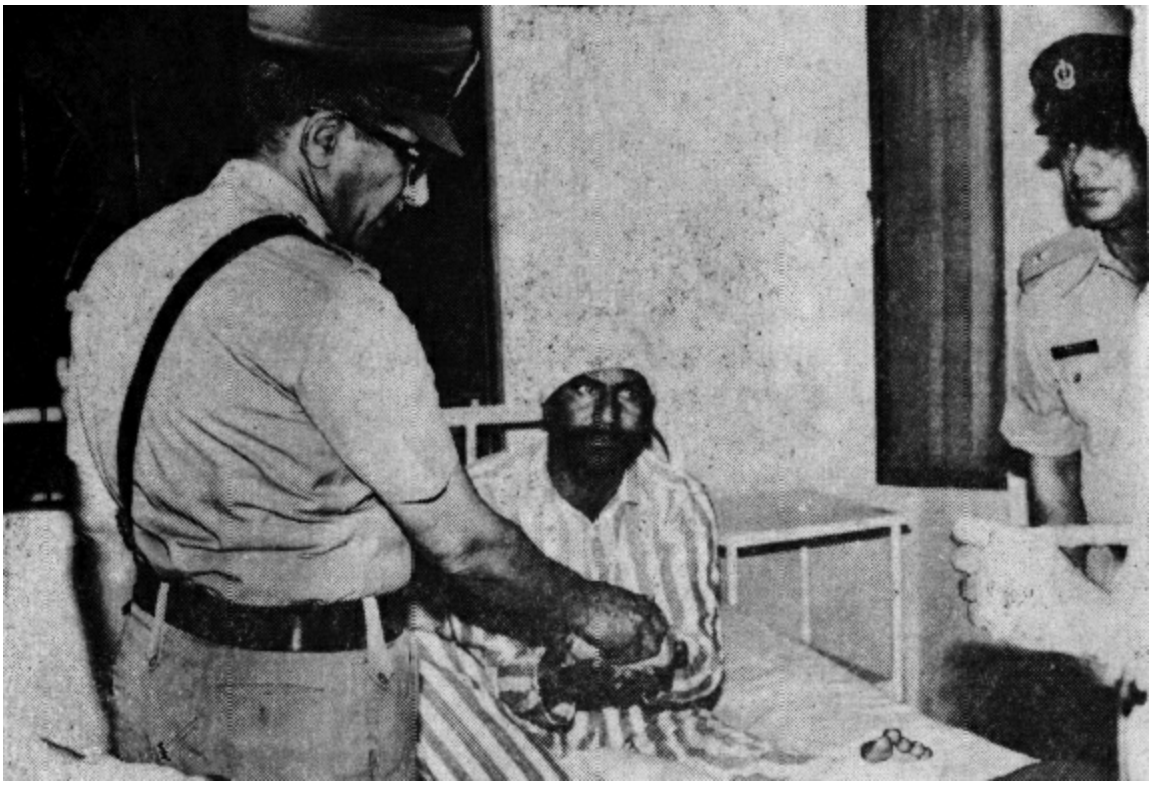
Chinese rifles and Russian rockets

A party consisting of one platoon each of 25 Battalion and 49 Battalion, CRPF, under command of Shri M. S. Sethi, Second-in-Command, 49 Bn, CRPF carried out a raid in village Kulla Kalan under Patti Police Station in Amritsar District on the night of March 27, 1988 on specific secret information. The search yielded a rich haul of arms and ammunition from nicely cemented underground bunker. The recoveries included AK-47 rifles-13, American rifle with steel drum magazine-1, AK-47 magazines-34, 7.62 BA rifles-2, 12 bore DBBL guns-2, high explosive anti-tank rockets-14, HE 36 grenades-13, detonators for grenades-20, power charge units of anti-tank rockets-14, plastic explosives-15 packets, timing devices with keys-18, high explosive bombs-12 and various types of ammunition-over 6,000 rounds.

This was one of the biggest ever hauls of sophisticated arms which included powerful Soviet-made rockets, bombs and Chinese assault rifles from Punjab.



The traditional send-off



A word of cheer for the patients

An affectionate farewell

Shri S. D. Pandey was given an affectionate send-off on his retirement on March 31.

A farewell dinner was held at Ravindra Rangshala headquarters of 14 Battalion on this day. Besides the senior officers stationed in the capital, the dinner was attended by the Home Secretary, Shri C G. Somaiah, former Special Secretary, Shri K. F. Rustamji, Additional Home Secretary, Shri V. K. Jain, the Commissioner of Police, Shri Ved Marwah, former IGP of CRPF, Shri P. L. Mehta and the chiefs of BSF, ITBP and CBI.

Speaking on the occasion, Shri P. G. Halarnkar, the Director General of CRPF, paid a glowing tribute to the qualities of head and heart of the outgoing chief. Shri Pandey, he said, had led the Force in very difficult times with integrity, dedication and sincerity during the two years and five months of his stay in the Force. He wielded “danda” as well as pen with equal felicity, added Shri Halarnkar.

During the stewardship of Shri Pandey, said Shri Halarnkar, the Force had

made great strides. He made special mention in this connection of the steps taken to improve the professional competence and welfare of the Force. He mentioned among his many other achievements the introduction of the concept of workshops twice a year, low cost housing and the starting of a public school (the first public school in a para-military force) etc.



Handing over charge



IGP (HQ), Shri B. J. S. Sial, bidding farewell

Shri Halarnkar referred to Shri Pandey's qualities of disarming frankness, sincerity and concern for fellow human beings. In honouring Shri Pandey, the Force was honouring itself, said the new chief.

He conveyed the best wishes of the members of the entire Force to Shri Pandey and Shrimati Kamla Pandey.

Paying a tribute to Shri Pandey, Shri Rustamji said voluntary retirement of

Shri Pandey was a loss to the entire police in India.

Shri Rustamji referred to his recent visit to Punjab and stated that he admired how cheerfully forces like the CRPF were shouldering the entire burden in the strife-torn state. What would have happened if these forces had not come forward to meet the challenge, he asked pointedly and expressed the hope that government would devote attention towards the welfare of men and their families.

About Shri Halarnkar, Shri Rustamji stated that he was one of the best police officers of one of the best police forces in the country and expressed good wishes for him in the new assignment.

Responding to the sentiments expressed, Shri Pandey stated that he was overwhelmed because he had received so much from the CRPF and his other colleagues in service. His ties with the CRPF were abiding and he did not feel his retirement made any difference in that respect, he said.

About the appointment of Shri Halarnkar as the Director General of CRPF, Shri Pandey stated that nothing could have been better for the CRPF. He particularly felt happy to have Shri Halarnkar as his successor. He expressed good wishes for the members of the Force and their families.

Other functions in his honour were held in Neemuch, Trivandrum Mount Abu and in Delhi based Battalions.

Earlier on March 30, a ceremonial parade to mark farewell to Shri S. D. Pandey, Director General, Central Reserve Police Force was held at Jharodakalan, near Najafgarh.

Shri Pandey appealed to the members of the Force to temper firmness with politeness and to guard against the evil of communa-lism creeping into its ranks. “We have to win the battle of hearts”, he said.

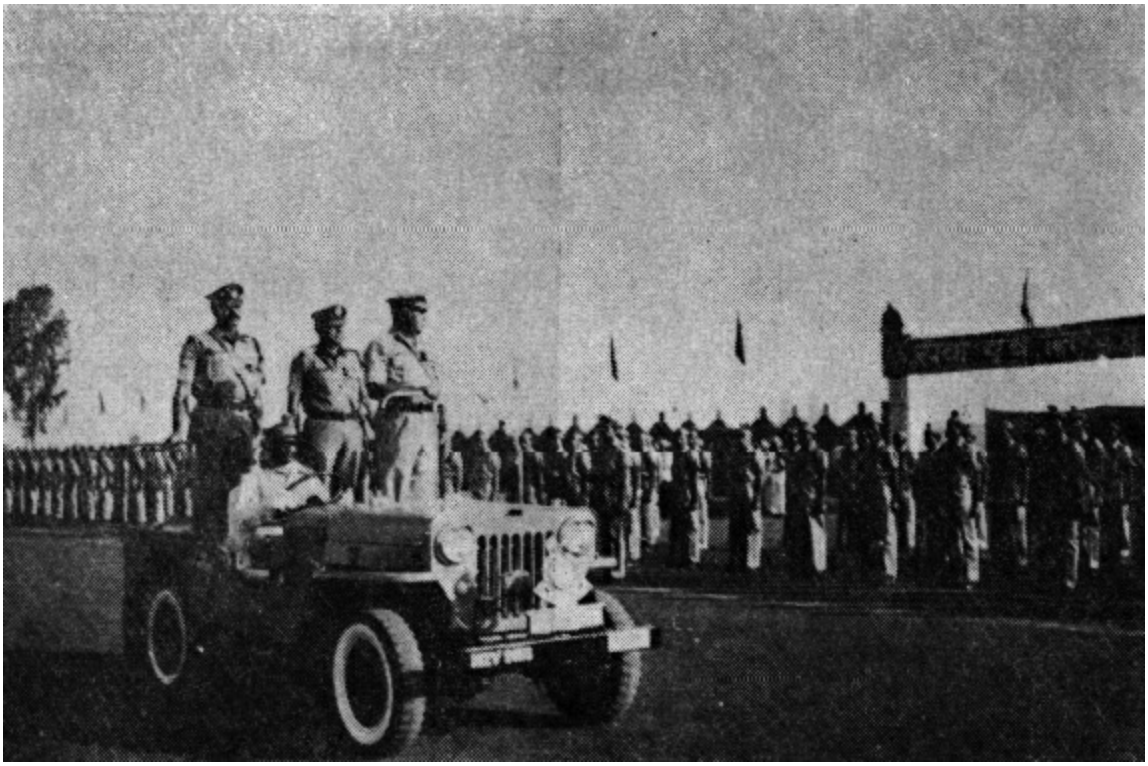
It was part of a soldier’s duty to lay down his life at the call of duty but no life should be lost due to negligence, said the retiring chief.

Shri Pandey called upon the Force personnel to live up to the glorious traditions—a sense of responsibility that comes with age (CRPF being one of the oldest police forces), honesty (not aspiring for anything that is not due), cooperation with the local commanders and national integration (every Section of the Force being a replica of India)—of the CRPF.

Shri Pandey announced that the government had appointed Shri P.G. Halarnkar (then Additional Director General of the CRPF) as the next

Director General of the Force.

Shri Pandey complimented the parade for its excellent turn-out and drill. The parade was commanded by Shri Pritam Singh, Commandant, 64 Battalion, CRPF.



Shri Indra Singh reviews the farewell parade at Neemuch

INDRA SINGH RETIRES

Shri Indra Singh, DIGP, Central Reserve Police Force, Neemuch retired on superannuation on March 31, 1988 after serving in police forces for 38 years. He remained in CRPF for 29 years and was honoured with President's Police Medal for Distinguished Service and Police Medal for Meritorious service.

Shri Tilak Kak, an IPS officer of Uttar Pradesh cadre, on deputation to CRPF took over charge as DIGP of New Delhi range.

New Chief's message

On his assuming charge as Director-General of the Central Reserve

Police Force, Shri P. G. Halarnkar has in a message addressed to officers and men of all CRPF formations stated that he will do his best to keep up the glorious traditions of the Force. He has sought the cooperation of all to further improve the effectiveness of the CRPF. The message dated April 4,1988 is reproduced below:

I have taken charge of the post of Director General CRPF. It is a great privilege for me to be head of this famous Force. I will do my best to keep up its glorious traditions. I seek the cooperation of you all to further improve effectiveness of the CRPF in the service of the nation."

Letter to the Editor

Dear Sir,

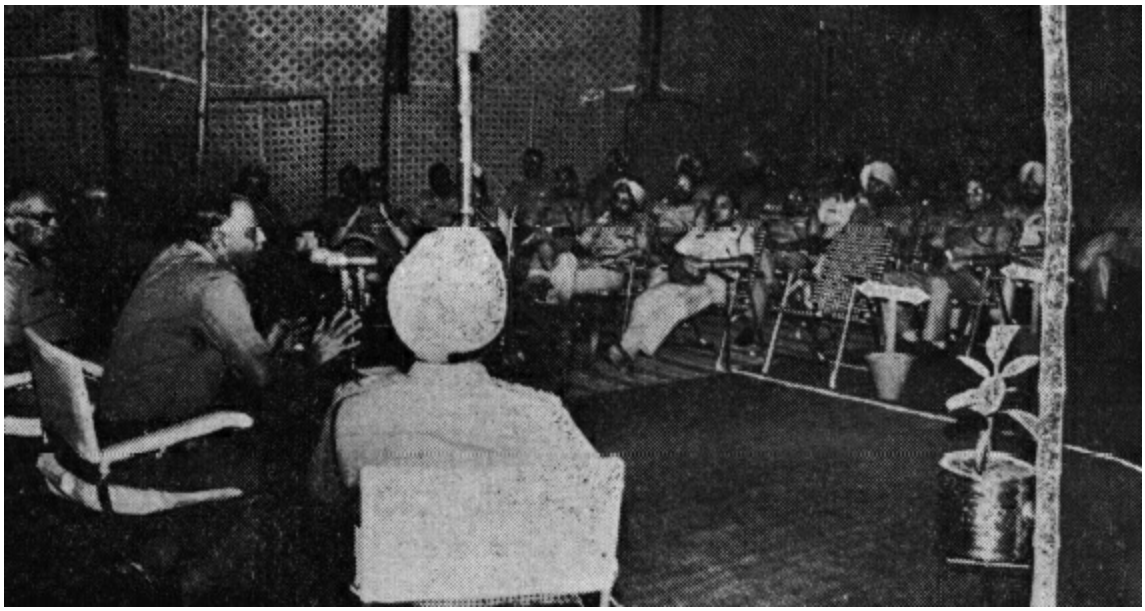
CRPF is a meeting point of people and cultures of all parts of the country. As such numerous humourous occasions arise in the day-to-day lives of our personnel. These humorous situations go a long way in making the hard life of the Force bearable. I feel that the CRPF, SAMACHAR should carry a regular feature titled "Humour in CRPF," "Life in CRPF" or some other suitable title and the readers invited to contribute their interesting write-ups for the magazine.

I feel another regular feature titled "Letters from Readers" also should find a place in your esteemed publication.

George Podipara

We renew the invitation to readers to contribute for column Humour in CRPF.

Chief Editor



The Director General, Shri P.G. Halarnkar, addressing Delhi-based CRPF officers

Our New Chief

Shri P. G. Halarnkar, (pronounced as “Halankar”), Additional Director General of the Central Reserve Police Force, took charge of the office of the Director General of the Central Reserve Police Force from Shri S. D. Pandey on March 31, 1988.

Shri Halarnkar belongs to the Karnataka cadre of the IPS. He is the second Goan, after Shri J. F. Ribeiro, to head the CRPF.

Before joining the CRPF, Shri Halarnkar was Director-General of Police, Commandant-General Home Guards and Director of Fire Force, Karnataka.

Shri Halarnkar has held many positions in Karnataka state and the Government of India. He has had a distinguished tenure as Commissioner of Police, Bangalore City for nearly four years.

As Commissioner of Police, Bangalore from 1983-86, he was responsible for organising security for SAARC.

Looking into all the aspects of security of the international conference, in which seven heads of states were taking part, was indeed a challenge which the state police, under the leadership of Shri Halarnkar, met successfully. These four years were also marked by communal riots in the city and Shri Halarnkar was able to prevent explosive situations from taking turn for the worse and brought peace to the riot-torn city in a short time.

Born on September 2, 1932, Shri Halarnkar is the recipient of the President's Police Medal for Distinguished Service and Police Medal for Meritorious Service.

Shri Halarnkar graduated from Karnataka University. His hobbies are reading and gardening.

His family comprises wife and two sons. His wife is a physiotherapist and specialises in spastics. She was principal of the Centre for Special Education run by the Spastic Society in Bangalore. Right now she is heading the management division of the Spastic Society of India which is running a centre for spastic children at Hauz Khas in the Capital.

Whoso diggeth a pit shall fall therein.

—Old Testament

Friends are not made. They're recognized.

Claire Mac Murray

Modernization of Signals

by

Raghunatha Kurup

"It would be impossible to run our offices without the help of Signals", says Shri Kirpal Singh, Joint Assistant Director (Accounts). He is not the only one who thinks so. For the CRPF is so huge and so much spread out that dependence on postal service alone can cause havoc to its efficiency and morale.

What makes the communications in the CRPF tick ? Fact is that it is a story of dedicated service of five and a half thousand personnel spread all over the country and beyond.

The mile-stones

It was in late sixties that the CRPF grew rapidly in size and a need for an integrated communication network of radio and teleprinter was realised.

Limited communications available to executive battalions could no more meet this new demand. A new concept of Signal Centres was evolved with the birth of Group Centre and Signal Battalions. A Signal Centre till then was alien to the normal concept of police communications. (Signal Centre is a place where messages to any addressee could be handed over for transmission, and messages from any originator could be received. Signal Centres are outlets and inlets to the entire network which covers the CRPF in an integrated manner.) The first half of seventies witnessed rapid strides towards modernisation. Signal Battalions shared the communication responsibilities of the Force exclusively on a geographical basis. The legacy of scavenging the army disposal depots for salvaging left-over and discarded equipment for use in CRPF slowly came to an end. New grounds were broken in procurement when Bharat Electronics Ltd (BEL) became our major supplier of communication merchandise. Light weight very high frequency (VHF) and custom-built compact low power high frequency (HF) equipments found their way into CRPF, heralding a new era of progress. Teleprinters started forming the arteries of this network. Long range high powered transmitters were established at most of the static centres. Radio telegraphy (RTTY) became yet another feature of this integration. Government upgraded the post of Wireless Adviser to that of Deputy Director (Communications), acknowledging the importance of the growing communication network. By the end of seventies Signal Ranges were serving the Force.

New emphasis

In the wake of complex law and order situations in many parts of the country, CRPF's deployment and operational style underwent changes. In this changing pattern of deployment executive units were stretched beyond limits, employing all resources including communication equipment and manpower. Scaling of communication equipment designed for a traditional type of deployment was rendered inadequate.

After all, operations and communications have to work hand in glove. Demands for more communication equipment and manpower echoed loudly.

Emphasis thus shifted to improving the communication capabilities of an executive unit in terms of quantity and quality. What we were looking for was equipment light in weight and totally reliable for use at the platoon and section levels.

Fast changing technology

Compared to other things, communication technology changes at a faster rate. A particular model becomes outdated on average within five years. BEL could no more meet the demand. Birth of electronic corporations such as Keltron, Meltron, West Bengal Electronics, Punjab Wireless Systems and many other production units lessened the monopolistic grip of BEL over its customers. We turned towards the new suppliers who offered us better technology. Some of the communication equipment even became available through DGS and D at competitive prices.

First half of eighties witnessed a radical change with the in-take of new generation of portable radio sets modelled on imported high tech know-how. These new products from Punjab Wireless and West Bengal Electronics gave a new operational viability to the field commanders. Field commanders enjoyed improved command control over dispersed troops with hand-held portable wireless sets. Training programmes, tailor-made for the field users in the new brand of equipment, brought about a new awareness in wireless-shy constabulary.

To keep pace with the change taking place around us is not an automatic process; it needs choice of options. Firstly, change has to take place in the outlook.

“The seed of modernisation lies in our way of looking at things. The change has to occur first in the attitude,” Brig Herbert, former Deputy Director (Communications) used to say.

While computer-aided telephone exchanges are still in the experimental stage in our country, we in CRPF undertook to experiment with this new product. The 200-line EPAX now working in CRPF Directorate is one of the four manufactured and installed in Delhi by Indian Telephone Industries (ITI). It will be interesting to note that Indian Army followed the experiment, taking cue from the CRPF example. Today we have these high capacity, trouble free exchanges in almost all static centres of CRPF. In the field of instrumentation we went in for most modern outfits which could support our repair set-up.

Micro-wave communications, and digital technologies are the in things these days. Satellite communication is yet another mode of efficient communication. CRPF plans to take to these technologies in the years to

come.

The Automex

There was rapid growth of traffic and pressure on the manual system in CRPF was heavy. In July 1987, Delhi Signal Centre got its first computer outfit. Known as Automex, this machine stores large volumes of signal traffic and transmits it through many teleprinter circuits connected to it.

The memory unit of this machine supervises inflow and outflow of messages in an orderly fashion. A message now keyed in at Chandigarh terminal reaches Calcutta terminal within five to eight minutes. This is not a small achievement. Human errors are totally eradicated in relaying the messages as the Automex works as a vigilant supervisor. We have plans to instal Automex machines at Hyderabad in the South and Calcutta in the East.

This is a new product of BEL which makes faster working possible. Customs built terminal attachment can store messages when the net is busy and clear it at fast speed as and when the outstation is free. Gainful use of idle time and improving the clearing capacity of the wireless nets is the main feature of this outfit which is still in the experimental stage.

Personal Computers

Computer is no more a puzzling contraption in the present-day management. We in CRPF have gone in for personal computers for management in Signal Battalions. IBM compatible small computers in signal units will bring automation in inventory management, credit order accounting and manpower and equipment distribution. These personal computers operating in Signal Units later on will be connected on a common centre to be established at Directorate and will make accessibility and working easy.



Signals personnel operating teleprinters at the Delhi Signals Centre of CRPF

Problem areas

Modernisation does not end with purchase of new equipment and putting it into use. Perhaps it is the beginning only. Training the manpower, installation, repairs, purchase of spare parts, etc are the problems that follow. Many portable sets in use in executive units face the problem of frequency available. Radio interference and security intelligence are other knotty problem areas which we have to tackle.

Diagnostics and trouble shooting in modern equipment is an exacting job. Many sophisticated test instruments are required to locate the faults in a portable radio set as compared to that in older generation equipment.

Signals Range is actively concerned with these problems. Problems do not deter us from adapting to a new trend in technology. The success lies in identifying them and finding solutions. To push the communications ahead, absorbing the changing technologies is an uphill task. Our blue-print for the future is drawn to give technical competence and excellence to the CRPF.



A-I Police Games

CRPF remain supreme

Amidst records galore, Central Reserve Police Force athletes continued to maintain their supremacy in track and field events for the tenth year in succession in the All India Police Games held at Trivandrum in February this year.

Of the eight records created, the CRPF quartet of Daljeet Singh, Surinder Singh, S. M. Ghosh and Dev Ashish Roy accounted for one. They shattered the previous mark of 41.8secs in 4 X 100 meters relay race that the Kerala cops created in 1986, by completing it in 41.7secs. Border Security Force and Kerala Police got the next two places in that order with both teams returning time of 42.2secs.

Though CRPF's Baljeet Singh vaulted across a height of 4.41 meters in pole vault event to erase Mohinder's (Haryana) six-year-old mark of 4.40 meters, he had to stay content with silver as Kerala's M. Rajan went on to

clear the bar at 4.45 meters to bag the gold. Kerala's Gopa Kumar cleared 4 meters for third spot.

Hosts Kerala Police downed the previous mark of 3m 17.3secs in 4X400 metcres relay by clocking 3m 16.1secs. CRPF quartet clocked 3m 17.9secs for next rating while Bihar cops settled for bronze with timing of 3m 18secs. Subhash George (Kerala) cleared 15.59 meters in triple jump to erase the previous mark of 15.27 meters that stood in the name of Tamilnadu's D.A. Dak-shinamurthy since 1975. George's teammate Anil Kumar was 10 mtrs behind for silver while the bronze was claimed by Punjab's Balbir Singh with 15.32 mtrs distance.

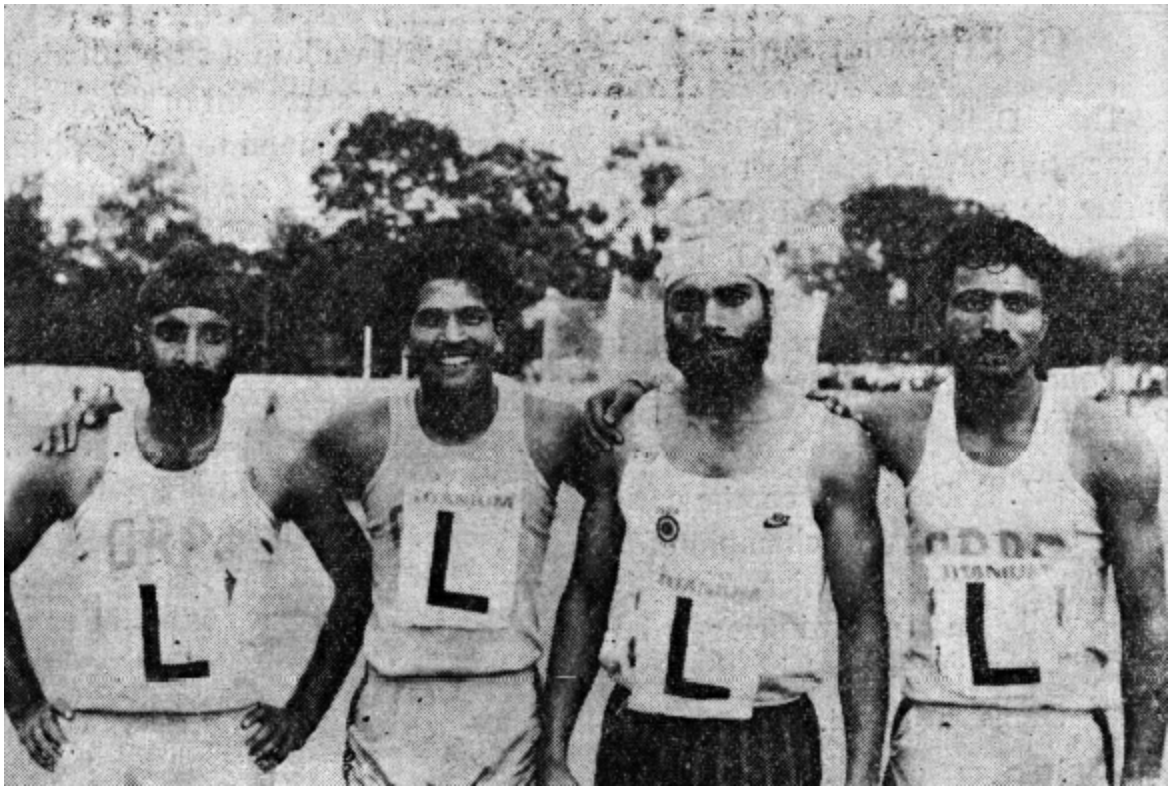
Comparatively an unknown figure, Orissa's S. K. Singh rewrote the 400 meters record that stood in the name of CRPF's Surinder Singh for last two years. He completed the distance in 47.4secs, the previous mark being 47.8secs, P.V. Raju (Kerala) and Suresh Pal Singh (U.P.) secured the next two places in that order with timings of 48.7secs, respectively.

The remaining three records came from the women. Emilda Ekka (Bihar) improved upon her own last years, mark of 5.11 meters in long jump by getting across 5.20 mtrs. Kalawati Yadav (M.P.) and Anjali Lakra (Bihar) with 4.92 mtrs. and 4.79 mtrs, respectively, got the next two places.

Manju Lata (Delhi) hurled the iron ball to a distance of 12.06 mtrs in shot put event to shatter Menaka Gurung's (MP) mark of 11.05 mtrs that she set in 1986. Bihar's Olive Grace Kulu and Haryana's Roshini Devi got the silver and bronze for their 10.80 mtrs and 10.05 mtrs efforts, respectively



The judo squad of CRPF that lifted the championship trophy in Police Games



The CRPF relay squad of (from left Daljeet Singh, Dev Ashish Roy, Surinder Singh and S. M. Ghosh who created a new record in 4 X 100 meters relay.

Last year's mark of 1.45 mtrs that MP's Nisha Jaiswal set in high jump event at Madhuban was rewritten as Bihar's Maya Naik soared over the bar at a height of 1.50 mtrs. Her teammate M. Padma also went above the previous mark clearing 1.47 mtrs CRPF's Rita Debnath was third with 1.40 mtrs.

Surinder Singh emerged the fastest cop of the country when he clocked 11.2secs in 100 meters. He won the 200 meters event also.

CRPF retained the athletics championship trophy with 180 points while BSF with 166.5 points got the runners-up cup. Kerala was third.

The nine-day meet was declared open by Kerala Governor, Shri P. Ramachandran. Shri E.K. Nayanar, the Chief Minister gave away prizes.

CRPF spikers win

Spikers of the Central Reserve Police Force won the Delhi State Volleyball Championship held at the Indira Gandhi Indoor Stadium in New Delhi in March 1988.

In a well contested final, CRPF beat Mahanagar Telephone Nigam 13-15, 12-15, 15-6, 15-9 and 15-4.

Dharambir Singh, Arjun Singh, Mohammed Mustaq and Som Dutt were the architects of the CRPF victory.

D S J A awards for CRPF sportsmen

The Delhi State Journalists Association awards for best players during the years 1985 and 1986 have been bagged by Shri R. S. Bal and Shri Khajan Singh, respectively. Both are Deputy Superintendents of Police in the Central Reserve Police Force.

Shri R. S. Bal has been the national hammer throw champion for the last 13 years. Khajan Singh is the well known swimmer who bagged a silver medal in the last Asian Games at Seoul.

CRPF Shooting coach honoured

Tejinder Singh Dhillon, Assistant Commandant, has been honoured with

life membership of the International Shooting Coaches Association. This follows his praiseworthy performance during the month-long advance training course for coaches in USA Olympics Training Centre at Colorado Springs in May last year.

Shri Dhillon is perhaps the first Asian shooter to be thus honoured.

Bronze for Khajan

Khajan Singh clinched a bronze medal in the third Asian Swimming Championship held at Guangzhou (China) in April this year.

The bronze came to him for his efforts in 200 meters butterfly event in which he clocked 2m 4.81secs. The first two positions went to Hiroshi Sato (2m.02.56secs) and Yukinori Tanaka (2m 03.38secs), both of Japan.

GEMS

As he thinketh in his heart so is he.

—Old Testament

It is better to wear out than to rust out.

THE EXPERIENCE

I walk in a street all alone.
A street full of darkness.
No sound to be heard, no light to be seen,
What I see is darkness.
Suddenly, there’s bright light
That blinds me for a while.
When I open my eyes I behold
The beautiful face of the Lord.

So surprised, so amazed,
I stand staring at that face.
With uplifted mind I tread
The untrespassed sanctity of space.
And put out my hand to touch that face.

All of a sudden, the street is flooded with light.
It is all because of God.
I run, I jump, so excited
and I keep on saying “God has come
as the Light of the World”.

Shalini Sharma, Class VII
D/O Shri R.D. Sharma, AC **(Adm)**
G. C., Durgapur

We miss them

The following SOs and ORs lost their lives during March 1988:—

Constable Keshi Lal (48 Bn); Constable Satpal (34 Bn); Inspector Nirmal Singh (86 Bn); Constable Ram Singh (24 Bn); Constable Goverdhan Singh (35 Bn); Barber M. Muthu, (Group Centre, Avadi); Inspector (MT) Karam Chand (Group Centre, Bantalab); Constable N. Manickam (28 Bn); Constable Amar Singh and Inspector Kanchid Singh (both 55 Bn); Head Constable Thakur Singh, Lance Naik Driver Raje Singh, Lance Naik Ram Singh, Constable Awadesh Kumar Sharma, Lance Naik Ved Prakash and Constable Prem Singh Hembram (all of 87 Bn.); Head Constable Bhola Singh (11 Bn); Constable Rajender Singh (37 Bn); Constable Sumarin Goswami (21 Bn); Inspector Shanti Swaroop Sharma (45 Bn); Constable Diwan Chand (32 Bn) and Constable P. Ramalingam (71 Bn).

BID TO HOODWINK CRPF FAILS

Four terrorists (Joginder Singh, Gurmit Singh, Mandeep Singh and Kashmir Singh) were arrested along-with arms and ammunition by an ambush party of ‘F’ Company, 48 Battalion, Central Reserve Police Force in Manochal in Tarn Taran on March 3, 1988.

The four men approached the ambush site on a scooter and a motor cycle, and tried to run away but the CRPF men foiled their attempt.

They then tried to hoodwink the CRPF men saying they were Special Police Officers (SPOs) detailed by S.S.P., Amritsar. They were arrested and were sent to Superintendent of Police (Operations) where they were identified as terrorists.

A 9 mm carbine with 35 rounds, a revolver with 12 rounds of .355, 32 rounds of AK 47 and a sum of Rs. 20,950 in cash were recovered from them.



CRPF DONATES TO PM’S

RELIEF FUND

A draft for a sum of Rs. 31,80,434 was handed over to the Prime Minister, Shri Rajiv Gandhi, by Shri S.D. Pandey, Director-General of the Central Reserve Police Force in New Delhi on March 3,1988.

This amount is voluntary contribution towards the Prime Minister's National Relief Fund by CRPF personnel from CRPF Headquarters and all formations spread over the country.

The amount includes a sum of Rs. 24,839 contributed by the families of jawans out of their earnings from 16 Family Welfare Centres functioning in the country for the welfare of jawans.

CRPF Officer's fine gesture

Shri Sushil Kumar Sharma, VSM, an Assistant Commandant in 47th Battalion, CRPF has donated Rs. 1,112 for drought relief to the Prime Minister's National Relief Fund.

The gesture has been appreciated by the Inspector General of Police (HQ) Shri BJS Sial in a letter to the officer.

Blood donated in CC, Jammu

One hundred seven men of Group Centre, Jammu and 84 and 98 Battalions, Central Reserve Police Force donated their blood in a camp organized in the Group Centre campus on April 23, 1988.

Shri R. S. Chib, Health Minister of Jammu and Kashmir inaugurated the camp.

CRPF Public School Opened

The Director General of the Central Reserve Police Force, Shri S. D.

Pandey, laid the foundation stone of the CRPF Public School at a simple function in Rohini in New Delhi on February 26, 1988.

Shri Pandey stated that the school will be a great boon to the Capital's population. As for the CRPF personnel who are frequently transferred, it will be realization of a dream.

The Rs. 2-crore project, the first of its kind in the para-military forces, will be run by the CRPF Employees Educational Society. The school has been recognized and is affiliated to the Central Board of Secondary Education.

Nearly six and half acres of land has been acquired for the school complex in Sector 14 of Rohini.

The school is being established in three phases. In the first phase the school will have classes from KG to seventh standard.

In the next two phases, classes upto 12th standard and other facilities like laboratories, swimming pool, etc. will be added.

An unaided school to be wholly run by the CRPF, the school will cater to the needs of CRPF personnel and civil population. However, while fees for the wards of CRPF men will be nominal, these will be more in the case of civilians. Even so the charges will be lowest among the public schools in the Capital. Children of deceased CRPF personnel will also be admitted in the school.

The school hostel (meant for CRPF children only) will start functioning from this academic session and will accommodate 350 students.

To start with, the school will be run in pre-fabricated steel huts. The construction of buildings will start simultaneously and is expected to be completed within the next two years. Construction of the hostel building will be completed by 1991.

The school will start functioning from May 2, 1988 with classes from KG to seven.

The tuition fee for classes from KG to fifth is Rs. 50 for the wards of Non-Gazetted staff, Rs. 100 for Gazetted Officers and Rs. 200 for civilians. For the wards of deceased CRPF personnel, the tuition fee will be same as for serving personnel.

Lincoln’s letter to Headmaster

Here are some excerpts from Abraham Lincoln’s letter to the head master of the school where his son was receiving education :—

“He will have to learn, I know, that all men are not just, all men are not true. But teach him also that for every scoundrel there is a hero; that for every selfish politician, there is a dedicated leader.....Teach him that for every enemy there is a friend. lt will take time, I know; but teach him, if you can, that dollar earned is of far more value than five pounds.....Teach him to learn to lose and also to enjoy winning. Steer him away from envy, if you can, teach him the secret of quiet laughter. Let him learn early that the bullies are the easiest to lick.....Teach him, if you can, the wonder books but also give him quiet time to ponder the eternal mystery of birds in sky, bees in the sun, and flowers on a green hillside.

“In school teach him it is far more honourable to fail than cheat. Teach him to have faith in his own ideas, even if everyone tells him, they are wrong.....Teach him to be gentle with gentle people and tough with the toughs. Try to give my son the strength not to follow the crowd when everyone is getting on the bandwagon..... Teach him to listen to all men.....but teach him also to filter all he hears on a screen of truth, and take only the good that comes through.

“Teach him, if you can, how to laugh when he is sad..... teach him there is no shame in tears. Teach him to scoff at cynics and to beware of too much sweetness..... Teach him to sell his brawn and brain to the highest bidder, but never to put a price tag on his heart and soul. Teach him to close his ears to a howling mob.....and to stand and fight if he thinks he’s right.

“Treat him gently, but do not cuddle him, because only the test of fire makes fine steel. Let him have the courage to be impatient.....let him have the patience to be brave. Teach him always to have sublime truth in himself, because then he will always have sublime faith in mankind.”

TWO NCOs KILLED

Two Lance Naiks of 21 Battalion CRPF—Brahmanand Upadhyay and Vasudev Sinha— were killed when GNLF activists fired upon two vehicles

carrying CRPF personnel in Kalimpong on February 24, 1988 night.

When a patrol of ‘F’ Company, 21 Battalion came under heavy fire, they retaliated. Information was sent to Detachment Commander Shri Nagendra Singh, Assistant Commandant who rushed to the spot with re-inforcement. Short of 100 yards from spot of encounter, the two CRPF jeeps came under heavy fire. When the CRPF party returned the fire the activists fled.

As a result of GNLF firing, Lance Naiks Brahmanand Upadhyay and Vasudev Sinha sustained serious bullet injuries, to which they succumbed later.



Recruitment in progress at Kingsway Camp in Delhi

More Battalions for CRPF

Recruitment to 10 newly created Battalions of the CRPF started on March 15, 1988. In all 9,770 Constables were to be recruited from all over India during the recruitment drive which is scheduled to be completed by April 30, 1988.

Strict instructions were issued by the Directorate that under no circumstance any substandard candidate may be enlisted and that due representation be given to minority communities and backward classes. The opportunity was also utilised to induct talented sportsmen into the Force.

Vacancies were allotted to each Sector and recruitment parties were sent to enlist suitable personnel for the Force in all states of the country.

Despite the fact that the minimum educational requirement was raised to matriculation, candidates turned up in large numbers in all centres where recruitment was carried out.

The new Battalions will bear the numbers from Battalion number 89 to 98.

Gas Chullahs for Static CRPF Units

The Government has sanctioned the use of LPG (Liquid Petroleum Gas) chullahs with three burners and regulators in all static institutions of Central Reserve Police Force.

While five commercial gas chullah have been authorised for Group Centres, training institutions and signals battalions, two have been authorised for Base Hospitals.

Duty Battalions based in Delhi are also authorized five chullahs in case they have built up kitchens only.

The security deposit amount and expenditure on gas cylinders will be borne by the concerned messes.

Let noble thoughts come to us from every side.

—The Rigveda

Prejudice is the child of ignorance.

—W. Hazlitt

HUMOUR IN UNIFORM

MISFIRE

In the good old days, a young Company Commander posted in a remote place of Nagaland felt duty-bound to send the following message to his Detachment Commander :—

"Convey my congratulations to Mrs. Indira Gandhi on her election as the Prime Minister".

The Dett. Commander, a veteran of many battles, shot back the reply "Ref your message.....Shut-up."

[Contributed by George Podipara]

PROXY

An inspecting officer visited an office in Delhi. He called the persons working in that office, while the officer-in-charge was sitting by his side.

After sometime when he saw an official coming towards him he observed that the same person had appeared before him a little while ago. On being asked as to why he had come again, the person said, "Sir, now I have come in place of my close friend who has gone to see the test match.

The inspecting officer was very angry and asked the officer-in-charge as to why he had not checked the same person coming over again.

The officer-in-charge said apologetically, "Sir, I did not know that he had come again."

This remark infuriated the Inspecting Officer. He told the officer-in-charge that it was regrettable that he did not know his subordinates. The officer-in-charge replied, "Sir, it is not my branch. The actual officer-in-charge has gone to see the Test match, and I am only looking after his work."

The inspecting officer gave a long peal of laughter and said, "I don't know how to tell you. The actual person who had to come for inspection is also away to see the Test match and I have come in his place."

—Rajinder K Gaur

TEN CRPF MEN KILLED IN NSCN AMBUSH

Ten jawans of ‘F’ Company, 39 Battalion, Central Reserve Police Force were killed and two seriously injured when a convoy escorting the treasury was ambushed near Sanglu-ngphang village in Tamenglong district of Manipur on April 19, 1988.

A platoon of 22 men of CRPF under command of a Sub Inspector left Imphal on that fateful morning in seven jeeps of State Bank of India. A treasury officer and an accountant with six cash boxes were being escorted by the CRPF men to Tamenglong.

When the convoy was 20 kilometers short of Tamenglong and was close to Sanglungphang village, it was fired upon by 50 to 60 hostiles of the outlawed National Socialist Council of Nagaland (NSCN). Grenades were hurled at the vehicles, as a result of which three jeeps caught fire and were soon ablaze. Six CRPF men were charred to death as a result of the fire, while the other four fell victims to heavy firing from automatic weapons.

Two LMGs, two grenade firing (GF) rifles and four self-loading rifles (SLRs) along with ammunition were burnt.

Those killed are Constables Tarkeshwar Thakur, Rajpal Tyagi, Vijay Kumar Bhoi, Bashiullah Khan, Kumba Ram, U. K. Mandal, Amarjit Singh, R. Muthu, E. Lakra and Ram Prakash Singh. Constables Mohan Singh and Bacha Ram were seriously injured.

CRPF Jawan killed in Tripura

Constable Karamvir Singh of 6th Battalion, Central Reserve Police Force was killed when a patrol of the Unit was ambushed near Rajkumar Para in Sabroom in South Tripura on January 15, 1988.

On receipt of information of the presence of TNV extremists in Rajkumar Para area, a patrol of ‘D’ Company left from Manubankul post alongwith civil police officials.

When the party was nearing a ridge in Rajkumar Para, powerful beams from two torches were directed on the CRPF men from the left flank for a few seconds forcing the men to remain where they were. When the men resumed their advance tactically, the beams were again trained on the party which was soon followed by a burst of fire from left flank. The torches were soon put off and then followed an exchange of fire between the combined CRPF and police party and the insurgents. After about seven minutes, the

insurgents escaped taking advantage of the darkness.

After the exchange of fire, it was seen that Constable Karamvir Singh had received fatal bullet injuries in his chest. The Constable died gallantly firing with his rifle in standing position, in the course of which he was hit by bullets.

HOMEO MI ROOM

Homoeopathic M. I. Room has been set up in 67th Battalion where honorary service will be rendered by Inspector (Ministerial) P. B. R. Prasad who is diploma holder in homoeo medicines. The dispensary is run with the aid of Unit Welfare and Amenities Fund. It started functioning from January 13, 1988.

This is perhaps the first MI Room of its kind in a unit of the CRPF.

Cash to be air-lifted in North-East

The Centre has issued instructions to the Governments of Tripura, Nagaland and Manipur that cash transfers from one place to another in this region should be done through air services.

The arrangement provides for the airlifting of cash remittances from one bank chest to the other only and will take effect from the month of June 1988.

The decision has been taken in view of the fact that there have been many instances in the past in which parties of security forces escorting cash in the region were ambushed.

Recently the Director General of CRPF, Shri P. G. Halarnkar, met the Chief Minister of Manipur and had discussions with him on the subject. The state government had then expressed its keeness to implement this arrangement.

CONSTABLE DIES OF GNLF ATTACK

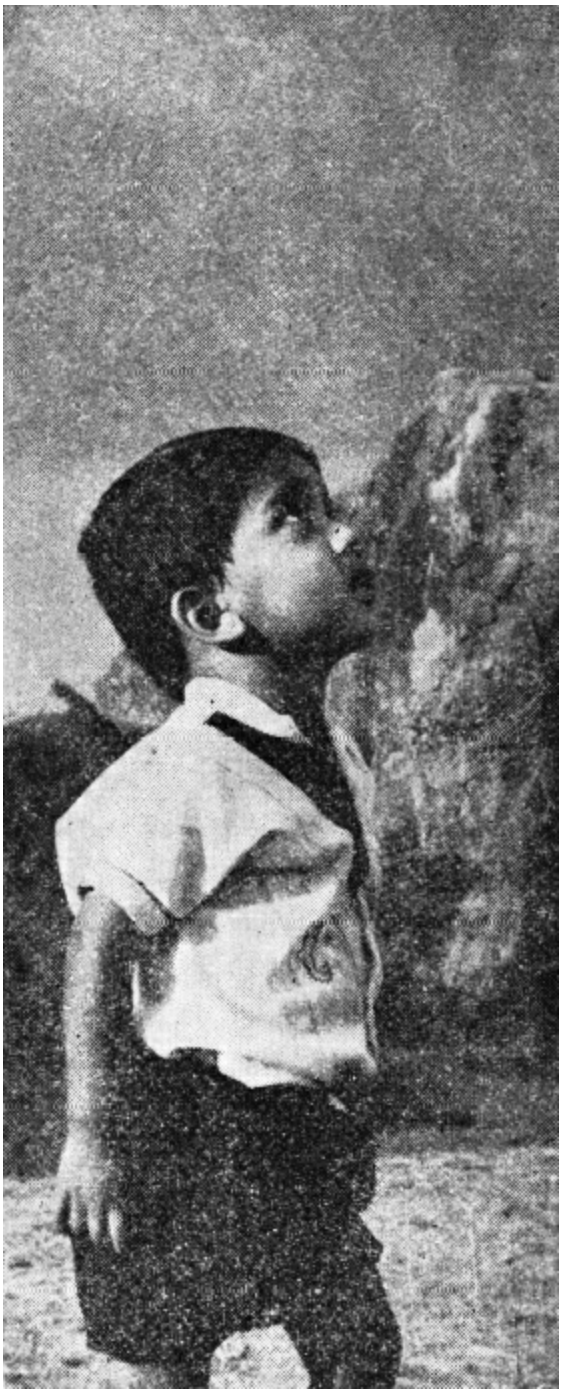


Constable Shambunath Sharma of ‘B’ Company, 21 Battalion, CRPF was killed when Gorkha National Liberation Front extremists fired at the CRPF post near Rangpo village in Darjeeling on February 19, 1988. The jawan was on sentry duty in front of the post.

The extremists who had positioned themselves atop a mountain ridge opp-site the post fired at the post and threw bombs. Constable Shambunath sustained serious pellet injuries in his stomach.

He was operated upon in Military Hospital, Gangtok but succumbed to his injuries.

Photo competition results





Milestone in security—Ladies in the field

Assistant Sub-Inspector B.S. Patil of the office of the DIGP, CRPF Hyderabad bagged the first prize of Rs. 300 in the CRPF photography competition held last year. The second and third prizes have gone to Shri P.V. Belgamkar, Assistant Commandant of 50 Battalion, CRPF, and Dr. Hamidullah, Medical Officer of 62 Battalion, CRPF, respectively. Shri Belgamkar gets Rs. 200 while Dr. Hamidullah gets Rs. 100.

Entries for the competition were received from only four competitors. Though the response has been poor, the competition will continue to be held. We would much appreciate the participation in the competition by the children of CRPF personnel too.

Details of this year's photography competition will be published in next (July 31, 1988) issue of CRPF Samachar.

Special duty allowances: clarification

In a letter dated February 15, 1988 addressed to all formations, it has been clarified by the CRPF Directorate General that special duty allowance cr special compensatory allowance applicable to North Eastern region will be

paid to per-sonnel of CRPF at the authorised rates “with reference to HQ of the personnel who are serving in North East region subject to fulfilment of prescribed condition”.

Special compensatory allowance is admissible on the basis of revised pay scales.

In the case of those who retained the pre-revised scale of pay, the admissibility of the allowance will be based on basic pay, appropriate DA, ADA, Dearness pay, ad-hoc DA and interim relief thereon at the rates in force on December 31, 1985.

Real beauty is the beauty of the soul.

—Mahatma Gandhi.

Righteousness and peace have kissed each other.

—Old Testament.



ASI Makhan Singh receives prize for best noting and drafting from the Minister of State for Home Affairs, Shri Chintamani Panigrahi.

CRPF Officials hag Hindi awards

Seventy-five officials of the Central Reserve Police Force received prizes and commendation letters for their participation in various competitions in Hindi in the national level at a function held at Mandi House in New Delhi on March 25, 1988.

Assistant Sub Inspector (Ministerial) Makhan Singh of Group Centre, CRPF, Rampur was awarded the first prize for best noting and drafting during the year 1987. A running shield was also presented to him.

In the applied Hindi competition, Shri A. K. Kathuria, Additional Deputy Inspector General of Police of Group Centre-I, Ajmer won the first prize in officers' section. He bagged the award for the third time consecutively.

Shri Chintamani Panigrahi, the Minister of State for Home Affairs, gave awav the prizes.



Shrimati Shailaja P. Halarnkar presents a bouquet to Shrimati Kamla Pandey at a farewell function in New Delhi.

Regd. No. 45950/87



"He is a jolly good fellow....." The traditional farewell to the former Director General, Shri S. D. Pandey, from the Officers' Mess in New Delhi.

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की मासिक पत्रिका

सीआरपीएफ समाचार

खंड II अंक 3

मूल्य—1.60 रुपए 31 मई, 1988 10 ज्येष्ठ शक संवत 1910



रत्तागुड़ा गांव में आतंकवादियों से हुई मुठभेड़ में भाग लेने वाले बल के जवानों को बधाई देते आंतरिक सुरक्षा राज्य मंत्री श्री पी. चिदम्बरम।
(छाया एस० के० खन्ना)



महानिदेशक महोदय का संदेश

प्रिय अधिकारी बन्धु,

1. इस पत्र के द्वारा मैं आपको और आपके माध्यम से केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के सभी सदस्यों को अभिनन्दन करते हुए शुभकामनाएं भेजता हूं।

2. दिनांक 31 मार्च, 1988 को श्री एस० डी० पाण्डेय के स्वैच्छिक अवकाश प्राप्त करने पर मैंने बल के महानिदेशक के पद का कार्यभार सम्भाला। अपने ढाई वर्ष के सेवाकाल में श्री पाण्डेय ने बड़े ही कठिन समय में बल को सुयोग्य नेतृत्व प्रदान किया। मैं उनका अभिनन्दन करता हूँ।

3. मुझे पिछले सात महीनों में, आप लोगों के साथ काम करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है । अतएव, यह मेरे लिए बड़े सम्मान की की बात है कि मुझे एक ऐसे बल के नेतृत्व का अवसर मिला है जो कि ईमानदारी और कार्यकुशलता की पुरानी परम्पराओं के लिए विख्यात है। इन परम्पराओं को और मजबूत बनाना तथा फोर्स की कार्यकुशलता में उत्तरोत्तर बढ़ोत्तरी लाना, मेरी हमेशा कोशिश होगी, जिससे केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल देश का सर्वोत्तम बल बन सके । इस कार्य में मैं आपकी सहायता और सहयोग की आशा करता हूं।

4. मैंने 15 अप्रैल को, दिल्ली की बटालियनों में तैनात अफसरों को सम्बोधित किया था। फोर्स की कुछ समस्याओं के बारे में मैंने अपने विचारों को उनके सामने रखा था। इनमें

से कुछ को दोहराना मैं जरूरी समझता हूं।

5. आपसी संबंधों में विश्वास का बहुत बड़ा महत्व होता है। मैं स्वयं, फोर्स में एक-दूसरे पर विश्वास की नीति का समर्थक हूं। जब तक कि अधिकारी अपने आप को इसके अयोग्य साबित न कर दें, मैं तब तक उन पर पूरा विश्वास करता हूं।

6. एक अफसर के रूप में आप अन्य बातों के अलावा, बल के अधीनस्थ सदस्यों के ऐसे नेता हैं जिसके नेतृत्व में, वे खतरों से जूझने, असुविधा झेलने तथा जटिल से जटिल समस्याओं का सामना करने के लिए बिना किसी हिचकिचाहट के तैयार हो जायेंगे। याद रहे कि अच्छा नायक वही है जो "जाओ यह करो" के बजाय "आओ यह करें" का हुक्म देता है। मुझे विश्वास है कि एक जिम्मेदार अफसर की हैसियत से किसी भी खतरे का सामना करने में आप सबसे आगे रहेंगे।

7. अपने मातहतों के लिए, आपका नेतृत्व आपको एक विशेष जिम्मेदारी सौंपता है। उनके जीवन की सुरक्षा आपके हाथों में रहती है । अतएव, आप से ऊँचे दर्जे के चारित्रिक गुणों एवं व्यवहार कार्यकुशलता और ईमानदारी की आशा करना आपके अधीनस्थों का अधिकार है। यदि आप अपने मातहतों के हित एवं कल्याण को अपनी सुविधा और आराम से ऊपर रखेंगे तो वे किसी भी चुनौती का मुकाबला, मन लगाकर बखूबी से करेंगे।

8. यह जरूरी है कि आप अपने अधीनस्थों के साथ ऐसे मेलजोल और मिलाप की औपचारिक तथा अनौपचारिक व्यवस्था रखें जिससे वे अपने विचार आप तक बिना किसी झिझक या कठिनाई के पहुंचा सकें । अनुशासित बल के एक अच्छे अफसर की यही निशानी है।

9. बल की शारीरिक क्षमता के बारे में मुझे अत्यन्त चिन्ता है—विशेषकर अधिकारियों के बारे में। पिछले सात महीनों में मुझे बहुत से अफसरों से मिलने का मौका मिला है। उनमें से अनेकों की वर्दी बल के गौरव के अनुरूप नहीं थी। कोई भी व्यक्ति हमारे बल के बारे में अच्छी राय नहीं बना सकता यदि अधिकारियों का स्वास्थ्य, आमतौर पर आकर्षक और प्रभावशाली होने के बजाय अत्यधिक बाहर निकले पेट, अन्दर धँसा सीना, ढीली-ढाली शारीरिक क्षमता का परिचायक हो । पिछले वर्ष सालाना परेड के अवसर पर हमें एक सुगठित, फुर्तीला तथा चुस्त, कमांडेण्ट स्तर का परेड कमान्डर ढूंढने में बहुत कठिनाई हुई। अन्त में इस जिम्मेदारी के लिए एक ऐसे अधिकारी को चुनना पड़ा जो सालाना परेड की पहले भी कमाण्ड कर चुके थे। सी० आर० पी० एफ० जैसे विशाल बल के लिए ऐसी स्थिति बड़े दुख और शर्म की बात है। अतः आपसे अनुरोध है कि इस समस्या पर समुचित ध्यान दें। आपके मातहत तभी इसका महत्व समझेंगे जब अधिकारी वर्ग स्वयं इस ओर पहलकदमी करेगा। कृपया अपने मातहतों के साथ पी० टी० में आप भी भाग लें। यदि चार जवान पी० टी० कर रहे हों तो आप कृपया, पाँचवें के रूप में उनका साथ दें। यह जरूरी है कि अपने मातहतों के साथ आप खेल खेलें और दौड़-भाग में भी उनका साथ दें। अपने खाने-पीने की आदतों पर भी विशेष ध्यान देकर स्वयं को नियंत्रित रखें। इससे न केवल बल को लाभ होगा,

बल्कि आपका भविष्य भी सुखद एवं स्वस्थ रहेगा।

10. एक वर्दीधारी फोर्स में व्यक्तित्व की प्रथम झलक का बड़ा महत्व होता है। अक्सर लोग अधिकारियों और जवानों को देखकर उनके बल के बारे में अपनी राय कायम करते हैं। अच्छी वर्दी से आपके व्यक्तित्व में निखार आता है। अतः अपनी वर्दी पर आप विशेष ध्यान दें। नियमानुसार वर्दी की सभी चीजें पेटी, बैज, मैडल-रिबन, जूते इत्यादि सही आकार-प्रकार के साफ-सुथरे और चमकीले होने चाहिए। ध्यान दें कि न केवल आपका क्वार्टर गार्ड, बल्कि आप और आपके सभी अधीनस्थ चुस्त, चटक और चमकदार वर्दी पहनें। वह अधिकारी जो गन्दी, धूमिल और ढीली-ढाली वर्दी पहनता है, जनता की निगाहों में अपने फोर्स के बारे में बहुत बुरा असर डालता है।

11. एक अधिकारी के रूप में आपको सभी "आपरेशन्स" में भाग लेना चाहिए। आपका कार्य केबल प्रशासनिक अधिकारी का नहीं है। आप अपने मातहतों के नेता और मार्गदर्शक भी हैं। "आपरेशन्स" में आपके भाग लेने से आपके अधीनस्थों का उत्साह बढ़ेगा। यह कहना कि सी० आर० पी० एफ० के अधिकारियों की कोई "आपरेशनल" जिम्मेदारी इसलिए नहीं होती क्योंकि कम्पनियां, प्लाटून और सेक्शन राज्य सरकारों या सेना के अधीन "ऑपरेशन" में लगाए जाते हैं, बहुत ही कमजोर और लचर दलील है। जहाँ कहीं या जब कभी भी हमारे फोर्स को किसी कार्य के लिए लगाया गया, ऐसी स्थिति में अधिकारी वर्ग के मार्गदर्शन और "आपरेशन" में भाग लेने के बहुत अच्छे परिणाम मिले हैं। पंजाब या देश के पूर्वोत्तर प्रान्तों में हो रहे "आपरेशन" में जहाँ-जहाँ अधिकारियों ने पहलकदमी कर, पूरी दिलचस्पी ली है, हमें अच्छी सफलताए मिली हैं।

12. जैसा कि आप जानते हैं कि बल के मनोबल और कार्यकुशलता के लिए उनके कल्याण पर ध्यान रखने की आवश्यकता है। कृपया अपने मातहतों की कठिनाइयों और परेशानियों की ओर विशेष ध्यान देकर उन पर यथाशीघ्र समुचित कार्रवाई करें। हालांकि अनुशासन और रेजिमेन्टेशन किसी भी सुरक्षा बल के आधार स्तम्भ हैं, फिर भी अधीनस्थों के कल्याण का अपना अलग महत्व होता है। कभी-कभी ऐसा लगता है कि बटालियन में एक मनोरंजन कक्ष तथा ग्रुप सेन्टर में परिवार कल्याण केन्द्र (जहाँ केवल वर्दियाँ सिली जाती हैं) खोलकर अधीनस्थों के कल्याण की दिशा में पर्याप्त काम कर लिया गया है। परन्तु निश्चित रूप से यह काफी नहीं है। इस दिशा में यदि आप चाहें तो अब भी बहुत कुछ किया जा सकता है। केवल वर्दियाँ सिलन के अलावा हमारे परिवार कल्याण केन्द्र और भी बहुत से कार्य कर सकते हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि पूरे बल के अधिकारियों एवं जवानों के कल्याण के लिए खूब सोच-विचार के बाद नई योजनाएं इस प्रकार चलाई जायें जिससे फोर्स के कल्याण कार्यक्रमों को एक समन्वित आकार प्रदान किया जा सके। इस विषय पर मैं आपकी राय जानने को इच्छुक हूं। जहाँ तक महानिदेशालय का प्रश्न है, मैंने पहले ही इस दिशा में कार्य करने के निर्देश दिए हैं। मेरा अनुरोध है कि इस विषय पर अपने सुझाव श्री बोहरा, उप-निदेशक (प्रशासन) को भेजने का कष्ट करें।

13. यह उचित ही है कि हमारे बल में सभी धर्मों का बराबर सम्मान किया जाता है। बल की धर्मनिर्पेक्षता एवं निष्पक्षता के कारण हमारे फोर्स की मांग हमेशा, विशेषकर साम्प्रदायिक दंगों के समय, राज्यों से प्राप्त होती रहती है। बल की धर्मनिर्पेक्षता की छवि को और मजबूत बनाने के लिए हम लोग समय-समय पर सभी जातियों, धर्मों और देश के विभिन्न प्रान्तों में रहने वालों को भर्ती करते रहते हैं। यह हमारा कर्तव्य है कि बल की इस सुन्दर छवि को सदा निष्पक्ष और धर्मनिर्पेक्ष बनाए रखें। हमें जातिवाद, धर्मवाद इत्यादि की संकीर्ण विचारधाराओं से ऊपर उठकर "खाकी वर्दी" को ही अपना धर्म मानना चाहिए। हमारा यह कर्तव्य है कि हम सब की रक्षा करें, चाहे वे किसी भी जाति, धर्म अथवा देश के किसी भी कोने के रहने वाले हों। किसी भी समस्या का सामना करते हुए हमें सदैव निष्पक्ष एवं धर्मनिर्पेक्ष होना चाहिए ।

14. अपने अधीनस्थ अधिकारियों और कर्मचारियों को सामान्य सुविधाएं प्रदान करने में आपको हमेशा प्रयत्नशील रहना होगा। मनोरंजन कक्ष में टी० वी० अथवा वी० सी० आर० की सुविधाएं कोई माने नहीं रखतीं यदि आपके अधीनस्थों को शौच के लिए बाहर जाना पड़े। कठिनाइयों के बावजूद हमें आवश्यक सुविधाओं (पानी, बिजली, शौचालय आदि) का समुचित प्रबन्ध करना होगा। इस दिशा में आपकी अपनी दिलचस्पी और योगदान आपके जवानों के रहन-सहन के स्तर को और ऊँचा उठा सकता है।

15. हाल ही में, मुझे भारत के राष्ट्रपति एवं उप-राष्ट्रपति से भेंट करने का सौभाग्य मिला। मुझे आपको बताने में बहुत खुशी महसूस होती है कि हमारे बल के बारे में उनकी धारणाएं बहुत ऊंची हैं, विशेष रूप से बल की धर्मनिर्पेक्षता एवं राष्ट्रीयता की परम्पराओं के बारे में। मैंने उन्हें विश्वास दिलाया कि केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के अधिकारी एवं जवान किसी भी चुनौती का सामना करने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं।

16. अब मैं बल के विभिन्न ओहदेदारों से सम्बन्धित कुछ और समस्याओं की ओर भी आपका ध्यान दिलाना चाहूंगा। इसमें पहली समस्या बल की स्थानान्तरण नीति है। मुझे मालूम है कि ड्यूटी स्थानों के बार-बार बदलने से आपका पारिवारिक जीवन और आपके बच्चों की शिक्षा पर बहुत बुरा असर पड़ा है। मुझे बड़ी खुशी होगी यदि मैं सभी को उनकी पसन्द की जगहों पर नियुक्त कर पाता। ऐसी हालत में हमारे सभी अधिकारी खुश रहते और हमारे सामने बहुत कम समस्याएं होतीं। परन्तु जैसा कि आप जानते हैं यह वास्तव में सम्भव नहीं है। इस सम्बन्ध में मैं केवल इतना कहना चाहूंगा कि भविष्य में स्थानान्तरण एवं नियुक्ति के समय अधिक से अधिक अधिकारियों को उनकी पसन्द एवं सहूलियत के स्थानों पर नियुक्त करने की मेरी हमेशा कोशिश रहेगी। परन्तु कृपया इसे ध्यान में रखें कि विभिन्न पदों पर स्थानान्तरण तथा सेवा-काल आपकी कार्यक्षमता पर भी निर्भर रहेगा। अच्छा कार्य न करने वालों को मनपसन्द की जगहों पर नियुक्ति की आशा नहीं करनी चाहिए।

17. बल के अधिकारियों, जिसमें चिकित्सा अधिकारी भी शामिल हैं, के कैडर सम्बन्धी प्रस्तावों को मैं प्राथमिकता देकर सरकार से स्वीकृत कराने का भरसक प्रयत्न करूँगा।

इस विषय में समुचित कारवाइ प्रारम्भ कर दी गइ है और कैडर प्रस्तावों के संबंध में प्रगति भी हुई है। मैं इसे निश्चित समय में आगे बढ़ाना चाहता है और इसकी प्रगति से आपको भविष्य में अवगत कराऊँगा।

18. अपने बल में आवासीय समस्या की ओर भी हमारा ध्यान है। इसका फोर्स के मनोबल से सीधा सम्बन्ध है। इस समस्या को सुलझाने के लिए सरकार से विशेष अनुरोध करने का मेरा विचार है।

19. फिलहाल हमारा सबसे कठिन काम यह है कि बाधाओं और कठिनाइयों के बावजूद किस प्रकार फोर्स के लिए समुचित ट्रेनिंग का कार्यक्रम चलाया जाये । ड्यूटियों के अधिक होने से फोर्स में ट्रेनिंग पिछले कई वर्षों से लगभग समाप्त हो चुकी है । यदि भविष्य में फोर्स को अच्छा काम करना है तो ऑपरेशन की व्यस्तता, अच्छे ट्रेनिंग ग्राउण्ड का न होना तथा विभिन्न सविधाओं की कमी की दलीलें कोई माने नहीं रखती हैं। समुचित ट्रेनिंग की व्यवस्था न होने के कारण हमारे फोर्स में कुछ कमियां भी आई हैं जैसे—अनुशासन के स्तर में कमी । मैं चाहूंगा कि आप लोग इस विषय पर विचार करें कि किस प्रकार वर्तमान कठिनाइयों के बावजूद फोर्स में अच्छी ट्रेनिंग चलाई जा सकती है। हम सब के सोच विचार से इस समस्या का हल अवश्य निकलेगा।

20. सदा से मैं सामूहिक संचालन के सिद्धांत में विश्वास करता आया हूं। भविष्य में आपके तजुर्बों और समझदारी का मैं पूरा फायदा उठाना चाहता हूं । अतः आप लोगों से अनुरोध है कि फोर्स से संबंधित उन मामलों पर जो सी० आर० पी० एफ० के हित में हैं, अपने स्पष्ट विचारों से निःसंकोच होकर अवगत कराते रहें। पूरी सी० आर० पी० एफ० के लिए वर्तमान समय अत्यन्त चुनौतीपूर्ण है। हमें यह साबित करना है कि हम इन चुनौतियों का सामना करने में सभी माने में सक्षम हैं।

21. आप जिस रास्ते पर चल रहे हैं उसमें अनेकों कठिनाइयां और बाधाएं पैदा होंगी। इस रास्ते पर मेरा विश्वास, भावनाएं और शुभकामनाएं आपके साथ हैं और रहेंगी।

आपका

प. ग. हलर्नकर

सी. आर. पी. पब्लिक स्कूल प्रारंभ

2 मई, 1988 को केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल पब्लिक स्कूल का रोहिणी में बल के महानिदेशक श्री प० ग० हलर्नकर ने औपचारिक उद्घाटन किया।

इसी के साथ स्कूल का किंडर गार्टन से कक्षा सात तक का प्रारम्भिक सत्र शुरू हो गया। देश के कई हिस्सों में तैनात केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के कार्मिकों के बच्चों को इस स्कूल में भर्ती किया गया है ।

इस अवसर पर बोलते हुए श्री हलनेकर ने कहा कि बल के कामैयों द्वारा बहुत समय से महसूस की जा रही पब्लिक स्कूल की जरूरत को पूरा कर लिया गया है। देश में कानून व व्यवस्था बनाए रखने के लिए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के कार्मिकों को बार-बार तबादलों का सामना करना पड़ता है, जिससे उनके बच्चों की शिक्षा प्रभावित होती है। स्कूल के साथ-साथ छात्रावास की भी शुरुआत की गई है । अब बल के कार्मिकों के बच्चे एक ही स्कूल में रहकर अपनी शिक्षा पूर्ण कर सकेंगे। उन्होंने कहा कि इस स्कुल की शुरुआत बल के कार्मिकों के लिये चलाए जा रहे बड़े कल्याण कार्यक्रमों का एक हिस्सा है।

देश के अर्द्ध सैनिक बलों में यह अपनी तरह का अकेला स्कूल है।

वर्तमान में स्कूल की शुरुग्रात स्टील के 15 बने बनाये कमरों में की गई है। स्कूल की इमारत का निर्माण कार्य इस सत्र की समाप्ति तक पूरा हो जाने की उम्मीद है ।

इस अवसर पर पुलिस महानिरीक्षक (मुख्यालय) श्री बी० जे० एस० स्याल ने बच्चों, अभिभावकों व अतिथियों का स्वागत किया जबकि प्रधानाचार्य श्री सूरज प्रकाश ने स्कूल की नीतियों के बारे में जानकारी दी। श्रीमती शैलजा पी० हलर्नकर ने स्कूल के बच्चों को मिठाई वितरित की।



स्कूल का उद्घाटन करते महानिदेशक श्री प. ग. हलर्नकर ।

वीरों का सम्मान

कांस्टेबल मोहनन को मरणोपरांत वीर चक्र



कां० मोहनन : अद्वितीय वीरता का प्रतीक

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के दिवंगत कांस्टेबल थंकापन मोहनन की पत्नी श्रीमती पद्मिनी को केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों व अधिकारियों द्वारा 1 मई, 1988 की शाम रवींद्र रंगशाला में आयोजित एक सादे समारोह में सम्मानित किया गया। स्वर्गीय मोहनन को 30 अप्रैल, 1988 को राष्ट्रपति ने मरणोपरांत वीर चक्र से सम्मानित किया था।

के० रि० पु० बल के महानिदेशक श्री प० ग० हलर्नकर ने इस अवसर पर श्रीमती मोहनन को 25,000 रुपए का एक चैक भेंट किया। यह सहायता उन्हें केन्द्र सरकार व के० रि० पु० बल की तरफ से मिलने वाली अन्य सहायताओं के अतिरिक्त प्रदान की गई। इस अवसर पर दिवंगत कांस्टेबल के पिता श्री एस. थंकापन भी मौजूद थे। कांस्टेबल मोहनन वीर चक्र प्राप्त करने वाले के० रि० पु० बल के पहले जवान हैं। यह सम्मान उन्हें श्री लंका में लिट्टे विद्रोहियों के विरुद्ध दिखाई गई बहादुरी के लिए दिया गया। गत वर्ष 15 अक्तूबर को घटी इस घटना में कांस्टेबल मोहनन को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा। उक्त घटना के दिन जब केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की टुकड़ियां पल्लई हवाई क्षेत्र से कारावाड़ी पूर्व की ओर बढ़ रही थी, तो उनके कानवाय पर उत्तर पूर्व की ओर छिपे लिट्टे विद्रोहियों द्वारा भारी गोलाबारी की गई। कानवाय के जवानों द्वारा जवाबी कार्रवाई की गई।



राष्ट्रपति से वीर चक्र प्राप्त करती स्व० मोहनन की पत्नी।



महानिदेशक से 25 हजार का चैक लेते हुए श्रीमती मोहनन ।

हालांकि कांस्टेबल मोहनन के सीने पर गोली लगी थी, तथा उनके बाँए कंधे से बुरी तरह खून बह रहा था वह वीरतापूर्वक मशीनगन थामे रहे और अपनी आखिरी सांस तक लिट्टे विद्रोहियों का सामना करते रहे।

कांस्टेबल मोहनन के इस साहस व वीरता के कारण भारतीय शांति रक्षक सेना की इस टुकड़ी को किसी और जान का नुकसान नहीं उठाना पड़ा।

एक लाख का चैक भेंट

7 मई, 1988 को मद्रास में एक सादे समारोह के बीच के०रि०पु० बल के मृत कांस्टेबल जे. कार्तिकेयन के पिता को एक लाख का चैक भेंट किया गया।

उत्तरी अरकोट जिले के अरनी ताल्लुक के कन्नामंगलम गांव के कांस्टेबल कार्तिकेयन गत वर्ष नवम्बर माह में पंजाब में आतंकवादियो से हुई एक मुठभेड़ में मारे गए थे । मृतक के परिवार को एक लाख रुपए की यह अनुदान राशि पंजाब सरकार ने भेंट की है । मृतक के पिता को यह चैक भेंट करते हुए उप महानिरीक्षक श्री के. आर. के. प्रसाद ने कहा कि आतंकवादियों के विरुद्ध लड़ते हुए दिखाई गई बहादुरी के लिए मृतक को सदैव याद किया जाएगा।

कांस्टेबल कार्तिकेयन 6 नवम्बर, 1987 को एक पैट्रोल पार्टी के साथ जब फिरोजपुर जिले के पिरारवाल गांव से गुजर रहे थे, तो आतंकवादियों ने उन पर ए. के. 47 राइफलों से फायर कर दिया। आतंकवादियों द्वारा घात लगाकर किए गए इस आक्रमण में 85 बटालियन की 'ई' कम्पनी के कांस्टेबल जे. कार्तिकेयन घटनास्थल पर ही मारे गए।

श्री प्रसाद ने कार्तिकेयन के पिता श्री पी० जयप्रकाश को आश्वासन दिया कि वह उनके एक बच्चे को यदि वह उपयुक्त हुआ तो के०रि०पु० बल में रोजगार भी देंगे। उन्हें के०रि०पु० बल रेजिमेंटल फंड में से भी 20,000 रुपए प्रदान किए गए।

उप महानिरीक्षक महोदय ने कहा कि के०रि०पु० बल ने मृत्यु के मामलों में आश्रितों को एक मुश्त प्रदान की जाने वाली राशि 25,000 रुपए तक बढ़ा दी है, यह राशि प्रति माह दी जाने वाली पेंशन के अतिरिक्त होगी। इसके अतिरिक्त सरकारी सहायता व अन्य लाभ भी यथावत रहेंगे।



कांस्टेबल जे. कार्तिकेयन के पिता को एक लाख का चैक भेंट करते श्री के. आर. के. प्रसाद

बहादुरों को पुरस्कार

18 अप्रैल, 1988 को अमृतसर जिले के लपोके पुलिस स्टेशन के अंतर्गत आने वाले गांव बोरापा कलां में के० रि० पु० बल के जवानों और आतंकवादियों के बीच हुई मुठभेड़ में 6 दुर्दांत आतंकवादी मारे गए तथा पांच ए. के. 47 राइफलें, 5 मैगजीन, एक .32 पिस्तौल, एक थामसन कारबाइन तथा तीन एच. ई. 36 ग्रैनेड के साथ भारी संख्या में गोली बारूद बरामद किया गया। इस मुठभेड़ में शामिल 47 और 24 बटालियन के जवानों को उनके साहस, कर्त्तव्य के प्रति समर्पण, बहादुरी तथा उनके अच्छे कार्य के लिए 57,500 रुपए के नकद पुरस्कार दिए गए।

इन में 47 बटालियन के उपनिरीक्षक हरस्वरूप सिंह को 4,000, है. कां. गुलाम हुसैन को 3,000, नायक पूरन चन्द को 3,000, लां ना. प्रताप चन्द को 2,000 तथा लां. नां. ड्राइवर अरा. जी. पिल्लई, कां. के. के. मिश्रा, सतीश कुमार, मोहम्मद रशीद, कां रमेश चन्द, रोशनलाल, बिद्धासिंह, तथा कां० ड्राइवर राम आसरे को दो-दो हजार

रुपए प्रदान किए गए।

इसी प्रकार 24 बटालियन के उप निरीक्षक आर. एस. पाल, कां. पी. राप्पई, तथा रतन सिंह को तीन-तीन हजार रुपए प्रदान किए गए।

47 बटालियन के है० कां० प्यारे लाल व गुलाम सरवर और नायक नागिनसिंह, 24 बटालियन के है. कां. कामेश्वर चौधरी तथा नायक बलकर सिंह को डेढ़-डेढ़ हजार रुपए प्रदान किए गए।

47 बटालियन के ही कां० ड्राइवर जगदीश चन्द, कां. सलीमुद्दीन, धीरेन्द्र सिंह, अशोक कुमार, विनोद सिंह, प्रकाश चन्द तथा 24 बटालियन के कां० धर्मेंद्र कुमार, बिलास देव, मकसूद हुसैन नेपाल चन्द, जोतिश कालिता एवं कां० ड्राइवर जसवंत सिंह को एक-एक हजार रुपए प्रदान किए गए।

इसी मुठभेड़ में शामिल 47 बटालियन के उपाधीक्षक श्री एस. एस. सिंह को उनकी बहादुरी, साहस एवं कर्त्तव्य के प्रति समर्पण के लिए 5,000 रुपए का पुरस्कार प्रदान किया गया ।

पंजाब के अमृतसर जिले के ही पुलिस स्टेशन हारिके के अंतर्गत आने वाले गांव रत्तागुडा में 16 अप्रैल को बल के कार्मिकों के साथ हुई एक मुठभेड़ में 6 आतंकवादी मारे गए और तीन ए. के. 47 राइफलें, दो 12 बोर की डी. बी. बी. एल गनों, एक .315 राइफल व 3 रिवाल्वरों सहित काफी असला बरामद किया गया। इस मुठभेड़ में शामिल जवानों को भी उनके साहस, वीरता एवं कर्त्तव्य के प्रति समर्पण के लिए कुल 39,500 रु० के पुरुस्कार प्रदान किए गये ।

इन में 63 बटालियन के है. कां. एम. एम. भंडारी को 5,000 रुपये और 19 बटालियन के नायक रामप्रकाश (मरणोपरांत) को 2,000 रुपये प्रदान किये गये। 63 बटा० के ही लां. ना. डी. के. सिंह, कां० राम किशन यादव, जैरोम मिंज, सी. बी. विजयन, जे. एस. नायर, लिंगेहा चिन, पी. आर. अर्जुनन (मरणोपरांत), लक्ष्मण पाटिल (मरणोपरांत) उप-निरीक्षक डी. ई. प्रसाद, 19 बटा० के सूबेदार मेजर आर. आर. यादव, निरीक्षक करतार सिंह एवं उप निरीक्षक बाला किशन को दो-दो हजार रुपये प्रदान किये गये।

19 बटा० के है. कां. बाबू लाल को 1,500 रुपये एवं लां. ना. पी. डी. सदानंदन कपिल देव, कां. सुरेंद्र बोकाड़े, हेमा कुमार, पी. गोपालाकृष्णन, 63 बटा० के कां. महावीर प्रसाद एवं जगदीश प्रसाद को एक-एक हजार रुपये प्रदान किये गये।

के० रि० पु० बल केन्द्रीय विद्यालय बनतलाब में स्वास्थ्य सर्वेक्षण

ग्रुप केन्द्र बनतलाब में जवानों और उनके परिवार के कल्याण कार्यक्रमों को दृष्टि में रखकर समय समय पर ग्रुप केन्द्र अस्पताल आदि में कई कल्याण कार्यक्रम चलाए जाते रहे हैं। इसी केन्द्र में जवानों के स्वास्थ्य, बच्चों और माताओं की बिमारियों, परिवार

नियोजन कार्यक्रम तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं के संदर्भ में डा० पी० पांडा (एम० डी०) ने एक स्वास्थ्य सर्वेक्षण किया। इस सर्वेक्षण का मुख्य उद्देश्य समाज के इस महत्त्वपूर्ण हिस्से के विकास स्तर और उसमें व्याप्त बिमारी की घटनाओं का पता लगाना था। नवम्बर, दिसम्बर 1987 में किए गए इस सर्वेक्षण में 5 से 16 आयु वर्ग के 460 बच्चों का, जिन में 295 लड़के और 165 लड़कियां थी, स्वास्थ्य परीक्षण किया गया।

विभिन्न अध्ययन रिपोर्टों में भारत में 18.60 प्रतिशत बच्चे दंत रोग से ग्रस्त पाए गए हैं, जबकि इस रिपोर्ट के अनुसार यह संख्या 28 प्रतिशत है।

5 वर्ष के आयु वर्ग को छोड़ कर अधिकतर बच्चे निर्धारित स्तर की ऊँचाई से एक से० मी० कम पाए गए। 10, 11, 12 और 13 वर्ष की आयु वर्ग वाली लड़कियां लड़कों से ऊंची पाई गई।

आयः सभी आयु वर्ग के बच्चों में वजन कम पाया गया। कम वजन घटिया आहार, निम्न स्वास्थ्य शिक्षा और आतों के कीड़ों की वजह से पाया गया ।

इस सर्वेक्षण के द्वारा परीक्षित रोगी बच्चों का तुरन्त उपचार प्रारंभ कर दिया गया है।

हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

दक्षिणी सेक्टर के हैदराबाद स्थित के० रि० पु० बल महानिरीक्षक के कार्यालय में 21 मार्च, 1988 से 30 मार्च, 1988 तक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। श्री एन० पी० श्रीकुमार, सहायक निदेशक (प्रशा०) ने कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए प्रशिक्षणार्थियों को सरकार की भाषा नीति की जानकारी दी तथा बताया कि कर्मचारियों की हिन्दी में काम करने की झिझक को दूर करना ही इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य है । कार्यशाला के दौरान निरीक्षक (अनुवादक) बालकृष्ण टंडन ने प्रशिक्षणार्थियों को हिंदी की संवैधानिक स्थिति, राजभाषा अधिनियम तथा राजभाषा नियमों की जानकारी दी।

कार्यशाला की समाप्ति पर 30 मार्च को प्रशिक्षणार्थियों के लिए हिंदी टिप्पण/आलेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें स० उ०नि० (लि०) पी० गोपालन तथा उ० नि० (लि०) वी० के० मैथ्यू ने क्रमशः प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त किए। सहायक निदेशक (प्रशा०) ने विजेताओं को नगद पुरस्कार देने की घोषणा की तथा शेष प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाणपत्र वितरित किए गए।

राजभाषा समिति की बैठक

26 अप्रैल, 1988 को के०रि०पु०बल महानिदेशालय में राजभाषा कार्यान्वयन समिति

की बैठक का आयोजन किया गया । बैठक की अध्यक्षता पुलिस महानिरीक्षक (मुख्यालय) श्री बी० जे० एस० स्याल ने की। बैठक में महानिदेशालय के सभी उपनिदेशक, सहायक निदेशक, संयुक्त सहायक निदेशक, सहायक जन सम्पर्क अधिकारी एवं अनुभाग अधिकारियों ने भाग लिया।

बैठक का शुभारंभ करते हुए अध्यक्ष महोदय ने सभी अधिकारियों से हिंदी के उत्तरोत्तर प्रयोग की दिशा में सम्पूर्ण सहयोग की अपेक्षा की।

अध्यक्ष महोदय ने हिंदी में मूल पत्राचार की मात्रा बढ़ाने पर बल दिया। उपनिदेशक (प्रशिक्षण) श्री स० च० चौबे ने प्रशिक्षण निदेशालय को हिंदी कार्य के लिए विनिर्दिष्ट करने का अनुरोध किया । उपनिदेशक (स्थापना) श्री किशनलाल का प्रस्ताव था कि हिंदी टाइपिंग व आशुलिपि की कक्षाएँ महानिदेशालय में ही चलाई जाएँ। इस सम्बन्ध में अध्यक्ष महोदय ने हिंदी शिक्षण योजना के अधिकारियों से हिंदी अधिकारी श्री प्रेमचन्द धस्माना से सम्पर्क करने के लिए कहा ताकि अगले सत्र से कक्षाएँ महानिदेशालय से ही चलाई जाएँ। मई माह में ही कार्मिकों के लिए हिंदी कार्यशाला के आयोजन का भी निर्णय लिया गया।

बैठक में यह भी निर्णय लिया गया कि आगे से स्टेनोग्राफरों की भरती के समय यह सुनिश्चित किया जाए कि कुल भरती किए गए स्टेनोग्राफरों में 50 प्रतिशत हिंदी के हों। बैठक का संचालन महानिदेशालय के हिंदी अधिकारी श्री प्रेमचन्द धस्माना ने किया।

पंजाब में दो बड़ी सफलतायें

लेख० एच० एस० सेठी



कंट्रोल रूम अमृतसर में आतंकवादियों से बरामद रायफ़ल दिखाते अधिकारी ।

जब सुरक्षा बलों ने आतंकवादियों की घेरावन्दी के लिए अमृतसर के स्वर्ण मंदिर के चारों ओर घेरा डाला, तो पूरा राष्ट्र सांस रोक कर उनकी इस कार्रवाई के नतीजे की प्रतीक्षा करने लगा। उत्तेजना के इन परम क्षणों में अमृतसर जिले के ग्रामीण इलाकों में सुरक्षा बलों ने जो कार्य किए, वे कम ही प्रकाश में आए । बहरहाल, अब जब कि धूल बैठ चुकी थी, लेखक ने वहां घटी घटनाओं का ब्यौरा लेने के लिए पंजाब का दौरा किया।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के कन्ट्रोल रूम अमृतसर के कैनाल रेस्ट हाउस में एक दर्जन दनदनाते टेलीफोनों से घिरे दो अधिकारियों ने लेखक को आतंकवादियों से हथियाई गई एक ए. के. 47 राइफल दिखलाई। राइफल पर गुरु गोविन्द सिंह के अमर शब्दों, 'निश्चय कर अपनी जीत करूं' को चित्रित किया गया था। साथ के कमरे में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिरीक्षक जोगिन्दर सिंह मौजूद थे। उन्होंने लेखक को बताया कि किस तरह ग्रामीण क्षेत्रों में केवल तीन मुठभेड़ों में ही उनके जवानों ने न केवल 20 कुख्यात आतंकवादियों पर काबू पाया अपितु 13 ए. के. 47 राइफलें, छः दूसरी राइफलें, और बन्दूक़ें, चार पिस्तौलें तथा ढेर सारा असला बरामद किया। महानिरीक्षक महोदय ने स्थानीय कमांडरों के साथ लेखक की पट्टी क्षेत्र की यात्रा की व्यवस्था की। दो मुठभेड़ें इसी क्षेत्र में हुई थी।

एक जीप जिस की छत पर एक एल. एम. जी. लगी थी, लेखक की धूल भरे कच्चे पक्के रास्तों से गुजारते हुए 'पट्टी सेक्टर' में ले आई। पट्टी एक जाना पहचाना नाम है । यह वह क्षेत्र है जिससे आधुनिक पंजाब के निर्माता स्वर्गीय प्रताप सिंह कैरों का सम्बन्ध

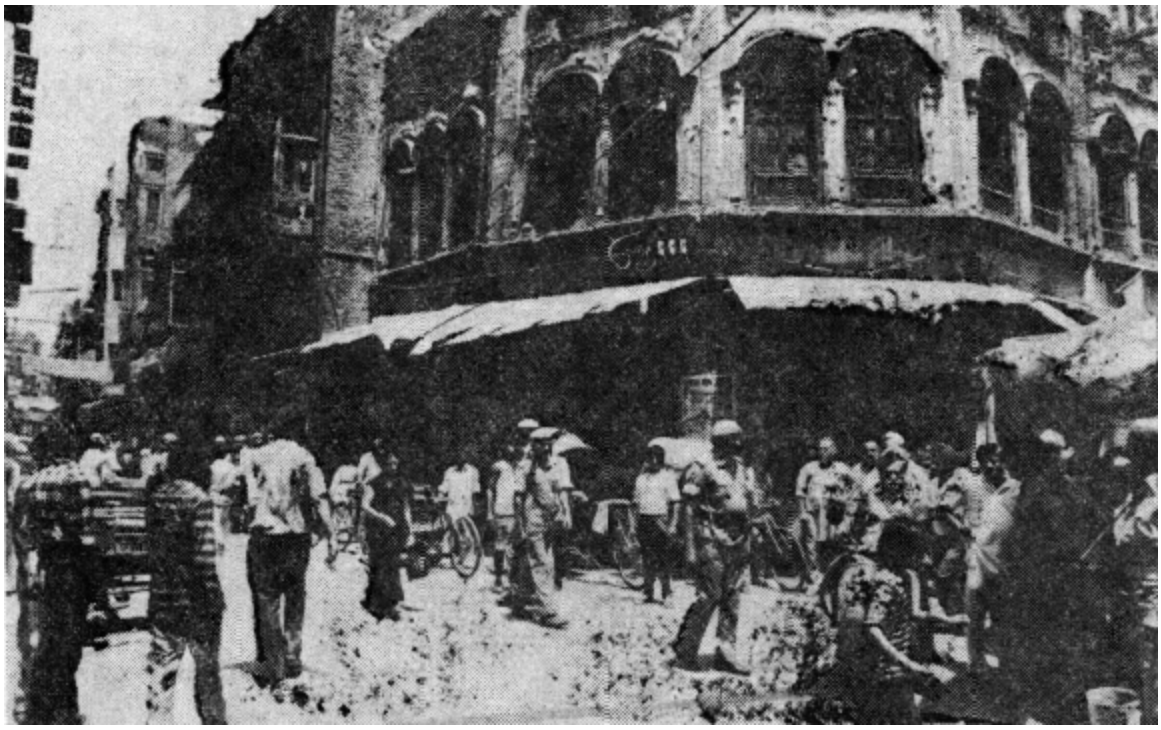
था। यह क्षेत्र पाक सीमा से लगभग 30 कि० मी० दूर पड़ता है तथा पट्टी और 1965 के यद्ध में भारतीय पैटन टैंकों के रणक्षेत्र खेमकरन सीमा के बीच स्थित है।

सीमा के नजदीक स्थित होने के कारण यहां पर सोने, नशीले पदार्थों तथा हथियारों की तस्करी की कहानियां अक्सर सुनी जा सकती हैं। हथियारों की तस्करी, एक नयी वृत्ति है । यह ज्यादा फायदे वाला धन्धा है। (जैसा कि लेखक को बताया गया कि इस वक्त चीनी ए. के. 47 राईफल का बाजार मूल्य 36,000 रुपए है।) इसके अतिरिक्त जब तक इन्हें बेचा नहीं जाता तब तक ये तस्करों को सुरक्षा भी प्रदान करती हैं। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक श्री प. ग. हलर्नकर द्वारा ए.के. 47 राइफलें बरामद करने पर नकद इनाम दिए जाने की अमृतसर में की गई घोषणा का प्रतिकूल असर पड़ा है और जवानों ने साहसिक ढ़ग से आतंकवादियों से मुकाबला कर हथियार आदि बरामद किए हैं।



पंजाब में मिली एक बड़ी सफलता।

पट्टी सेक्टर के अन्तर्गत छः पुलिस स्टेशन आते हैं—हारिके (जिसमें मंड इलाका है, जहाँ से कुख्यात आतंकवादी अवतार सिंह ब्रह्मा संबंध रखता है), वाल्टोहा (आतंकवादियों के छिपने के लिए यह एक आकर्षक शरण स्थली है), खेमकरन और खालरा (यह क्षेत्र तस्करों का स्वर्ग माना जाता है) तथा भिक्खीविंड और पट्टी। यह क्षेत्र के०रि०पु० बल की 19वीं बटालियन के कमांडैंट धगत के अन्तर्गत आता है।



पंजाब के बाजारों में बल के जवान।

श्री धगत, आजकल, हाल में ही मिली दो बड़ी सफलताओं के कारण प्रकाश में हैं। बल के अन्य अधिकारी उन्हें सौभाग्यशाली मानते हैं। लेकिन श्री धगत का कहना है कि कड़ी मेहनत से बुरे नसीब को भी अपने अनुकूल बनाया जा सकता है। श्री धगत ने लेखक को उस भयानक समय के बारे में बताया जबकि उनके क्षेत्र में एक ही दिन 26 लोगों की हत्या कर दी गई और इन की जिम्मेदारी ली 'जनरल' हरी सिंह ने। उन्होंने उन रातों के बारे में भी बताया, जो उन्होंने कुछ कर पाने से पहले बिना पलकें झपके बिताई थीं।

श्री धगत को कुछ कर दिखाने के लिए सुनहरा मौका लगभग पन्द्रह दिन के बाद 16 अप्रैल, 1988 को तब मिला जब किस 19 वीं और 63वीं बटालियन के जवानों की एक टुकड़ी पर एक फार्म हाउस से फायर किया गया। जवानों ने न केवल तत्काल उस फार्म हाउस को ही घेर लिया अपितु वे उस कमरे में एक ग्रेनेड फेंकने में भी सफल हो गये, जिस कमरे से गोलियां चलाई जा रही थी। परिणामस्वरूप न केवल वह स्वयं भ 'जनरल' अपितु उसके पांच साथी भी, जो सभी कुख्यात आतंकवादी थे मारे गये। यहां से जवानों ने पाँच ए. के-47 राइफलें तथा एक थामसन कारबाइन सहित और असला बरामद किया। लेकिन इस सफलता की उन्हें भारी कीमत देनी पड़ी। उनके तीन जवान इस मुठभेड़ में मारे गए।



आतंकवादियों का सफाया कर भारी मात्रा में हथियार एवं गोला बारूद बरामद करने वाले 19 बटालियन के जवान।

इस मिलीजुली सफलता से श्री धगत ने अगली सफलताओं के लिये सावधानी और तैयारी के लिये और अच्छा अनुभव प्राप्त किया। श्री धगत को अपने स्रोतों से गुरनाम सिंह घरियाला के बारे में जानकारी प्राप्त हुई। यह एक ग्रेजुएट था जिस पर आतंकवादी गतिविधियों में संलग्न होने का संदेह था। श्री धगत ने इसे धर दबोचने की योजना बनाई। जल्द ही इलाके की एक रैक्की के दौरान उन्हें ज्ञात हुआ कि घरियाला पाकिस्तान में प्रशिक्षण प्राप्त कर हाल ही में इस क्षेत्र में आया था। अब श्री धगत जानते थे कि उन्हें क्या करना है। दो दिन बाद ही इलाके में के०रि०पु० बल की 19, 38 ओर 63वीं बटालियन तथा स्थानीय पुलिस की टुकड़ियां क्षेत्र में विभिन्न स्थानों पर तैनात कर दी गई। इनमें से कुछ आतंकवादियों को खदेड़ने के लिये और कुछ उनको पकड़ने के लिए थीं।

आखिर योजना रंग लाई। जवानों पर एक फार्म हाउस से गोलियां चलाई गई, लेकिन आतंकवादी जल्दी ही समझ गए कि यह एक संगठित एवं योजनाबद्ध आपरेशन है। आतंकवादियों के पांव उखड़ गए। वे अपने दो मृत साथियों को छोड़कर भाग खड़े हुए, उनकी मोर्चा बन्दी पूरी तरह टूट गई।

भागते हुए आतंकवादियों ने संदरा गांव के एक फार्म हाउस में पोजिशन लेकर गोलियां दागनी शुरू कर दी। घर के अन्दर पहले से ही अजैब सिंह उसका पुत्र तथा पौत्र मौजूद थे। वे केवल तीन व्यक्ति नहीं थे, बल्कि वे तीन पीढ़ियों के प्रतिनिधि थे।

जवानों को इस बात का पता तब चला जब कि भारी गोलीबारी के बीच एक औरत तीन मासूम जिंदगियाँ बचाने के लिये प्रार्थना करने लगी। सुरक्षा बलों ने कुछ क्षणों के लिये गोलीबारी रोक दी और इसके साथ ही तीनों नागरिक बिलकुल सुरक्षित बाहर निकल आये। युद्ध की सी स्थिति में यह एक परिवार का खुशगवार पुनर्मिलन था।

गोलीबारी चलती रही। आतंकवादियों ने लड़ाई को निर्णायक मोड़ देने के लिये एक छोटी सिंचाई चैनल के पास मोर्चाबंदी कर ली। लेकिन शीघ्र ही श्री धगत के एक सहयोगी अपने साथियों के साथ एक बुलेट प्रूफ जीप (यह एक साधारण जीप होती है, जिस पर स्टील की चद्दरें मढी रहती हैं) में उनके करीब आये और उन पर हथ-गोले फेंके। और इसके साथ ही लम्बी गोलीबारी, आतंकवादियों की घेराबंदी और यह आपरेशन समाप्त हो गया। एक आतंकवादी पम्प हाउस में तथा छः मैदान में मरे पड़े थे। पांच और ए. के. 47 राइफलें, एक राइफल, दो पिस्तौलें तथा एक बंदूक बरामद की गई।

यह जानने के लिये कि पम्प हाउस में क्या-क्या हुआ था, यह लेखक अजैब सिंह से मिला। उसने लेखक को बताया कि वह उसका बेटा और पौत्र उस भारी गोलीबारी में सांस रोक कर खड़े थे। पम्प हाउस में एक आतंकवादी को गोली लगी और वह मर गया। बाकी आतंकवादियों को यह आभास हो गया कि वे बुरी तरह घिर चुके हैं। यह कहते हुए कि रत्तागुड़ा फिर नहीं दोहराया जाना चाहिये' उन्होंने दरवाजे से निकल कर सिंचाई चैनल के पास मोर्चा सम्भाल लिया और यहीं पर उनकी मृत्यु हुई।

सभी चित्र :
बिहारी लाल

एम० टी० प्रतियोगिता में अजमेर प्रथम

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र-I नीमच में 25 और 26 अप्रैल, 1988 को एम० टी० प्रतियोगिता, का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में के०रि०पु०बल की 11 क्षेत्रीय टीमों ने भाग लिया। हैदराबाद एवं रामपुर रेंज ने प्रतियोगिता में भाग नहीं लिया। प्रतियोगिता में अजमेर रेंज प्रथम, कलकत्ता रेंज द्वितीय तथा चंडीगढ़ रेंज तृतीय रहे।

व्यक्तिगत मुकाबलों में नीमच रेंज के नायक ड्राइवर गंगा सिंह प्रथम, इम्फाल रेंज के कां० ड्राइवर शेर सिंह द्वितीय तथा चंडीगढ़ रेंज के कां० ड्राइवर मोहन सिंह तृतीय रहे।

डीजल/भारी वाहन प्रतियोगिता में कलकत्ता रेंज के नायक ड्राइवर रतन लाल प्रथम, अजमेर रेंज के ला० ना० ड्राइवर जयनारायण द्वितीय तथा कोहिमा रेंज के कां० ड्राइवर एस० आर० के० पिल्लई तृतीय रहे।

नीमच रेंज के तत्कालीन उप पुलिस महानिरीक्षक श्री इंद्रा सिंह ने विजेताओं को

पुरस्कार बॉटे।

एक बड़ा हादसा



कां. यू. के. मंडल



कां. बी. के. भोई



कां. कुम्भा राम



कां. राजपाल त्यागी

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की एक टुकड़ी पर नागा विद्रोहियों द्वारा लगाई गई एक योजनाबद्ध घात में बल के 10 जवान मारे गए।

बल की 39 बटालियन की 'एफ' कम्पनी की यह टुकड़ी स्टेट बैंक आफ इन्डिया इम्फाल से तमेंगलोंग के लिए ले जाई जा रही नकदी के साथ थी। 19 अप्रैल 1988 को घटी इस टुर्घटना में आतंकवादी एक अनुमान के अनुसार लगभग 60-70 लाख रुपए भी लूट कर अपने साथ ले गए।

19 अप्रैल, 1988 को 7 जीपों का यह काफिला उपनिरीक्षक सोबन ऐन्द के निरीक्षण में 2 मणिपुर रायफल के क्वार्टर गार्ड से नकदी लाद कर तमेंगलोंग की ओर चल पड़ा। पूरी टुकड़ी में बल के 18 जवान थे। सातों जीपों को नागरिक ड्राइवर चला रहे थे। तमेंगलोंग की इम्फाल से दूरी लगभग 170 किलोमीटर है, जिसमें लगभग 160 किलोमीटर का रास्ता दुर्गम एवं पहाड़ी है।

इसी रास्ते में एक खतरनाक मोड़ के पास नागा आतंकवादियों ने जोकि संख्या में लगभग 40-50 थे, तथा जिनके पास भारी संख्या में आधुनिक हथियार एवं गोलाबारूद था, इस टुकड़ी पर घात लगाई। यह टुकड़ी जैसे ही उस मोड़ के नजदीक पहुंची तो आतंकवादियों ने उस पर हथ गोलों से आक्रमण कर दिया। जीपों में बैठे तमाम जवानों ने तत्काल जीपों से कूदने का प्रयास किया। लेकिन उप निरीक्षक सोबन ऐंद सहित कुछ ही जवान जीपों से कूद सके। इस कार्यवाई में कां० मोहन सिंह, कां० माता प्रसाद तथा कां० बच्चा राम घायल भी हो गए।



कां. वशीउल्लाह खान, कां. तारकेश्वर

लेकिन कां० बिजोय कुमार भोइ, कां० वशीउलाह खान, कां० कुम्भा राम, कां० राम प्रकाश सिंह तथा कां० ई० लकरा जीपों से कूदने के प्रयास में गोलियां लगने से वहीं पर मारे गए।

आतंकवादियों द्वारा की जा रही भारी गोलीबारी के कारण तीन जीपों में आग लग गई। और इन जीपों में सवार कां० तारकेश्वर राम, कां० राजपाल त्यागी, कां० यू० के० मंडल कां० मुत्थू तथा कां० अमरजीत सिंह गोलियाँ लगने व आग से झुलसने के कारण मारे गए।

जीपों से कूदे जवानों ने मोर्चा सम्भालने का प्रयास किया। लगभग डेढ़ घन्टे तक ये कार्मिक भारी गोलीबारी के बीच मोर्चा सम्भाले रहे। लेकिन इन जवानों का अधिसंख्य गोला बारूद जीपों में ही छूट गया था। मौके का फायदा उठा कर आतंकवादी जीपों में पड़ी नकदी तथा मृत जवानों के हथियार उठा कर भाग खड़े हुए।

27 अप्रैल को मणिपुर पहुंचे केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक ने प्रत्येक घायल को तत्काल 500 रुपए तथा इस घटना में जीवित बचे अन्य जवानों को 300 रुपए के नकद पुरस्कार दिए। यह 4,500 रुपए के पुरस्कार तत्काल ही प्रदान किये गये।



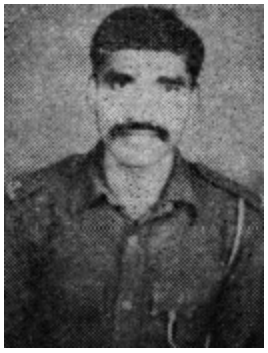
कां. रामप्रकाश सिंह



का. अमरजीत सिंह



का. ई. लकरा



कां. आर. मुत्थू

पंजाब से

पंजाब में सफलता

अप्रैल, 1988 में पंजाब में तैनात केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की बटालियनों के जवानों ने आतंकवादियों के साथ हुई विभिन्न मुठभेड़ों में 25 उग्रवादियों को मारा तथा 387 उग्रवादियों को गिरफ्तार किया । इस दौरान बल के जवानों ने 39 ए० के० 47 रायफलें, 6 राकेट लांचर तथा 18,000 से भी अधिक राऊंडों व गोला बारूद के सहित 155 हथियारों को बरामद किया।

एक आतंकवादी मरा

2 अप्रैल, 1988 को जंडियाला थाने के अन्तर्गत झरुनाँगल गांव में, के० रि० पु० बल की 12 बटालियन की एक गश्ती पार्टी और आतंकवादियों के बीच हुए एक मुठभेड़ में एक आतंकवादी मारा गया और दो अन्धेरे का फायदा उठाते हुए भाग निकले। इलाके की छानबीन के दौरान तीन मैगजीन सहित एक ए० के० 47 रायफल, एक मैगजीन सहित एक 9 एम० एम० थामसन गन, 137 ए० के०-47 राउण्ड और .32 के 49 राउंड,

बरामद किए गए।

पांच व्यक्ति गिरफ्तार

अमृतसर के बेंगती कलां गांव में 4 अप्रैल, 1988 को 27 बटालियन, के० रि० पु० बल की एक पार्टी ने थोड़ी सी मुठभेड़ के बाद 5 व्यक्तियों को गिरफ्तार कर लिया। उनसे .303 के 2 पिस्तौल, .303 के 40 राउंड, .315 बोर के दो पिस्तौल तथा .315 के 8 राउंड बरामद किए गए।

चार संदिग्ध गिरफ्तार

पंजाब के भिकीविंड गाँव में 7 अप्रेल, 1988 को के० रि० पु० बल को 79 बटालियन एवं स्थानीय पुलिस के जवानों द्वारा की गई एक नाकाबन्दी के दौरान चार संदिग्ध व्यक्तियों को गिरफ्तार कर उनसे 6 ए० के०-47 राइफलें, एक 9 एम एम कारबाइन, तीन 9 एम एम विशेष कारबाइम, आठ .32 पिस्तौल, एक .38 रिवाल्वर तथा 4 एचई 36 ग्रनेड सहित भारी संख्या में गोली बारूद बरामद किया गया।

एक मरा

12 अप्रैल 1988 को 80 बटालियन तथा सिविल पुलिस की एक नाका पार्टी द्वारा एक ट्रक व स्कूटर को रुकने का इशारा किया गया। किन्तु ट्रक के अन्दर बैठे व्यक्तियों ने रुकने के स्थान पर फायर शुरू कर दिया, बल के जवानों ने भी जवाब में फायर किया, जिसके परिणामस्वरूप ट्रक में बैठा एक व्यक्ति मारा गया। शेष व्यक्ति अन्धेरे का फायदा उठाकर भागने में सफल हो गए। ट्रक के ड्राइवर को गिरफ्तार कर उससे एक फ्यूज सहित एच ई नं० 36 ग्रेनेड, 7 सर्जीव कारतूस सहित मैगजीन, एक .303 पिस्तौल, एक ट्रक, एक स्कूटर तथा पापी हस्क के 100 थैलों सहित गोली बारूद बरामद किया गया।

छः उग्रवादी मरे

18 अप्रैल, 1988 को 14 बटालियन की एक गश्ती टुकड़ी ने देखा कि बोपाराम कलां गांव के मास्टर तारा सिंह के फार्म हाऊस से 6-7 आदमी भाग रहे हैं। गश्ती दल द्वारा उनका पीछा कर उन्हें रुकने के लिए चेतावनी दी गई, जबाव में भागते व्यक्तियों ने बल के जवानों पर गोलियां चलानी शुरू कर दी, जवानों ने तत्काल जवाबी फायर किया। सूचना मिलने पर तत्काल 24 व 27 बटालियन के कमांडेन्टों के साथ राहत दल घटनास्थल पर पहुंचा और उग्रवादियों को चारों तरफ से घेर लिया गया। इस मुठभेड़ में 6 उग्रवादी मारे गए और 5 ए० के०-47 राइफलें, 6 ए० के०-47 मैगजीन, एक थामसन गन, तथा 3 एच० ई० 36 प्राइम्ड हैंड ग्रेनेड सहित उपरोक्त हथियारों के लिए प्रायुक्त

होने वाला गोला बारूद बरामद किया गया। इस मुठभेड़ के दौरान 15 व्यक्तियों को भी गिरफ्तार किया गया। इस मुठभेड़ में बल के तीन जवानों को भी गोलियों की चोटें लगी।

पांच उग्रवादी गिरफ्तार

19, 20 अप्रैल, 1988 की रात को 4 बटालियन को एक पार्टी तथा स्थानीय पुलिस ने बघापुराना थाने के अन्तर्गत जयमलवाला गांव के एक युवक को उसके निवास स्थान से गिरफ्तार किया और उसके पास से उग्रवादियों के कार्यकलापों के बारे में रिकार्ड प्राप्त किए। उस युवक ने यह माना कि उसने 5 हत्याएं की हैं। यह थाना बघापुराना के अधीन बुधसिंह वाला गांव के भाई गुरजेंट सिंह गैंग से संबंधित था। उससे हुई पूछताछ के आधार पर 4 उग्रवादियों को पकड़ा गया, और 4 राकेट लांचर, 15 ए० के०-47 राइफल, 2 टाइम बम एवं 5 पिस्तौल सहित भारी संख्या में गोलाबारूद बरामद किया गया।

भारी मात्रा में अस्त्र शस्त्र बरामद

29 बटालियन के कमांडैंट को अपने स्त्रोतों से ज्ञात हुआ कि आतंकवादियों को पाकिस्तान की सीमा से भारी मात्रा में अस्त्र-शस्त्र प्रदान किए जा रहे हैं। उनके द्वारा और अधिक छानबीन करने पर ज्ञात हुआ कि ये अस्त्र-शस्त्र तरन तारन जिले के पुलिस स्टेशन सदर के अन्तर्गत आने वाले लालपुरा गांव में कहीं छिपाये जा रहे हैं। कमांडेन्ट ने व्यक्तिगत तौर से एक पार्टी के साथ लालपुरा और उसके आसपास के गांव के सभी फार्म हाउसों को छान डाला, लेकिन उनके हाथ कुछ न लगा। आखिरकार सफलता उन्हें 18-19 अप्रैल, 88 की रात को मिली। कमांडैंट और उनके साथी लालपुरा गाँव के अजीत सिंह का वह फार्म हाउस खोजने में सफल हो गए जो एक नाले के किनारे स्थित था, तथा जिसमें भूमिगत बंकर बनाकर पाकिस्तान से प्राप्त किए गए अस्त्र छिपाए गये थे। हाल ही में पाकिस्तान से प्राप्त किए गए इन अस्त्र-शस्त्रों में पांच ए० के० 47 असाल्ट चीनी राइफलें, इन राइफलों की 15 मैगजीनें, .30 की 11 पिस्तौलें, .38 की 6 पिस्तौलें, एक .32 रिवाल्वर, .30 पिस्तौल की 17 मैगजीनें, .38 पिस्तौल की आठ मैगजीनें, .38 पिस्तौल की 8 मैगजीनें, 9 कारबाइन राड, ए० के० 47 राइफल के 2,301 राउन्ड, .30 पिस्तौल के 200 राउन्ड तथा 6 शैल उस भूमिगत बंकर से बरामद किए गए।

दुर्दांत आतंकवादी का अंत

7 मई, 1988 को 19 बटालियन केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों के साथ हुई एक मुठभेड़ में पट्टी क्षेत्र में खालिस्तान कमांडो फोर्स का क्षेत्रीय कमांडर दुर्दान्त आतंकवादी कुलवन्त सिंह उर्फ कांता मारा गया।

7 मई, 1988 को 19 बटालियन के सहायक कमांडेंट (आपरेशन) श्री के० रामामूर्ति

को सूचना प्राप्त हुई कि पट्टी क्षेत्र के कोटनावा इलाके में कुछ संदेग्ध व्यक्तियों को देखा गया है । श्री रामामूर्ति अपने दल के साथ तत्काल संभावित क्षेत्र में पहुंच गए और स्थानीय पुलिस के साथ मिलकर तत्काल सारे इलाके की छानबीन की गई। छानबीन के दौरान यह देखा गया कि एक व्यक्ति भागने की कोशिश करते हुए ऊबड़ खाबड़ जमीन और झाडियों में छिपने का प्रयास कर रहा है। जब पुलिस दल उक्त व्यक्ति की तरफ बढ़ा तो उसने पुलिस दल पर फायर कर दिया। जवाब में पुलिस दल ने भी तत्काल गोली चलाई। जिसके परिणाम स्वरूप वह व्यक्ति घटनास्थल पर ही मारा गया। मृतक के पास से एक .38 आटोमैटिक पिस्तौल मैगजीन में एक सजीव राउन्ड सहित तथा चार खाली खोखे बरामद किए गए।

बाद में मृतक की शिनाख्त कुख्यात आतंकवादी कुलवंत सिंह उर्फ कांता के रूप में हो गई, जो कि खालिस्तान कमांडो फोर्स का पट्टी क्षेत्र का क्षेत्रीय कमांडर था । उक्त आतंकवादी का 25 मार्च, 1988 को खेमकरन में निर्दोष बस यात्रियों की हत्याओं तथा पट्टी क्षेत्र में कई हत्याओं में हाथ था।

चमकौर सिंह मारा गया

पंजाब के भटिंडा जिले के घंडाबाना गांव में 23 मई, 1988 को के० रि० पु० बल की एक टुकड़ी के साथ हुई मुठभेड़ में कुख्यात आतंकवादी चमकौर सिंह अकलिया मारा गया। इसी दौरान छापेमारी में दो और आतंकवादियों को भी गिरफ्तार किया गया ।

सूचना प्राप्त होने पर कि कुख्यात आतंकवादी चमकौर सिंह अकलिया भटिंडा जिले के घंडाबाना गांव में किसी किशनलाल के मकान में छिपा है, के० रि० पु० बल की 65 बटा० की एक टुकड़ी एक उपाधीक्षक के नेतृत्व में आतंकवादी के संभावित छुपने के स्थान की ओर चल पड़ी।

संदेहास्पद मकान के पास पहुंच कर बल व स्थानीय पुलिस की टुकड़ी ने घर की घेराबंदी कर ली। मकान की तलाशी लेते समय आतंकवादी ने एक कमरे के किवाड़ों की आड से ए० के० 47 रायफल से फायर किया। जवानों ने तत्काल एक ट्यूबवैल के पीछे पोजीशन ले कर जवाब दिया।

आतंकवादी भी मकान से बाहर निकल आया और मैदान में मोर्चा संभाल कर जवानों पर गोलियां चलाने लगा। कुछ देर बाद उपाधीक्षक और एक हैड कांस्टेबल एक और से छिपते हुए उसके पास जा पहुंचे और आतंकवादी पर गोलियां चला दी। चूंकि आतंकवादी ने बुलेटप्रूफ जैकेट पहनी थी, अतः कोई भी गोली उसकी पीठ या सीने पर नहीं लगी। जख्मी होते ही आतंकवादी ने बच कर भागने का प्रयास किया लेकिन बल के जवानों द्वारा किए गए फायर के कारण आतंकवादी के सिर पर तीन गोलियां लगीं और उसकी घटनास्थल पर ही मृत्यु हो गई।

मृत आतंकवादी से एक ए.के. 47 राइफल, ए. के. 47 के 200 राउण्ड तथा 2,366 रुपए बरामद किए गए। बाद में इसी पार्टी ने गांव भाई भक्ता में छापामारी की और

एक .315 राइफल तथा दो 12 बोर डबल बैरलगन बरामद की । बाद में पार्टी ने जवाहर अस्पताल मोगा में छापा मार कर दो आतंकवादियों को गिरफ्तार किया। इन आतंकवादियों से पूछताछ के बाद दो और बैंरलगन बरामद की गई।

अप्रैल माह में मृत बल के कार्मिक

माह अप्रेल, 1988 में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्न कार्मिकों की मृत्यु हुई:—

24 बटालियन के वाटरमैन कन्हाई, 26 बटा० के कांस्टेबल विलियम होरो, 62 बटा० के कां० चक्रपाणी कारवर, 48 बटा० के कां० मुख्तियार अहमद, 63 बटा० के कां० लक्ष्मण पाटिल और कां० पी० आर० अर्जुनन, 19 बटा० के नायक राम प्रकाश, 39 बटा० के कां० तारकेश्वर ठाकुर, कां० राजपाल त्यागी, कां० विजय कुमार भोई, कां बसिउल्लाह खान, कां० कुम्भाराम, कां० यू० के० मंडल, कां० अमरजीत सिंह, कां० आर० मुथु, कां० राम प्रकाश सिंह और कां० ई० लकरा, स्पेशल ड्यूटी गार्ड कां० राधेश्याम, 67 बटा० के कुक भगवान सिंह और 42 बटा० के कां० रामचंदर सिंह ।

जोखिम निधि लाभ

जोखिम निधि फंड के पास माह अप्रैल, 1988 में मृत्यु के 25 मामले आए जिनमें 4,25,000 रुपए देने स्वीकृत किए गए।

इसी प्रकार 13 अक्षमता के मामलों में एक लाख 95 हजार रुपए देने स्वीकृत किए गए।

पहला व्यक्ति—कल दूसरी बार मेरी जेब कटी। 100 रुपये निकल गए।

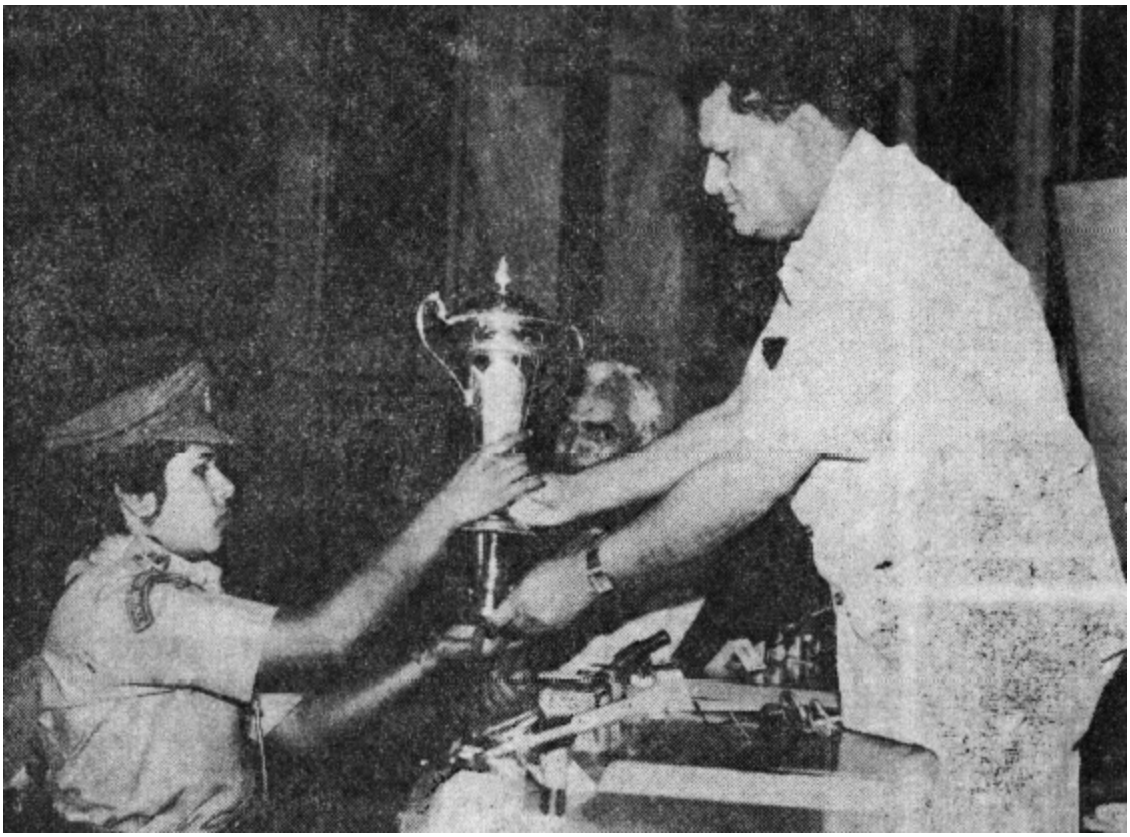
दूसरा व्यक्ति—क्यों पहिले कब कट थी ?

पहला व्यक्ति—कोई दस साल पहले, तब 50 रुपये निकले थे।

दूसरा व्यक्ति—कोई बात नहीं इतनी तो महंगाई भी बढ़ी है।

समाचार

महिला बटालियन को विशेष पुरस्कार



उप निरीक्षक बी. एन्थोनी राज्य मंत्री श्री संतोष मोहन देब से ट्राफ़ी ग्रहण करते हुए।

गणतंत्र दिवस की परेड में पहली बार भाग लेने वाली केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की महिला बटालियन की टुकड़ी को 6 मई, 1988 को रक्षा राज्य मन्त्री श्री संतोष मोहन देव ने एक साधारण समारोह में विशेष पुरुस्कार प्रदान कर सम्मानित किया।

महिला बटालियन की इस टुकड़ी की तरफ से उप निरीक्षक बी. एथोनी ने ट्राफी ग्रहण की।

इस अवसर पर बोलते हुए रक्षा राज्य मन्त्री ने कहा कि केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की महिला टुकड़ी का परेड के पूरे रास्ते में दोनों ओर खड़े जन समुदाय ने भरपूर स्वागत किया। मन्त्री महोदय ने कहा कि निर्णायक इस मामले में एकमत थे कि के. रि. पु. बल की महिला टुकड़ी का प्रदर्शन सर्वोत्तम था। और इसीलिए उसे विशेष पुरुस्कार दिया गया।

जवानों द्वारा श्रमदान

अपनी अत्यधिक व्यस्तता के बावजूद के० रि० पु० बल के जवान और अधिकारी सामाजिक कार्यों के लिए भी समय निकाल ही लेते हैं। ऐसा ही एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया है चंडीगढ़ स्थित 7 वीं बटालियन के जवानों और अधिकारियों ने। चंडीगढ़ की सुखना झील जहां एक और चंडीगढ़ के सौंदर्य में चार चांद लगाती है वहीं यह पर्यटकों के लिए भी आकर्षण का प्रमुख केन्द्र है। लेकिन पिछले साल के भयंकर सूखे

के कारण यह दिन प्रतिदिन सूखती जा रही है।

चंडीगढ़ प्रशासन व स्थानीय नागरिकों ने श्रमदान के द्वारा इस झील को और गहरा करने का निर्णय लिया। इस दिशा में स्थानीय प्रशासन व जनता के सहयोग से श्रमदान का कार्य चल ही रहा था कि उप पुलिस महानिरीक्षक आर. के. मेहता के नेतृत्व में के० रि० पु० बल की 7वीं बटालियन के 388 जवान और अधिकारी भी इस कार्य में मदद देने आ पहुंचे।

झील की खुदाई का यह काम 24 अप्रैल, 1988 से शुरू हुआ। बल के कार्मिकों ने प्रति दिन प्रातः 6 बजे से सांय 8 बजे तक खुदाई की।

श्री आर० के० मेहता, उप महानिरीक्षक की देखरेख में एक विस्तृत कार्यक्रम बनाया गया, जिसके तहत के० रि० पु० बल के 200 कार्मिकों ने प्रतिदिन स्वैच्छिक रूप से प्रातः 6 बजे से शाम 6 बजे तक खुदाई का काम किया।

आग पर काबू

11 अप्रैल, 1988 की दोपहर मोकामाघाट ग्रुप केन्द्र को स्थानीय पुलिस से संदेश प्राप्त हुआ कि 'बिहार काटन वेस्ट इन्डस्ट्रीज, में भयंकर आग लग गई है। संदेश प्राप्त होते ही मोकामाघाट ग्रुप केन्द्र से उप निरीक्षक नागेन्द्रसिंह के नेतृत्व में 26 कार्मिकों का एक दल घटना स्थल की ओर कूच कर गया। दल ने थोड़े ही समय में तत्परता के साथ आग पर काबू पा लिया।

के० रि० पु० बल के कार्मिकों द्वारा तत्काल प्रदान की गई सहायता की मिल, प्रशासन स्थानीय प्रशासन एवं जनता ने भरपूर प्रशंसा की।

दो मित्र आपस में बातें कर रहे थे। "यार, तुमने इतनी धनवान स्त्री से शादी कैसे कर ली ?"

"बहुत आसान तरकीब है, उसके 30वें जन्म दिन पर मैंने उसे 21 वर्ष पूर्ण करने की बधाई दी और बात बन गई।"

पहला मित्र, "एक बतायो यार, जब तुम मेरे साथ जुआ खेलते हो, तो जीत जाते हो मगर रेस में हार जाते हो, ऐसा क्यों ?" दूसरे मित्र का जबाब था, "यार, मैं घोड़ों को बेवकूफ नहीं बना सकता।"

भाग—4

आतंक और आंसू

मार्क लिनैल व राबर्ट कलिंस अनु० अनिल गुप्ता

दो ब्रिटिश सैनिकों द्वारा अपने आयरलैंड के अनुभवों के आधार पर लिखे गए संस्मरण का चौथा भाग। इस संस्मरण की पहली तीन कड़ियां आप सी. आर. पी. एफ. समाचार के पिछले अंकों में पढ़ चुके हैं।

हर नए टूर से पहले दोबारा प्रशिक्षण आवश्यक होता था। और हम में से कुछ लोग इसे उसी तरह शुरू करते जैसे कि छः महीने पहले कर चुके होते। एक स्पेशल ट्रेनिंग कैम्प में हमने इसे प्लेमाउथा की सड़कों के आसपास पैट्रोलिंग की प्रेक्टिस करते हुए शुरू किया और इसे दो महिने में पूरा कर लिया। हमने बेलफास्ट की सड़कों के नक्शों का अध्ययन किया, आतंकवाद से प्रभावित क्षेत्रों पर निशान लगाए और आतंकवादियों की नई योजनाओं पर विचार किया। राइफल को सीधे तथा उलटे हाथ से संचालित करना सीखा, ताकि कोनों से की जाने वाली फायरिंग के समय हम छोटे से छोटे निशाने पर गोली चला सकें।

प्रशिक्षण के बाद हम शारीरिक रूप से काफी स्वस्थ थे। लेकिन कोई भी प्रशिक्षण व्यक्ति को मानसिक तनाव के लिए तैयार नहीं कर सकता। न ही अचानक पीछे से लगने वाली गोली या आंखों के सामने फटे बम के लिए तैयार कर सकता था।

फरवरी 1976 में मैं एक पूरे कारपोरल के रूप में फिर बेलफास्ट आ गया। मेरे साथ 42 कमांडों का एक खुफिया सेक्शन था। गणराज्य की कठोर पकड़ वाले पश्चिमी सिरे पर स्थित शहर एंडर्सनस्टाऊन में हमने चार महिने तक पैट्रोल ड्यूटी की। पांच वर्ग किलोमीटर की पट्टी के इस टुकड़े के 200 या उससे अधिक आतंकवादियों में से हर एक के बारे में हमें जानकारी हासिल करनी थी। उसकी चालों, वह किसके साथ रहता है, उसकी कार कौन सी है, वह किससे मंत्रणा करता है और कब हमारी सूचनाओं का विश्लेषण कमांडोस के मुख्य खुफिया सेक्शन में किया जाता था। उस में कुछ भी असामान्य दिखने पर उसे उच्च अधिकारियों के पास भेज दिया जाता था।

हमारा मुख्य उद्देश्य आतंकवाद को पैदा होने से पहले ही कुचल देना था। आतंकवादियों को कुचलने में हमें हमारा पिछला रिकार्ड काफी मदद देता था। उनमें से एक एक रात को मुझ से बतियाने लगा। हम जानते थे कि वह अपनी महिला मित्र के साथ फरेब कर रहा है, अतः मैंने यों ही मजाक में पूछा, “अरे, वह औरत कौन थी जिसे हमने पिछली रात तुम्हारे साथ कार की पिछली सीट पर देखा था।” उसकी आंखें आश्चर्य से फटी रह गईं। उसके मुंह से बोल नही फूट रहे थे। शायद वह सोच रहा था,

‘ये हरामजादा मेरे बारे में और क्या जानता है ?’

हम अपनी मुख्य युनिट से एक महिना पहिले ही आ गए थे, ताकि हम उनके आने पर उन्हें सब स्थितियों के बारे में बता सकें। पिछले दौरों में मेरे साथ अच्छे आदमी थे, टैफी; विली, एक लम्बा आदमी जिसकी मजाकिया शक्ति कमाल की थी तथा 21 वर्षीय राउडी जिसको कि लोगों के नाम व चेहरे याद कर लेने की प्रतिभा अद्भुत थी।

हमने हर जगह से सूचनाएं एकत्र थीं। जब हम किसी संदिग्ध व्यक्ति से उसका नाम पूछते थे-जोकि कानून के अनुसार उसे हमें सड़क पर ही बताना जरूरी होता था-तो उसे समय और दिन के साथ नोट करने के अलावा यह भी नोट करते थे कि वह उस समय क्या कर रहा था। हम भेदियों का भी इस्तेमाल करते थे। ये भेदिए आतंकवादियों के प्रतिशोध का भयंकर जोखिम उठा कर हमारा साथ देते थे।

हर रात हम आतंकवादियों के शराब पीने के अड्डों पर जाते, जिन्हें हम पबस एन्ड क्लबस कहते थे। चूंकि कानून किसी निजी क्षेत्र के अन्दर किसी से सूचनाएं एकत्र करने की हमें इजाजत नहीं देता था, अतः हम अपनी चालें चलते थे।

इस तरह के अधिकतर शराब के अड्डों के बाहर एक बम निरीक्षक बैठा रहता था। प्रोटेस्टेंट आतंकवादी विस्फोटक भी फेंका करते थे, उसके साथ ही मैरिन भी बम फेंकने वालों पर नजर रखते थे। हमें देखते ही वह चिल्लाता था, “अंग्रेज” उसकी इस आवाज के साथ ही बार के अन्दर बैठे आतंकवादियों में खलबली मच जाती थी। कभी कभी हम उसकी आंख बचाकर निकल जाते थे और उन्हें तत्काल पकड़ लेते थे। शायद वे विभिन्न प्रांतों से आए दो प्रोटो अधिकारी थे जो किसी मंत्रणा के लिए आए थे।

“माह, मैंने देखा, मैंने देखा” मैं सोद्देश्य चिल्लाया। कभी कभी अगले दिन बम निरीक्षक की बांह टूटी हुई पाई जाती।

प्रति दिन रात को हम संभावित हत्यारों और उपद्रवकारियों की भीड़ में मिल जाया करते थे। उनसे बतियाते, मजाक करते और हर तरह का प्रयास करते कि वे किसी तरह भीड़ से छिटक कर कोई महत्त्वपूर्ण सूचना बक दें।

मैं प्रायः पब और क्लब में अपने साथ चार मैरिनस् को ले जाया करता था। हम हमेशा अपने साथ एक बेटन गन, पिस्तौल और रायफल को साथ रखते थे। हम बिलकुल सामान्य, उत्तेजना रहित दिखने का प्रयास करते थे, लेकिन फ्लैग जैकेट पहने, शस्त्रों से लैस हो कर यह प्रयास करना काफी कठिन होता था।

कभी भीड़ हमें छितरा कर लड़ने के लिए उत्तेजित करने का प्रयास करती थी। प्रायः हम एक दूसरे को कवर करते हुए राइट पैट्रन में चला करते थे। लेकिन एक रात शराब की खुमारी में, जिसे हम कैदियों की सुरक्षा का फंड कहते थे, एक नए सार्जेंट को रस्से दिखाते हुए मैं अपनी पार्टी से छिटक गया। बार में मौजूद हर आदमी और औरत उठ खड़े हुए और चिल्लाते हुए आयरिश रिपब्लिकन आर्मी का एक गीत गाने लगे।

“अतिरिक्त प्रतिक्रिया मत व्यक्त करो।” में अपनी ही तरह भयभीत सार्जेंट से फुस-

फुसाया। लेकिन तब तक भीड़ नजदीक आ गई थी और हमें धकेलते हुए धक्के मार रही थी। हमने अपने रायफल के बट की सहायता ली, लेकिन इससे केवल कुछ मिनट तक ही रक्षा हो सकी।

गेलन मार्ग के नजदीक स्थित 'दि ग्रीन ब्रियर' सबसे बड़ा पब था, जो हमारे लिए सिरदर्द बना हुआ था।

यह शुक्रवार है। रात के लगभग 10 बजे हैं। बियर शराबियों और नर्तकों से भर चुका है। मैंने अपने भागने के रास्ते की सुरक्षा के लिए एक मैरिन को सीढ़ियों पर छोड़ दिया। हमने जैसे ही डांस फ्लोर पर कदम रखा चारों ओर से हम पर भद्दी गालियों की बौछार होने लगी, 'हरामजादे', 'गंदे अंग्रेज'। कुछ ने हमें ठोकरे मारने की भी कोशिश की।

लंबे बालों वाला, 17 वर्षीय फियाना का एक अधिकारी जैफ एक मेज पर बैठा पी रहा था।

"तुम यहां क्या कर रहे हो?" मैंने पूछा।

"तुम्हें उससे कोई मतलब नहीं, तुम गंदे अंग्रेज हरामजादे।'

"सुनो बेटा, जब मैं कोई सवाल पूछूं, मैं उसके सही जवाब की आशा करता हूं।"

"दफा हो जाओ, अंग्रेज हरामजादे।"

यह दंगा शुरू करने का कोई समय नहीं था "तुम से फिर मिलेंगे लड़के।" मैं धीरे से बुदबुदाया, और वापस मुड़ गया। अचानक बियर के भारी मग से मेरे सिर पर वार किया गया, जिसने मुझे घुटनों पर झुकने के लिए मजबूर कर दिया। मैंने अपनी आँखें ऊपर उठाई, आंखों से पानी बह रहा था। घाव से खून लगातार बहा जा रहा था।

"किसकी हरकत थी यह ?"

टैफी ने जैफ को गिरेबान से पकड़ लिया।

"वह यह था मार्क।"

पूरे हाल में मौत की सी निस्तब्धता छा गई थी। मैंने अपनी बेटगन को बंद किया और उसके बट का एक भरपूर प्रहार उस लड़के की नाक के नीचे कर दिया।

"तुम छोटे हरामजादे, तुम्हें गिरफ्तार किया जाता है।"

"मार्क, अपने अगल बगल देखो।" टैफी धीरे से बोला। कमरे में मौजूद हर व्यक्ति ने अपने हाथ में मग या गिलास उठा लिए थे, वे हम पर आक्रमण करने के लिए तैयार थे।

"दोस्तों, हमें तत्काल बाहर निकल जाना चाहिए।" मैंने शांति से कहा। भीड़ को कवर करते हुए हम धीरे-धीरे पीछे सरकने। लगे हम जैसे ही सीढ़ियों के नजदीक पहुंचे, पूरी हवा में कांच के टुकड़े छितर गए।

मैंने एक बेटन राऊंड फायर किया और चिल्लाया, "भागो।"

हम केवल थोड़ी सी खुरचनों और खरोंचों के साथ बाहर आ गए। मैंने जैफ की गिरफ्तारी का आदेश दिया और अपने सिर को डाक्टर के सामने इलाज के लिए झुका

।दिया।

रजि० नं0 47167/87

1983 दि रिडर्स डाइजेस्ट एसोसिएशन (कनाडा) लिमिटेड की अनुमति से मुद्रित।

मनोरंजन

शिक्षिक ने कक्षा के दौरान एक नेता के पुत्र से पूछा “सर्वोत्तम दान कौन सा होता है ?”

नेता के पुत्र का जवाब था, “मतदान”

दो व्यक्ति आपस में बातें कर रहे थे।

पहला व्यक्ति : सुना है कि तुम्हारी पहली चार बीवियां तुम्हारे खर्राटों से तंग आकर तुम्हे छोड़ कर जा चुकी हैं।

दूसरा व्यक्ति : हाँ, यह बात सही है, लेकिन मेरी पाँचवी बीवी मुझे छोड़ कर नहीं जायेगी।

पहला व्यक्ति : वह कैसे ?

दूसरा व्यक्ति : वह बहरी है।

एक मंत्री महोदय पहली बार फुटबाल का मैच देखने गए। मंत्री महोदय बीच बीच में झुँझला उठते थे। किसी को भी उनकी इस झुँझलाहट के कारण का पता नहीं चल रहा था। आखिर तंग आ कर मंत्री महोदय को ही कहना पड़ा, “यह कौन अहमक है मैदान में जब भी खेल जमने लगता है सीटी बजा कर खेल रुकवा देता है। इसे फौरन मैदान से बाहर करिए, ताकि खेल अच्छी तरह चल सके।

एक ग्रामीण पहली बार शहर आया। वह सड़क के बीच में चलने लगा, तो सिपाही। ने उसे टोक कर कहा, “ऐ बीच में क्यों चल रहे हो, किनारे चलो।”

इस पर ग्रामीण तुनक कर बोला, “तुम खुद काहे सड़क के बीचोंबीच नाच रहे हो, तुम्ही किनारे आ जाओ।”

मां पुत्र से, “तुम बिलकुल बेवकूफ हो, अपने पिता के आचरण से कुछ तो सीखो।”

पुत्र : “जी, क्या मतलब ?”

मां : “मालूम नहीं क्या, इनके अच्छे चाल चलन के कारण ही तो पुलिस ने इनको काफी सजा माफ कर दी थी।”

सुरेश : अरे गुलाटी इस बार तुम कश्मीर नहीं जा रहे ?

गुलाटी : कश्मीर तो मैं पिछली बार नहीं जा पाया था, इस बार तो मसूरी नहीं जा रहा हूं।

मुख्य सम्पादक : एच. एस. सेठी। **सम्पादक:** एम. पी. नथैनियल तथा अनिल गुप्ता।

मुद्रक : सी. आर. पी. एफ. प्रेस, झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-110072

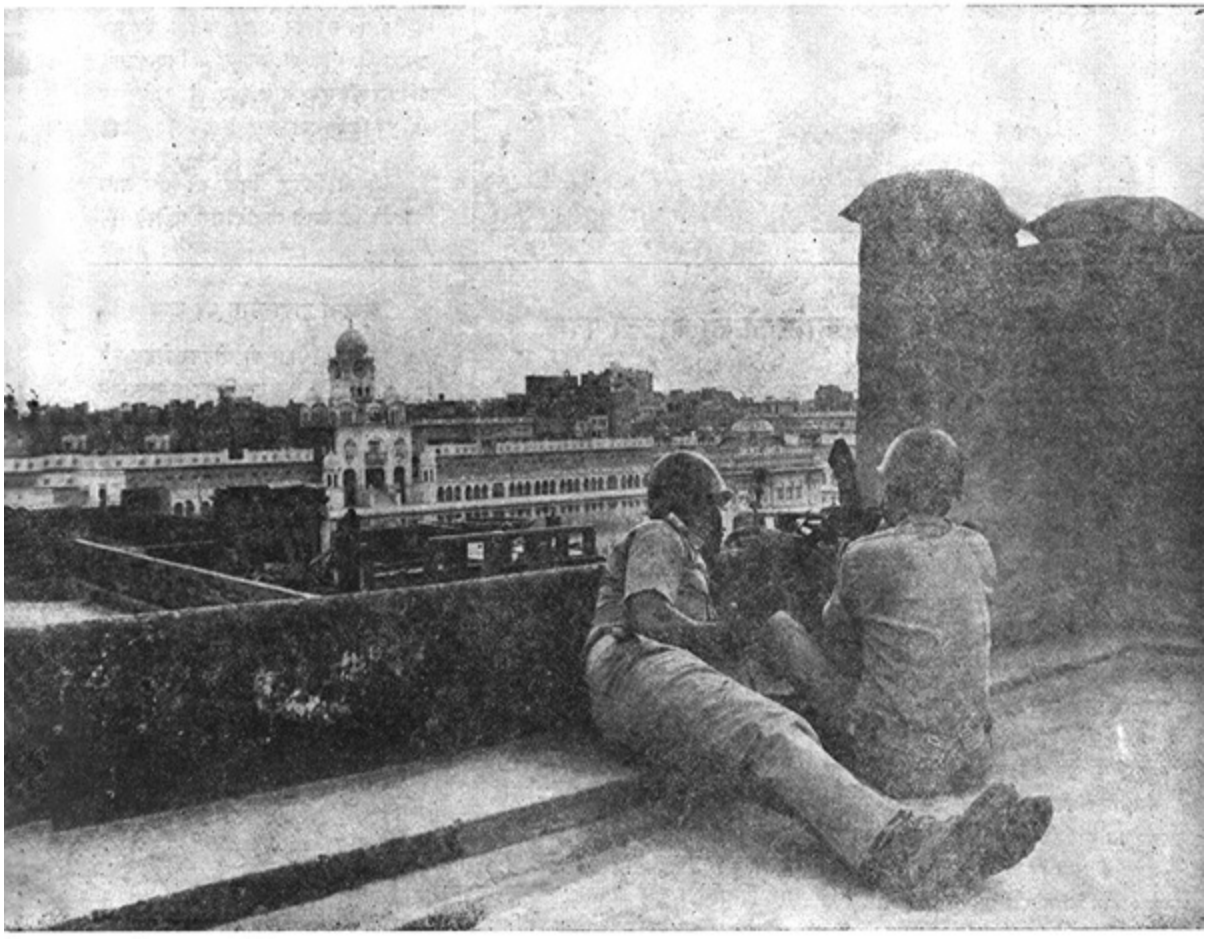
मुद्रक तथा प्रकाशक : महानिदेशक, के.रि.पु० बल, ब्लाक-1, सी. जी. ओ. काम्पलेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से एच. एस. सेठी।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की मासिक पत्रिका

सीआरपीएफ समाचार

खंड II अंक 4

मूल्य : 1.60 रुपए 30 जून, 1988 9 आषाढ़ शक संवत



आतंकवादियों के विरुद्ध मोर्चा संभाले दो जवान।

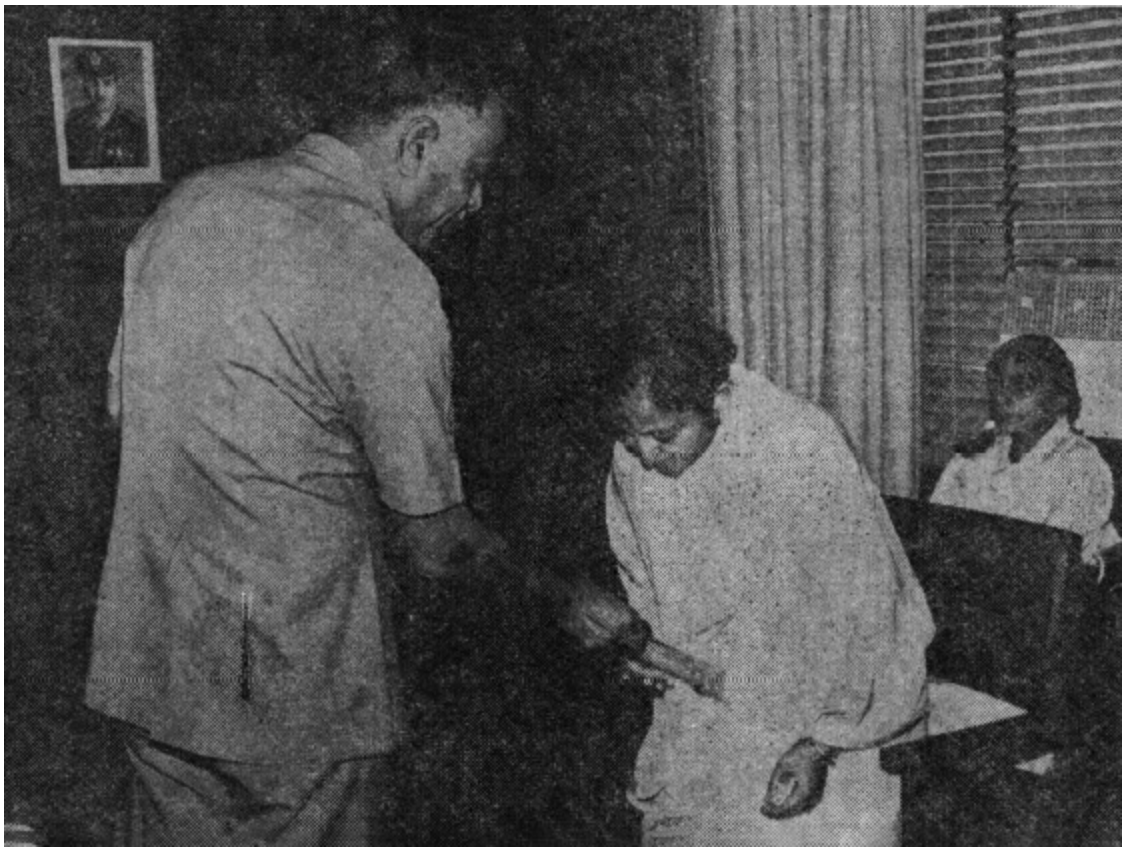
वीरों का सम्मान

मरणोपरांत सम्मान

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 19 बटालियन के दिवंगत उपाधीक्षक एस. के. मिश्रा की विधवा श्रीमती किरण मिश्रा को 8 जून, 1988 को बल के महानिदेशक श्री प. ग. हलर्नकर ने महानिदेशालय में एक सादे समारोह के बीच एक लाख का चैक भेट किया। उक्त राशि मृतक की पत्नी को प्रदान की जाने वाली अन्य सहायता राशि के अतिरिक्त पंजाब सरकार द्वारा अनुदान स्वरूप भेंट की गई है।

श्री मिश्रा गत 17 सितंबर को अमृतसर में आतंकवादियों द्वारा लगाई गई एक घात में मारे गए थे। श्री मिश्रा दल गांव में आतंकवादियों से संबंधित जानकारी एकत्र करने गए थे। जब वह भिक्खी विंड गांव से लौट रहे थे, तो उनकी जीप पर आतंकवादियों द्वारा घात लगाई गई। श्री मिश्रा को 9 गोलियां लगीं और उनकी घटना स्थल पर ही तत्काल मृत्यु हो गई।

पंजाब सरकार द्वारा कर्तव्य पर मृत प्रत्येक सी. आर. पी. जवान के लिए उसके परिवार को एक लाख रुपए की राशि देना स्वीकृत किया गया है।



श्रीमती किरण मिश्रा को एक लाख का चेक भेंट करते महानिदेशक महोदय।

7 सी० आर० पी० कार्मिकों को वीरता पदक

17 जून, 1988 को भारत के राष्ट्र पति श्री आर. वेंकटरमण ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 7 कर्मिकों को तीन भिन्न-भिन्न मुठभेड़ों में दिखाई गई वीरता व साहस के लिए शौर्यवीरता के पुलिस पदक से सम्मानित किया है।

25 बटालियन के सहायक कमांडेन्ट कुलदीप शर्मा, सब इंस्पेक्टर राम प्रताप साही, हैड कांस्टेबल रोहताश सिंह तथा कांस्टेबल खुर्शीद आलम को उनके द्वारा 12 फरवरी, 1987 को आतंकवादियों को पकड़ने के लिए लगाई गई घात में दिखाई गई, वीरता के लिए सम्मानित किया गया है। इस कार्रवाई में कुख्यात आतंकवादी मनजीत सिंह खजनाला मारा गया था। यह आतंकवादी खुड्डा बस हत्याकांड का मुख्य अभियुक्त था, तथा इस के सिर पर एक लाख रुपए का इनाम घोषित था। इस कार्रवाई में एक रिवाल्वर तथा दो हथगोले भी बरामद किए गए।

24 बटालियन के उपाधीक्षक बरन सिंह तथा इंस्पेक्टर राम सिंह को 13 दिसंबर 1987 को अमृतसर जिले के तुला नंगल गांव में स्थित एक धार्मिक स्थल से चार आतंकवादियों को गिरफ्तार करने व भारी संख्या में हथियार एवं गोला बारूद बरामद करने के लिए पुलिस पदक से सम्मानित किया गया है।

सब इंस्पेक्टर जितेंद्र सिंह को यह पदक 4 जुलाई, 1986 को अमृतसर के निकट आतंकवादियों से हुई मुठभेड़ में दिखाई गई वीरता के लिए दिया गया । इस मुठभेड़ में आतंकवादी गज्जन सिंह मारा गया था तथा एक पिस्तौल व कुछ असला बरामद किया गया था। इस आतंकवादी की पूलिस को कई आपराधिक मामलों में तलाश थी।

जवानों द्वारा आग पर काबू

16 मई, 1988 को श्रीनगर स्थित के० रि० पू० बल के 33 बटालियन के मुख्यालय के समीप स्थित बैंक आफ पटियाला परिसर में आग भड़क उठी। सूचना मिलते ही 33 बटालियन की 'बी' कम्पनी के जवान घटनास्थल पर पहुंच गए। जवानों ने अत्यधिक साहस और वीरता का परिचय देते हुए जल्दी ही आग पर काबू पा लिया, इस तरह करोड़ों रुपए की संपत्ति को नष्ट होने से बचा लिया गया।

जोखिम निधि लाभ

मई, 1988 में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस में 11 मृत्यु के मामलों में जोखिम निधि फँड से एक लाख 87 हजार रुपये देने स्वीकृत किए गए।

इसी तरह 4 अक्षमता के मामलों में 60,000 रुपये देने स्वीकृत किए गए।

के० रि० पु० बल महानिदेशालय में सुपर मिनी कम्प्यूटर

लेख—विकास शरण

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशालय में ई० डी० पी० केन्द्र की स्थापना 1972 में की गई । यन्त्रीकरण एवं स्वचालित प्रबन्ध व्यवस्था के युग में बल द्वारा यह अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि थी। इसी समय गृह मंत्रालय के अधीन कार्यरत पुलिस कम्प्यूटर समन्वयन निदेशालय में दो बड़े कम्प्यूटर लगाये गये । अन्य केन्द्रीय पुलिस संगठनों के साथ के० रि० पु० बल को भी अपनी कम्प्यूटरिकृत वेतन भत्ता प्रणाली विकसित करने के लिए समय आवंटन की सुविधा दी गई। प्रस्तावित प्रणाली का रुपांकरण विश्लेषण एवं साफ्टवेयर विकास केन्द्रीय पुलिस संगठनों के लिए संयुक्त रूप से किया गया।

के० रि० पुलिस बल में कम्प्यूटिकृत वेतन भत्ता प्रणाली 1975 में लागू की गई। प्रारम्भ में 10 बटालियनें तथा उसके उपरान्त पूरे बल को इसकी परिधि में लाया गया। इस समय बल की 158 ईकाइयों के, जिनमें बटालियनें, बेतार बटालियनें, समूह केन्द्र, महानिरीक्षक एवं उप महानिरीक्षक के कार्यालय, महानिदेशालय, आधार अस्पताल, एवं प्रशिक्षण संस्थायें शामिल हैं। अराजपत्रित कर्मचारियों, जिनकी संख्या एक लाख से ऊपर है के वेतन बिल एवं भुगतान रोल का उत्पादन कम्प्यूटर से किया जाता है। समय-समय पर सरकार द्वारा घोषित वेतन भत्ता, मँहगाई भत्ता, खाद्य भत्ता, तदर्थ बोनस इत्यादि सम्बन्धी आदेश संभवतः उसी माह में लागू कर दिये जाते हैं। बकाया राशि के भुगतान की व्यवस्था भी कम्प्यूटर से कराई जाती है। बल की गतिशीलता एवं सामान्य स्थानान्तरण के फलस्वरूप परिस्थि तियों में होने वाले परिवर्तनों का समावेश भी संभवतः उसी माह में कर दिया जाता है । बल में सामान्य स्थानान्तरण की संख्या लगभग 3,000 प्रतिमाह है। प्रशासन की सुविधा के लिए समय-समय पर अनेक सांख्यिकी विश्लेषण भी उपलब्ध कराये जाते हैं। जो निर्णय लेने की क्रिया में सहायक होते हैं। 1982 से बल के अराजपत्रित कर्मचारियों के सामान्य भविष्य निधि का अनुरक्षण भी कम्प्यूटर से किया जाता है, एवं व्यक्तिगत लेखा पर्ची भी उपलब्ध कराई जाती है। अराजपत्रित कर्मचारियों की पदोन्नति सम्बन्धी स्वीकृति सूची का निरूपण भी कम्प्यूटर से किया जाता है। श्रीलंका में तैनात बल की इकाईयों के लिए एक्सपैट्रियेशन भत्ते के संकलन एवं भुगतान की व्यवस्था ई० डी० पी० केन्द्र के द्वारा ही कराई जाती है। इन सभी कार्यों के लिए राष्ट्रीय अपराध आलेख ब्यूरो (भूतपूर्व डी० सी० पी० सी०)

के कम्प्यूटरों का उपयोग किया जाता था। लेकिन विगत दो वर्षों से कम्प्यूटर की आयु अधिक होने के कारण बार-बार रूकावट एवं विलम्ब की स्थिति का सामना करना पड़ रहा था। समस्या के निराकरण के लिए तत्कालीन अतिरिक्त महानिदेशक (वर्तमान महानिदेशक) की अध्यक्षता में एक उच्च स्तरीय समिति का गठन किया गया। समिति में इलेक्ट्रानिक्स विभाग के विशेषज्ञ भी सदस्य थे। समिति ने बल के लिए एक कम्प्यूरीकरण योजना का निर्धारण किया और गृह मंत्रालय ने योजना को स्वीकृति प्रदान कर दी। भारत सरकार के उपक्रम इलेक्ट्रानिक्स निगम द्वारा पहले चरण में बल के मुख्यालय लोदी रोड नई दिल्ली में अनुमानित 51,41,675-00 रुपये की लागत से नौरेक्स डेटा नाम का सुपर मिनी कम्प्यूटर लगाया जा रहा है। कम्प्यूटर केन्द्र का निर्माण कार्य एवं वातानुकूलन भी निगम ही कर रहा है। कम्प्यूटर मशीन को 31 जुलाई तक लगा दिये जाने की सम्भावना है। अक्तूबर के पश्चात् बल की सारी कम्प्यूटिकृत प्रणलियां अपनी ही मशीन पर चलाई जायेंगी। वेतन, भत्ता, भविष्य निधि के अलावा प्रबन्ध सूचना (राजपत्रित एवम् अराजपत्रित) सम्भरण परिवहन परिचालन, संकलन, बजट तथा डिप्लायमेन्ट की प्रणाली भी अपने ही कम्प्यूटर पर चलाने की योजना है।

द्वितीय चरण में सभी स्थेतिक संस्थाओं में छोटे कम्प्यूटर लगाने के प्रबन्ध की योजना है। ये संस्थायें अपनी प्रबन्ध प्रणालियों के लिए तथा मुख्य कम्प्यूटर के आंकडों के आद्यतन के लिए इनका उपयोग करेंगी। तृतीय चरण में उपलब्ध संचार माध्यमों की सहायता से इन कम्प्यूटरों को दिल्ली के मुख्य कम्प्यूटर से सम्बन्धित करने की योजना है।

मई माह में मृत बल के कार्मिक

मई, 1988 में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्न कार्मिकों की मृत्यु हुई।

4 बटा० के कां० ऊषा राजन देव बर्मन, ग्रुप केन्द्र पिंजौर के रंगरूट दर्शन कुमार, 24 बटा० के कां० मोहम्मद जमन, 83 बटा० के कां० शेरसिंह, 41 बटा० के है० कां० टी० कुजुर, 62 बटा० के ला० ना० शेरसिंह, 18 बटा० के कां० एस० शानमुगम, 40 बटा० के कां० तुलुराम, 8 बटा० के ला० ना० बालाकृष्णन, 88 बटा० की कां० (मि०) सुनीता, 53 बटा० के कां० अजीतसिंह, 71 बटा० के है० कां० रामनाथ, 60 बटा० के कुक माधोराम तथा 85 बटा० के कां० खजानसिंह।

भाग 5

आतंक और आंसू

माक लिनैल व राबर्ट कालेंस अनु. अनिल गुप्ता

दो ब्रिटिश सैनिकों द्वारा अपने आयरलैंड के अनुभवों के आधार लिखे गए संस्मरण का पांचवां भाग। संस्मरण की पहली चार कड़ियां आप सी. आर. पी. एफ. समाचार के पिछले अंको में पढ़ चुके हैं ।

36 घंटे बाद एक सड़क पर एक पेट्रोल पार्टी ने जैफ को गिरफ्तार कर लिया। तब भी जब उसे पकड़ा गया, वह उत्तेजित भीड़ के सामने शेर की तरह लड़ा। लेकिन मुख्यालय में जैफ दूसरा ही रूप धारण कर रोने लगा।

"धीरज रखो बेटा मैं तुम से घृणा नहीं करता।" मैंने कहा । वह अकेला लड़का था, जिसे उस कार्य के किए पकड़ा गया था, जिस पर उसका कोई वश नहीं था। उसके साथ पूछताछ के दौरान उसने हमें कुछ जानकारियां दीं। छुटपुट जानकारियाँ, ऊपरी तौर पर बहुत महत्त्वपूर्ण नहीं, लेकिन हमारी जानकारी की अन्य चीजों से मिलान करने पर उनका महत्त्व बढ़ जाता था। इसके बाद उसे छोड़ दिया गया।

मुझे आश्चर्य न होता यदि उसके घुटने छेद दिए जाते। क्योंकि प्रोवोस प्रायः भेदियों के साथ ऐसे ही पेश आते थे।

आतंकवादी बिल्कुल हमारे दरवाजे पर युद्ध लड़ रहे थे । एक रात, जब मैं कैंटीन से अपनी झोंपड़ी की तरफ से वापस आ रहा था, तो मैंने बम के आकार के मोर्टारस को अंधेरे आकाश में लटकते देखा। उनमें से एक झोंपड़ी की छत से लटकाया गया था। बाकी सारे कैप में लगाए गए थे। ऊपर की ओर मुँह किए हुए, छोटे छोटे हिस्सों में वे बम फटे नहीं। बाद में हमें पता चला कि आतंकवादियों ने बमों में समय निर्धारित करने में कुछ गलती कर दी थी, लेकिन उस समय हम डर गए, कि कहीं वे कुछ देर से ही फट न जाएं।

हमारा सार्जेंट मेजर बाहर हुए नुकसान का जायजा लेने के लिए दौड़ा। तभी हमारा लाल पालतू कुत्ता जो अकसर हमारे साथ पैट्रोल ड्यूटी में घूमा करता था, बाहर निकल कर मैदान के बीच में पड़े एक बम पर पेशाब करने लगा। हम सांस रोक कर देख रहे थे, क्या डेटोनेटर सक्रिय हो उठेगा।

"अरे उस बेवकूफ कुत्ते को, उस बम के पास से हटाओ"। सार्जेंट चिल्लाया। इस कार्य को स्वेच्छा से करने के लिए कोई तैयार नहीं था। हममें से कुछ ने अपने सूखे होंठों से सीटी बजाई। कुत्ते ने अपना काम खत्म किया और आराम से वहाँ से हट गया।

"मार्क," सार्जेंट मेजर ने आदेश दिया, "उस झोपड़ी में जाओ जहाँ बम रखे हैं, और उन रुकावटों को बाहर कर दो।'

इसका मतलब मैदान में पड़े बम के पास से गुजरना था। मैंने अपने दाँत कसे और भागा। झोपड़ी में एक और बम फर्श पर ऊपर की ओर को पड़ा था। हाल के उस ओर टेलीविजन चल रहा था। मैं 10 मैरिनस् को टेलीविजन पर झुके देख कर चिल्ला उठा।

“हर आदमी बाहर भागे, हमारे चारों ओर बम बिछा दिए गए हैं।” मैं चिल्लाया, “हाल की उस तरफ बम है।”

“हाँ, अरे मार्क, हमें बेवकूफ मत बनाओ, कितना अच्छा कार्यक्रम आ रहा है।” एक कारपोरल ने शिकायत की। मैंने उसे दरवाजे की तरफ धकेला और बम की ओर इशारा किया।

“ये हरामजादा, बम” वह चिल्लाया।

“हर आदमी खिड़की से बाहर भागे।” मैं चिल्लाया। लेकिन खिड़की इतनी चौड़ी नहीं थी अतः एक मैरिन ने उस पर कुर्सी खींच कर मारी। इससे खिड़की की चौखट टूट गई और पीछे गिरते हुए उसने उस मैरिन की ही नाक तोड़ दी। हम पागलों की तरह हंसने लगे। किसी और ने अपने रायफल के बट से रास्ता बनाया और हम बाहर कूद गए। हम अभी भी मूर्खों की तरह हंस रहे थे।

“इसमें हंसने की क्या बात है?” सार्जेंट मेजर ने जानना चाहा। जब हमने उसे बताया, तो इस बात से वह भी सहमत हो गया कि युद्ध में भी कुछ हलके-फुलके क्षण होते हैं।

और उसके बाद फिर वह मनहूस समय आया। कुछ ही हफ्तों बाद एक सुबह हमारा प्यारा लाल कुत्ता कराहता हुआ दरवाजे से अन्दर आया। वह दर्द से छटपटा रहा था। आतंकवादियों ने उसकी पिछली टांगों के जोड़ की नसें काट दी थीं, बेचारे निरीह जानवर की व्यथा का कोई उपचार भी नहीं था।

हमने अपना दौरा समाप्त किया और एंडरसनस्टाउन में ‘किंग्स् ओन बोर्डर रेजिमेंट’ (के०ओ०बी०) को सौंप दिए गए। कुछ हफ्तों बाद 10 अगस्त को के०ओ०बी० का एक पैट्रोल ऐसे दो बंदूकधारियों का पीछा कर रहा था, जिसने उन पर गोली चलाई थी। इसी धर-पकड़ में बंदूकधारियों की कार सड़क की पटरी पर उतर गई। और उसने एक आठ साल की लड़की, एक छोटे लड़के तथा अपनी माँ एनी मागुरी के साथ बाहर घूम रहे एक छोटे बच्चे को कुचल दिया।

श्रीमती एनी मागुरी के लिए उनकी बहन 32 वर्षीय मैरीड कैरिगन तथा एक मित्र 33 वर्षीय बैट्टी विलियन्स के लिए यह अन्तिम मौका था। उन्होंने एक शांति आन्दोलन की स्थापना की। यह एक ऐसा आन्दोलन था जिसने पूरे अल्स्टर में हजारों प्रोटेस्टेंट और कैथोलिकस् को प्रार्थनाओं, प्रदर्शनों और शाँति मार्गों के रूप में आँदोलित कर दिया।

प्रोविजनल आई०आर०ए० की कानूनी राजनीतिक शाखा ‘दि प्रोविजनल सिन फिएन’ ने उनके खिलाफ एक प्रचार अभियान चलाया। शाँति मार्च के प्रदर्शनकारियों के मार्गों पर आतंकवादी युवकों द्वारा पत्थर फेंक-फेंक कर आक्रमण किया जाना था। एक शांति प्रदर्शनकारी के 17 वर्षीय बेटे को आतंकवादियों ने इतनी बुरी तरह से पीटा कि वह अचेत हो गया उसकी दांयी टांग तथा बांयी हथेली पर ‘आई०आर०ए’ गोद दिया गया। विलियम तथा कैरिगन की कार पर भीड़ द्वारा छड़ों तथा पत्थरों द्वारा हमला किया गया। लेकिन वे रुके नहीं और 1976 में दो महिलाओं ने अपने शाँति प्रयासों के

लिए साझे रूप में नोबल पुरस्कार प्राप्त किया।

क्रमशः

1983 दि रिडर्स डाइजेस्ट एसोसिएशन (कनाडा) लि० की अनुमति से मुद्रित।

मनोरंजन

पुत्र : पिताजी, क्या हमारी सरकार अरबों को बरबाद कर सकती है ?

पिता : नहीं, मगर तुम यह पूछ क्यों रहे हो?

पुत्र : क्योंकि अखबार में लिखा है, कि सरकार की योजना से अरबों की बरबादी।

किसी मनचले ने बस के अन्दर लिखी चेतावनी में 'सूचित' शब्द में से 'सू' को मिटा दिया। अब बस से उतरने वाली सवारियां इस चेतावनी को यों पढ़ती हैं— "बस, स्टाप पाने से पहले यात्री ड्राइवर को चित करें।"

मालिक : तू क्या मुझे मूर्ख समझता है।

नौकर : जी, मैं तो अभी कल ही आया हूं, इतनी जल्दी अपनी राय कैसे दे सकता हूं।

प्रसिद्ध रूसी साहित्यकार टालस्टाय एक बार लिखने में व्यस्त थे, उनकी पत्नी उनके पास चाय का प्याला लिए खड़ी थी। जब बार-बार पुकारने पर भी टालस्टाय ने कोई जवाब नहीं दिया, तो उनकी पत्नी ने चाय का वह प्याला उनके सिर पर उड़ेल दिया। इस पर टालस्टाय थोड़ा मुस्कराए और बोले, "मैं जानता था, कि बादल गरज रहे हैं, तो बरसेंगे भी।"

पत्नी : मैं ही मूर्ख थी, जो तुम से विवाह कर बैठी।

पति : काश यह बात विवाह से पूर्व पता चल जाती।

प्रेमी : मेरी माँ, तो ऐसी बहू चाहती है, जो घर का सारा काम कर सके, कपड़े धो दे, खाना बना दे, सफाई कर दे और मां की खूब सेवा करे।

प्रेमिका : तो कल अपनी मां को हमारे घर ले आना अपनी नौकरानी से मिलवा दूंगी।

दो अजनबी आपस में बातें कर रहे थे।

पहला : जब तक मैं दिन में दो बार हजामत न बना लूं, मुझे चैन ही नहीं मिलता।

दूसरा : बस, मुझे तो 30-40 बार हजामत बनाने के बाद भी तसल्ली नहीं होती।

पहला : अच्छा आप करते क्या हैं।

दूसरा : जी, मैं नाई हूं।

ग्रुपकेंद्र नागपुर में इलेक्ट्रानिक पेट्रोल पम्प

17 अप्रैल, 1988 को के०रि०पु० बल ग्रुप केन्द्र नागपुर में पहला इलेक्ट्रानिक पेट्रोल पम्प शुरू हो गया।



नागपुर ग्रुप केन्द्र स्थित पहला इलैक्ट्रानिक पेट्रोलपम्प

डीजल और पेट्रोल के लिए अलग-अलग इन दो पम्पों का उद्घाटन इंडियन आयल कारपोरेशन के सीनियर डिवीजनल मैनेजर मारवेन डिसूजा ने किया। इस अवसर पर ग्रुपकेन्द्र नागपुर के अपर उप महानिरीक्षक पुलिस ई० एम० बख्तावर तथा इंडियन आयल कारपोरेशन के कई वरिष्ठ अधिकारी, बल के जवान व अधिकारी तथा नागरिक उपस्थित थे।

के०रि०पु० बल के ग्रुपकेन्द्र में इस पहले इलेक्ट्रानिक पम्प की शुरुआत की लगभग सभी स्थानीय समाचार पत्रों ने चर्चा की। यह आधुनिकतम पम्प पहले पम्प से न केवल तकनीकी दृष्टि से कहीं बेहतर है, अपितु इस के लग जाने से कार्यकुशलता भी बढ़ेगी।

फल वाला : पांच रुपए दर्जन केला तो हमें घर पर पड़ता है।

ग्राहक : तो ठीक है, हम तुम्हारे घर से ले लेंगे।

आपरेशन काली आंधी

बल की कार्य कुशलता का एक उत्कृष्ट उदाहरण

अमृतसर के स्वर्ण मन्दिर परिसर में हथियारों की तस्करी व आतंकवादियों की गतिविधियों पर नजर रखने के लिए 49 बटालियन केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवान तैनात थे। 9 मई को जवानों ने देखा कि प्रसाद भवन के बाहर कुछ नागरिकों द्वारा ईंट, बजरी; रेता आदि भवन निर्माण में काम आने वाली सामग्री एकत्र की जा रही है सैक्शन कमांडर ने इसकी सूचना अपने वाहिनी मुख्यालय को भेज दी। थोड़ी ही देर में निर्माण का कार्य भी शुरू हो चुका था। ऐसा अनुमान था कि एक दीवार खड़ी करके स्वर्ण मन्दिर के साथ खड़ी एक बहु मंजिला इमारत पर कब्जा कर लिए जाने की तैयारी की जा रही थी, यह इमारत आपरेशन ब्लयू स्टार के बाद से उजाड़ पड़ी थी।

निर्माणाधीन दीवार स्वर्ण मंदिर परिसर के बाहर थी, और उसके निर्माण का उद्देश्य के० रि० पु० बल पोस्टों के खिलाफ सुविधाजनक मोर्चों की स्थापना करना था।

इस मामले पर बल व पुलिस के उच्च अधिकारियों के बीच विचार विमर्श किया गया। के० रि० पु० बल जालंधर क्षेत्र के उप पुलिस महानिरीक्षक श्री एस. एस. विर्क, 49 बटालियन के कमांडेट एवं अन्य अधिकारियों के साथ स्वयं मौके पर मुआयना करने रवाना हुए।

श्री विर्क, अन्य पुलिस अधिकारियों के साथ जब प्रसाद भवन के पास पहुंचे, तब 6-7 मजदूर दीवार के निर्माण कार्य में लगे थे। दीवार अब तक 4 फुट ऊँची उठ चुकी थी। दीवार के निर्माण के पीछे छिपे उद्देश्य को समझ कर श्री विर्क ने दीवार निर्माण के कार्य को तब तक रोक देने का आदेश दिया, जब तक कि मामले को स्वर्ण मंदिर प्रबन्धकों के साथ तय नहीं कर लिया जाता।

मजदूर निर्माण का कार्य बन्द करके जैसे ही प्रसाद भवन में गये कुछ आतंकवादियों ने, जोकि प्रसाद भवन की इमारत की छत पर छिपे हुए थे, अपने मोर्गों से पुलिस अधिकारियों पर गोलियां चलानी शुरू कर दीं। इस गोली बारी में एक गोली श्री विर्क के दाएं गाल से होती हुई अगली तरफ से निकल गई। इसके बाद दोनों ओर से भारी गोलीबारी होने लगी जिससे वहां मौजूद लोगों में भगदड़ मच गई।

यह त्रासदी और भी भयानक हो सकती थी, लेकिन प्रसाद भवन और मनोहरलाल भवन की छत पर मोर्चा संभाले बल के जवानों ने तत्काल स्वर्ण मन्दिर परिसर में छिपे आतंकवादियों पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी ताकि वे अपना सिर न उठा सकें। इसी गोलीबारी के बीच श्री विर्क को तत्काल श्री गुरु तेग बहादुर अस्पताल में पहुंचाया गया,

जहां डाक्टरों की एक टीम द्वारा आपरेशन करने के बाद उन्हें खतरे से बाहर बताया गया।

स्वर्ण मंदिर परिसर के अंदर से आतंकवादियों और बाहर से के. रि. पु. बल के जवानों के बीच लगातार भारी गोलीबारी चलती रही।

10 मई को स्थानीय पुलिस अधिकारियों द्वारा श्री गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के अधिकारियों के साथ बातचीत की गई ताकि स्वर्ण मंदिर में फंसे श्रद्धालुओ को बाहर लाया जा सके। नागरिक प्रशासन की उद्घोषणा पर घंटाघर और गुरुराम दास सराय से 750 नागरिक बाहर आए प्रायः सभी नागरिकों को स्थानीय पुलिस ने प्रारंभिक पूछताछ और जानकारी हासिल करने के बाद छोड़ दिया। कुछ को और जानकारी प्राप्त करने के लिए पुलिस संरक्षण में रोक लिया गया। स्वर्ण मन्दिर परिसर से पांच मृत शरीर बाहर लाये गए तथा 9 घायलों को स्थानीय अस्पताल में भर्ती करवाया गया।

10 मई को सायं लगभग 6.30 बजे आतंकवादी फिर परिक्रमा में स्थित कमरा नं० 14 से बाहर आए और सुन्दरजी इमारत के ऊपर स्थित बल की एक पिकेट पर फायर करने लगे। सेक्शन ने तुरन्त फायर का जवाब दिया, जिससे एक आतंकवादी कमरा नं० 14 के बाहर ही ढेर हो गया। सायं लगभग 8.15 बजे स्वर्ण मन्दिर में से विभिन्न दिशानों से स्वचालित अस्त्रों के साथ बल की पिकटों पर भारी गोलीबारी की जाने लगी। बल के जवानों ने भी जवाब में फायर किया। दोनों ओर से सारी रात गोलियां चलती रहीं।

11 मई, 1988 को राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड (एन० एस० जी०) के लगभग 50 कमांडोस् ने भी बल के जवानों के साथ सुन्दरजी इमारत, मनोहरलाल इमारत, पुस्तकालय भवन के पीछे स्थित धर्मशाला, निर्मल अखाड़ा, ब्रह्म बूटा अखाड़ा तथा टेम्पल व्यू होटल पर मोर्चे संभाल लिए। रात लगभग 3.30 बजे आतंकवादियों ने अपने विभिन्न मोर्गों से बल व एन०एस०जी० के मोर्चों पर फायरिंग शुरू कर दी। दोनों बलों के जवानों ने प्रभावी रूप से फायरिंग का जवाब दिया। फायरिंग दोपहर तक चली।

स्वर्ण मन्दिर परिसर से लाशों को बाहर लाने के लिए दमदमी टकसाल के कुछ कार्यकर्ताओं के कहने पर फायरिंग रोक दी गई। यहां ज्ञातव्य है कि 10 मई को स्वर्ण मंदिर परिसर के अन्दर गये रेडक्रास कार्यकर्ताओं को लाशें बाहर नहीं लाने दी गई थीं, गर्मी के कारण अब ये लाशें सड़ने लगी थीं।

दोनों ओर से फायरिंग रुकने पर दमदमी टकसाल के कार्यकर्ता अकाल तख्त के भूतपूर्व कार्यवाहक जत्थेदार गुरदेव सिंह के नेतृत्व में स्वर्ण मन्दिर परिसर में गए। इसी समय के दौरान कुछ आतंकवादी, जो कि अपने मोर्चों में बिना खाद्य सामग्री व हथियारों के बन्द होकर रह गए थे, तत्काल बाहर निकल कर अपने मोर्चों पर हथियार व खाने की सामग्री ले आए। गोलीबारी दोपहर लगभग 2.30 बजे रोकी गई थी और स्वर्ण मन्दिर परिसर से नागरिक सायं लगभग 7.30 बजे बाहर आए। रेडक्रास कार्यकर्ताओं द्वारा पांच लाशें स्वर्ण मन्दिर से बाहर लाई गई, आतंकवादियों के साथ वार्ता असफल सिद्ध हुई, वे सुरक्षा बलों के सामने आत्मसमर्पण के लिए तैयार नहीं थे।



आत्मसमर्पण के बाद बल के जवानों के अधिकारियों की निगरानी में आतंकवादी।

12 मई के सारे दिन और रात बल के जवानों और आतंकवादियों के बीच गोलीबारी होती रही।

13 मई को रात लगभग 12.10 बजे आतंकवादियों ने बल के पिकेटों पर भारी गोलीबारी की। लगभग 1.15 बजे 6 आतंकवादी स्वर्ण मंदिर परिसर में स्थित माई सेवा बाजार के सामने लगने वाली दीवार को कूदकर भागने का प्रयास करते दिखाई दिए । उन पर माई सेवा बाजार स्थित बल की पिकेट ने फायर की। इस पर तीन आतंकवादी स्वर्ण मन्दिर परिसर के अन्दर भागे, जबकि अन्य तीन माई सेवा बाजार के दाएँ भाग में स्थित रिहायशी मकानों की तरफ दौड़ गए। थारा साहब में स्थित हमारे बल की 49 बटालियन की 'ई' कंपनी के जवानों ने जब उनका पीछा किया तो आतंकवादियों ने उन पर गोलियां चला दी। इस गोलीबारी में बल के है०कां० इलम चन्द के दाएं कंधे पर गोली लगी। आतंकवादियों ने काठियां बाजार से होते हुए भागने का प्रयास किया, लेकिन बल के जवानों की सतर्कता के कारण गोली लगने से एक आतंकवादी वहीं गिर कर ढेर हो गया। उसके पास से एक ए०के० 47 राइफल, 19 राउन्ड सहित एक मैगजीन तथा ए०के० 47 की गोलियां बरामद की गई। बाकी दो आतंकवादी जवानों की नजर से बचकर भागने में कामयाब हो गए।

13 मई को स्थानीय पुलिस अधिकारियों ने चार मुख्य ग्रंथियों व 26 अन्य व्यक्तियों को उस समय गिरफ्तार कर लिया जबकि वे कर्फ्यू आदेश का उल्लंघन कर स्वर्ण मंदिर की तरफ जाने का प्रयास कर रहे थे।

बाद में बल के जवानों द्वारा गुरू रामदास सराय के पीछे स्थित बड़े पानी के टैंक पर कब्जा कर लिया गया। यह टैंक काफी ऊँची है और इस पर से अन्य बड़ी इमारतों पर निगरानी रखी जा सकती है। इस पर कब्जा जमाने से अन्य दो बूँगाओं पर तैनात आतंकवादियों पर के०रि०पु० बल का दबाव रहा। बाद में यहीं से एन० एस० जी० के कमांडों ने अपने मोर्चे संभाले ।

14 मई को 9, 12, 24, 26, 30 तथा 76 बटालियन की कुछ और कम्पनियों को स्वर्ण मन्दिर में तैनात कर दिया गया।

सायं लगभग 4.00 बजे गोलीबारी रोकने की घोषणा की गई। पहले इसकी अवधि सायं 5 बजे तक थी, जिसे बाद में बढ़ाकर 5.15 बजे तक कर दिया गया । । इस दौरान स्वर्ण मंदिर स्थित औरतों, बच्चों तथा श्रद्धालुओं से बाहर आने की अपील की गई। लेकिन पाँच बूढ़ों के अतिरिक्त कोई बाहर नहीं आया। कुछ औरतों, बच्चों ने घंटाघर की तरफ से बाहर आने का प्रयास किया, लेकिन आतंकवादियों द्वारा गोली चलाने पर वे वापस लौट गए।

विराम की अवधि के बाद सुरक्षा बलों की टुकड़ियों ने लंगर भवन तथा मंजी साहब में प्रवेश किया। रात लगभग 8.45 बजे दोनों तरफ से भारी फायरिंग शुरू हुई जो लगभग आधे घन्टे तक चलती रही। सुबह तक दोनों ओर से रुक-रुक कर फायरिंग होती रही।

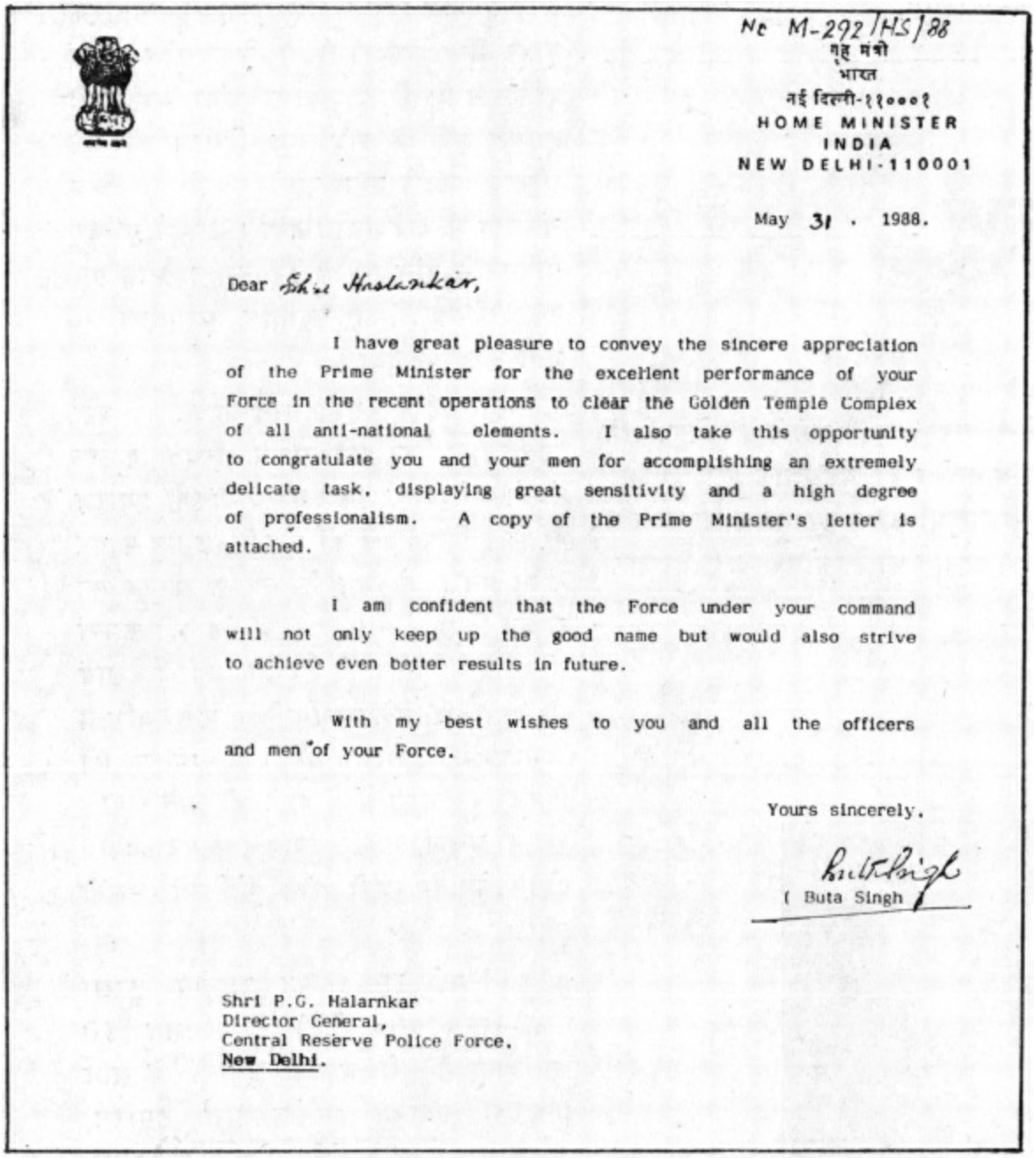
15 मई को ब्रह्मबूटा पोस्ट के बाईं ओर स्थित बुंगों से बल के पोस्टों पर भारी फायरिंग की गई। बल के जवानों ने फायर का जवाब दिया। इसी बीच घंटाघर से कुछ आग की लपटें उठती देखी गईं। अधिकारियों ने फायर ब्रिगेड को अन्दर भेजना चाहा, मगर भारी गोलीबारी के बीच वह आगे नहीं जा सके। लगभग 11 बजे स्वर्ण मंदिर के चारों तरफ से अन्दर फंसे लोगों से बाहर आने का आग्रह किया गया। इस पर कई लोग जिनमें 18 औरतें तथा 8 बच्चे भी शामिल थे गुरू रामदास सराय की तरफ से बाहर आ गए।

इस विराम की अवधि के दौरान कुछ आतंकवादियों ने परिक्रमा के कमरे से निकल कर अपने हथियारों के साथ हरमंदिर साहब की इमारत में शरण ले ली। इस अवधि में जिन लोगों ने आत्मसमर्पण किया उनमें 25 कुख्यात आतंकवादी थे। इन आतंकवादियों में दुर्दांत आतंकवादी सुरजीत सिंह पेंटा भी शामिल था। बल के जवानों द्वारा जैसे ही उसकी शिनाख्त की गई, उसने तत्काल जहर खाकर आत्महत्या कर ली।

16 मई को फिर स्वर्ण मंदिर में स्थित व्यक्तियों से आत्मसमर्पण की अपील की गई। इस तरह की अपील आत्मसमर्पण किए कुछ आतंकवादियों व उनके परिवार के लोगों ने भी की। लेकिन स्वर्ण मंदिर से बाहर कोई नहीं आया। दोनों ओर से गोलीबारी लगातार जारी रही।

17 मई को फिर नागरिक अधिकारियों और आत्मसमर्पित आतंकवादियों ने स्वर्ण मंदिर स्थित आतंकवादियों से आत्मसमर्पण के लिए अपील की। स्वर्ण मंदिर से आत्मसमर्पण के लिए बाहर आने का रास्ता भी लगभग एक घन्टे तक बताया जाता रहा

। जब अभी भी स्वर्ण मन्दिर से बाहर कोई नहीं आया, तो एन० एस० जी० के स्पेशल ट्रुप द्वारा फिर गोलीबारी शुरू कर दी गई। लगभग 10 बजे प्रातः प्रसाद भवन की पहली मंजिल से आग की लपटें और धुआँ उड़ता देखा गया । सुरक्षा बलों ने भारी गोलीबारी करते हुए लंगर भवन की पुरानी इमारत में प्रवेश किया। इस समय घंटाघर की तरफ से सुरक्षा बलों पर फायर किया गया। लंगर भवन की पुरानी इमारत से कुछ गोला बारूद बरामद किया गया। थोड़ी ही देर में सुरक्षा बलों ने बायीं तरफ स्थित बुँगों पर अपना अधिकार कर वहाँ अपनी पोस्ट स्थापित कर ली। इसके बाद आतंकवादियों से फिर अगली सुबह आत्मसमर्पण करने की अपील की गई।



No. M-292/HS/88
गृह मंत्री
भारत
नई दिल्ली-११०००१
HOME MINISTER
INDIA
NEW DELHI-110001

May 31 . 1988.

Dear Shri Halarnkar,

I have great pleasure to convey the sincere appreciation of the Prime Minister for the excellent performance of your Force in the recent operations to clear the Golden Temple Complex of all anti-national elements. I also take this opportunity to congratulate you and your men for accomplishing an extremely delicate task, displaying great sensitivity and a high degree of professionalism. A copy of the Prime Minister's letter is attached.

I am confident that the Force under your command will not only keep up the good name but would also strive to achieve even better results in future.

With my best wishes to you and all the officers and men of your Force.

Yours sincerely,

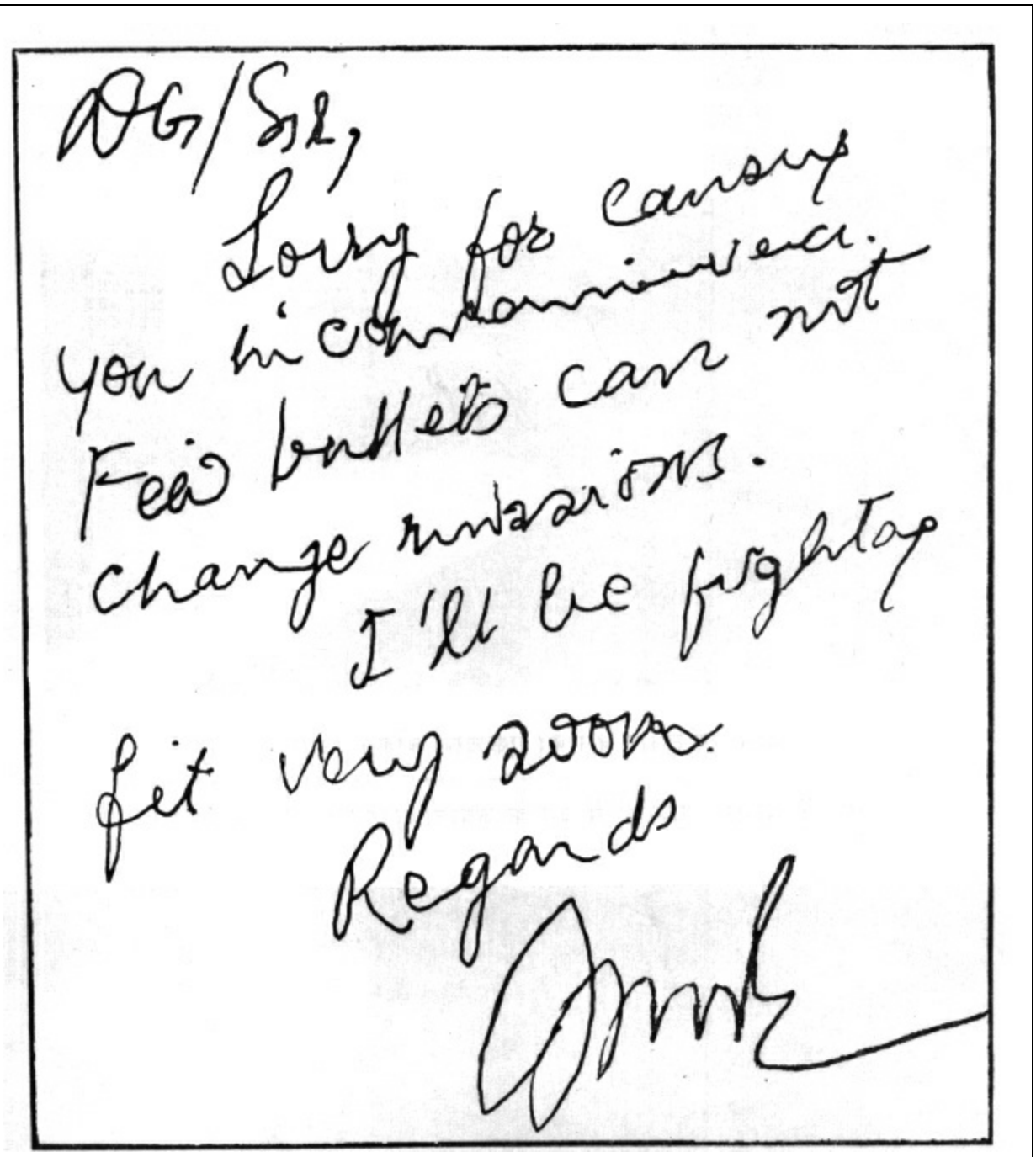
(Buta Singh)

Shri P.G. Halarnkar
Director General,
Central Reserve Police Force,
New Delhi.

अमृतसर में स्वर्ण मंदिर को आतंकवादियों से मुक्त करने के लिए सुरक्षा बलों द्वारा की गई कार्रवाई में के० रि० पु० बल के जवानों व अधिकारियों की भूमिका की सर्वत्र प्रशंसा की गई। प्रधान मंत्री ने गृह मंत्री को भेजे गए अपने एक पत्र में बल के जवानों के साहस, वीरता व धैर्य की अपूर्व प्रशंसा की है।

इसी आशय का एक पत्र गृह मंत्री श्री बूटासिंह ने बल के महानिदेशक श्री प० ग० हलर्नकर को भेजा है। इस पत्र में गृह मंत्री ने न केवल बल के जवानों व अधिकारियों की अपूर्व प्रशंसा ही की है, अपितु प्रधान मन्त्री की ओर से उनके साहसपूर्ण कारनामे

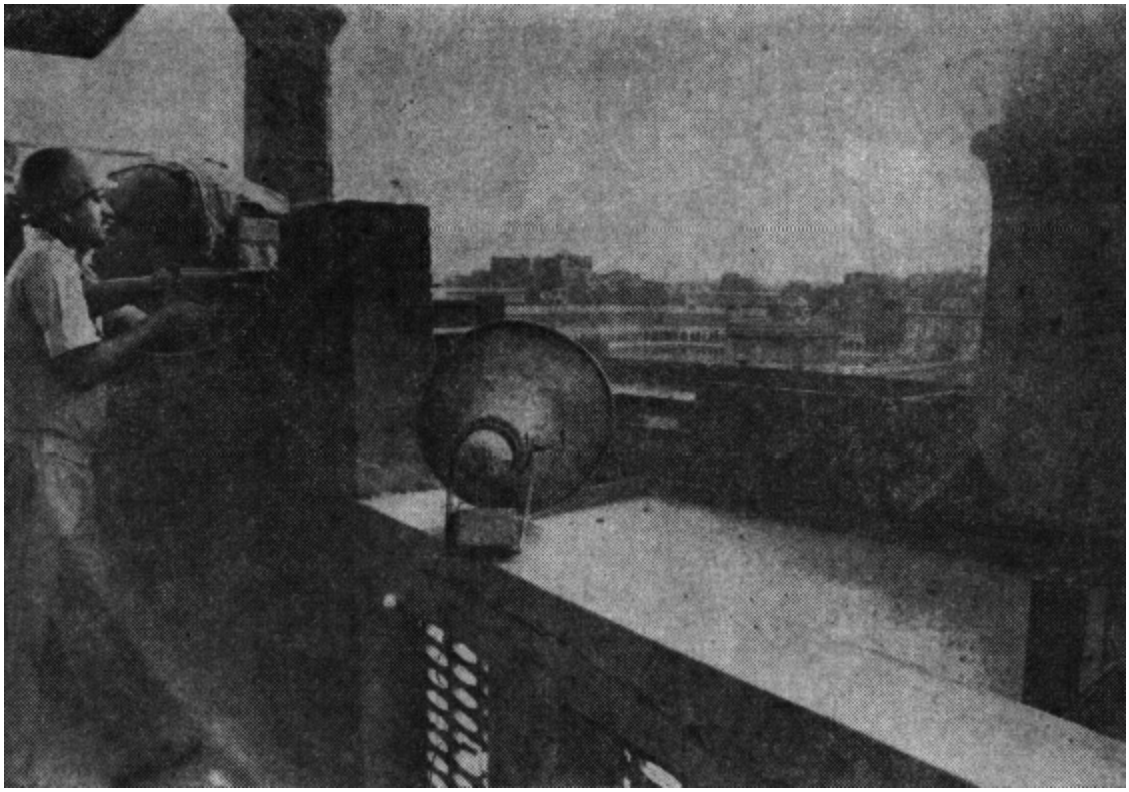
के लिए बधाइ भी भेजी है और आशा की है कि बल की यह भावना हमेशा बनी रहेगी।



स्वर्ण मंदिर से आतंकवादियों द्वारा किए गये हमले में के० रि० पु० बल के उप महानिरीक्षक श्री एस० एस० विर्क घायल हो गए, उनकी ठोड़ी पर गोली लगी, इलाज के लिए उन्हें तत्काल अस्पताल में भर्ती करा दिया गया। जिस दिन श्री विर्क घायल हुए,

उसी दिन बल के महानिदेशक श्री प० ग० हलनेकर अमृतसर पहुंचे। श्री हलनेकर श्री विर्क की पत्नी से मिलना चाहते थे, क्योंकि ठोड़ी पर गोली लगने के कारण श्री विर्क को बोलने की इजाजत नहीं थी। श्री विर्क के पिता ने महानिदेशक महोदय को सूचित किया कि उनके पुत्र श्री विर्क उनसे मिलने को बहुत उत्सुक है, तथा सुबह से उनका इन्तज़ार कर रहे हैं। जब महानिदेशक महोदय श्री विर्क से मिले, तो श्री विर्क ने एक कागज पर कुछ लिख कर महानिदेशक की ओर बढ़ा दिया। ऊपर उसी पत्र की फोटोप्रति छापी गई है, जिसमें श्री विर्क ने लिखा है कि आतंकवादियों की कुछ गोलियाँ हमें हमारे उद्देश्य से डिगा नहीं सकती।

18 मई को भी दोनों ओर से रुक-रुक कर फायरिंग होती रही। सायं लगभग 4.30 बजे आतंकवादियों से गुरू रामदास सराय की तरफ से बाहर आते हुए आत्म समर्पण की अपील की गई। यह पूरी कार्रवाई सायं 5.30 बजे 45 व्यक्तियों सहित एक महिला के आत्मसमर्पण करने के साथ ही पूरी हो गई।



मोर्चे पर तैनात बल का एक चुस्त चौकस जवान ।

आत्मसमर्पण करने वाले आतंकवादियों में कुख्यात आतंकवादी निरवेर सिंह, मल्कियत सिंह अजनाला, चंचल सिंह, निशान सिंह, बलविंदर सिंह तथा भाग सिंह शामिल थे। इन्हीं आतंकवादियों से ज्ञात हुआ कि कुख्यात आतंकवादी कारज सिंह तथा बग्गा सिंह ने परिक्रमा में स्थित कमरों में ही जहर खाकर आत्महत्या कर ली थी।

आतंकवादियों के समर्पण के बाद भी बल के जवानों ने स्वर्ण मन्दिर पर कड़ी नजर रखी। रेडक्रास सोसायटी के कार्यकर्ताओं ने परिसर से छः लाशों को बाहर निकाला, जिनमें एक लाश एक स्त्री की थी। मृतकों के पास से एक रिवाल्वर व एक बंदूक भी बरामद की गई। 19 मई की शाम को श्री गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के सदस्य, नागरिक अधिकारी तथा बम निरोधक दस्ते के जवान परिसर में गए। परिसर में स्थित दो हथगोलों को निष्क्रिय किया गया।



पंजाब में विभिन्न मुठभेड़ों में बल के जवानों द्वारा बरामद हथियार।



पंजाब में विभिन्न स्थानों पर तैनात बल के जवान।

सुरक्षा बलों ने 19 और 20 मई को स्वर्ण मंदिर परिसर की छानबीन की और 22 ए०के० 47 राइफलें, दो जी.पी.एम.पी., एक एल.एम.जी., तीन .303 रायफलें, सात 12 बोर की डी.बी.बी.एल. गनें, एक 12 बोर की एस.बी.बी.एल गन, लगभग साढ़े चार लाख रुपए के साथ भारी संख्या में आधुनिक हथियार व गोला-बारूद बरामद किया।

21 मई को स्वर्ण मंदिर की सफाई कर मर्यादा बहाल कर दी गई और शबद कीर्तन शुरू हो गया।

पूरी कार्रवाई के दौरान बल को किसी भी बड़ी क्षति का सामना नहीं करना पड़ा। है०कां० इलम चन्द को अस्पताल से छुट्टी दे दी गई है और वह ठीक है ।

स्वर्ण मंदिर परिसर में प्रवेश किए बिना, इतनी बड़ी संख्या में आतंकवादियों से समर्पण करा कर स्वर्ण मंदिर को आतंकवादियों से मुक्त करने के लिए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल व राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड के सैनिकों की सर्वत्र भूरि-भूरि प्रशंसा की गई है।

बल के जवानों द्वारा दिखाए गए साहस के लिए उन्हें प्रधान मंत्री व गृह मंत्री सहित बिहार प्रदेश के पुलिस महानिदेशक ने भी अपनी बधाइयां भेजी हैं। बल के महानिदेशक, महानिरीक्षक तथा विभिन्न क्षेत्रों के उपमहानिरीक्षकों ने जवानों को शतशत बधाइयाँ देते हुए उनकी अपूर्व प्रशंसा की है। भारत तिब्बत सीमा पुलिस के भूतपूर्व महानिदेशक एवं बिहार प्रदेश पुलिस के वर्तमान महानिदेशक श्री ज०मो० कुरेशी ने बल के महानिदेशक को भेजे एक पत्र में कहा है कि वे बल के जवानों की वीरता व साहस से बेहद प्रभावित हैं, तथा उनके लिए अपनी शुभ कामनाएं भेजते हैं।

राकेट और ए. के. 47 राइफलें बरामद

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों ने 16 जून, 1988 को अमृतसर जिले के मनोवल गांव के एक संदेहास्पद व्यक्ति के घर छापा मार कर 2 ए. के. 47 राइफलें पांच मैगजीनों तथा 444 राउन्ड सहित, अन्य गोला बारूद के साथ बरामद की। यह संदिग्ध व्यक्ति गुरमेज सिंह भिंडरवाले टाइगर फोर्स के सत्ता धड़े के आतंकवादियों का आश्रयदाता था।

सत्ता धड़े के आतंकवादियों का यह दल, 8 जून को सी० आर० पी० पोस्ट पर हुए हमले का दोषी था, ज्ञातव्य है कि इस हमले में एक हैड कांस्टेबल मारा गया था, तथा 5 अन्य घायल हुए थे।

संदेह होने पर उक्त घर की निगरानी के लिए बल के जवान तैनात किए गए। एक रात कांस्टेबल ने देखा कि घर के बाहर जानवरों के बांधने के स्थान पर ताजा मिट्टी पड़ी है। इसका मतलब था कि रात को गढ्ढा खोदा गया था। इस से संदेह पैदा हुआ और इस स्थान की खुदाई करने पर 2 राकेट प्रोपेट ग्रेनेड राकेट लांचर तथा 2 राकेट चार्जर के साथ बरामद किए गए।

आतंकवादियों के आश्रयदाता गुरमेज सिंह को उसकी पत्नी तथा दो सालों के साथ गिरफ्तार कर लिया गया।

तमिलनाडु सरकार द्वारा अनुदान

तमिलनाडु सरकार द्वारा मुठभेड़ में मारे गए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में काम करने वाले अपने नागरिकों के निकट संबंधियों को 5,000 रुपए की अनुदान राशि देने की घोषणा की गई है।

तमिलनाडु से सम्बन्ध रखने वाले बल के जो कार्मिक किसी मुठभेड़ में अपंग हो जाते हैं, उनके लिए भी तमिलनाडु सरकार ने अनुदान की घोषणा की है, दोनों हाथ या पैर कट जाने या फिर पूरी तरह दृष्टिहीन हो जाने वाले कार्मिक को 5000 रुपए का अनुदान प्रदान किया जाएगा। एक हाथ या पैर एक आंख वाले, या फिर श्रवण शक्ति गंवा बैठने वाले कार्मिक को 4000 रुपए का अनुदान प्रदान करने की घोषणा की गई है।

जिस कार्मिक की हाथ या पैर की अंगुलियां कट जाएंगी जिससे वह सरकारी कार्य के अयोग्य हो, उसे 3,000 रुपए का अनुदान प्रदान करने की घोषणा की गई है।

आग से जलने या गोलियों से घायल होने वाले कार्मिकों को 2000 रुपए की अनुदान राशि प्रदान की जाएगी। जबकि मुठभेड़ के दौरान किसी दुर्घटना या हड्डी इत्यादि टूट जाने पर प्रभावित कार्मिक को 1,000 रुपए की अनुदान राशि प्रदान की जाएगी।

जिला अधिकारी इस अनुदान की स्वीकृति प्रदान करेंगे, जबकि जिलों की भूतपूर्व

सैनिक कल्याण समितियों के सहायक या उप निदेशक इस अनुदान राशि को प्राप्त कर वितरित करेंगे।

रजि० नं० 47167/87



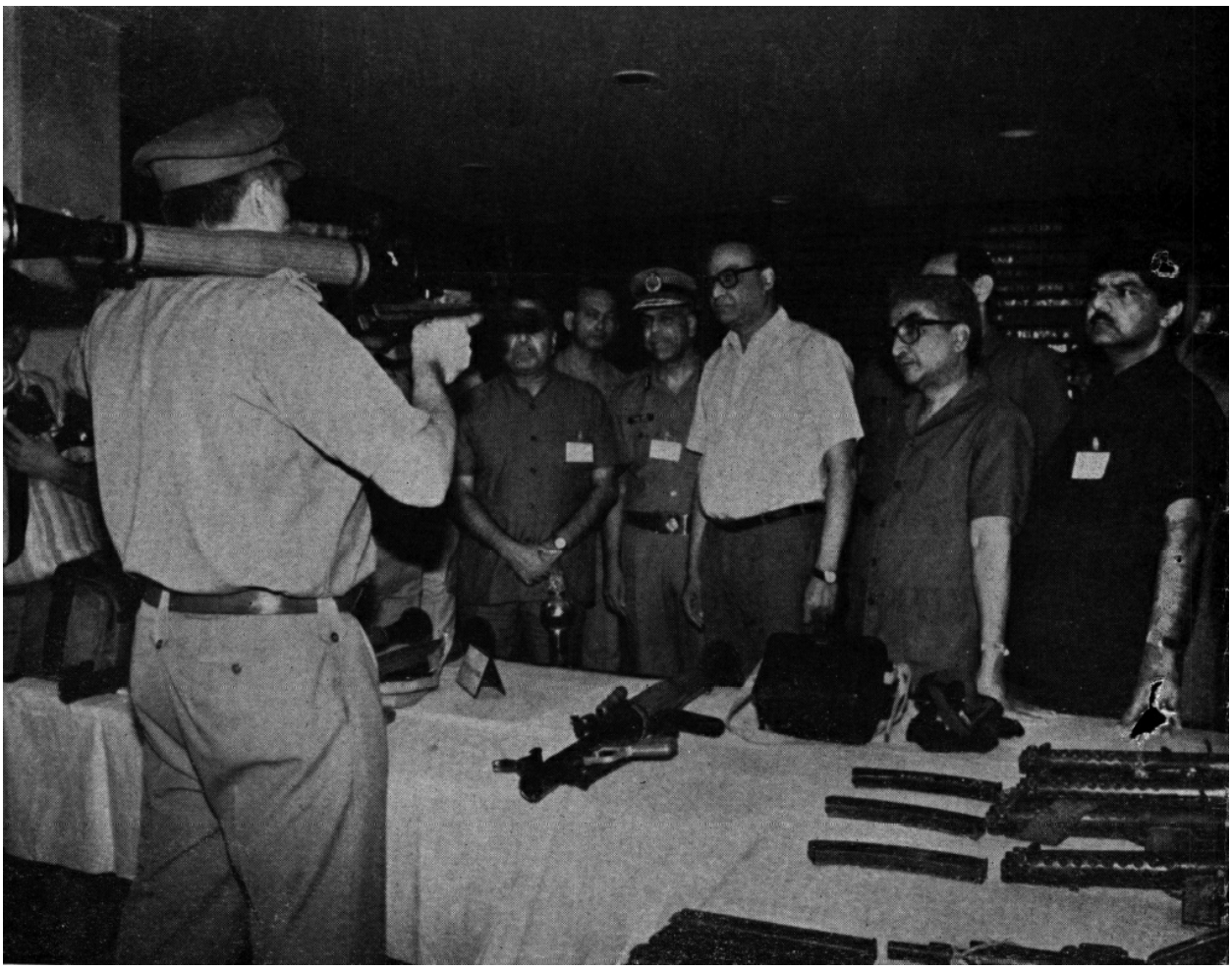
स्वर्ण मंदिर परिसर पर दृष्टि टिकाए बल का एक जवान

मुख्य सम्पादक : एच.एस. सेठी। सम्पादक : एम.पी. नचैनियल तथा अनिल गुप्ता। मुद्रक : सी.आर.पी.एफ. प्रेस, झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-110072
मुद्रक तथा प्रकाशक : महानिदेशक, के०रि०पु० बल, ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से एच. एस. सेठी।

CRPF SAMACHAR

CRPF Newsletter & Magazine Vol. 2 No. 2 July 31, 1988 (Sravana 9, 1910)





The Home Secretary and senior officers of the Home Ministry and Central Police Forces having a look at the rocket-launcher recovered by the CRPF.

THE
CRPF Samachar



CRPF
Newsletter & Magazine

Vol 2. No. 2

Quarterly

July 31, 1988
Sravana 9, 1910

Chief Editor : H. S. Sethi

Cover : The Home Secretary presenting cash rewards to gallant soldiers.

Photo : S. K. Khanna

Editorial Office:
C/o Director General,
Central Reserve Police Force,
Block 1, CGO Complex,
Lodi Road,
New Delhi-110003.

Printed and published by :
H. S. Sethi on behalf of
Director General, CRPF.
Printed at the CRPF Press,
Group Centre, New Delhi-110072.

Letter from the editor

Since the publication of the last issue, the Punjab has passed through another significant phase of its strife-torn history. In this phase the CRPF has once again played a sheet-anchor role and covered itself with glory. The momentous event was “Operation Black Thunder” that completely exposed the terrorists. The part played by CRPF in this operation is highlighted in this issue.

While history was being written in the Golden Temple area, CRPF was also engaged in dealing effective blows to terrorists outside the holy city. Presented in this connection is a feature that portrays two of the many successful encounters the Force had with the terrorists.

The efforts and sacrifices made by the gallant jawans of the CRPF were duly recognised and this forms the subject-matter of the cover story of this issue.

Plus the first letter of Shri P.G. Halarnkar, addressed to all officers (on the assumption of charge as Director-General of the Force) outlining his ideas and expectations from the members of the Force.



CONTENTS

DG calls upon officers to set example
Punjab round-up
Portrait of two encounters *by H.S. Sethi*
Home Secretary lauds CRPF role
“Operation Black Thunder”— A feather in CRPF cap
CRPF News

DG calls upon officers to set example



Shri P. G. Halarnkar, Director General of CRPF has, in D.O. letter to all officers of the CRPF, stressed upon them to be an example before men. “Remember always that the best form of leadership is example; that ‘come on’ is a much better command than ‘go on’,” said Shri Halarnkar.

The leadership demanded a dedicated responsibility towards men, stated the Director General. He advised the officers to maintain a viable system of communication, both formal and informal, with their subordinates, for a good leader of men is one who is easily accessible to them.

Following is the text of the Director General’s letter to the officers: —

“Dear Brother Officer,

“Through this letter, I send my greetings and good wishes to you, and through you, to all members of the Central Reserve Police Force.

“I took over charge as Director General on 31-3-88 from Shri S. D. Pandey, who proceeded on voluntary retirement. Shri Pandey led this Force

for two and a half years ably and competently through a turbulent period. My salutations to him.

“I have had the good fortune of working with you for the last seven months. I deem it a privilege to head this Force which has long traditions of honesty and efficiency. It will be my constant endeavour to sustain this tradition and take it to new heights. I seek your help and co-operation in maintaining the glorious traditions of the Force and in improving its working so that it can be a Force ‘par excellence’.

“I addressed the officers of the Delhi-based Battalions on 15-4-88. During this meeting, I spelt out some of my thoughts and my perceptions of the problems faced by the Force. Even at the risk of repetition, I would like to mention here some of the points I made.

“Trust plays an important role in human relationships. I too believe in a trust-based system. I trust all officers till they prove themselves unworthy of the trust reposed in them.

Leadership

“As an officer, you are, above all else, a leader; a person whom the men will follow into danger, discomfort and every ordeal without hesitation. Remember always that the best form of leadership is example; that ‘ome on’ is a much better command than ‘go on’. I am sure that as an officer you will never fail to be the first in danger.

“Leadership demands a dedicated responsibility towards the men under your command. Their lives and their well-being remain in your hands and they have the right to expect from you the highest standards of character, professional competence and integrity. If you always put their interests and welfare before your own, you will not fail them and together, you would be able to face any challenge.

“Do maintain, as leaders of men, a viable system of communication, both formal and informal, with the subordinate ranks under your command. For, a good leader of men is one who is easily accessible to them.

Physical Fitness

“Physical fitness of the Force, especially of officers, worries me most. During the last seven months, I have met several officers. Many of them put

the uniform they wear to disgrace. Nobody will think kindly of a Force, whose officers have bulging tummies, sagging chests and overgrown posteriors. For the last anniversary parade we could not, despite our search, locate a Commandant trim and smart enough to command the parade. Ultimately we had to select an officer who had done the job before. This is indeed lamentable in a Force of our size. Please, therefore, give this problem some thought.

"Subordinate officers and men will strive to be physically fit if officers themselves are conscious of physical fitness. Please, therefore, join your men in PT. Even if there are only four men available for PT, you can be the fifth man. Play games with your men or go out with them for road walk and run as frequently as possible. Keep an eye on your eating habits, your food intake and your drinks. This will not only be good for the Force but also for yourself in the long run.

"In a uniformed Force, first impressions do matter. People often judge a Force by the appearance of its officers and men. Your uniform must add to your personality. Please, therefore, be particular to see that your uniform is according to the prescribed dress regulations; that the belt and your badges of rank are nickle-plated and well polished; that the ribbon has not faded and the shoes are of the correct pattern. Please remember that it is not enough that your quarter guard is smart. You and every member of the Force under you must be smart. A shabbily dressed officer hurts the image of the Force in the eyes of the public as nothing else can.

Operations

"As officers, you should be fully involved in operations. You are not a mere manager meant for doing only administrative jobs but you are a leader of men. Nothing will please the men more than to find officers leading them in operations.

"The excuse often given that we have no operational role to play because the men are deployed under the direction of the borrowing authority, is far from convincing. Whatever the men are called upon to do, they will always do it better if officers are there to provide leadership and guidance. In Punjab and the North-East, where we have an operational role, only those officers who have involved themselves fully in operations, have produced good

results.

Welfare

"Welfare, as you all know, is vital to the morale and efficiency of the Force. Please be sensitive to the grievances of your men; those which are genuine should be redressed without delay. While discipline and regimentation are the pillars on which any para-military force rests, these pillars should not be allowed to block our view or overshadow the requirements of welfare of the men. We seem to feel that we have done enough in this area by providing a recreation room at the Battalion or a family welfare centre (which stitches uniforms only) at the Group Centre. This certainly is not enough.

"A lot more can be done if only you care. The family welfare centres should diversify their activities and not concentrate only on stitching of uniforms. We must evolve well conceived plans and programmes of welfare for all officers and men in the Force. These need to be broad-based and diversified and further dovetailed into an integrated programme of welfare for the Force. I would like your suggestions regarding all new programmes of welfare. At the Directorate, I have already asked a small group to work on this. May I request you to send your suggestions to Shri Vohra, DD (Adm) ?

Force image

"Our Force has a secular image and rightly so. It is due to our reputation as a secular Force that we are always in demand, especially when there are communal riots in the States. We have always tried to maintain and promote this secular image by recruiting men of all castes, religions and from all parts of the country. It is our responsibility to see that nothing is done to impair this image of the Force. We must rise above narrow barriers of regionalism, casteism and communalism and bear in mind that khaki is our religion; that it is our duty to protect everybody, irrespective of his caste, creed or religion. Our approach to all problems must be impartial, secular and non-sectarian.

"Provision of basic amenities to your subordinate officers and men should be your first concern. Very little purpose will be served by having a recreation room with colour TV and VCR if the men have to go into the open for answering the call of nature. Though we may have constraints, it should

not be difficult to provide basic necessities to the men like water, electricity, latrines etc. This is an area where your personal interest will make all the difference to the quality of life of the men under your command.

"Recently I called on the President and Vice-President of India. I am very happy to tell you that both of them think highly of our Force and appreciative of our secular and nationalistic approach. I assured them that the officers and men of the C.R.P.F. would be ready to meet any challenge, anywhere and at any time.

Transfers

"Let me now switch over to some of the problems which have been agitating the minds of the Force personnel at various levels. The first is, of course, our transfer policy. I am aware that constant movements have resulted in disruption of your family life and education of your children. I wish I could accommodate all requests for postings of your choice. In that case, I would be working with a happy team of officers and, this by itself, would have eliminated most of our management problems. But as you would know, this is not possible in practice. All I can say is that it will be my constant endeavour to accommodate the choice and convenience of as many of you as possible, while ordering transfers and postings. Please, however, do remember that tenures and transfers will also have to depend on your own performance. You cannot be indifferent to your work and yet expect a posting of your choice.

"One of my foremost concerns will be to get our proposals for cadre review of officers including medical officers approved by the government as early as possible. I have already initiated action in this matter as a result of which the cadre review has made considerable progress. I am pursuing this on a fixed time frame. You will hear from me about the progress made.

"The low level of housing satisfaction in the Force is a matter of concern for all of us. This is linked with the morale of the Force as a whole. I intend pursuing this problem vigorously with the government.

Training

"Our most difficult task today is to evolve an appropriate training programme within the existing constraints. Training has been the biggest

casualty in the Force for several years now. The usual arguments like operational commitments, non-availability of training ground and other infrastructural facilities, etc. will not bail us out, if the Force does not perform well. Sustained lack of training manifests itself in many ways and one area where the impact is conspicuously visible is “discipline”. I would like all of you to reflect on this and tell me how best we can train our men within the given limitations. If we put our heads together, some solution is bound to emerge.

“I have always been a strong believer in participative management and will always be keen to draw on your experience and wisdom. All of you should, therefore, feel free to write to me frankly what you think best about various matters concerning the Force. What more challenging time could there be for the Central Reserve Police Force to prove itself ? Let everyone of us rise to the occasion.

“The path on which you are treading will often be rough, steep and strewn with hurdles. My trust, my thoughts and my good wishes go with you now and always.”

DG’s CALL FOR TREE PLANTATION

The Director General Shri P. G. Halarnkar has, in a communication to all units, stressed the need for tree plantation. He has exhorted the unit commanders to associate the horticulture or forest department officials in the tree plantation drive.

He also advised them to go in for a judicious mixture of ornamental and shade-giving trees.

Van Mahotsava in Nagpur

Van Mahotsava week was observed in Group Centre, CRPF campus in Nagpur from July 24, 1988.

Saplings were planted in five different places in the campus by the Collector of Nagpur, Shri Harnam Singh, who was the chief guest and other civil officials present on the occasion.

Over 1500 persons from the Group Centre, 79 Battalion, Kendriya Vidyalaya and nursery school participated in the tree plantation drive.

Speaking on the occasion the Additional DIGP of the Group Centre Shri E. S. Bakhtawar informed that nearly 5000 saplings had been planted in the Group Centre campus during this season alone.

The Collector, Shri Harnam Singh, praised the efforts of CRPF men in environmental development.

VIR CHAKRA WINNER'S WIDOW HONOURED



The Director General Shri P. G. Halarnkar presenting a cheque of Rs. 25,000 to Shrimati Padmini.

Shrimati Padmini, wife of late Constable Thankappan Mohanan who was awarded Vir Chakra by the President on April 30, was felicitated by the officers and men of the Central Reserve Police Force at a simple function at Rabindra Rangshala.

The Director General of the CRPF, Shri P.G. Halarnkar, presented her a cheque of Rs. 25,000 on the occasion. This is apart from the other financial benefits she gets from the Government and the CRPF. The father of the late

Constable was also present on the occasion.

Constable Mohanan is the first CRPF man to be honoured with Vir Chakra. The medal was awarded to him for his bravery against LTTE insurgents in Sri Lanka on October 15, last year. When two companies of CRPF were proceeding to Karawadi East from Palali airfield, the convoy came under heavy fire. Though Constable Mohanan was hit on his chest and his left shoulder was badly blown off, he gallantly held on to the machine gun that he was operating and fired effectively at the insurgents till he breathed his last.

The courage displayed by late Constable Mohanan averted further loss of lives of IPKF men in the ambush.

Rs. 1 lakh for widow

Shrimati Kiran Mishra, widow of late Deputy Superintendent of Police S.K. Mishra of 19th Battalion, CRPF was presented a cheque of Rs. 1 lakh by the Director General, Shri P. G. Halarnkar at a simple function in New Delhi on June 8, 1988. The amount was an ex gratia grant sanctioned by the Punjab Government.

Shri Mishra was killed in an ambush by terrorists in Amritsar on September 17, 1987. He had gone to Dal village to collect information about terrorists and was returning to Bikhiwind when his vehicle was ambushed. He suffered nine bullet injuries and died on the spot.



Smt. Kiran Mishra receives the cheque of Rs. 1 lakh from the Director General Shri P. G. Halamkar at a function in New Delhi.

Nine awarded gallantry medals

Nine men of the Central Reserve Police Force have been awarded the Police Medal for Gallantry in recognition of the conspicuous courage displayed by them in encounters against terrorists in Punjab during the last two years. The awardees are Assistant Commandant Kuldip Chand Sharma, Deputy Superintendent of Police Baran Singh, Inspector Ram Singh, Sub Inspectors Jitender Singh and Ram Pratap Sahi, Head Constables M.B. Thapa and Rohtas Singh, Constable Driver Babu Deen and Constable Khurshid Alam.

Shri Sharma, SI. R. P. Sahi. HC Rohtas Singh and Constable Khurshid Alam, all of 25 Battalion, killed a dreaded terrorist—Manjeet Singh Khajala —in an ambush on February 12, 1987. Manjit Singh was responsible for Khudda bus massacre and carried a reward of Rs. 1 lakh on his head.

Constable Driver Babu Deen, also of 25 Battalion, displayed conspicuous gallantry in overpowering an armed terrorist in Amritsar on February 9, last year.

The driver was waiting in the jeep for the officer to return, when he noticed a terrorist moving in a lane with a pistol. Constable Driver Babu Deen followed the terrorist stealthily and overpowered him after a scuffle. On the basis of information provided by the terrorist, other gang members were rounded vp.

Deputy Superintendent of Police Baran Singh and Inspector Ram Singh, both of 14th Battalion, have been honoured for the courage displayed in the capture of four terrorists and a large quantity of arms and ammunition from a religious complex located in village Tula Nangal in the district of Amritsar on December 13,1987.

Sub Inspector Jitender Singh of 24 Battalion gets the medal for showing gallantry in an encounter in which terrorist Gajan Singh, who was wanted in connection with a number of crimes, was killed and pistol and ammunition recovered from him near Amritsar on July 4, 1987.

Head Constable Thapa of 78 Battalion exhibited courage of high order when he pounced upon and disarmed a terrorist aiming at a CRPF party in the Ferozepore district on June 26, 1986. At rifle point, he arrested all four terrorists moving in a car and seized a large quantity of arms and ammunition from them.

Monetary grants by Tamilnadu Govt.

An ex-gratia grant of Rs. 5,000 has been announced by the Tamilnadu Government for the next of kin of CRPF personnel (hailing from Tamilnadu) killed in action.

Disabled personnel of CRPF (belonging to Tamilnadu) will be entitled to a grant of Rs. 5,000 in case of double amputee and totally blind, Rs. 4,000 for single amputee, one eye blind, or deaf, Rs. 3,000 in case of those who suffered loss of toes or fingers and cannot take up a Government job, Rs. 2,000 in case of burns and gun shot wounds and Rs. 1,000 in the event of battle accident or compound fracture.

The District Collectors will sanction the grant and the Assistant Directors or Deputy Directors of Ex-servicemen Welfare in the districts will draw and

disburse the grant.

As inseparable as nails from flesh

Now this may sound like it's straight out of a Hindi film, but it truly does humanity proud. A couple of weeks ago, Atma Ram Arya, a local Congress-I leader found, to his horror, a band of Punjab terrorists training their guns on him. Just before the shower of bullets could emerge, a close Sikh friend of his, Arjun Singh, leapt in the way, daring the terrorists to kill him first. The men tried to scare Singh away by shooting him in the leg but then realised that he meant business, and consequently gunned the gutsy Sikh down. Not, however, before he warned the terrorists that Hindus and Sikhs were "as inseparable as nails from flesh." Seconds later, Atma Ram Arya too fell to a spray of bullets, amidst slogans of Hindu-Sikh unity raised by members of the two religions who had gathered at the spot. Amidst the all-encompassing bleakness, it's truly gratifying to witness the occasional bursts of sunshine.

(From—Illustrated Weekly, dated June 26, 1988).

Increasing Accidents cause concern

There have been 81 motor vehicle accidents involving CRPF vehicles till July this year. Nine CRPF men were killed and 118 injured in these accidents.

Taking a serious view of the increasing number of accidents involving CRPF vehicles, the Director General, CRPF, Shri P. G. Halarnkar has in a D. O. letter addressed to all officers asked them to ensure that all drivers are subjected to strict medical examination bi-annually.

In 1987, there were 180 accidents in which 6 CRPF men lost their lives, while 137 were injured.

Punjab round-up

CRPF GUARDS REPULSE TERRORISTS' ATTACK

A three-pronged attack on a CRPF picket of 'C' Company, 44 Battalion by terrorists in Amritsar was gallantly repulsed by the post personnel on June 8, 1988.

The CRPF guard posted at Thande to provide security to Sukh-dev Singh, who had been threatened by the terrorists, was suddenly attacked around 2325 hrs. The terrorists used sophisticated weapons including anti-tank and anti-personnel rockets against the CRPF men, resulting in death of the section commander Head Constable A. G. Pathar and injuries to five others, including a sentry—Constable A. K. Hajarika. Another sentry, Lance Naik Abdul Salam, remained unhurt.

Though under heavy attack, the CRPF men fired back in the directions from where they were fired upon. Unmindful of the serious splinter injuries sustained by him, Head Constable Pathar fired with the rifle of another jawan whose right hand was fractured, until his death.

The stiff resistance put up by the CRPF men forced the terrorists to flee.

The objective of the terrorists to overrun the CRPF post and then to wipe out the family of Sukhdev Singh was thus thwarted.

Soon after the incident, the Director General of CRPF, Shri P. G. Halarnkar, rushed to the spot of incident. After apprising himself of the role played by the gallant CRPF men in thwarting the terrorists attack, he annouced a cash reward of Rs. 1000 to each of the post personnel.

Earlier, one terrorist was killed in an encounter that took place between a patrol of 12th Battalion, CRPF and three terrorists near Jharunangal village in Jandiala area in Punjab on April 2, 1988. Two terrorists managed to escape. An AK-47 rifle with three magazines and 137 rounds and a 9 mm Thomson gun with a magazine and 49 rounds were recovered.

A Suzuki car without the registration number plate and a TVS motorcycle used by the terrorists were also seized.

Two days later, five terrorists were arrested by an ambush party of 27 Battalion, CRPF near village Bengali Kalan in Majitha area of Amritsar district.

The terrorists started firing at the ambush party on being asked to stop. The fire was returned. After the exchange of fire, CRPF men overpowered the five terrorists and disarmed them.

Two .303 pistols with 40 rounds were recovered from them.

The arrest of four terrorists by personnel of 79 Battalion, CRPF in Bhikiwind in Amritsar on April 7, 1988 yielded a huge haul of arms and ammunition.

The CRPF men accompanied by civil police nabbed the terrorists while they were approaching it from Daraske side.

Six AK-47 rifles with 16 magazines and 2,590 rounds, three 9 mm special carbines with 12 magazines and 1, 090 rounds, one 9mm carbine, one .38 revolver, eight .32 pistols with magazines, four HE-36 grenades, six bombs and 150 meters of fuse wire were recovered from the arrested men.

The alertness of the unit personnel helped break an ambush laid by terrorists near village Badalait in Amritsar on April 9, 1988. The CRPF men promptly returned the fire and charged at them. One Constable was injured.



Total surrender

The terrorists managed to escape under cover of darkness.

A search of the area yielded two .32 pistols with two magazines and 21 rounds, three magazines and 130 rounds of AK-47 rifle and an HE grenade.

A raid by personnel of 12th and 25th Battalions of CRPF and the Delhi Police in village Bhutari in District Amritsar on April 14, 1988 led to a big cache of arms and ammunition.

Among the arms and ammunition recovered were an AK 47 rifle with 945 rounds, a 7.62 rifle, a carbine with 457 rounds, a Thomson machine gun, a .315 revolver, two Mouser pistols and a lot of ammunition of different calibres.

A night-long raid by a party of 29 Battalion, CRPF in Lalpura in Tarn Taran area on April 18 and 19, 1988 resulted in the recovery of a large number of weapons and ammunition from a bunker.

Five AK-47 rifles, 15 magazines and 2,301 rounds, eleven .30 pistols with 17 magazines and 200 rounds, eight .38 pistols and one .32 pistol were recovered.

On May 12, two terrorists were killed and arms and ammunition recovered from them when an encounter took place between them and a CRPF party near village Shahpur in Batala.

A Section of ‘F’ Company, 79 Battalion, CRPF led by a Naik was on mobile patrolling in a jeep of 12th Battalion, CRPF, when the Naik noticed two youths, one carrying a weapon, near Dayalgarh bridge. The two were proceeding towards Shahpur village.

The CRPF party got down from the jeep and started chasing the terrorists who were running through a field.

Rich haul of arms by 4 Battalion

Four terrorists were arrested and sophisticated weapons seized by a party of 4th Battalion, CRPF following the interrogation of a youth

arrested from village Jaimal-wala in Bagapurana area in district Faridkot on the night of April 19-20.

The youth belonging to Bhai Gurjeet Singh gang of terrorists confessed of his involvement in seven killings.

On the basis of information provided by him, four terrorists were arrested from Jaimalwala, Gajjanwala and Drolibhat.

Four rocket-launchers, 15 AK 47 rifles, five pistols, two time bombs and a huge quantity of ammunition were recovered from them.

Having split his Section into two, the Section Commander with a few men ran towards the right side to engage the terrorists from right flank while two others chased them from the left side.

Seeing the two CRPF men on the left flank in hot pursuit, one of the terrorists turned back and fired at them which was immediately returned.

Sensing that the terrorists could escape from front side, the jeep driver drove the vehicle to the party on right flank and took them to a farm-house on the bank of a canal. The terrorists who were approaching the farm house were trapped between the two CRPF men pursuing them and the two men already positioned in the farm house.

In a desperate bid to escape, the two terrorists fired at the CRPF men and in the exchange of fire, were killed on the spot.

The terrorists were identified as Kuldip Singh and Balkar Singh. An AK 47 rifle with 13 rounds and a 9 mm pistol with 5 rounds were recovered from them.

Two dreaded terrorists—one of them an ‘A’ | category man and the other plus ‘B’—were killed after a brief encounter with a party of ‘D’ Company, 29 Battalion, CRPF near Akalgadda village in Fatehabad district on May 11, 1988.

The CRPF party had laid an ambush near the village when three men were seen approaching. On being asked to stop, the three men started firing at the CRPF party. The firing was promptly returned, resulting in the death of two terrorists, while one managed to escape.

Two AK 47 rifles with 17 rounds and 55 cases were recovered from the dead men, each of whom carried a reward of Rs. 50,000 on his head.

Three days later one terrorist was killed and a .38 revolver with empty cases recovered from him after a brief encounter with a patrol of 'D' Company, 80th Battalion, CRPF near village Gurka in Nakodar.

The CRPF section, on noticing three young cyclists asked them to stop. On this, the three started running in different directions, leaving behind their cycles. One of them fired at the CRPF party while fleeing but he was chased and shot dead by a Constable. The other two managed to escape.

The dead terrorist was later identified as Bharpur Singh.

The same day, a terrorist was killed and an AK 47 rifle with five rounds and 20 cases recovered from him after a brief encounter near Hakimpur village in Jalandhar.

A joint party of 32 Battalion, CRPF and Punjab Police signalled two men on a scooter to stop. The two left the scooter and fired at the ambush party which was returned. In the exchange of fire, one terrorist was killed while another managed to escape.

Two other men were rounded up by a patrol of 32 Battalion, CRPF near a petrol pump on Begowal-Tanda Road. On suspicion the two were searched and a country-made shot gun and a toy revolver were recovered from them. Men of same unit under the command of a Company Commander recovered a .315 rifle with five rounds from a person in Mahigalan village on July 20,1988.

In another raid on July 25, 1988, two terrorists—Ranjit Singh alias Kala and Paramjit Singh—were arrested from a house in Khankanan village of Jalandhar by personnel of 'C' Company, 32 Battalion, CRPF.

Three AK 47 rifles with 3 magazines and over 1000 rounds were recovered from a field near village Phandal in Nakodar by a party of 80 Battalion, CRPF on July 5, 1988.

Following an encounter between terrorists and Punjab Police, a party of 80 Battalion led by the Commandant reached Pasla village and rounded up two

suspects. On interrogation, they disclosed that three AK 47- rifles were hidden somewhere near Phandal village.

The CRPF party accompanied by Punjab Police personnel then rushed to the area and apprehended one harbourer who on interrogation led the party to the spot where the rifles and ammunition were hidden.

One suspected terrorist was killed in an encounter with a CRPF party near Malchak in Tarn Taran on July 22, 1988.

The Assistant Commandant (Operations) of 48 Battalion, CRPF alongwith a party of the unit and ASP of Tarn Taran were on mobile patrolling near Pandori Takhtmal village area when they were informed of firing shots having been heard from Malchak village side.

Around midnight, when they turned towards Malchak village, they spotted three persons in the nearby fields. On being challenged, the three fired at the patrol and ran through the fields.

After a hot chase, one person was found dead while the other two managed to escape under cover of darkness.

One 12 bore gun with cut barrel and butt, seven live cartridges and two empty cases were recovered from the spot of incident.

Senior officials' inspections streamlined

The procedure of inspection of Battalions and Group Centres by senior officials has been streamlined.

According to standing order (No. 5/88) dated May 27, 1988, the IGs will inspect their units once every two years. The DIGs will inspect annually. Company locations or outposts can be visited by the Range DIGPs at convenience.

Assistant Directors in IGP's offices and staff officers to DIGPs will carry out annual inspections of their respective branches. Likewise the Additional DIGs and Commandants of Group Centres and Battalions will inspect their units annually.

A minimum of two days will be spent in the inspection of headquarters.

The IGs and DIGs can exercise discretion of detailing their ADs and SOs

to accompany the inspection team in advance The detailed officers will inspect quarter master branch, transport and training etc.

Inspection notes will be sent by IGs and DIGs to the units within a fortnight. Copies of these will be endorsed by IGP to the Directorate-General and Range DIG while DIG will endorse a copy of his inspection note to Sector IGP.

Observations of the inspection notes are to be settled within six months, according to the order.

A SUPREME SACRIFICE

Inspector Nirmal Singh of 80 Battalion, CRPF was killed when some terrorists opened indiscriminate fire at a crowd attending a religious function in a temple in Khari Shari village on March 3,1988.

The Sikh Inspector, who belonged to the same village, on hearing the gun shots, directed all villagers to lie down to escape the bullets. While directing the villagers, he himself was shot on his temple, resulting in his instantaneous death. He thus saved many from getting killed in the hail of bullets.

A cheque of Rs. 1 lakh was presented to the widow of late Inspector as exgratia amount by Punjab Government. A son of the deceased has been recruited as Constable in CRPF.

SEPARATE CADRE FOR CRPF MAHILAS

The formation of a separate cadre for Mahila constabulary within the Force has been approved by the Government.

The eligibility conditions for promotion to various ranks shall be the same as for male personnel. Promotions, confirmation and seniority of Mahila personnel will, however, be reckoned separately.

A portrait of two encounters

by

H. S. Sethi

The nation had held its breath as the security forces were engaged in a battle of nerves during the operations at the Golden Temple of Amritsar. In the heat of the moment, much work that the security forces did in the rural areas of the Amritsar district was lost sight cf. However, now that the dust has settled, I visit Punjab to know about action that took place there.

In the control room of the CRPF at Amritsar's canal rest house, two officers, bewildered by a dozen telephones ringing around them, show me a captured AK-47 rifle. Painted on it are Guru Gobind Singh's famous words "nische kar apni jit karoon" (May I, O Lord, make sure of my victory). In the adjoining room is CRPF's Inspector-General Joginder Singh. He tells me how in just three encounters in the rural area, his men have accounted for 20 hard core terrorists and have captured 13 AK-47 rifles, six other rifles and guns, four pistols and a lot of ammunition. He arranges with the local commanders to take me to Patti area, the scene of two encounters.

The Patti Sector

A jeep with an LMG mounted on it plies through the dusty roads and takes me to what they call the "Patti Sector." Patti, of course, is a familiar name. It is the place to which Chief Minister Partap Singh Kairon, considered by

many to be the maker of modern Punjab, belonged. It is hardly 30 Kms from the border and in between Patti and the border is Khem Karan that had proved to be a grave-yard of Patton tanks in the 1965 war with Pakistan. The thought as to how well had the people of the area then gone in aid of the Indian army now belongs to the realm of nostalgia.

Being so close to the border, one always hears here the stories of smuggling—of gold, narcotics and arms. Smuggling of arms is of course the latest trend, for in addition to being "good business" (the going price of the Chinese AK-47 Rifle, I am told, is Rs. 36,000), it also provides to a smuggler protection on the way right up to the time it is sold. The security forces have responded to the development effectively with the Director General Halarnkar of CRPF giving cash rewards to those who had captured AK-47 rifles while he was in Amritsar the other dav.

The Patti Sector covers six police stations—Harike (with Mand area to which belongs ace extremist Avtar Singh Brahma), Voltoha (known to be a favourite ground for hide-outs), Khemkaran and Khalra (supposed to be havens for smugglers), Bhikiwind and Patti. Commandant Dhagat of 19th Battalion, CRPF commands the Sector.



In the CRPF control room at Amritsar two officers examine an AK-47 rifle captured from terrorists. Written on it are Guru Gobind Singh's famous words "nische kar apni jit karoon" (May I, O Lord, make sure of my victory).

Rattaguda encounter

Dhagat is beaming today with two quick successes coming his way. Other officers of the force call him lucky. But, he explains, one has to work even to let Dame Luck be kind. He tells me of the harrowing time he had when in a single day 26 persons were killed in his area of responsibility by “General” Hari Singh. He speaks of many sleepless nights that he spent before he could do something.

Dhagat’s opportunity comes a fortnight later—on April 16 to be precise—when his men drawn from 19th and 63rd Battalions, CRPF are fired upon from a farm-house in Rattaguda. The men not only surround the house but also succeed in lobbing grenades into the room from which fire was coming. The grenades cause fire that consumes not only the notorious “General” but also his five accomplices—all dreaded terrorists. In the process, they capture five AK-47 rifles, one Thomson carbine etc. Their success however, costs them much; in the process, they lose three of their comrades.

Sandra encounter

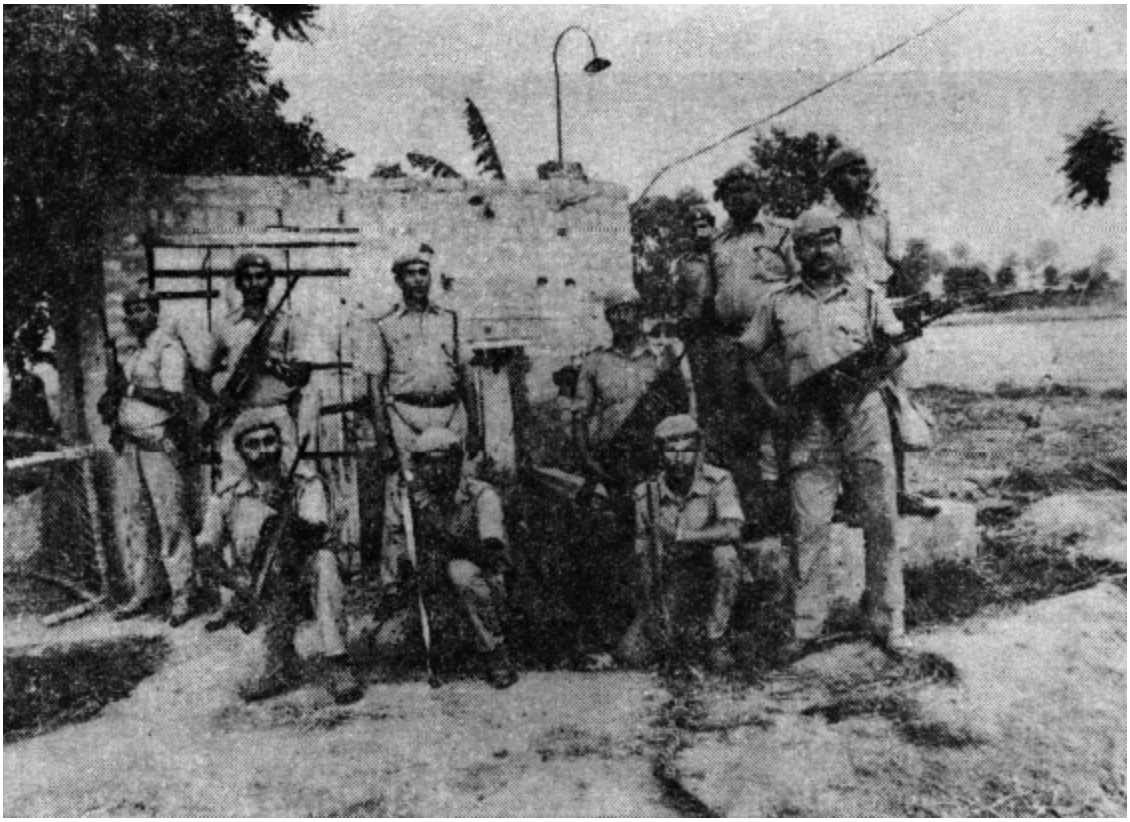
This mixed success gives to Dhagat a right mix of pep and caution to work for another success. “Sources” had informed him of one Gurnam Singh Ghariala, a graduate believed to have been actively involved in extremist activities. Dhagat tries to get on to his trail. Soon during a recce of the area, he comes across evidence of Gharia-la’s recent visit to and training in Pakistan. Dhagat now knows exactly what to do. Two days later, the troops of three CRPF Battalions (19th, 38th and 63rd) and civil police are positioned at various points in the area, some to drive the terrorists and others to intercept.

The plan produces results. The cops are fired upon from a farm house but the terrorists soon realise that it is an organised operation. They take to heels, leaving two dead. However, the drag-net has been spread.

The fleeing terrorists take position and fire from a farm house in the village of Sandra. Already in the house are Ajaib Singh, his son and grandson.

They are not just three persons; they represent three generations, perhaps a complete lineage. The forces get to know this when amidst

heavy exchange of fire a bewailing woman appeals to them to stop firing to save the three innocent lives. The security forces cease firing for a few minutes and the civilians come out, safe and sound. It is a happy reunion of a family in a warlike situation.



CRPF men who took part in the encounter at Sandra village. Mark the fire markings on the pump house in the background.

The firing resumes. The terrorists decide to give a last ditch battle and take position in a small irrigation channel. But soon Dhagat's deputy and his men close in on them in an improvised bullet-proof jeep—an ordinary jeep reinforced with steelsheets—and lob hand grenades. Some more firing, and the a charge on the terrorist positions operation is over. One terrorist in the pump house and six in the field lie dead. Five more AK-47 rifles, two pistols and a gun are recovered.

I meet Ajaib Singh, the owner of the pump house to have an idea of what happened inside the pump house. He tells me that while he, his son and grandson had held their breath amidst intense firing, one terrorist in the pump house was hit and died. The remaining terrorists realised that they had been encircled. Saying "Rattaguda must not be repeated," they made for the door and took positions in the irrigation channel where they met their end.

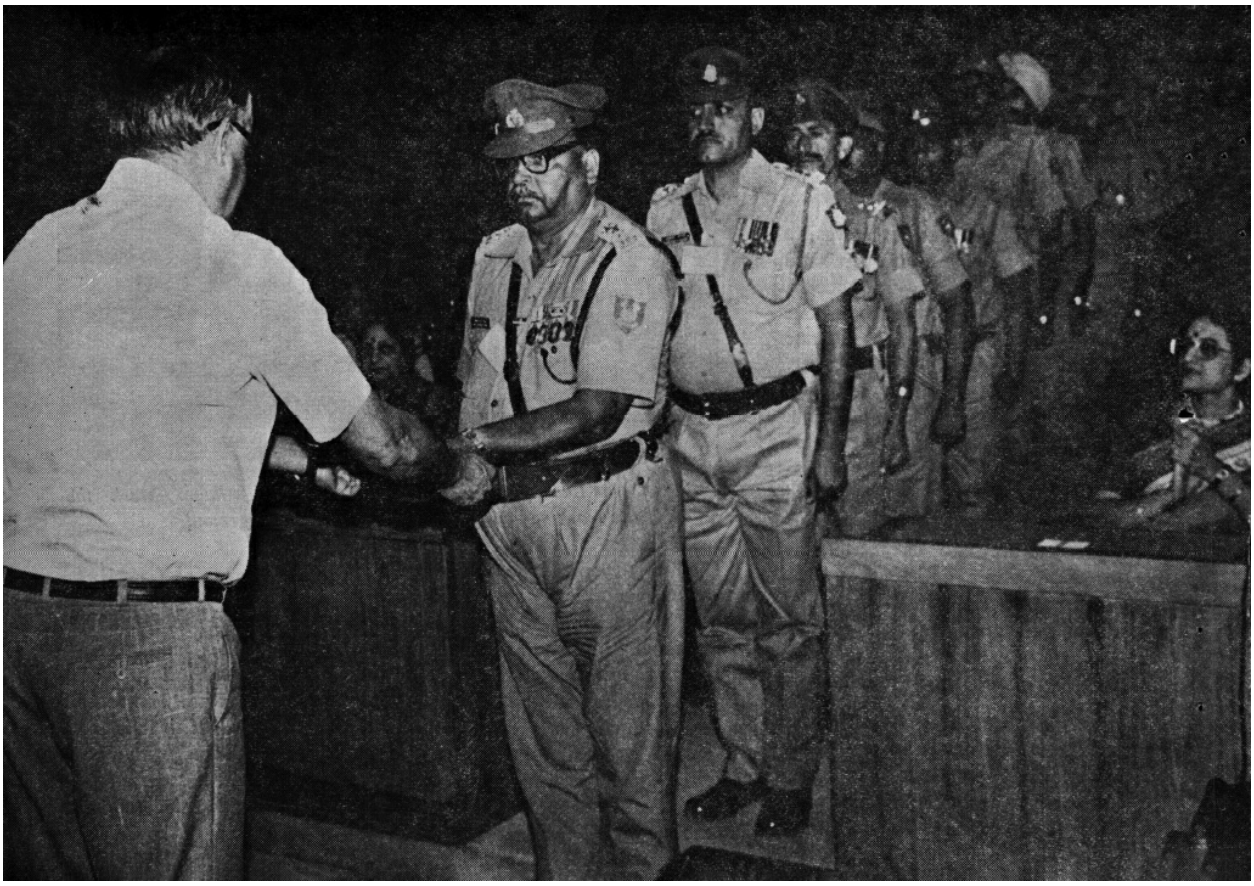
Those who gave their lives

In the three encounters, two Constables—P.R. Arjunan (63 Battalion) and Laxman Patil (63 Battalion)—and Naik Ram Prakash (19 Battalion) laid down their lives at the altar of duty. As we go the press the next of kins of these jawans had already been paid Rs.35,000 each out of various funds of the CRPF.

In addition they will get (i) Rs. 400 per month for 20 years out of the CRPF Risk Fund, (ii) Rs. 1 lakh as ex-gratia grant by the Punjab Government, (iii) cash reward of Rs. 2,000 to each for their part in the encounters and (iv) liberalised pension, i. e. full salary last drawn to the next of kins till their death or remarriage.

In case their awards for gallantry are approved by the Union Government, their families will get an additional pension of Rs. 60 or Rs. 100 (depending upon the nature of award) per month.

Home Secretary lauds CRPF role



Shri C. G. Somiah, Home Secretary praised the CRPF for meeting the challenges of terrorism in the Punjab and insurgency in the North-East and for maintaining law and order in all parts of the country.

Shri Somiah was speaking at a New Delhi function in which he distributed cash rewards totalling a sum of Rs. 1.43 lakhs among 86 men of the CRPF who took part in three successful encounters in the Amritsar District of Punjab.

Demands on CRPF

The Home Secretary stated that the CRPF was in demand from all States in the country because of its impartiality, secular-mindedness and effectiveness. He also paid tribute to the Force, particularly to its Mahila Battalion, for doing well in Sri Lanka.

Shri Somiah stated that the Centre would do everything possible towards the welfare of the CRPF men.

Seventy-two of the 86 CRPF personnel were present at the function and

received cash rewards ranging from Rs. 1,000 to 5,000. These Jawans were responsible for valour resulting in the death of 21 hard-core terrorists and the capture of 14 AK-47 rifles and a number of other major arms.

The following is the text of the speech of the Home Secretary :—

"It's a proud day today that we have gathered here to honour the gallant men of the CRPF. We have honoured them for their conspicuous bravery, for their devotion to duty and for their loyalty. And this honour is not only to the individuals who got the awards today, but also to the entire force which has been able to train and produce such men. I congratulate these men who appeared before us and also the entire force for their performance in Punjab and elsewhere in the country.

Versatile Force

"The CRPF is a multi-faceted force. Before the ITBP was formed, they were guarding our frontiers in the Himalayas and all of you are aware of how the CRPF in 1959 withstood the (Chinese) slaught and (ten CRPF men) fell martyrs for whom there is a beautiful monument in Hot Springs.

"The CRPF is deployed in the North-East to counter the insurgency, in Punjab to counter terrorism and in almost all the states of this country one time or the other to attend to law and order, communal, labour and other problems. In fact if there is any force amongst the three or four forces we have in the Home Ministry which can be considered an All-India Force, it is the CRPF".



Dy. S. P. Singh (facing page) and Sub-Inspector Bhandari (above) receiving rewards.



The Home Secretary and senior officers of the Home Ministry and Central Forces having a look at

captured arms.

"I have been associated with this Force since long—since the time I served in the Home Ministry as Joint Secretary (Police) and I have great admiration for this Force which gets such swift orders which are promptly carried out for quick movement from one part of the country to the other. In fact there have been instances where they have been stopped enroute in trains to shift them from the original place of destination to another place of destination because the requirement there was more urgent and they have responded beautifully.

Historic role

"Their elan is very high. Their reputation in the states is very high, for every state wants the CRPF. Their impartiality and their secular-mindedness is well known; whenever there are communal riots, it is the CRPF that the states depend upon and they (CRPF) do produce the results.

"In Punjab they have done fantastic work. Terrorism which is new to this country had not many answers because the police were not properly trained to meet its threats which are enormous. But this Force has been able to acclimatise itself to the conditions in Punjab in quick time aud has produced results—the results some of which were narrated to you today. If ever the history of Punjab, the history of this troubled state gets written, the role of CRPF in bringing peace to that area will be written in very bold letters.

"The CRPF used to confine its activities till now within the country. But a few months ago, on popular demand, I would say from the Army, they have been deployed in Sri Lanka. And there was also a demand for a Mahila Battalion. We had our reservations (the DIB is smiling) about sending the Mahila Battalion across the seas into a foreign country. But I must say that our fears have been unfounded; they have done exceedingly good work in Ceylon and they have won the encomiums from the Army.

Welfare

"The force has many problems. We are aware of this. The DG and other officers in headquarters are always after us to solve their problems and we try our best within the constraints of resources etc. We try our best and I am sure

some of the recent demands that have been made will be looked into with expedition and some relief will be granted.

"In all this euphoria of the achievements of the CRPF, we should not forget the persons who got killed, and their families. In all this pleasure there is some pain; and that pain we have to bear. But it should be our effort (I am sure the DG, CRPF would be making that effort) to give the greatest comfort to the families and to look to their welfare.

Today there may be a slight disappointment in your minds that the Home Minister could not come and address you. He was the chief guest. I have only deputised for him. He had some urgent work in Chandigarh and this morning he rang me up and he requested me to deputise for him. Not only that. He asked me to convey to you his warmest regards and his appreciation for the good work done by you. I wish you all happiness and Godspeed. Jai Hind."

Earlier, welcoming the Home Secretary, Shri P. G. Halarnkar, Director General, CRPF stated that 26 of the men involved in these three encounters had been promoted. He added that since the trouble began in the Punjab, the CRPF had captured 1,700 major arms and had won 32 gallantry awards. In the process the Force had lost 52 lives.

Following is the text of his speech :—

"I am indeed very happy to welcome you all to this presentation ceremony.

"It is now more than 5 years that the CRPF has been operating in the Punjab. Starting with a few Battalions inducted in 1983 primarily to tackle the Akali agitation, we have in Punjab and Chadigarh today as many as 195 Companies, fully stretched. In Amritsar alone, which has been the vortex of the Punjab storm all along, we have 69 Companies. It will thus not be an exaggeration to say that after Punjab Police, the force which has borne the brunt of terrorism in Punjab is the CRPF.

"The Force thus far accounted for a large number of extremists, including 50 "A" and "B" category terrorists. The Force has also recovered about 1,700 weapons, including 113 AK-47 assault rifles, 4 LMGs, 2 MMGs, 7 rocket launchers and 89 Sten guns. Some of these weapons are on display in the exhibition area. For their outstanding performance during the last 5 years in Punjab, 7 CRPF personnel have so far been decorated with President's Police Medal for Gallantry and 25 with Police Medal for Gallantry. Cases of 34 more officers and men are under active consideration of the Govt. for award

of gallantry medals. Shri S. S. Virk, our DIG at Amritsar was awarded Padma Shree on the occasion of the Republic Day, 1988.

"Our performance during the months of April and May 1988 was spectacular. On 16th April, an encounter with terrorists took place in village Ratta Gudda of Amritsar district in which six notorious extremists, including self-styled General Hari Singh of K. C. F. were killed and a large number of weapons including 3 AK-47 rifles were recovered. On April 18, 1988 in another encounter, 6 terrorists were killed in village Bhoparai Kalan of Amritsar district and sizeable quantity of arms and ammunition including five AK-47 rifles was recovered. In yet another encounter on May 10, 1988. nine dreaded terrorists of the gang of Gurnam Ghariala were killed in villages Makhi Khurd and Sandra of Amritsar district.

"For all these accomplishments, we had to pay a price. Fifty-two of our men have so far lost their lives and 111 were injured. These losses have only helped in strengthening our determination to strive further. The country is passing through difficult times and the challenge to law and order today is greater than it was at any time in the past. I may assure the Government that the Force will spare no pains to prove itself equal to these challenges.

"Recognition of the excellent work being performed by the men at great ptril to their lives is extremely important from the morale point of view. We are grateful to the Govt, who have sanctioned cash rewards to the tune of Rs. 1,42,500/- to 86 personnel involved in the three encounters. We have also given one rank promotion to 26 personnel whose performance was found outstanding during these operations. These recognitions will certainly be a morale booster and will serve as an incentive to many others in the CRPF who have been working without respite under difficult circumstances not only in Punjab but also in other parts of the country.

"To improve the efficiency of the Force and to keep up the morale of the men we have submitted a number of proposals to the Govt., important of them being better weaponry and other equipment, sanction of risk allowance, etc. May I request the Govt. to pass favourable orders on our proposals at the earliest.

"I am grateful to Shri Somiah for having spared some time to be with us and for giving away the rewards. I am also grateful to you all for having graced the function."

Rockets and AK-47 rifles recovered

The Central Reserve Police Force on June 16 recovered 2 AK-47 rifles with 5 magazines and 444 rounds and other ammunition in a surprise raid on the house of one of the harbourers of the Satta Group of the Bhinderanwala Tiger Force in village Manowal of Amritsar District.

This group, it may be stated, had attacked the CRPF post in the village of Thanda on June 8, in which one Head Constable was killed and 5 others were injured.

Subsequently the CRPF placed guard to watch the house. At night one of the constables noticed fresh mud on a dump of cattle feed. This aroused suspicion and digging led to further recovery of 2 rocket-propelled grenades (R.P.G.) rocket-launchers and 2 rockets together with chargers.

The harbourer, Gurmej Singh, alongwith his wife and two brothers-in-law were arrested.

Special Duty Medal for Punjab

Personnel of state police forces and the central police organizations who complete one year of service and remain on the effective strength of a unit in Punjab after January 1,1983 will henceforth be eligible for the award of Police (Special Duty) Medal, according to a Union Government notification dated March 25, 1988.

In another notification dated November 23, 1987 issued by the President's Secretariat, it is stated that a clasp "Manipur" to be worn with Samanya Seva Medal has been instituted.

Only such personnel as have put in at least 180 days of service in Manipur after September 27,1980, are eligible to wear the clasp.

CRPF Academy to move to Bangalore

The Director-General of CRPF, Shri P.G. Halarnkar, visited the 77th and 91st Battalions of CRPF at Yelahanka in Bangalore on July 29 and 30, 1988.

Speaking to the press, Shri Halarnkar said that the Internal Security

Academy (ISA) of CRPF was likely to be shifted from Mount Abu to Bangalore. He inspected the 252 acres land in Yelahanka for the purpose of shifting the ISA there.

Briefing newsmen, he described CRPF as a multifaceted Force with a strength of 97 Battalions comprising 1.20 lakh personnel. The Force, he explained, had seen action during the first Chinese attack at Hot Springs in 1959 and against the Pakistanis in 1965 and 1971. It dealt effectively with the Naxalite menace in West Bengal and disorders in other states too.

While dwelling on the achievements of CRPF in Punjab, the DG said that 416 terrorists were liquidated and 1,700 weapons, including AK-47 rifles, rocket launchers and Sten guns recovered by CRPF. Thirty-six Battalions were deployed in Punjab. The terrorists, he said, were now on the run because of the seizure of a large number of AK-47 rifles.

Though the CRPF had men from all states, he regretted that Karnataka was not well represented and called upon the Kannadigas to join the Force in greater strength.

Operation Black Thunder

A feather in CRPF cap

Date :May 9, 1988. Time :0730 hrs. Place : Golden Temple Complex in Amritsar.

Bricks, sand and cement are being dumped near the gate at Prasad Point. The CRPF Section commander in the vicinity flashes a signal to his superiors.

Two hours later, officers of 49 Battalion, CRPF alongwith SP (City) rush to the spot only to find that the construction of a wall is in full swing.

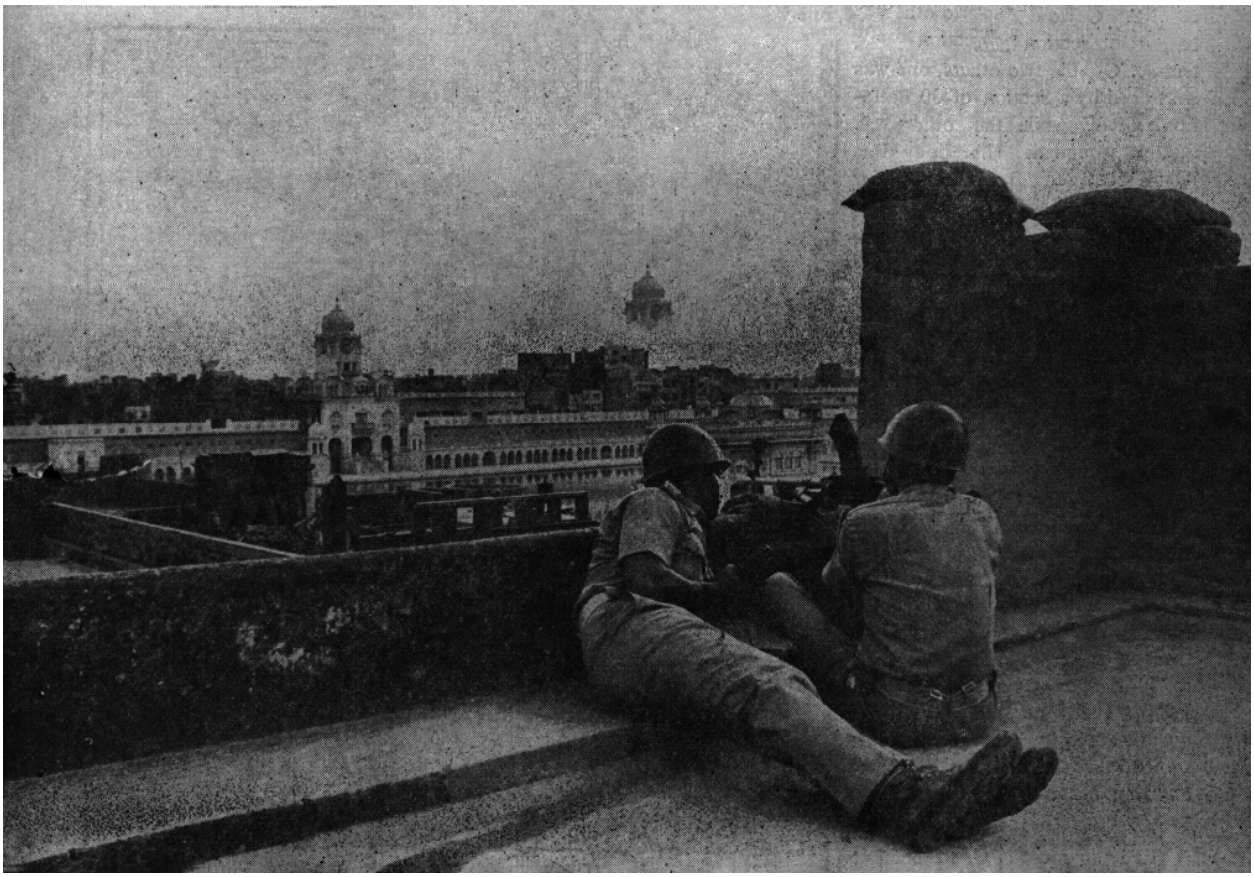
Around 1310 hrs, Shri S.S. Virk, DIGP, CRPF, Jalandhar (who was camping at Amritsar) alongwith the Senior Superintendent of Police, Amritsar and other CRPF officials reaches the place for an on-the-spot assessment of the situation.

The six-odd labourers engaged in construction are persuaded to stop work. They withdraw into the temple complex. Soon, a volley of bullets is

showered at the CRPF and police officials. An odd bullet—that was to be the undoing of the terrorists—finds its way through the cheeks of Shri Virk, shattering his jaw.



Surrenderer terrorists under the watchful eyes of CRPF personnel



CRPF jawans maintaining vigil over the Golden Temple complex.

The terrorists' firing is immediately countered by the CRPF men positioned atop the Manohar Lal building near the Prasad Point.

What followed in the next ten days will be written in the annals of CRPF in golden letters. Thus was conceived Operation Black Thunder with the sole aim of clearing the complex of all terrorists.

Throughout the day and also in the night CRPF troops and the terrorists entrenched in the temple complex exchanged fire.

At noon on May 10, 753 civilians including women and children who were trapped inside the temple were brought out with the help of Shiromani Gurdwara Prabhandak Committee officials. Five bodies were brought out while nine injured persons were evacuated to hospital.

Towards evening, the terrorists emerged from a room of "Parikrama" and fired at the CRPF men, which was promptly returned by the alert jawans. One terrorist fell dead near the room. Intermittent exchange of fire took place throughout the night.

Early hours of May 11, 1988 found 50 crack commandos of the National

Security Guards joining in the fray. Sporadic firing from both sides continued till afternoon when firing was ceased in a bid to persuade the terrorists inside to surrender.

Efforts by Damdami Taksal activists under the leadership of former acting Jathedar of Akal Takht, Shri Gurdev Singh, to negotiate with terrorists to surrender having failed, firing was resumed at night. This continued on May 12 also.

Around midnight on May-12-13, 1988, the terrorists resorted to heavy firing. Six of them tried to escape by scaling a wall. When the CRPF jawans manning a picket in Mai Sewan Bazar challenged them, four of them retreated into the temple. Of the two others, one was shot dead by a Section of 30 Battalion, CRPF while the other was fatally wounded. His body was later recovered from area under Police Station Sadar.

For defiance of curfew orders, 30 people, including four head priests were arrested near Gurdwara Santokhsar on May 13.

On the direction of Director-General of Punjab Police, personnel of 49 Battalion, CRPF tactically occupied the water tank behind Guru Ram Dass Sarai. This being the tallest structure in the area overlooking the Temple Complex and thus being of strategic importance, the terrorists had maintained constant vigil to prevent its occupation by security forces. (This structure was used by them to their best advantage prior to Blue Star Operation in June 1984). The water tank was subsequently used by NSG commandos to neutralize the terrorists' firing with amazing accuracy and heavy fire power.

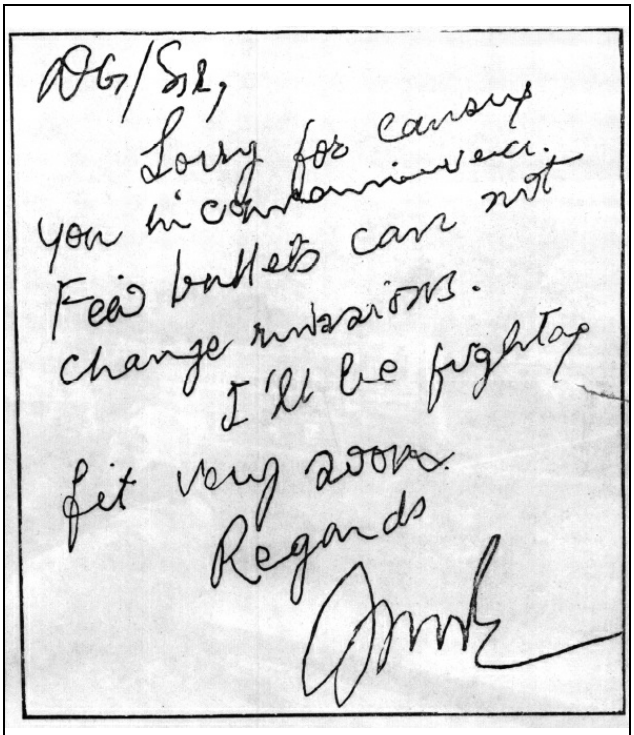
Redeployment of CRPF Sections was effected on May 14, 1988 with additional CRPF troops being rushed to the complex. Five old men ran to security in response to a surrender call in the evening. They were handed over to civil police.

With the end of cease fire at 1715 hrs, the NSG men came into action. They entered the Manji Sahib and Langar building. Heavy exchange of fire took place for about half an hour after which it was intermittent throughout the night.

The dawn of May 15 was shattered with heavy firing by the terrorists. CRPF and NSG men, vigilant as they were, retaliated effectively.

Efforts of fire brigade to extinguish a fire in Ghantaghar around 0930 hrs were thwarted by the terrorists' firing.

An appeal to surrender was favourably responded to by nearly 150 persons. This included a few women and children. Among them was the hardcore terrorist Surjit Singh Penta, who on being identified by the CRPF men consumed poison and died later. Twenty-five others were identified as hardcore terrorists from among those who surrendered.


DG/SSB,
Sorry for causing
you hi confidence.
Fear bullets can not
change missions.
I'll be fighting
fit very soon.
Regards

It was the wanton attack by the terrorists operating from the Golden Temple on Shri S. S. Virk, DIG, CRPF that had triggered a chain of reactions that ultimately became Operation Black Thunder. The day following the injury of Shri Virk, Director General P. G. Halarnkar of the CRPF visited Amritsar. His intention was to meet the wife of Shri Virk because the injured DIG was not allowed to talk in view of his injury on the chin. However, the father of Shri Virk informed the DG that his son was very keen to meet him and had been

waiting for him since the morning. When the DG met Shri Virk, he scribbled something on a piece of paper that really moved Shri Halarnkar. Above is a photo copy of the note written by Shri Virk.

Firing was resumed by the terrorists thereafter with security forces retaliating. This continued till May 17 morning when the civil authorities along with the surrendering terrorists and their families appealed to the terrorists inside to surrender. With the surrender call going unheeded, the brave commandos of NSG stormed the buildings in the complex. By 1900 hours, they had established their posts on the “bungas”, dislodging the terrorists from there.

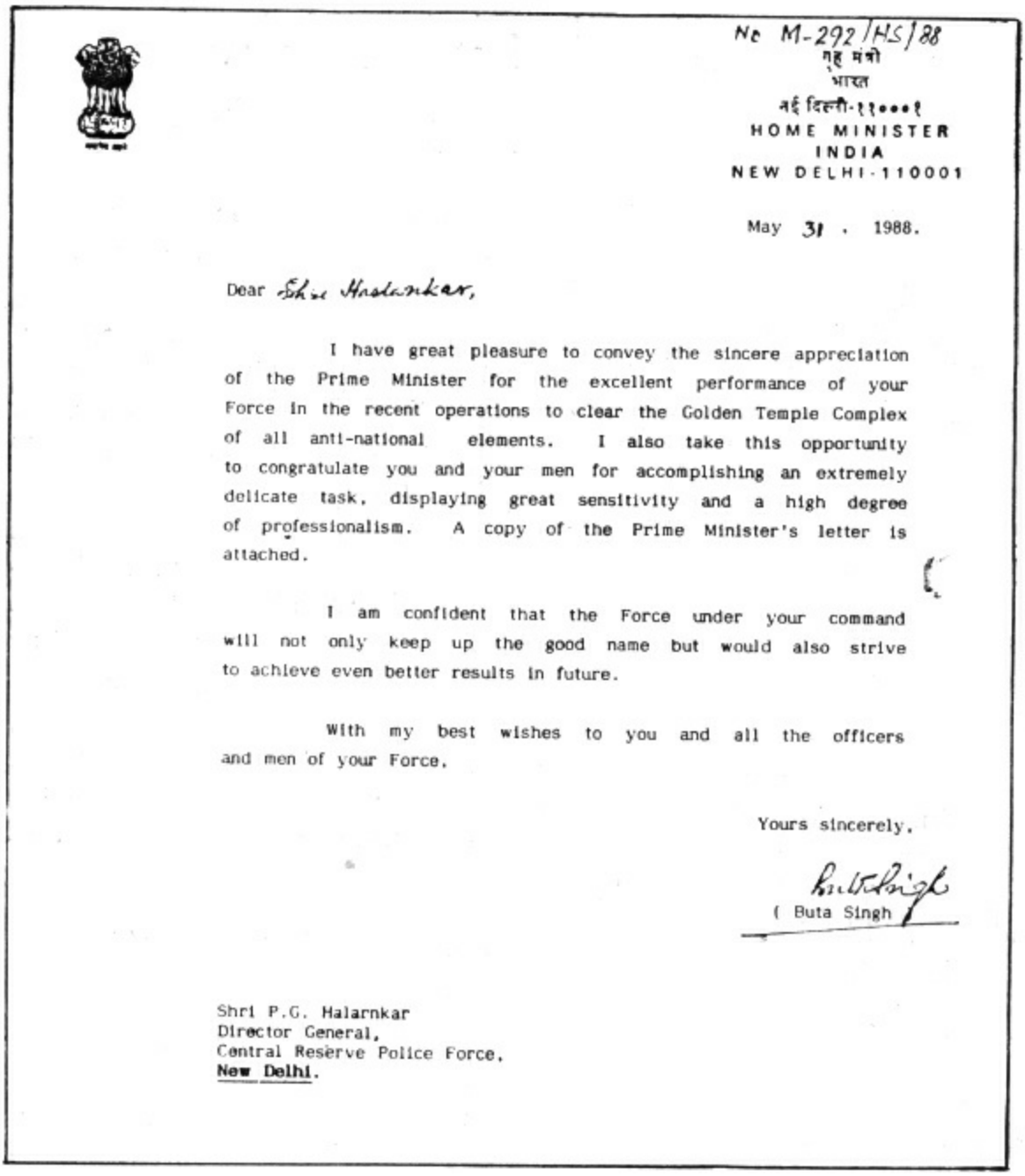
The Commandos entered the Old Langar building the following morning.

An appeal made the same evening resulted in the surrender of a women and 45 men. Amongst them were hardcore terrorists Nirvair Singh, Malkiat Singh Ajnala, Chanchal Singh, Nishan Singh and Bhag Singh. Two other dreaded terrorists—Karaj Singh and Bagga Singh—committed suicide in the complex by swallowing poison.

As a precautionary measure, a constant vigil was maintained over all the buildings in the complex till May 19, 1988 evening when a Red Cross party brought out six bodies, one of which was that of a woman. A .455 revolver and two 12-bore guns were recovered from the dead terrorists.

A search of the complex by the security forces yielded a rich haul. This included AK-47 rifles-22; GPMP-1; LMG-1; pistol .22-1; 12 bore DBBL guns-7; 12 bore SBBL gun-1; shot gun double barrel-1; shot gun single barrel-1; revolvers 12 bore-2; Sten gun-2; Rifle AR 15 -1; pistol .32 MM-3; local made pistols-7; HE grenades - 6; rockets-16; swords-38; cash-Rs. 4,42,000 and a lot of ammunition.

The aim of restoring the sanctity of the world famous shrine was thus achieved by the relentless, determined and brave efforts of officers and men of the CRPF and NSG.



No M-292/HS/88
गृह मंत्री
भारत
नई दिल्ली-११०००१
HOME MINISTER
INDIA
NEW DELHI-110001

May 31 , 1988.

Dear Shri Halarnkar,

I have great pleasure to convey the sincere appreciation of the Prime Minister for the excellent performance of your Force in the recent operations to clear the Golden Temple Complex of all anti-national elements. I also take this opportunity to congratulate you and your men for accomplishing an extremely delicate task, displaying great sensitivity and a high degree of professionalism. A copy of the Prime Minister's letter is attached.

I am confident that the Force under your command will not only keep up the good name but would also strive to achieve even better results in future.

With my best wishes to you and all the officers and men of your Force.

Yours sincerely,

(Buta Singh

Shri P.G. Halarnkar
Director General,
Central Reserve Police Force,
New Delhi.

A pat on the back. Union Home Minister Shri Buta Singh's letter to CRPF Chief conveying the Prime Minister's appreciation of CRPF role in clearing the Golden Temple Complex of anti-social elements.

BIHAR DG COMMENDS CRPF ACTION

Shri J. M. Qureshi, Director General of Bihar Police, has commended the action of CRPF officers and men in combating terrorism in Punjab.

In a letter dated May 23, 1988, addressed to the CRPF Director General

Shri P. G. Halarnkar, the Bihar Police DG has stated-“Congratulations to you and your boys who have pulled up the brilliant success”.

Shri Qureshi has offered his “sincere condolence to the next-of-kin of those who have paid supreme sacrifice of their precious lives.”

“Long live CRPF”, the letter concludes.

20 ROCKET LAUNCHERS RECOVERED

The Central Reserve Police Force (CRPF) recovered over 50 Chinese AK-47 assault rifles, 20 rocket launchers and a huge quantity of ammunition from extremists during the current calendar year, according to Mr. Joginder Singh, Inspector General of Police, CRPF.

Talking to newsmen, he said six CRPF jawans were killed by terrorists in the Punjab.

Medical aid while on leave

The Medical Superintendent of the Central Reserve Police Force, Dr. K. K. Saini has, in a circular dated April 21, 1988, clarified that CRPF personnel while on leave can obtain medical treatment from government or government-recognized hospitals nearest to their place of residence. These include hospitals run by Central or State Government, municipal corporation or district board, police and public sector undertakings.

Personnel posted in Calcutta can get treatment for themselves and their families, from private medical practitioners only if they have been appointed Authorized Medical Attendants (AMA) by the government. For Group ‘A’ officers, however, the presidency surgeons alone shall be the AMAs.

When a unit moves to a new location, the Commandant shall identify the nearest government hospital for treatment. In the absence of a government hospital, police hospitals or hospitals run by local bodies or public undertakings will be identified for treatment. If none of these hospitals are located in vicinity, the Railway hospitals could be identified for treatment on prescribed rates.

Treatment in private hospitals is authorised only in case of emergency involving accidents or serious nature of disease and if there is no government hospital near about. In such cases, a maximum of Rs. 50 per day in 'A' class cities and Rs. 30 in 'B' class cities as room rent will be re-imbursed. Special nursing charges will be re-imbursed at the rates prescribed by the local nursing association. A maximum of Rs. 32

on first consultation and Rs. 16 on subsequent consultations will be re-imbursable.

For a major surgical operation, Rs. 800 is the limit while for minor operations it is Rs. 200 only. In major cases of confinement, Rs 500 will be the ceiling.

Actual expenditure incurred on various investigations during diagnosis will be reimbursed if the charges do not exceed the charges levied by nearest government hospital.

No ceiling has been imposed on ambulance charges provided an emergency certificate from hospital authorities is produced for re-imbursement.

DG'S COMMENDATION CAN BE FORFEITED

The Director-General's commendation card announced every year on the occasion of CRPF anniversary is liable to be forfeited if the awardee is found guilty of disloyalty, cowardice or such conduct as brings the Force to disrepute.

This is stated in an amendment to Circular Order No. 5/87 issued on March 23, 1988.

The amendment clarifies further that the card can be withdrawn if it is subsequently found that the award was not justified.

FOREIGN ASSIGNMENT

Shri U. G. Mokhasi, an Assistant Commandant of the Central Reserve Police Force, will shortly be joining the Indian High Commission in Dhaka (Bangla Desh) as First Secretary (Consular).

He is presently working as Officer on Special Duty with the Bureau of

Security in the Ministry of External Affairs.

M. P. SINGH

Shri M. P. Singh, DIGP, CRPF has been promoted IGP and posted to North-Eastern Sector. Prior to his promotion, he was working as Deputy Director (Operations) in the Directorate-General.

Shri S. N. Mathur, DIGP, CRPF, Rampur took over as Deputy Director (Operations) in the Directorate-General on July 14, 1988.

Shri L. N. Prasad, IA & AS, on his deputation to CRPF, took over as Deputy Director (Accounts) in the Directorate-General.

Following his repatriation to parent state, Shri R. K. Ragala, DIGP handed over the charge of DIGP, CRPF, Hyderabad to Shri K. R. K. Prasad. Shri P. V. Subba Rao, DIGP, CRPF, Gauhati took over charge as DIGP, CRPF at Madras.

Shri R. M. Sahay, Dy Director at the Internal Security Academy, Mount Abu took over charge as DIGP, CRPF, Agartala.

On promotions to the rank of DIGP, Dr. K. M. Mathur, took over as DIGP, CRPF, Ferozepore Range while Shri B. Chakraborty assumed office as Deputy Director in the Internal Security Academy.

ASSISTANCE FROM UNIT WELFARE FUND

Liberal financial assistance out of the Unit Welfare and Amenities Fund will henceforth be given to seriously injured CRPF personnel whose expenditure on tonics or special diet cannot be recouped under the Medical Attendance Rules.

This is stated in a Circular Order dated June 17, 1988.

Only those who sustain injuries in the course of duties can claim financial assistance.

DG’s stress on men’s welfare

Shri P. G. Halarnkar, Director General of CRPF, has in a letter addressed to all Commandants, stressed the need for taking greater care of the welfare

of the personnel.

"Welfare", states the DG, "is vital to the efficient management of any organisation. This important aspect, I am afraid, is not receiving serious attention of Commandants and Addl. DIGs. You must be aware of the recent Govt. orders liberalising the family pension rules as a result of which the widow of a Govt. servant killed in action due to terrorist violence, anti-dacoity operations, riots etc., is eligible to get the last pay drawn by the Government servant as pension till her death or re-marriage, whichever is earlier. Recently I was shocked to learn that as many as 64 of such cases of family pension were pending settlement due to our failure to forward necessary papers to the Govt. for issue of sanction. The delay is indeed unfortunate and inexcusable. If we cannot do even this much promptly for the families of our jawans who laid down their lives at the altar of duty, we have no right to call ourselves leaders of men. May I request you now to take necessary steps expeditiously to ensure that all pending family pension cases are finalised within next 60 days. I shall be happy to have a line from you in confirmation of the action taken," he adds.

"In a uniformed force, regular communication between the leader and his men is of paramount importance and has a direct bearing on morale, discipline and efficiency. A number of time-honoured systems such as daily roll call, sainik sammelan, orderly room, welfare committee meeting, staff council meeting etc. already exist and these should be fully and fruitfully made use of to monitor the pulse of the force. The genuine grievances which surface during these interactions should be promptly redressed. While the established procedure for channelising the grievances should not ordinarily be disturbed, there should be no hesitation in attending to an urgent problem, even by sidestepping the usual channels. We, officers, should not weave too many frills and formalities around us, making it difficult for the men to approach us in times of need", the Director General concludes.

TERROR & TEARS

The concluding part of article "Terror and Tears'' will be published in the next issue.

TYPING RECORD

Dr. Rajinder Singh, who has won several world championships in fast typing, has established a new world record in “high speed accurate typing for longest duration” by continuously typing for 10 hours at an average speed of 96.81 strokes per minute.

It is for the first time that any person has endeavoured to type high speed for a ten-hour stretch. Dr. Rajinder Singh has thus entitled himself to find a place in the Guinness Book of World Records. (Source : PTI, August 4, 1988)

Correction

In a report published on page 14 under head “Dreaded Terrorist killed” in April 30, 1988 issue of CRPF Samachar, it was erroneously mentioned that the dreaded terrorist Jagraj Singh was killed by a party of 12th Battalion, CRPF. The terrorist was killed by 86 Battalion, CRPF and not 12th Battalion. The error is regretted.

Women Cops’ Uniform

The Delhi police have finally realised that they cannot force policewomen to wear pants.

A few months ago optimistic officials at the police headquarters had issued instructions to all policewomen to discard their white salwar-and-green kameez or white blouse-and-green-saree outfit and switch over to the “smart-looking” khaki shirt and trousers.

The changeover to uniform should have been over by June but for some rethinking on the issue by the top brass of the police.

While Indian Police Service (IPS) women officers in Delhi police and some other women police officers have been going about their business in khaki uniform, the older policewomen had never thought that they would see the day when they have to go around in pants and shirt.

It was this section of the force which “requested” that they may not be forced into pants, according to senior police officers. Conventional Indian attitudes were apparently responsible for the demand for letting things be as they are.

The authorities bowed to the “demand” last month and issued another order saying that the policewomen had the “option” of wearing either salwar-kameez or the all-khaki uniform.

Police officials, however, said that their ultimate aim was to phase out the saree within a few years.

They pointed out that new women recruits to Delhi police were being given the shirt-and-trousers uniform as a matter of course. As senior policewomen retire and are replaced by the younger lot the image of the policewomen in Delhi may gradually change “on its own”, it is felt.

(Source: Times of India dated August 12, 1987)

CONCESSIONS TO CRPF IN SRI LANKA

Concessions given to armed forces in Sri Lanka have been extended to CRPF personnel also deployed in the island. These concessions are given on the basis of similar field service conditions.

Free single accommodation including furniture, as applicable to equivalent Army officers, will be given to CRPF officers.

Free conveyance of families from old headquarters to selected place of residence and from there to new headquarters on re-posting or retention of family accommodation at previous headquarters on normal rent will be authorised. Free conveyance of baggage is also authorised in such move of families at the scale applicable to equivalent Army ranks.

Recoveries on account of admittance in hospitals due to injuries sustained in action in Sri Lanka will not be made. Family allotment (of salary) will be remitted free of cost to families residing at stations where banking facilities do not exist for officers.

With free rations being given to all officers and men of CRPF in Sri Lanka, the non-gazetted members will cease to draw ration money.

Special compensatory allowances of Rs. 15 to Subordinate Officers, Rs. 10 to Non-Commissioned Officers and Rs 8 to all Other Ranks and followers will be paid. These amounts will be admissible even during casual leave and

sick leave not exceeding 28 days if sickness or injury is not due to individual's own imp-prudence.

Free remittances of two family allotments of salary for SOs, ORs and followers is yet another concession extended to CRPF personnel.

In addition, casual free remittance once a quarter on special occasions like marriages is allowed to all SOs, ORs and followers.

In the event of death in action, additional family gratuity at the rate of Rs. 12,500 for Commandants (Selection Grade), Rs. 11,000 for Commandants, Rs. 9,500 for Assistant Commandants, Rs. 7,500 for Deputy Superintendents and ten months pay subject to minimum of Rs. 2,000 will be paid to all non-gazetted employees. This will be in addition to the normal death gratuity.

EDUCATION FUND SUBSCRIPTION RAISED

Subscriptions to the CRPF Education Fund in respect of all ranks stand doubled from January 1, 1988. This decision was taken at a meeting of the Central Committee of CRPF Education fund held in New Delhi on Mav 3. 1988.

Subscription rates would henceforth be Rs. 2 per month for Other Ranks, Rs. 4 per month for Subordinate Officers and Rs. 6 per month for Gazetted Officers. Since annual subscription at half the rates has already been recovered, the balance amount will be recovered after obtaining the concurrence of the Ministry of Home Affairs.

It was also decided to abolish the general scholarship scheme as every Government employee is now entitled to either the Children Education Allowance or the Tuition fees.

The scrutiny of all cases for merit scholarship would be done at the Range level and payments made by the Range DIGs. The Directorate-General will pay the amount to DIG for further payment to CRPF personnel.

They died in June and July

Following CRPF personnel passed away in June and July 1988 :— Subedar Major Ram Swaroop Singh (32 Bn.) Sub-Inspector R. K. Rojen (40th Bn.), Asstt. Sub-Inspector (Ministerial) K.C. Bora (87th Bn.) Head Constable Khem Singh (54 Battalion), Head Constable B. P. Singh (52nd

Bn.) Head Constable Persu Ram Bhogagi (49 Bn.) Head Constable (Driver) Man Singh (34 Bn.), Naik Raghunath Singh (60 Bn.), Naik Karnail Singh (53rd Bn.), Lance Naik K. R. Joshi (54 Bn.), Lance Naik (Fitter) Omkar Sharma (34 Bn.), Constable Banu Bhai Prajapathi (50th Bn.), Constable Horen Sonowal (85 Bn.), Constable Satbir Singh (29 Bn.), Constable Rajendra Prasad (71 Bn.), Constable Akhilesh Kumar (20 th Bn.), Const. Narender Singh (8 Bn.), Constable Kushali Prasad (76 Bn.), Constable R.S. Besak Rao (35 Bn.), Constable Rajinder Singh Reggal (GC Pinjore), Constable Kishan Ganga Ram Hingole (29 Bn.), Ct. Satyanarain (51 Bn.), Ct. Pannalal (67 Bn)., Cook Kam Singh (46 Battalion), Washerman Budha Lal (67 Bn.), Sub-Inspector Pavitro Sharma (76 Bn.), Head Constable Najal Kishore Sharma (70 Battalion); Head Constable AG Pathar (44 Battalion); Constable Awdesh Kumar (58 Battalion); Head Constable Ami Chand (11 Battalion); Naik Radio Operator Munshi Ram (3 Signals Battalion); Constable Bega Ram (Peace Keeping Elements, Gandhinagar); Constable Shiv Ram Singh (12 Battalion); Constable Mala Ram (14 Bn.) Ct. Mehtab Khem (51 Battalion); Lance Naik Bihari Lal (1 Battalion); Head Constable Ram Uzagar Singh (21 Battalion); Water Carrier P. Sasidharan (58 Battalion); Constable Krishan Lal (7 Battalion); Constable Driver N. Pandian (Group Centre, New Delhi); Constable R.K. Patil (62 Battalion); Constable Gangadharan (76 Battalion); Constable Gulam Quadir (21 Battalion) and Ct. Daulat Ram (37 Bn).

Suraj Prakash is Principal

C.R.P.F. Public School is being run under the guidance of the principal Shri Suraj Prakash. He was selected from a large number of candidates who applied for the principalship.

Shri Suraj Prakash is an M.Sc. in physics and M.Ed. from Delhi University. He has ample experience of teaching in renowned public schools such as Modern School, Barakhamba Road and N.D.M.C. Navyug School. He has authored nine books and is also a member of the curriculum committee, C.B.S.E.

Shri Suraj Prakash believes in the concept of education that marks are not the only criteria for judging progress and that a student should be evaluated on the basis of his overall personality. He lays equal stress on sports music,

and dramatics, which he labels as “co-curricular” and not “extra-curricular” activities. He also believes in inculcating basic human values and virtues in the students so as to produce better citizens.

Educational concessions for CRPF children

Benefits which were hitherto available to military personnel will also be extended to CRPF men in Sri Lanka insofar as these relate to education to children and grants for personnel killed or permanently disabled.

The concessions, according to a letter issued by the Department of Education of Ministry of Human Resource Development, are :

(a) complete exemption from tuition and other fees levied by educational institutions including bus/ railway charges;

(b) grants to meet hostel charges in full for those studying in boarding schools and colleges;

(c) full cost of books and stationery, and

(d) full cost of uniform.

CRPF Public School inaugurated



The Central Reserve Police Force (CRPF) Public School was formally inaugurated by the Director General of CRPF, Shri P. G. Halarnkar, at Rohini on May 2.

With this, the opening session of the school from Kindergarten to seventh class commenced. Children of CRPF personnel posted in various parts of the country have been admitted in this school.

Speaking on the occasion, Shri Halarnkar said that the much felt need of a public school for CRPF personnel had been met. Since CRPF personnel moved frequently from place to place for maintaining law and order, the education of children suffered. With the opening of a hostel in the school, such children will now be able to complete their studies in one school.

The opening of the school was one of the major welfare measures taken for CRPF personnel, he said.

This is the first school of its kind among the para-military forces of the country.

Though the school admits children of civilians too, preference is given to the wards of CRPF personnel.

Shri B. J. S. Sial, Inspector General of Police (Headquarters), welcomed the guests, parents and children while the Principal, Shri Suraj Prakash

informed them of the policies laid down for the school. Smt. Shailaja P. Halarnkar went round the school and distributed sweets among the children.

Booklet for CRPF Drivers

A booklet entitled “Directives for Drivers and Motor Vehicles Security Rules” in Hindi has been brought out by the Provisioning Branch of the Directorate-General.

The booklet details all Do’s and Dont’s for the CRPF drivers as also for the supervisory MT staff.

Careful and meticulous observance of these guidelines would help bring down the accidents drastically.

Sports Round-up

Meghalaya Tennis

Shri Anil Mohan, an Assistant Commandant of 50th Battalion, CRPF won the Meghalaya Spring Lawn Tennis singles title in Shillong in June this year.

He defeated last year’s winner Siddharth Rathore (6-1 and 6-2) in the final.

The competitions were organized by the Meghalaya Lawn Tennis Association.

Ajmer top in MT Competitions

Ajmer Range won the Inter-Range M. T. competitions held in Neemuch on April 25 and 26, 1988.

Calcutta and Chandigarh Ranges trailed in that order for the next two placings.

Calcutta win in Swimming

Calcutta Range bagged top honours in Inter-Range Swimming championships held at Gandhinagar in Gujarat from May 10 to 14, 1988.

Ajmer and Hyderabad Ranges were second and third, respectively.

In the waterpolo matches, Ajmer Range emerged winners.

Calcutta win gymnastics title

Calcutta Range lifted the Inter-Range Gymnastics Championship trophy at the competitions held at Neemuch from June 25 to July 1, 1988.

Hyderabad and Madras Ranges settled for the next two spots in that order.

Neemuch win

Neemuch Range won the 10-day Inter-Range Hockey Tournament held at Group Centre, Rampur from May 1 to 10,1988.

Calcutta Range second were while Ajmer trailed in the third spot.

Last year's winners, Hyderabad Range had to stay content in fourth place.

Madras first in first aid

Led by Sub Inspector Hoshiar Singh of 42 Battalion, Madras Range emerged easy winners in the 22nd Inter-Range First Aid Competitions held at Kalinga Stadium at Bhubaneswar from April 27 to 29, 1988. Madras scored 625½ out of a possible 800 points.

Neemuch and Gauhati Ranges trailed far behind with 482½ and 464½ points, respectively.

SI Hoshiar Singh topped the individual viva voce tests with 69 out of 75 while his teammate Head Constable Hira Lal followed in second spot with 71 points. Constable Devi Dutt (Patna) was third (631).

Shri Satish Kumar, Additional DIGP, Group, Centre, Bhubaneswar gave away the prizes.

AJMER WRESTLE TO TOP

Ajmer Range secured top spot in the Inter-Range Wrestling competitions held at Nagpur from July 1 to 7, 1988.

Hyderabad and Delhi Ranges secured the next two places.

Hyderabad win Kabaddi

Hyderabad Range claimed top spot in the Inter-Range Kabaddi competitions held at Neemuch from July 10 to 16, 1988.

They defeated Ajmer Range in the final. Delhi secured the third place.

Scooters for CRPF men

Eleven Bajaj scooters were handed over to the staff of CRPF Group Centre at Nagpur on May 6,1988. These were given under the Citibank financial assistance scheme.

The Citibank extends cent percent loan facilities to government employees with salary up to Rs. 25,000 per annum on simple interest of 10.5 percent per annum. This is, however, subject to the condition that the employer agrees to deduct instalments from the salary of the beneficiary.

Shri E. S. Bakhtawar, Addl. DIGP of Group Centre, Nagpur handed over the scooters to the staff at a simple function in the CRPF campus. Shri Ajay Kumar Patni, Director of M/S Arun Automobiles, Nagpur that had supplied the scooters was also present.

Van Mahotsava in Rampur

Van Mahotsava was organized in the CRPF Campus in Rampur on July 30 and 31, 1988.

The Conservator of Forests of Bareilly region, Shri S. H. A. Rizvi, presided over a brief function on the occasion.

Shrimati Veena Mathur, wife of Shri S. N. Mathur, Deputy Director (Operations) led the gathering in planting the saplings. Over 250 saplings were planted as a first step towards a drive to plant 20,000 trees during the current year.

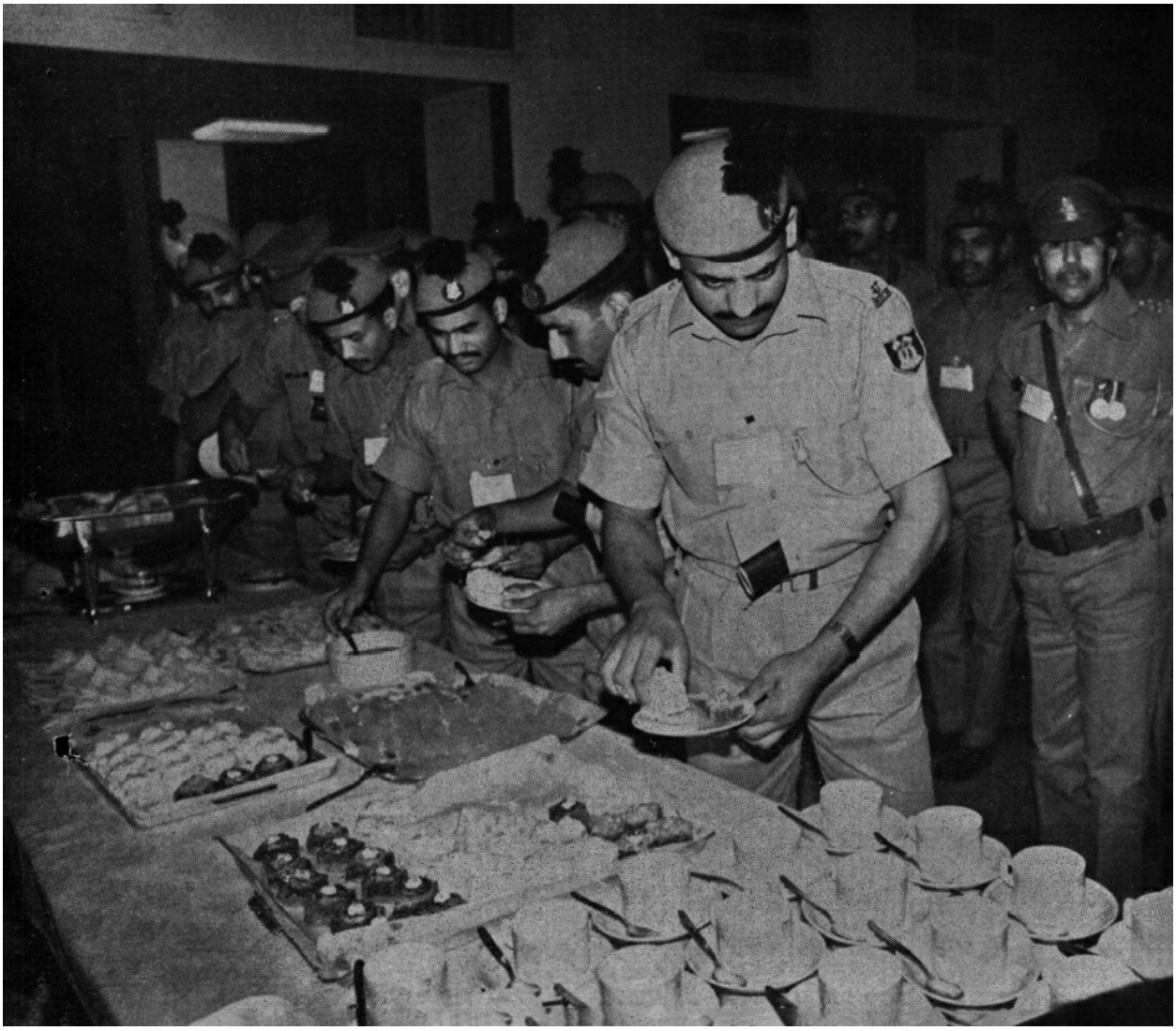
Risk Fund Benefits Enhanced

The quantum of financial benefits for the Central Reserve Police Force personnel out of the Risk Fund has been enhanced.

In death cases, the next of kin will be paid a lump sum amount of Rs. 25,000, apart from Rs. 400 per month for 20 years. It was Rs. 17,000 till recently.

Those incapacitated permanently will be paid Rs. 25,000 in lump sum and will also be eligible to draw Rs. 400 per month for 20 years or till death, whichever is earlier. Hitherto only a sum of Rs. 15,000 was being paid in addition to Rs. 200 per month for 15 years.

These benefits are in addition to the usual financial aid given in accordance with the existing Government rules.



The gallant jawans being treated to refreshments at the rewards presentation ceremony.

Regd. No. 45950/87



The Home Secretary Shri C. G. Somaiah, has a look at the captured arms on display. Accompanying him is the CRPF Director General, Shri P. G. Halarnkar.

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की मासिक पत्रिका

सीआरपीएफ समाचार

खंड II अंक 5

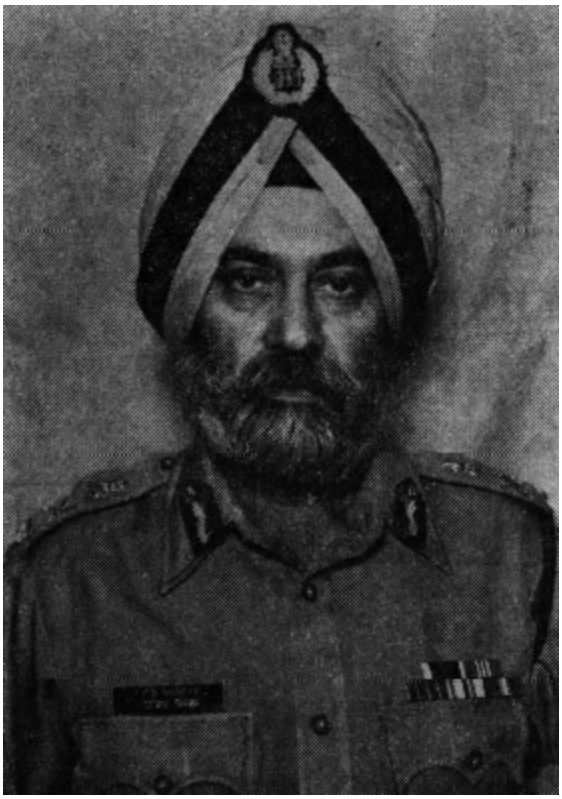
मूल्य : 1.60 रुपए 31 अगस्त, 1988 9 भाद्रपद शक संवत 19



प्रगति मैदान नई दिल्ली में हुए सैनिक सम्मेलन को संबोधित करते हुए महानिदेशक श्री प. ग. हलर्नकर ।

'छाया: सतीश खन्ना'

श्री भिंडर बल के नए अपर महानिदेशक



12 अगस्त, 1988 को श्री पी. एस. भिंडर ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के अपर महानिदेशक पद का कार्यभार संभाल लिया। इससे पहले श्री भिंडर हरियाणा प्रोसी-क्यूशन विभाग के महानिदेशक थे। श्री भिंडर भारतीय पुलिस सेवा (1958 बैच) के हरियाणा कैडर से हैं।

२२वीं अंतर क्षेत्रीय वालीबाल प्रतियोगिता

5 से 10 अगस्त, 1988 तक केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के ग्रुप केन्द्र पिंजौर में 22वीं अन्तर क्षेत्रीय वालीबाल प्रतियोगिता सम्पन्न हुई। 5 अगस्त को चंडीगढ़ क्षेत्र के पुलिस उप महानिरीक्षक श्री आर० के० मेहता ने प्रतियोगिता का विधिवत उद्घाटन किया।

प्रतियोगिता में के०रि०पु० बल की विभिन्न क्षेत्रों की 14 टीमों ने भाग लिया। प्रतियोगिता का संचालन लीग कम नाक आउट आधार पर नियमानुसार किया गया।

प्रतियोगी टीमों को 4 पूलों में विभाजित किया गया था। 14 टीमों में से क्वार्टर फाइनल तक केवल 8 टीमें ही पहुंच सकीं।

क्वार्टर फाइनल मैचों के बाद समी फाइनल मैचों में केवल अजमेर, नीमच, ट्रेनिंग

क्षेत्र की टीमें ही पहुंच पाई।

पहला सेमी फाइनल मैच 9 अगस्त को अजमेर और नीमच के बीच खेला गया। जिस में अजमेर ने नीमच को 15-7-15-2 और 15-4 से पछाड़ कर फाइनल में अपना स्थान सुरक्षित कर लिया। दूसरे सेमी फाइनल में मद्रास ने ट्रेनिंग टीम को 11-15, 15-4, 15-7 तथा 15-3 से पराजित किया। 10 अगस्त को नीमच व ट्रेनिंग टीमों के बीच कड़ा मुकाबला हुआ, जिसे ट्रेनिंग टीम ने 16-14,9-15,15-6 तथा 15-2 से जीत कर प्रतियोगिता में तीसरा स्थान हासिल कर लिया।

10 अगस्त को अजमेर और मद्रास रेंज के बीच फाइनल मैच खेला गया। जिसमें अजमेर रेंज ने मद्रास को तीन कड़े खेलों में 15-5, 15-8, और 15-11 से पराजित कर प्रतियोगिता का प्रथम स्थान हासिल कर लिया।

प्रतियोगिता में अंतिम दिन चंडीगढ़ क्षेत्र के उप पुलिस महानिरीक्षक श्री आर० के० मेहता समारोह के मुख्य अतिथि थे। ग्रुप केन्द्र पिंजोर के अपर उप पुलिस महानिदेशक श्री बी० एस० कांग की पत्नी श्रीमती कांग ने विजेता खिलाड़ियों को पुरस्कार दिए।

पल्लीपुरम् में संगीत कक्ष का उद्घाटन

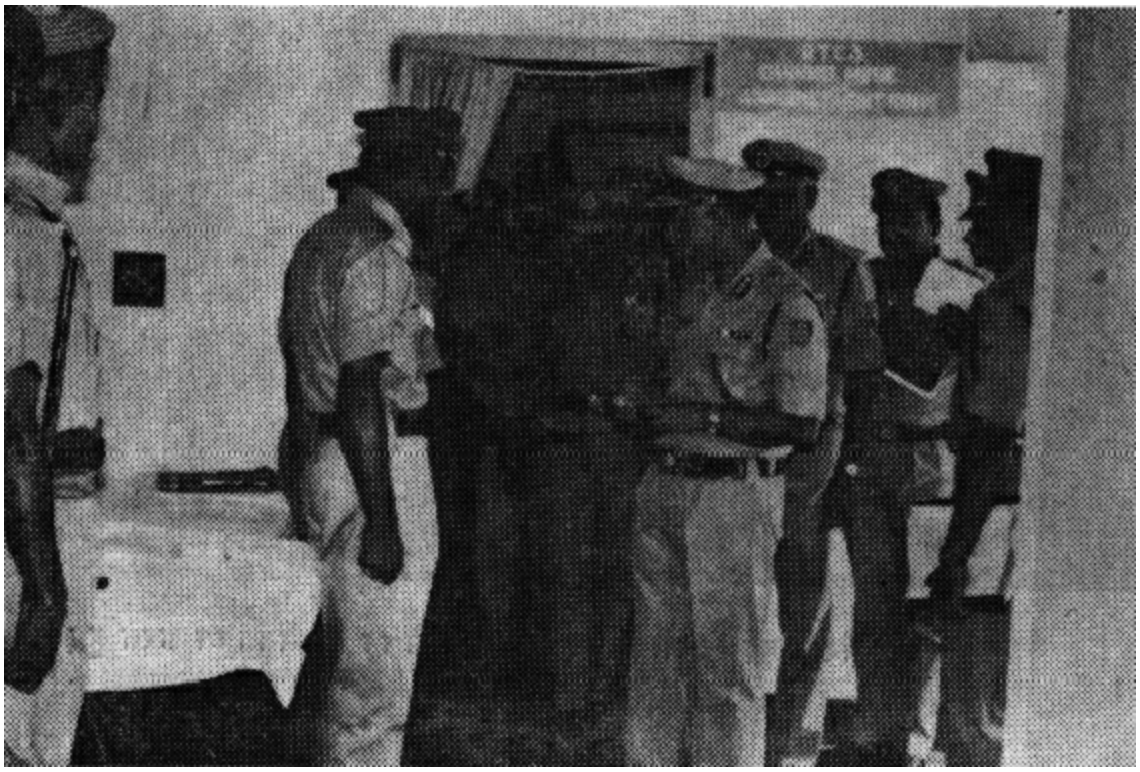
रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र-3 पल्लीपुरम में बल के महानिदेशक द्वारा हाल ही में एक संगीत और उद्घोषणा कक्ष का उद्घाटन किया गया।

इस कक्ष के स्थापित हो जाने से सभी बैरकों एवं सभी भोजन कक्षों में सभी उद्-घोषणाएं एवं संगीत एक साथ सुना जा सकेगा। इसमें प्रत्येक बैरक में अलग-अलग संगीत व उद्घोषणाओं के लिए पृथक चैनलों की भी व्यवस्था है।

इस प्रणाली की शुरूआत पर हर्ष व्यक्त करते हुए महानिदेशक महोदय ने आशा व्यक्त की कि इस तरह के कल्याण कार्यक्रम अन्य यूनिटों में भी शीघ्र ही शुरू किए जाएंगे।

दो वर्ष पूर्व शुरू हुए इस प्रशिक्षण केंद्र का दौरा करते हुए महानिदेशक महोदय ने अधिकारियों व जवानों के प्रयासों की प्रशंसा की तथा उन्हें प्रशिक्षण के मामले में सलाह भी दी।

दक्षिणी क्षेत्र के पुलिस महानिरीक्षक श्री सी० सुब्रह्मणियम तथा मद्रास रेंज के उप पुलिस महानिरीक्षक श्री पी० वी० सुब्बाराव महानिदेशक के पल्लिपुरम दौरे के दौरान उनके साथ थे।



संगीत कक्ष के उद्घाटन के बाद महानिदेशक अन्य अधिकारियों के साथ।

बहादुरों का सम्मान

गृह सचिव सोमैया द्वारा बल की भूमिका की प्रशंसा

16 जुलाई को नई दिल्ली के विज्ञान भवन में हुए एक समारोह में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के 86 कार्मिकों को गृह सचिव श्री सी. जी. सोमैया ने सम्मान पूर्वक एक लाख 43 हजार रुपए के पुरस्कार प्रदान किए। ये वे बहादुर कार्मिक हैं, जिन्होंने पंजाब के अमृतसर जिले में आतंकवादियों से हुई तीन भिन्न-भिन्न मुठभेड़ों में 21 कुख्यात आतंकवादियों को मार गिराया और 14 ए. के.47 राइफलों सहित भारी संख्या में अन्य गोला बारूद बरामद किया।

इन कार्मिकों में 22 कार्मिक 19 और 63वीं बटालियन के थे, जिन्हें अमृतसर जिले के रत्तागुड़ा गांव में 16 अप्रैल को आतंकवादियों से हुई मुठभेड़ में 6 कुख्यात आतंकवादियों को मार गिराने के लिए एक हजार से 5,000 रुपए तक के पुरुस्कार दिए गए। इस मुठभेड़ में खालिस्तान कमांडो फोर्स का स्वयंभू जनरल हरी सिंह मारा गया था। लेकिन इस सब की बल को भारी कीमत चुकानी पड़ी। बल के तीन बहादुर

जवान इस मुठभेड़ में शहीद हो गए।



पंजाब में बल के जवानों द्वारा आतंकवादियों से बरामद हथियारों का निरीक्षण करते गृह सचिव।



गृह सचिव, बल के महानिदेशक व अन्य अधिकारी पंजाब में आतंकवादियों से बरामद हथियार देखते हए।

दूसरी मुठभेड़ अमृतसर जिले के भोपाराई कलां गांव में 18 अप्रैल, 1988 को हुई। इस मुठभेड़ में 24 और 47 बटालियन के जवानों ने भाग लिया था। इस मुठभेड़ में शामिल 33 कार्मिकों को उनकी बहादुरी के लिए एक हजार से चार हजार तक के नकद पुरस्कार दिए गए। इस मुठभेड़ में शामिल 47 बटालियन के उपाधीक्षक श्री एस. एस. सिंह को उनकी भूमिका के लिए 5,000 रुपए का मानदेय दिया गया।

तीसरी मुठभेड़ 10 मई, 1988 को अमृतसर जिले के सांदरा गांव के पास 19 बटालियन के जवानों और आतंकवादियों के बीच हुई। इस मुठभेड़ में 9 आतंकवादी मारे गए । मुठभेड़ में शामिल 30 कार्मिकों को उन की बहादुरी के लिए एक हजार से 4,000 तक के नकद पुरुस्कार प्रदान किये गए।

इस अवसर पर बोलते हुए मुख्य अतिथि श्री सोमैया ने कहा कि यह गर्व की बात है कि हम यहां के० रि० पु० बल के बहादुर जवानों का सम्मान करने के लिए एकत्र हुए हैं। उन्होंने कहा कि यह सम्मान किसी व्यक्ति विशेष का नहीं, अपितु पूरी फोर्स का है, जिस ने ऐसे बहादुर जवान पैदा किए और उन्हें प्रशिक्षण दिया। उन्होने पूरे बल को उस के द्वारा पंजाब, उत्तर पूर्वी राज्यों और पूरे देश में किए जा रहे कार्यों के लिए बधाई दी।

गृह सचिव महोदय ने कहा कि बल की विश्वसनीयता, कार्यकुशलता, निष्पक्ष तथा धर्मनिरपेक्ष छवि के कारण पूरे देश में इस की मांग है। उन्होंने के० रि० पु० बल की महिला बटालियन की टुकड़ी द्वारा श्रीलंका में किए जा रहे कार्य की विशेष रूप से

सराहना की।

बल के महानिदेशक श्री प. ग. हलर्नकर ने इस अवसर पर बोलते हुए बताया कि बल ने अब तक पंजाब में भारी संख्या में आतंकवादियों को पकड़ा व समाप्त किया है, जिन में 50 'ए' व 'बी' श्रेणी के आतंकवादी भी शामिल हैं। इस दौरान बल के जवानों ने 113 ए. के. 47 राइफलों, 4 एल. एम. जी., 2 एम. एम. जी. सात राकेट लांचर तथा 89 स्टेनगनों सहित करीब 17,00 हथियार बरामद किए।

महानिदेशक महोदय ने बताया कि पिछले पांच वर्षों में पंजाब में उत्कृष्ट भूमिका के लिए अब तक बल के सात जवानों को राष्ट्रपति के शौर्यवीरता के पुलिस पदक तथा 25 को शौर्यवीरता के पुलिस पदक से सम्मानित किया जा चुका है। 34 अन्य अधिकारियों एवं जवानों को शौर्यवीरता पदक दिए जाने के मामले सरकार के पास विचाराधीन हैं। महानिदेशक महोदय ने बताया कि अब तक पंजाब में आतंकवाद का सामना करते हुए बल को अपने 52 बहादुर जवानों को खोना पड़ा है।

इस अवसर पर महानिदेशक महोदय ने घोषणा की कि अमृतसर जिले में आतंकवादियों से हुई मुठभेड़ों में शामिल जवानों में से 26 को उनकी बहादुरी के फलस्वरूप पदोन्नत कर दिया गया है ।

जोखिम निधि लाभ

के० रि० पु० बल में जून, जुलाई, व अगस्त, 1988 में मृत्यु के 54 मामलों में जोखिम निधि फंड से 13 लाख 50 हजार रुपए देने स्वीकृत किए गए।

इसी तरह इन तीन महीनों में अक्षमता के 15 मामलों में कुल 2 लाख 35 हजार रुपए देने स्वीकृत किए गए।

15 कार्मिकों को शौर्य वीरता का पुलिस पदक

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 15 कार्मिकों को आतंकवादियों के विरुद्ध दिखाई गई उनकी वीरता व साहस के लिए शौर्य वीरता के पुलिस पदकों से सम्मानित किया है।

यह सम्मान प्राप्त करने वाले कार्मिक हैं--48 बटालियन के उपनिरीक्षक बंताराम (मरणोपरांत), 12 बटा० के सहायक कमांडेट इन्द्रजीत भाटिया और कांस्टेबल जी. सोमन, 49 बटालियन के उपाधीक्षक हरिसिंह, नायक बिन्देश्वर शाह तथा कांस्टेबल रोबिन पीटर, 36 बटालियन के उपाधीक्षक दुष्यंत सिंह तथा निरीक्षक जागीर सिंह, 38

बटालियन के निरीक्षक सोलासिंह, कांस्टेबल राजन तथा कांस्टेबल पांड्ेय, 61 बटालियन के निरीक्षक मोहन सिंह तथा कां० अब्दुल रशीद खां, 85 बटा० के है० कां० जिले सिंह तथा 20 बटालियन के है० कां० मेघराज ।

48 बटालियन के सब इन्स्पेक्टर बंताराम को मरणोपरांत राष्ट्रपति के शौर्यवीरता के पुलिस पदक से सम्मानित किया गया है।

10 जनवरी, 1987 को जब, सब-इन्स्पेक्टर बंताराम के नेतृत्व में के० रि० पु० बल की एक टुकड़ी तरनतारन जिले में पैट्रोल ड्यूटी पर थी, तो आतंकवादियों द्वारा उस पर घात लगा कर आक्रमण किया गया।

बल के कार्मिक अपने वाहनों से कूद कर आतंकवादियों का सामना करने लगे। अपने पिस्तौल की गोलियां समाप्त हो जानें पर सब इन्स्पेक्टर बंताराम एक कांस्टेबल से लाइट मशीन गन ले कर आतंकवादियों पर फायर करने लगे। तभी बंताराम के सीने में एक गोली लगी, मगर वह तब तक आतंकवादियों पर फायर करते रहे, जब तक कि आतंकवादी अंधेरे का फायदा उठा कर भागने में कामयाब नहीं हो गए। इसके तत्काल बाद ही बंताराम की मृत्यु हो गई।

85 बटालियन के हैड कांस्टेबल जिलेसिंह को यह पदक 2 मई 1987 को पंजाब के मलांवाला गांव में आतंकवादियों से हुई मुठभेड़ में दिखाई गई वीरता के लिए दिया गया। इस मुठभेड़ में तीन आतंकवादी मारे गये थे।

हैड कांस्टेबल जिलेसिंह अपने दल के साथ मलांवाला-फिरोजपुर मार्ग पर नाका ड्यूटी पर थे। एक ट्रक को रुकने का संकेत देने के बाद जब वह नहीं रुका तो बल के जवानों ने उसे जबरन रुकने के लिए मजबूर कर दिया। ट्रक के रुकते ही दो आतंकवादी ट्रक से कूद कर सी० आर० पी० टुकड़ी पर फायर करते हुए भागने का प्रयास करने लगे। बल के जवानों ने भी फायर का जवाब दिया, जिससे दोनों आतंकवादी मारे गए। एक अन्य आतंकवादी ट्रक की दूसरी तरफ से भागने का प्रयास कर रहा था। जिलेसिंह ने अपनी जान को जोखिम में डालते हुए उसका पीछा कर उस पर फायर किया जिस से वह आतंकवादी मारा गया।

90 बटालियन के हैड कांस्टेबल मेघराज ने 16 जुलाई, 1987, को पंजाब के रामा मंडी क्षेत्र में एक रेलवे क्रासिंग के नजदीक एक मुठभेड़ के दौरान एक कुख्यात आतंकवादी का पीछा कर उस पर गोली चलाई, जिस से वह आतंकवादी मारा गया। मेघराज को इस मुठभेड़ में दिखाई गई वीरता के लिए शौर्य वीरता का पुलिस पदक दिया गया।

15 कार्मिकों को शौर्य वीरता का पुलिस पदक

49 बटालियन के उपाधीक्षक हरिसिंह, नायक बिंदेश्वर शाह तथा कांस्टेबल रोबिन पीटर को 7 फरवरी, 1987 को अमृतसर जिले के पतलोके गांव में आतंकवादियों से हुई मुठभेड़ में दिखाई गई वीरता के लिए पुलिस पदक दिया गया है। इस मुठभेड़ में

एक आतंकवादी मारा गया तथा एक को गिरफ्तार किया गया था। दो आतंकवादी एक विवाह समारोह में शामिल थे, जिन्हें बल की पार्टी ने घेर लिया। घिर जाने पर एक आतंकवादी खेतों की तरफ भागा। नायक बिन्देश्वर शाह तथा कांस्टेबल रोबिन पीटर के पीछा करने पर उसने उन पर फायर किया। उपाधीक्षक हरिसिंह तथा दोनों जवानों ने फायर का जवाब दिया। परिणामतः वह आतंकबादी घटनास्थल पर ही मारा गया। दूसरे आतंकवादी को विवाह समारोह में शामिल लोगों की छानबीन कर गिरफ्तार कर लिया गया।

12 बटालियन के सहायक कमांडेट इन्द्रजीत भाटिया और कांस्टेबल जी. सोमन पिल्लई को यह पदक 16 अप्रैल, 1987 को जंडियाला जिले के मलोवाल गांव में एक एम्बुस के दौरान एक कुख्यात आतंकवादी को मार गिराने के लिए दिया गया।

31 दिसम्बर, 1984 को बिहार के एक गांव कैथी बीघा में आतंकवादियों से हुई मुठभेड़ में दिखाई गई वीरता व साहस के लिए बल की 68वीं बटालियन के निरीक्षक मोहनसिंह तथा कांस्टेबल अब्दुल रशीद खां को राष्ट्रपति के शौर्य वीरता के पुलिस पदक से सम्मानित किया गया है। इनके अलावा इस मुठभेड़ में शामिल बिहार पुलिस के 14 अधिकारियों व जवानों को भी यह पदक प्रदान किया गया।

इस मुठभेड़ में 10 संदिग्ध आतंकवादी तथा दो पुलिस कांस्टेबल मारे गए थे।

19 अप्रैल, 1987 को 36 बटालियन और बिहार मिलिट्री पुलिस की एक टुकड़ी के साथ बिहार के रोहतास जिला में थिलोई गांव में कुख्यात डकैत छनगुर दुशाद के गिरोह से हुई मुठभेड़ में कुख्यात डाकू छनगुर दुशाद और उसका साथी मारा गया। इस मुठभेड़ में दिखाई गई वीरता और साहस के लिए बल की 36 बटालियन के उपाधीक्षक दुष्यंतसिंह तथा निरीक्षक जागीर सिंह को शौर्य वीरता के पुलिस पदक से सम्मानित किया है इनके अतिरिक्त इस मुठभेड़ में शामिल बिहार पुलिस के एक अधिकारी व दो जवानों को भी यह पदक प्रदान किया गया।

4 जुलाई, 1986 को जब पंजाब के मलांवाला क्षेत्र में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 38 बटालियन की टुकड़ी उप निरीक्षक (अब निरीक्षक) सोलसिंह के नेतृत्व में छानबीन कर रही थी, तो उसे पता चला कि एक हकीम के घर पर आतंकवादियों का एक गुट ठहरा हुआ है। पार्टी ने तत्काल इस घर को घेर कर, बाहर निकलने के सभी रास्ते सील कर दिए। जब सब-इन्स्पेक्टर सोलसिंह ने आतंकवादियों से आत्मसमर्पण के लिए कहा तो आतंकवादी बल की टुकड़ी पर फायर करने लगे। सब-इन्स्पेक्टर सोलसिंह एक बगल की इमारत की छत पर चढ़ गए और वहाँ से आतंकवादियों पर फायर करने लगे, जिससे दो मातंकवादियों को गोलियां लगीं। तब आतंकवादियों ने एक कार में सवार हो कर भागने की कोशिश की, लेकिन कांस्टेबल राजन (जो कि एक लाईट मशीन गन के साथ भागने के रास्ते में पोजिशन लिए था) ने कार पर फायर किया। गोलियों से छलनी हो कर कार एक दीवार से टकरा गई। इस मुठभेड़ में दो कुख्यात आतंकवादी-बलबीर सिंह वरपाल उर्फ बिल्ला तथा हरीसिंह मारे गए, जबकि तीन अन्य भागने में कामयाब हो गए। मुठभेड़ में दिखाई गई वीरता के लिए सब इन्स्पेक्टर

सोलासिंह, कांस्टेबल राजन तथा कांस्टेबल पांडेय को शौर्यता के पुलिस पदक से सम्मानित किया गया है।

इस वर्ष अगस्त माह में मृत बल के कार्मिक

इस वर्ष अगस्त माह में बल के निम्न कार्मिकों की मृत्यु हुई :

कां० जी. वी. अप्पा (26 बटा०), कां० पी. डी. जोशी (12 बटा०), कां० एस. श्रीनिवासन (3 बटा०), कां० ड्रा० जगदीश चन्द्र (4 बटा०), कां० अभिजी चट्टोपाध्याय (41 बटा०), उपाधीक्षक ओ. पी० यादव (80 बटा०), कां० ड्रा० सुरजीत सिंह (95 बटा०), का. राम निवास शर्मा (76 बटा०), कां० बबन शाह (35 बटा०) का० ज्योतिश चन्द्र दास (35बटा०) है० कां० एस. के. गुरुंग (28 बटा०), कां० जे. जोन (47 बटा०), कां० सुरेश कुमार (ग्रु० के० दीमापुर), नायक राज कुमार यादव (4 बटा०), कां० अमरजीत सिंह (10 वटा०), कां० मनोज कुमार (28 बटा०), कां० उत्तम चन्द दास (6 बटा०), कां० एम० अरुलानन्द (45 बटा०), ला. ना० घनानन्द भट्ट (36 बटा०), नि० रामअवतार सिंह (19 बटा०), कां० भुजंग केशवराव गलापाडे (80 बटा०)।

निराकरण

श्रीकांत विदेश गया था, जब उसकी सास का देहांत हो गया, सास ईसाई थी, जब कि श्रीकांत हिंन्दु था, शुभचिंतकों ने तार भेज कर श्रीकांत से पूछा, तुम्हारी सास को जलाया जाये या दफनाया जाए, या तुम्हारे आने तक शव संलेपन कर रख दिया जाये?

'सब कुछ कर दो, श्रीकांत का जवाब आया, कुछ भी बाकी मत रखना, जिससे कोई आशंका न रहे।'

बालिका की जान बचाई

अमृतसर स्थित स्थानीय माल मंडी के नजदीक एक जोहड़ में काफी पानी एकत्र हो गया है । इसके नजदीक ही एक जूनियर बेसिक प्राथमिक विद्यालय है, तथा यहीं पर के० रि० पु० बल की 44 बटालियन के जवान तैनात रहते हैं। 6 अगस्त, 1988 को प्रातः लगभग 10.30 बजे प्रशिक्षण कार्यों में रत कुछ जवानों ने एक बच्ची को रोते हुए सुना, पूछने पर उसने बताया कि बगल के जौहड़ में उसकी बहन डूब रही है, इतना ज्ञात होने पर नायक जनक राज, सिपाही इन्द्रदेव पांडेय, सिराज अहमद, रणजीत सिंह तथा लक्ष्मणसिंह अपनी वर्दी पहने ही इस गंदे तालाब में कूद पड़े और अपनी जान पर खेल कर इस बालिका को बाहर निकाल लाए। बालिका की हालत काफी चिन्ताजनक थी।

उसे तत्काल अस्पताल लाया गया, जहां 44 बटालियन के चिकित्सा अधिकारी के प्रयासों से बालिका शीघ्र ही होश में आ गई।

जवानों के इस साहसिक कार्य की बालिका के अभिभावकों, शिक्षकों, नागरिकों एवं स्थानीय प्रशासनिक अधिकारियों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की।

बाढ़ पीड़ितों की सहायता

चूराचांदपुर (मणिपुर) में स्थित के० रि० पु० बल की पहली बटालियन के जवानों ने बाढ़ पीड़ित नागरिकों की 30 और 31 जुलाई 1988 को जान और माल की रक्षा की। इस बटालियन के कमांडेंट को 30 जुलाई, 1988 की मध्य रात्रि को सूचना प्राप्त हुई कि गांव रंगकाई तथा सैकोर बुरी तरह बाढ़ से प्रभावित हैं। इन इलाकों में रतुगा नदी में आई बाढ़ से भारी तबाही हो रही है। कमांडेन्ट ने तत्काल सशक्त और कार्यकुशल जवानों की एक प्लाटून को उपाधीक्षक मुन्शीराम तथा बिहारीलाल के नेतृत्व में प्रभावित क्षेत्र की ओर भेजा। यह प्लाटून पूरी रात तथा अगले दिन इस क्षेत्र में राहत व बचाव कार्यों में लगी रही। इस प्लाटून ने स्थानीय लोगों को एक गुमशुदा व्यक्ति को ढूंढ़ने में भी मदद की। जवानों द्वारा किए गए इन बचाव राहत कार्यों की स्थानीय नागरिकों एवं प्रशासनिक अधिकारियों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की।

"बल की गौरवशाली परंपराओं को बनाए रखें"

सैनिक सम्मेलन में महानिदेशक का आह्वान

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक श्री प० ग० हलर्नकर ने बल के सदस्यों को आह्वान करते हुए बल की दीर्घकालीन गौरवशाली परंपराओं को बनाए रखने तथा अपने कार्य और मेहनत से बल के नाम को और गौरव प्रदान करने पर जोर दिया है।

श्री हलर्नकर दिल्ली के प्रगति मैदान में 21 अगस्त, 1988 को एक सैनिक सम्मेलन में बोल रहे थे। इस सम्मेलन में राजधानी स्थित बल की विभिन्न वाहिनियों, कार्यालयों, अस्पताल तथा महानिदेशालय के 1200 कार्मिक उपस्थित थे।

महानिदेशक महोदय ने बल में बल के सदस्यों व उनके परिवार बालों के कल्याण के लिए किए जा रहे कार्यों की भी जानकारी दी । सम्मेलन के दौरान सदस्यों को

संबोधित कर दिए गए महानिदेशक महोदय के भाषण के कुछ अंश नीचे दिए जा रहे हैं।

"साथियो, मुझे मालूम है कि आप लोग मुश्किल हालात में, देश भर में कई जगहों पर अपनी ड्यूटी कर रहे हैं। इन मुश्किलों के बावजूद भी सी. आर. पी. ने पंजाब, श्रीलंका, दार्जिलिंग, मणिपुर आदि में बहुत अच्छा काम किया है। पंजाब में अभी कुछ दिन पहले सी० आर० पी० ने आपरेशन ब्लैक थंडर में बहुत सराहनीय काम किया और उसके लिए प्रधानमंत्री और गृह मंत्री जी ने हमारी प्रशंसा की है। सी० आर० पी० एफ० ने इस साल में अपने शानदार कारनामों के लिए 31 गैलेन्टरी मैडल भी प्राप्त किए हैं। यह हमारे लिए गौरव की बात है।

"जहां तक दिल्ली का प्रश्न है, जहां आप लोग रहते हैं, मुझे आप की कठिनाइयों के बारे में पता है। और आप यह भी जानते हैं कि हम लोग पिछले कुछ समय से दिल्ली में आपकी सहूलियतों के लिए कुछ काम कर रहे हैं। 41 बटालियन, 58 बटालियन, 31 बटालियन में बैरकें बनाई गई हैं। 85 बैरकें और बनाने के लिए सी. पी. डब्ल्यू. डी० से सामान लिया जा रहा है। बिजली पानी की व्यवस्था हुई है। प्रीफेब्रीकेटेड हट्स जगह-जगह पर लगाए जा रहे हैं। संतरी बाक्स दिए जा रहे हैं, इत्यादि इत्यादि।

"चिकित्सा के लिए काफी लोगों को दिल्ली से झड़ौदा कलां बेस अस्पताल में जाना पड़ता है। इस कठिनाई को ध्यान में रखते हुए, अब हम दिल्ली में ही इसका इन्तजाम कर रहे हैं। 24 तारीख को हम लोग एक छोटा अस्पताल जिसमें सारी सहूलियतें होंगी, आर. के. पुरम में आई. जी. के स्टाफ कैम्प में शुरू करने जा रहे हैं।

"जैसा आप जानते हैं कि सी० आर० पी० के लोगों के बच्चों की पढ़ाई में बड़ी दिक्कतें हैं। इन बच्चों के लिए अच्छी और सस्ती शिक्षा देने के लिए हमने दिल्ली में रोहिणी में एक पब्लिक स्कूल इस साल खोला है, इसमें 60 प्रतिशत सीटें सी० आर० पी० के बच्चों के लिए रखी गई हैं और 40 प्रतिशत अन्य लोगों के लिए। अपने बच्चों के लिए फीस बहुत कम है। हमने होस्टल में रहने वाले बच्चों के लिए विशेष कोचिंग का भी प्रबंध किया है, ताकि हमारे बच्चे अन्य बच्चों के पढ़ाई के स्तर तक पहुंच सकें। शिक्षा के मामले में हम मैरिट स्कालरशिप की संख्या 1,737 से बढ़ाकर 3,757 कर रहे हैं। जिससे 2,000 से भी अधिक और लोगों को फायदा होगा। 10वीं और 12वीं कक्षा के बोर्ड की परीक्षा में मैरिट लिस्ट में प्रथम 10 स्थानों में आने वाले बच्चों को 5,000 रुपए का इनाम दिया जाएगा। इसके अलावा जो बच्चे इन परीक्षाओं में 90 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त करेंगे, उनको क्रमशः 1,000 रुपए और 1,500 रुपए का इनाम दिया जाएगा।

"यूनिट वेलफेयर फंड से सभी कर्मचारियों को ऐनक खरीदने के लिए 100 रु० देने के लिए आदेश जारी किए जा रहे हैं। सेंट्रल वेलफेयर फंड से उन कर्मचारियों को जो अस्पताल में भर्ती हैं और कोई छुट्टी नहीं रह गई है, पूरी बेसिक पे मदद के तौर पर दी जा रही है। इसी फंड से हम लोग जवानों के लिए कुछ जगहों पर कम कीमत में मकान बनाने की शुरुआत भी कर रहे हैं। इसके अलावा, हम कापरेटिव हाउसिंग सोसाइटी

भी कुछ जगह बनाने की कोशिश में हैं। जिसमें दिल्ली और आस पास की जगह शामिल हैं। हमारे फंडों से भुगतान को, अब काफी सरल कर दिया गया है । जैसे सारे भुगतान अब सीधे डाइरेक्टरेट से होंगे, परिवारों को सबसे नजदीकी ग्रुप सेंटर से मासिक भुगतान, रिस्क फंड वगैरह से किया जाएगा।

"आपको यह सुनकर खुशी होगी कि भारत सरकार ने पंजाब में सेवा के लिए एक मैडल देने की घोषणा की है। इसके अलावा अगले साल सी० आर० पी० की स्वर्ण जयंती के अवसर पर भी कर्मचारियों को एक मैडल दिया जाएगा।

"जहां एक तरफ हम इन सुविधाओं की बात कर रहे हैं वहां हमें आपकी समस्याओं के बारे में भी पूरा ध्यान है, खासकर वेतन वगैरह के बारे में, जो पिछले पे कमीशन के बाद लागू किए गए हैं। हम भी आपकी तरह चिंतिति हैं कि हमारे सिपाही, सब इंस्पेक्टर एवं इंस्पेक्टर का वेतनमान दिल्ली पुलिस के बराबर नहीं है। इस बात को हमारे पिछले महानिदेशक श्री पांडेय ने बड़ी जोर से उठाया था। हम लोगों की कोशिशों से भारत सरकार ने केन्द्रीय पुलिस बल के लिए एक खास कमेटी का गठन किया है, जो इन कमियों पर विचार कर रही है । मैं आपको यकीन दिलाता हूं कि हम लोग इस काम में अपनी पूरी कोशिश करेंगे ।

"हम लोग सिपाहियों और दूसरे कर्मचारियों के समय से प्रमोशन न होने के बारे में भी काफी विचार कर रहे हैं । एक कमेटी इस विषय पर विचार कर रही है। मिनिस्ट्रीयल स्टाफ के लिए सरकार ने एक कैडर रिव्यू कमेटी बनाई है, जो जल्दी ही अपनी रिपोर्ट दे देगी। पैरा मैडिकल स्टाफ के लिए भी एक कमेटी बनाई जा रही है। एस० आई० यू० की सिफारिशों को जल्दी लागू करने के लिए मैंने गृह सचिव को अलग से एक पत्र लिखा है, जिसमें मैंने अनुरोध किया है कि इसको ग्रुप सेंटर की स्कीम के साथ न जोड़ा जाए।

"जहां शासन आप लोगों की जरूरत और सुविधा का ध्यान कर रहा है वहीं हम आपसे यह आशा भी करते हैं कि आप अपनी ड्यूटी जिम्मेदारी के साथ निभायेंगे मुझे यह कहते हुए अफसोस हो रहा है कि हमारे में से कई लोग अपनी जिम्मेदारी ठीक ढंग से नहीं निभाते हैं। उदाहरण के तौर पर अभी कुछ ही दिन पहले दिल्ली पुलिस के एक उच्च अधिकारी ने हमारे एक सबइन्स्पेक्टर को ड्यूटी के दौरान शराब के नशे में पाया। इसी तरह कुछ दिन पहले मैंने एक मंत्री जी के घर पर ड्यूटी करते हुए एक संतरी और गार्ड कमांडर को अखबार पढ़ते हुए पाया । यह कोई अच्छी बातें नहीं हैं। हम लोग आखिरकार वर्दी वाले ट्रेड लोग हैं। हमें जो कुछ ट्रेनिंग में सिखाया जाता है, उसको नहीं भूलना चाहिए। अगर हम अपनी ट्रेनिंग भूल जायेंगे, तो अपना ही नुकसान करेंगे। और यही कई बार हो चुका है।

"दूसरी तरफ हम लोगों को गुस्से में आकर गलत काम नहीं करना चाहिए । हमारा काम जोखिम से भरा हुआ है, जिसमें कभी कभी कुछ लोगों को बलिदान भी देना पड़ता है। ऐसे समय में हम लोगों को अपने पर काबू रखना चाहिए और तैश में आकर कोई गलत कदम नहीं उठाना चाहिए, जिससे हमारी बदनामी हो ।

“गुस्से में ऐसे गलत काम करने के साथ साथ हमारे कई लोग लापरवाही भी करते हैं । जैसे हमारे ड्राइवर, जिन्होंने सिर्फ इस साल में ही 80 से ज्यादा सी० आर० पी० एफ० की गाड़ियों के एक्सीडेंट कर दिए, जिसमें हमारी फोर्स के 9 लोग मारे गए और 43 जख्मी हुए। ऐसी लापरवाही जो जान और माल को नुकसान पहुँचाये ठीक नहीं है। आखिरकार हमें अपने बाल बच्चों का भी ध्यान रखना चाहिए। गाड़ी तेज चलाना कोई बहादुरी का काम नहीं है। मैं अपने ड्राइवरों से अपील करता हूं कि वे इस बात का ध्यान रखें।

“जहां तक इस सैनिक सम्मेलन का सम्बन्ध है मैंने आप लोगों के भेजे हुए प्वाइन्टस देख लिए हैं और अधिकतर उनके बारे में अभी बता भी दिया है। फिर भी अगर आप में से कोई कुछ कहना चाहता है, तो मुझे बताए और जो भी बात आप कहें, वह सारी फोर्स के हित के लिए होनी चाहिए।”

उपस्थित कार्मिकों ने, नर्सिंग एलांउस, चमड़े की बैल्ट जारी किए जाने, पेंशन के शीघ्र भुगतान, महिला बटालियन के कार्मिकों के लिये और आवासीय सुविधाओं, पे कमीशन की रिपोर्ट के अनुसार मकान किराए भत्ते, रेलों में बल के कार्मिकों के लिए आरक्षण, नायक मोची एवं फालोअरस के लिये तरक्की के मौके तथा अर्द्ध चिकित्सकीय कर्मचारियों के लिये वर्दी व राशन मनी के बारे में सवाल पूछे।

महानिदेशक श्री प० ग० हलर्नकर ने उन्हें जवाब देते हुये बताया कि पेंशन भुगतान प्रक्रिया को सुचारू बनाने के प्रयास किये जा रहे हैं। ताकि अवकाश ग्रहण करने के बाद मिलने वाली राशि अवकाश ग्रहण करने वाले दिन मिल सके। कई मामलों में ऐसा किया भी गया है। जब कभी भी इस भुगतान में देरी हुई है तो वह कागजातों के अधूरेपन के कारण ही हुई है। उन्होंने सलाह दी कि अपने उत्तराधिकारी के बारे में ठीक से भरें।

महानिदेशक महोदय ने बताया कि कई मामलों में बाकी भुगतान अवकाश ग्रहण करने वाले दिन ही कर दिया जाता है।

महानिदेशक महोदय ने यह भी बताया कि कुछ रेलों में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के कार्मिकों के लिए विशेष आरक्षण के प्रस्ताव को रेल मंत्रालय ने स्वीकार नहीं किया।

अराजपत्रित तथा अधीनस्थ अधिकारियों की तरक्की के मामलों के लिए एक समिति का गठन किया गया है, वही इस मामले को देखेगी, महानिदेशक महोदय ने बताया।

उन्होंने बताया कि सरकार ने अर्द्ध चिकित्सकीय कार्मिकों को काम्बेटाइज (Combatize) करने का फैसला किया है। लेकिन वर्दी व राशन भत्ता केवल उन्हीं कार्मिकों को मिलेगा, जो ‘काम्बेटाइज’ होना चाहेंगे।

सैनिक सम्मेलन में महानिदेशक का आहवान

महानिदेशक महोदय ने सदस्यों को अधिक मदिरापान के संबंध में भी चेतावनी दी।

उन्होंने कहा कि हमें ऐसा कोई भी कार्य नहीं करना चाहिए जिससे बल को बदनामी हो। उन्होंने सदस्यों को अपनी ड्यूटी पूरी सावधानी से करने और किसी भी स्थिति में संतुलन न खोने का आहवान किया।

अन्त में महानिदेशक महोदय ने सदस्यों से बातचीत कर पाने के लिए खुशी जाहिर करते हुए कहा—

"आपने जो बातें कहीं हैं हम लोग उस पर पूरा ध्यान देंगे। आखिर में मैं आप लोगों को फिर याद दिलाना चाहता हूं कि आप सब लोगों की यह जिम्मेदारी है कि हम सी० आर० पी० एफ० की मशहूर परम्पराओं को बनाए रखें। इनमें हमारी धर्म निरपेक्षता, ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा, सेवा, भक्ति इत्यादि शामिल हैं। हमारी फोर्स एक छोटा भारत हैं। हम लोग अलग-अलग प्रांतों से, अलग-अलग भाषाओं को बोलने वाले अपने देश का प्रतिनिधित्व करते हैं, मैं आप से उम्मीद करता हूं कि आप हमेशा सी० आर० पी० और भारत का झंडा ऊंचा रखेंगे।

बल के परिसरों में जानवर पालने पर पाबन्दी

महानिदेशक श्री प० ग० हलर्नकर की ओर से जारी एक स्थाई आदेश के तहत के० रि० पु० बल परिसरों में किसी भी तरह के पशुओं को पालने पर पाबंदी लगाने का निर्देश दिया गया है।

आदेश में कहा गया है कि के० रि० पु० बल के ग्रुप केन्द्रों या अन्य परिसरों में कोई भी जानवर नहीं रखा जाएगा। जिन लोगों के पास अभी बल के परिसरों के अन्दर कोई जानवर है, वह उसे 31 अगस्त से पहले-पहले हटा दें। इसके बाद किसी को बल के परिसरों के अन्दर गाय, भैंस या बकरी आदि रखने की अनुमति नहीं दी जाएगी। परिसरों में सुअर पालने पर भी पाबंदी है। व्यावसायिक कारणों से मुर्गी पालन पर भी पाबंदी रहेगी। जब कि थोड़ी संख्या में व्यक्तिगत इस्तेमाल के लिए चिड़िया आदि पालने पर पाबंदी नहीं है। लेकिन इनका प्रबन्ध व्यक्तिगत तौर पर करना होगा और इससे परिसर के अन्दर किसी तरह की गंदगी नहीं फैलनी चाहिए और न ही इनके कारण आसपास के लोगों को कोई असुविधा होनी चाहिए।

पहली बटालियन का 49वां जन्म दिवस

27 जुलाई, 1988 को केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की पहली बटालियन का 49वां जन्म दिन मनाया गया। इस बटालियन का जन्म 27 जुलाई, 1939 को नीमच में हुआ था। तब यह क्राऊन रिप्रेजेंटेटिव पुलिस के नाम से जानी जाती थी। उस समय इस का मुख्य कार्य मालवा तथा राजपूताना में कानून एवं व्यवस्था को बनाए रखना था।

पंजाब रेजीमेंट से लिए गए नुमाइंदों से बनाइ गइ यह बटालियन पहले इन्फेंट्री बटालियन के रूप में काम करती थी, इस बटालियन के पहले कमांडैंट मेजर जे. एफ. पर्ट थे।

1947 में देश के आजाद होने के बाद इस बटालियन ने मंगोल तथा जूनागढ़ जैसे राज्यों को भारतवर्ष में मिलाने में मदद दी।

इस बटालियन ने देश के विभिन्न प्रांतों में कई मौकों पर अपनी कार्यकुशलता एवं साहस का परिचय दिया है। विशेष कर मणिपुर तथा पंजाब में किए गए इस के कार्यों की सर्वत्र प्रशंसा की गई।

अब तक इस बटालियन को एक जार्ज क्रास फार गैलंट्री, तीन किंग्स पुलिस मैडल फार गैलंट्री, पांच इंडियन पुलिस मैडल, 19 पुलिस मैडल फार गैलंट्री, दो राष्ट्रपति के पुलिस फ्री सर्विस मैडल फार गैलंट्री तथा पांच प्रधान मंत्री के लाइफ सेविंग मैडल मिल चुके हैं।

बटालियन के 49वें जन्म दिवस पर भेजे अपने शुभकामना संदेश में इम्फाल हवाई अड्डे के मुख्य अधिकारी ने कहा है कि वे अपने तमाम विभागीय सदस्यों तथा राष्ट्रीय हवाई अड्डा प्राधिकरण, इम्फाल की तरफ से के० रि० पु० बल की पहली बटालियन को उसके 49वें जन्म दिवस पर बधाई देते हैं।

जवान घायल

आतंकवादियों द्वारा एक सी० आर० पी० पोस्ट पर किए गए हमले से एक जवान मारा गया तथा कुछ को मामूली चोंटें आईं।

8 जून, 1988 को थांडे स्थित के० रि० पु० बल की 44 बटा० की 'सी' कंपनी की एक पोस्ट पर आतंकवादियों द्वारा राकेट लांचरों तथा ए. के. 47 राइफलों से हमला किया गया। आतंकवादियों ने पोस्ट से लगभग 100-150 गज की दूरी पर स्थित एक मकान की छत पर से फायर किया। इस हमले में पोस्ट कमांडर हवलदार ए०जी० पाठक की मृत्यु हो गई तथा कुछ जवानों को चोटें आई।

कुख्यात आतंकवादी मारा गया

के० रि० पु० बल की 40 बटा० तथा सी. आई. ए. स्टाफ की एक टुकड़ी के साथ हुई एक मुठभेड़ में कुख्यात आतंकवादी इंद्रजीत सिंह मारा गया।

9 जून, 1988 को बल के 40 बटा० के जवानों ने सी० आई० ए० स्टाफ के साथ सदर जालंधर थाने के अन्तर्गत आने वाले सरनामा कैनाल ब्रिज पर हुई मुठभेड़ में यह आतंकवादी मारा गया। मृतक इंद्रजीत सिंह 'बी' श्रेणी का आतंकवादी था तथा उस पर

पांच पुलिस कर्मियों की हत्या सहित कई अन्य मामलों के आरोप थे। उसके पास से एक .32 बोर की रिवाल्वर भी बरामद की गई।

37वीं अखिल भारतीय पुलिस तैराकी प्रतियोगिताएं

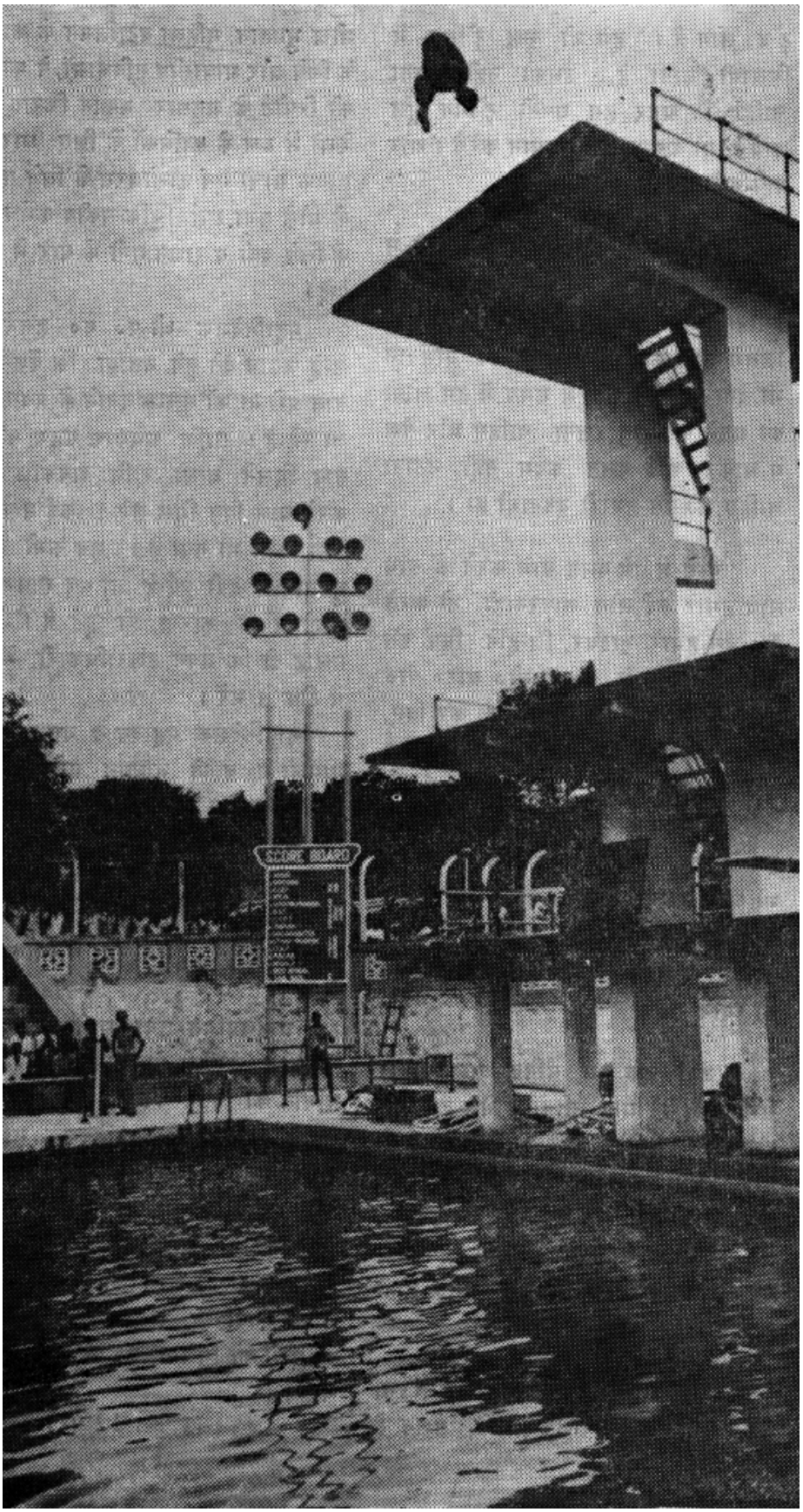
केन्द्रीय रिजर्व पलिस बल का दावा बरकरार

त्रिवेंद्रम स्थित वाटर वर्क्स के स्वीमिंग पूल में 4 से 7 अगस्त, 1988 तक 37वीं अखिल भारतीय पुलिस तैराकी प्रतियोगिताएं सम्पन्न हुई। प्रतियोगिताओं का शुभारम्भ केरल की राज्यपाल श्रीमती रामदुलारी सिन्हा ने किया।

जैसी कि शुरू से ही अपेक्षा की जा रही थी, पिछले साल की विजेता केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की टीम और सीमा सुरक्षा बल की टीम के बीच कड़ा मुकाबला हुआ। लेकिन केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की टीम प्रतियोगिता में अपना वर्चस्व बनाए रही। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की टीम ने तैराकी प्रतियोगिताओं में कुल 266 अंक प्राप्त कर जहां चैम्पियनशिप पर अपना अधिकार बनाए रखा, वहीं क्रास कन्ट्री दौड़ में भी 58 अंक प्राप्त कर अन्य सभी प्रतियोगियों को अपने पीछे धकेल दिया। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की टीम ने वाटर पोलो में भी अपने प्रतिद्वन्द्वी सीमा सुरक्षा बल को 10-4 से हरा कर अपनी श्रेष्ठता साबित कर दी।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की टीम के लिए विशेष उल्लास का एक कारण यह भी था कि उसने क्रास कन्ट्री दौड़ में पिछले 6 साल के विजेता सीमा सुरक्षा बल को पराजित कर इस चैम्पियनशिप पर अधिकार जमाया था। बल के खिलाड़ियों के उत्साह और उनकी विजय के उल्लास में बल के महानिदेशक प. ग. हलर्नकर ने तत्काल विजयी टीम को पांच हजार रुपए का पारितोषिक देने की घोषणा कर और बढ़ोत्तरी कर दी।

हालांकि सीमा सुरक्षा बल की टीम तैराकी प्रतियोगिताओं, क्रास कन्ट्री तथा वाटर पोलो में दूसरे स्थान पर रही, लेकिन उसके तैराक सुरेन्द्र टोकस को प्रतियोगिता का सर्वश्रेष्ठ तैराक घोषित किया गया। उसने व्यक्तिगत प्रतियोगिताओं में चार स्वर्ण पदक, दो रजत पदक तथा तीन कांस्य पदक प्राप्त किये।


SCORE BOARD

हाई बोर्ड डाइविंग में रवि शेखरः प्रथम

रखरः प्रथवरः

के. रि. पु. बल के के० सोमशेखरन प्रतियोगिता के सब से तेज तैराक रहे । उन्होंने 100 मीटर फ्री स्टाईल की दूरी 59.9 सैकंड में पूरी कर यह खिताब पाया।

4X100 मीटर की फ्रीस्टाइल रिले प्रतियोगिता में के. रि. पु. बल की टीम ने स्वर्ण पदक पर कब्जा जमाया। पी. पद्मनाभन, सी. के. संतरा, अजीत सांगवान तथा एस. राधाकृष्णन ने यह दूरी 4 मिनट 04.3 सैकंड में पूरी कर बल को एक और स्वर्ण पदक दिलाया।

हाई बोर्ड डाइविंग में बल के रवि शेखर कुल 412.05 अंक लेकर स्वर्ण पदक पर कब्जा जमाने में सफल रहे।

प्रतियोगिता के कुल परिणाम इस प्रकार रहे ।

100 मीटर फ्री स्टाइल में के० रि० पु० बल के. सोमशेखरन 59.9 सैकंड का समय लेकर प्रथम रहे, सीमा सुरक्षा बल के सुरेन्द्र टोकस द्वितीय, के. रि. पु. बल के एस. राधाकृष्णन तृतीय, के. औ. सु. बल के आर. पद्मनाभन चौथे स्थान पर रहे।

दूसरी प्रतियोगिता 200 मीटर फ्री स्टाइल में सी. सु. बल के सुरेन्द्र टोकस 12.0 सैकंड का समय लेकर स्वर्ण पदक प्राप्त करने में सफल रहे । के. रि. पु. बल के एस. राधाकृष्णन द्वितीय व बल के ही मोहिंदर कुमार तीसरे स्थान पर रहे।

400 मीटर फ्री स्टाइल में भी सी. सु. बल के सुरेन्द्र टोकस को स्वर्ण, के. रि. पु. बल के मोहिन्दर कुमार को रजत तथा बल के ही एस. राधाकृष्णन को कांस्य पदक मिला। सुरेन्द्र टोकस ने यह दूरी 4.41.0 सैकंड में पूरी की, जबकि बल के दोनों तैराकों ने क्रमशः 4.44.5 और 4.51 सैकंड का समय लिया।

1500 मीटर फ्री स्टाइल प्रतियोगिता बल के मोहिन्दर कुमार ने कुल 18.49.2 सैकंड का समय ले कर जीत ली।

भारत तिब्बत सीमा पुलिस के बी. हरीलाल द्वितीय तथा सी. सु. बल के प्रेमसिंह तीसरे स्थान पर रहे।

100 मीटर बैक स्ट्रोक प्रतियोगिता बल के अजीत सांगवान ने कुल 1.07.9 सैकन्ड का समय ले कर जीती। दूसरे स्थान पर बल के ही पी. पद्मनाभन तथा तीसरे स्थान पर सी. सु. बल के सुरेन्द्र टोकस रहे।

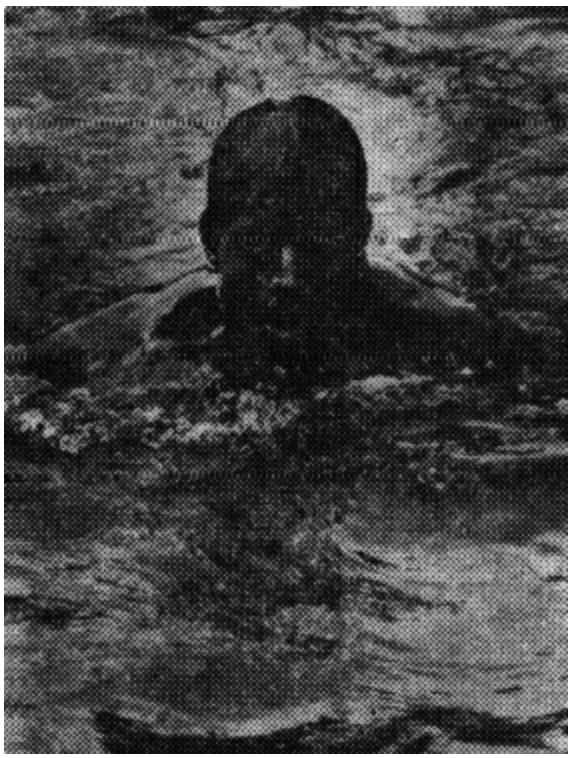
200 मीटर बैक स्ट्रोक प्रतियोगिता में के. रि. पु. बल के अजीत सांगवान ने 2.31.7 सैकंड का समय लिया और वह स्वर्ण पदक प्राप्त करने में सफल रहे, सी. सु. बल के सुरेन्द्र टोकस द्वितीय तथा बल के पी. पद्मनाभन तृतीय रहे।

100 मीटर ब्रेस्ट स्ट्रोक में बल के एस. राधाकृष्णन (1.14.3 सैकंड) प्रथम, सीमा सुरक्षा बल के राजेश शर्मा द्वितीय तथा पंजाब पुलिस के सतपाल सिंह तृतीय रहे।

200 मीटर ब्रेस्ट स्ट्रोक में के० रि० पु० बल के० एस० राधाकृष्णन (2.43.4 सैकंड)

प्रथम, बल के ही जो० आर० शैरी द्वितीय तथा पंजाब पुलिस के सतपाल तृतीय रहे।

100 मीटर बटरफ्लाई स्ट्रोक में सी. सु. बल के सुरेन्द्र टोकस (1.03.6 सैकंड) प्रथम, के० रि० पु० बल के टी. जे. जैंकब द्वितीय तथा सी. सु. बल के बी. के. शर्मा तृतीय रहे।



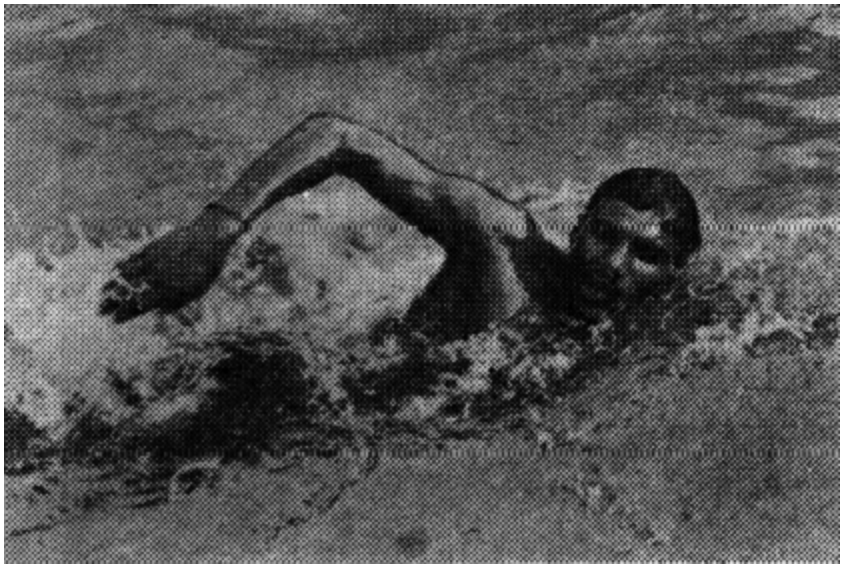
राधाकृष्णन : 100 मीटर ब्रेस्ट स्ट्रोक में प्रथम

200 मीटर बटरफ्लाई स्ट्रोक में सी. सु. बल के सुरेन्द्र टोकस कुल 2.22.0 सेकंड का समय लेकर स्वर्ण पदक पर कब्जा करने में सफल रहे, जबकि बल के पद्मपाल व टी० जे० जैकब को क्रमशः रजत व कांस्य पदक प्राप्त हुआ।

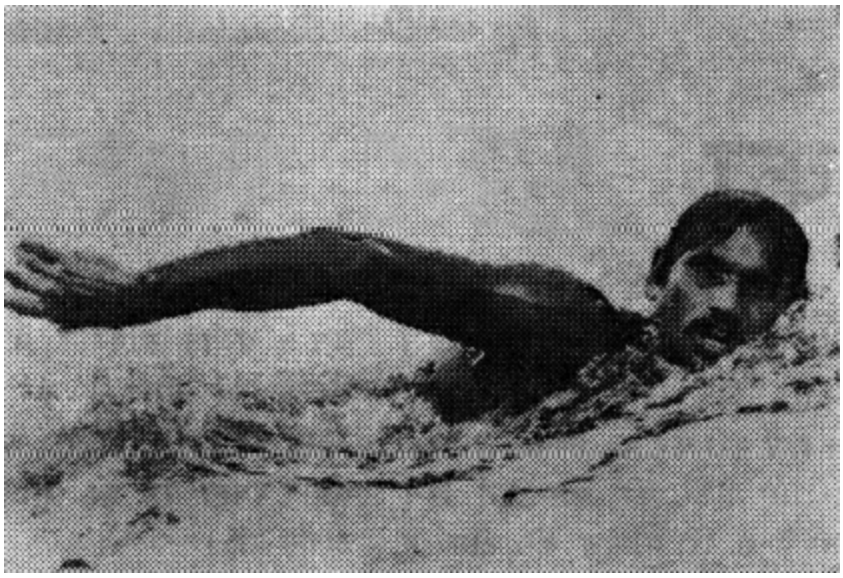
200 मीटर व्यक्तिगत मिडले में बल के टी० जे० जैकेब (2.28. सैकंड) प्रथम, व एस. राधाकृष्णन द्वितीय रहे, जबकि सी० सु० बल के सुरेन्द्र टोकस को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ।



समापन समारोह में केरल के श्रम मंत्री श्री पंकजाक्षरण के साथ महानिदेशक



मोहिंदर कुमार : 1500 मीटर फ्री स्टाइल में प्रथम



सोमशेखरन : 100 मीटर फ्री स्टाइल में प्रथम

400 मीटर व्यक्तिगत मिडले में बल के टी० जे० जैकब (5.24.9 सैकंड) प्रथम व मोहिन्दर कुमार द्वितीय रहे, जबकि इस प्रतियोगिता में भी सी० सु० बल के सुरेन्द्र टोकस को कांस्य पदक से ही संतोष करना पड़ा।

4X100 मीटर फ्री स्टाइल रिले में के० रि० पु० बल की टीम प्रथम (4.04.3 सैकंड), के० ओ० सु० बल की टीम द्वितीय (4.11.9 सैकंड) तथा भा० ति० सी० पु० की टीम तृतीय (4.19.1 सैकंड) रही।

4X200 मीटर फ्री स्टाइल रिले में भी 9.12.2 सैकंड का समय ले कर के० रि० पु० बल टीम ने स्वर्ण पदक पर कब्जा जमाया, जबकि सी० सु० बल (9.20.2 सैकंड) द्वितीय तथा के. औ. सु. बल (9.29.0 सैंकंड) तृतीय रहे।

4X100 मीटर मिडले रिले में भी बल की टीम को स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ। सी० सु० बल व भा० ति० सी० पु० क्रमशः द्वितीय व तृतीय रहे। तीनों टीमों ने क्रमशः 4.32.4, 4.40.6, तथा 4.52 सैकंड का समय लिया।

स्प्रिंग बोर्ड डाइविंग में दिल्ली पुलिस के रमेश चन्द 354.45 अंकों के साथ प्रथम रहे जबकि सी० सु० बल के होशियार सिंह (332.10 अंक) द्वितीय तथा भा० ति० सी० पु० के विनोद कुमार (305.00 अंक) तृतीय रहे।

हाई बोर्ड डाइविंग प्रतियोगिता में बल के बी० एस० रविशेखर 412.05 अंकों को प्राप्त कर स्वर्ण पदक पर कब्जा जमाने में सफल रहे। जब कि सी० सु० बल के टी० सुरेश (340.15 अंक) द्वितीय तथा उत्तर प्रदेश पुलिस के ईश्वर देव नारायण राम (337.50 अंक) तृतीय रहे।

वाटरपोलो प्रतियोगिता में के० रि० पु० बल की टीम ने सी० सु० बल को 10-4 से पछाड़ कर इस खिताब पर भी कब्जा जमा लिया । तीसरे नम्बर पर पंजाब पुलिस रही, जिसने भारत तिब्बत सीमा पुलिस को 11-9 से पराजित कर यह विजय हासिल की।

टीम चैंपियनशिप में बल की टीम को कुल 266 अंक मिले, जबकि 143 अंक प्राप्त कर सीमा सुरक्षा बल की टीम द्वितीय व 49 अंक प्राप्त कर भा० ति० सी० पु० की टीम तृतीय रही।

स्टेट चैम्पियनशिप 25 अंकों के साथ उत्तर प्रदेश पुलिस के साथ रही जबकि प्रतियोगिता का सर्वश्रेष्ठ तैराक सीमा सुरक्षा बल के सुरेन्द्र टोकस (79 अंक) को घोषित किया गया।

प्रतियोगिता के अंतिम दिन 7 अगस्त को हुई क्रास कंट्री दौड़ में 58 अंकों के साथ टीम चैम्पियनशिप के० रि० पु० बल के हाथों रही। बल की टीम में आई० डी० उमेश, जीत राम, समशुद्दीन, गुरनाम सिंह, कुलविंदर सिंह, पी० मुत्थू, एस. रामास्वामी, रतनलाल तथा कीरत सिंह शामिल थे।

72 अंक प्राप्त कर सी० सु० बल की टीम दूसरे नंबर पर रही। जबकि 81 अंक प्राप्त करने के कारण उत्तर प्रदेश पुलिस को तीसरा स्थान मिला।

व्यक्तिगत चैंम्पियनशिप में बिहार पुलिस के चन्द्रकांत भगत प्रथम, सी० सु० बल के विंद्याधर द्वितीय तथा श्रवण दास तृतीय रहे। प्रतियोगिता के अंतिम दिन मुख्य अतिथि केरल के श्रम मंत्री श्री के० पंकजाक्षण ने विजेताओं को पुरस्कार व पदक वितरित किए।



क्रास कंट्री दौड़ में विजेता बल की टीम

सी० आर० पी० एफ० कार्मिकों को सिटी बैंक के सहयोग से स्कूटर



सिटी बैंक के सहयोग से प्राप्त स्कूटरों के साथ बल के कार्मिक।

10 मई 1988 को, ग्रुप केन्द्र, नागपुर में स्थित के० रि० पु० बल के जवानों को बजाज आटो लिमिटेड के पंजीकृत विक्रेता मैसर्स अरुण आटोमोबाइल द्वारा बजाज स्कूटर प्रदान किए गए। एक साधारण समारोह में अपर उप महानिरीक्षक श्री ई० एस० बख्तावर को ये स्कूटर सौंपे गए। इस अवसर पर मै० अरुण आटोमोबाइल नागपुर के निदेशक अजय कुमार पटनी भी उपस्थित थे।

के० रि० पु० बल के कार्मिकों को यह स्कूटर बहुराष्ट्रीय बैंक सिटी बैंक की वित्तीय सहायता के अन्तर्गत प्रदान किए गए हैं। सिटी बैंक वाहन खरीदने के इच्छुक कार्मिक को शत प्रतिशत वित्तीय सहायता प्रदान कर रहा है, सिटी बैंक द्वारा प्रदान की गई इस राशि को कार्मिक के वेतन में से 36 बराबर किश्तों में काट लिया जाएगा। केन्द्रीय सरकार के उन कर्मचारियों के लिए यह एक आकर्षक योजना है जो कि अपना वाहन खरीदना चाहते हैं, सिटी बैंक हर उस कार्मिक को यह वित्तीय सहायता प्रदान करेगा, जिसके बारे में उसके कार्यालय के प्रबन्धक उसे यह आश्वासन दे देंगे कि कार्मिक को प्रदान की गई राशि, उसके वेतन में से बराबर किश्तों में काट कर बैंक को लौटा दी जाएगी।

बल के कार्यालय में हिंदी का सर्वाधिक प्रयोग

हैदराबाद व सिकंदराबाद की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 19 अप्रैल, 1988 की हुई बैठक में सिकंदराबाद व हैदराबाद स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में सर्वाधिक कार्य हिन्दी में करने के लिए कार्यालय पुलिस महानिरीक्षक, दक्षिणी

सैक्टर, के० रि० पु० बल, हैदराबाद को 'दक्षिणी मध्य रेलवे महा प्रबन्धक राजभाषा रोलिंग शील्ड' प्रदान की गई।

के० रि० पु० बल की और से सहायक निदेशक श्री जे० एस० बिष्ट ने शील्ड प्राप्त की।

सिकंदराबाद व हैदराबाद में केन्द्र सरकार के लगभग 225 कार्यालय एवं उपक्रम हैं।

स्वतंत्रता दिवस परेड में बल की टुकड़ी

बंगलोर स्थित 77 बटालियन की एक प्लाटून ने उपनिरीक्षक कुलदीपसिंह खुराना के नेतृत्व में परेड ग्राउन्ड, महात्मा गांधी रोड पर हुई स्वतन्त्रता दिवस परेड में भाग लिया।

परेड की सलामी कर्नाटक के मुख्य मंत्री श्री एम० आर० बोम्मई ने ली। पूरी परेड में बल की यह टुकड़ी अपने चुस्त लिबास और आकर्षक परेड के लिए सर्वोत्तम पाई गई और प्लाटून को प्रथम पुरस्कार दिया गया।



शील्ड ग्रहण करते हुए श्री जे० एस० बिष्ट

भाग-6

आतंक और आंसू

मार्क लिनैल व राबर्ट कालिंस अनु० अनिल गुप्ता

दो ब्रिटिश सैनिकों द्वारा अपने आयरलैंड के अनुभवों के आधार पर लिखे गए संस्मरण का चौथा भाग। इस संस्मरण की पहली पांच कड़ियां आप सी. आर. पी. एफ. समाचार के पिछले अंकों में पढ़ चुके हैं।

7 जुलाई, 1978, जैसे ही हमारा हैलीकाप्टर हरे भरे पहाड़ों और छोटे छोटे खेतों के ऊपर से गुजरा, तो मैं अचंभित रह गया कि इतना सुन्दर प्रदेश अशांत कैसे कहला सकता है, यह उत्तरी आयरलैंड के सबसे खतरनाक इलाकों में से एक था। हमें कांऊटी अरमाग के क्रोन-मेगलन में जाना था, जो कि रिपब्लिकन सीमा से तीन किलोमीटर दूर था, यह अलस्टर का मेरा अन्तिम और सबसे तकलीफदेह दौरा था।

12 सालों में मैं एक अच्छा मैरिन बन गया था दरअसल मैंने हाल ही में कमांडो ट्रेनिंग स्कूल में प्रशिक्षक का कार्य समाप्त किया था। यह मेरे सामने भविष्य की नई योजनाओं का समय था। अगले बसंत में मैं मैरिनस् से अवकाश ग्रहण करके कनाड़ा में रायल कनैडियन मांउटेड पुलिस के साथ जुड़ने वाला था। लेकिन यह अन्तिम दौरा मेरी स्मृति में सदैव के लिए अंकित हो गया।

हम पैराशूट रेजिमेंट की पहली बटालियन को छोड़ रहे थे। ब्रिटेन इस अशांत क्षेत्र में केवल अपनी सर्वोत्तम टुकड़ियों को ही भेजता है। क्रोसमेगलन में आतंकवादी किसी भी तेज रफ्तार दौड़ती हुई कार से फायर कर दो मिनट के अन्दर सुरक्षित सीमा पार कर सकते थे। यहां की अधिकतर आबादी रिपब्लिकन थी। बाकी लोग पूरी तरह तस्त्र थे। बम सड़कों पर लगाए जाते थे और जिस तेजी से हम उन्हें हटाते उससे शीघ्रता से और लगा दिए जाते थे। संख्या में बहुत थोड़े नागरिक, जिन्हें कि आतंकवादी जानते थे, इस बात को जानते थे कि कब कहां पर कोन सा बम फूट जाएगा। सभी सैनिक और अन्य सामग्री यहां पर हैलीकाप्टर द्वारा आती थी। हैलीकाप्टर सैनिक और सामग्री को उतारने के तत्काल बाद तेजी से ऊपर उड़ जाता था। ताकि वह हथियारों की रेंज के बाहर जा सके । हमें संदेह था कि अब आतंकवादियों के पास जमीन से हवा में मार करने वाले मिजाइल्स थे।

यहां पहुंचते ही हम घुटनों घुटनों कीचड़ में कूद गए। यहां पर हमारी हालत इतनी बदतर थी जितनी कि अल्स्टर में बीते मेरे पिछले नौ सालों में कभी नहीं हुई थी।

हमारा कैम्प छिपे आतंकवादियों के हमले से बचने के लिए हर समय तेज रोशनियों से दमकता रहता था। कैंप के दरवाजे विस्फोट से बचने के लिए डबल ब्लास्ट के थे। चारों ओर ऐंटी राकेट तार लगाए गए थे। कैम्प पर मोर्टर बमों से आतंकवादियों द्वारा

बार-बार हमला किया गया।

एक खास तरह के कमरे में 18 मैरिन रहते थे। ठोस धातु से बनी तिमंजली चारपाइयों में हम आक्रमण के समय संरक्षण के लिए ठुंसे रहते थे। यह बिलकुल जान हथेली पर लेकर काम करने जैसा था। मेरे बिस्तर के साथ सटी सफेद दीवार पर मैंने कई तारीखें खुरच दी थीं। और गोलीबारी और बमों के हमलों का हिसाब किताब रखा करता था।

पेरॉस की पहली वाहिनी, बिना किसी दुर्घटना के अपने दौरे के अन्त में थी।

लेकिन जैसे ही हमारी एक अन्य वाहिनी उनके बदली के लिये उस वाहिनी के निकट बसी, तो उनका यह रिकार्ड टूटा।

जैक फिसर, जिसके पैट्रोल के अन्तिम 40 मिनट रह गए थे, एक स्कूल के मुख्य दरवाजे के पास खड़ा था, कि एक रिमोट कंट्रोल बम से उसकी धज्जियां उड़ गई, अगले चार महीनों में होने वाली दुर्घटनाओं की यह एक दुखद भविष्यवाणी थी।

उस अंधेरी रात में हम गीली धरती पर कूद गए और दूर होते हैलीकाप्टर की गड़गड़ाहट सुनते रहे । अब हम इस अशांत देश में अकेले थे, हमारे साथ थे केवल हमारे बिस्तर (sleeping bags) पिठ्ठू और रेडियो जो कि सुरक्षा से सम्पर्क रखने का एक मात्र साधन था।

हम दिन में आराम करते और रात को गश्त लगाते । सीमा पार करने की कोशिश करने वाले अनेक आतंकवादियों की और उनके छिपे हुए हथियारों, बारूद, व बारूदी सुरंगों की भी हमें तलाश रहती थी।

मृत्यु किसी भी समय, कहीं भी, किसी से भी या कहीं से भी आ सकती है। हमारा शत्रु कोई विशेष वर्दी नहीं पहनता था कि उसे पहचाना जा सके। वह टू वीड़ जैकेट में कोई साधारण सा लगने वाला आदमी भी हो सकता था।

आयरिश रिपब्लिक का तिरंगा—हरा, सफेद और नारंगी—झंडा यहां ब्रिटिश क्षेत्र में पेड़ों, खंभों पर फहराता हुआ हम पर ताने कसता था । हम में इसे उतार फेंकने का साहस नहीं था। यह कोई बोबी ट्रेप भी हो सकता था। इसी तरह, कभी कभी, हम पार्क की हुई कारों के पास से दांतों को भींचे निकलते थे, और जब उनके पास से सकुशल निकल पाते थे, तो झेंपकर खीसें निपोर देते थे। आतंकवादियों की एक खास चाल यह थी कि वे किसानों के दूध के कनस्तर में रिमोट कंट्रोल विस्फोटक भर देते थे।

हम प्रायः दरवाजों और सड़कों का प्रयोग करने का साहस नहीं करते थे। कई पुलों के नीचे 225 किलो ग्राम के बम छिपाए गए थे। अतः हम ढाई-ढाई मीटर ऊँची घास से होकर गुजरते थे। कभी-कभी इसमें भी विस्फोटक बिछा दिए जाते थे । सीमा पर लगे एक सफेद निशान के अतिरिक्त और किसी तरह से हम सीमा को नहीं देख पाते थे, अदृश्य रेखा को पार करने का मतलब होता उस रिपब्लिक के साथ अपने संबंधों को बिगाड़ना । अतः हम चिन्हित नक्शों, तथा स्थानीय भूमि चिन्हों क चित्रों की सहायता लिया करते थे। हमारे एक मात्र मार्गदर्शक यही थे।

चार दिन बाद हम वापस लौटे, मैले और थके पर जीवित।

सौभाग्यवश मुझे बरमिंघम में एक शादी में शामिल होने के लिए छुट्टी मिल गई। बाहर निकलते हुए मुझे मेरा एक दोस्त, सांवला, लंबा, खुशमिजाज वेल्सनिवासी कीथ डस्टी मिलर मिल गया। उसने बेसब्रुक कैंप में बेलफास्ट हवाई अड्डे पर और बाद में बरमिंघम में (जहां मेरे चाचा मिले) पीने में साथ दिया।

वापसी में मैं डस्टी से फिर मिला। जैसे ही हम बेसब्रुक में बिछड़ने लगे, वह चिल्लाया, 'मेरी शुभकामनाएं तुम्हारे साथ हैं मार्क, अपना सिर नीचे रखो। नवम्बर में प्लाइमाउत में फिर मिलेंगे।'

"फिर मिलेंगे यार अपना ख्याल रखना।" कहते हुए मैंने अपना अंगूठा दिखाकर विदा किया।

रीमोट-कंट्रोल बम द्वारा हुई उसकी मृत्यु की खबर अगले दिन टेलीविजन में थी जो कि बाद में हमारे समाचार बोर्ड पर भी लगा दी गई।

जैसे ही वह एक पार्क की हुई कार के बगल से गुजरा कार में रखे बम से उसकी धज्जियां उड़ गई। मैंने एक शांत कोना खोजा और अपने मित्र की याद में आँसू बहाने लगा।

हम किले में घिरे हुए सैनिकों की तरह थे, जिन पर लगातार आक्रमण हो रहा हो। अगस्त में एक ट्रक लॉंचर से कैंप पर मोर्टार बम फेंके गए। सौभाग्यवश उनमें से आधे से अधिक बेकार गए। सितम्बर में सड़क पर चार आदमियों के पेट्रोल के पीछे झाड़ियों में रखा हुआ एक रेडियो कंट्रोल बम फटा, लेकिन कोई भी गंभीर रूप से घायल नहीं हुआ। अक्तूबर में आतंकवादियों ने हैलीकाप्टर पैड व ईंधन रखने के स्टोर के नजदीक कैंप की संतरी पोस्ट के नीचे एक बम रखा, लेकिन गार्ड के अलावा और कोई नुकसान नहीं हुआ।

23 अक्तूबर को क्रोसमेगलन के बीच हुए एक बम विस्फोट से हमारे पैट्रोल को वहाँ तुरन्त जाना पड़ा। हमने एक झाड़ी के पीछे एक बड़े गड्ढे के पास कुछ मैरिनस को हतप्रभ स्थिति में पाया। हमारा एक युवक अधिकारी जो हाल ही में ट्रेनिंग स्कूल से निकला था इस बम विस्फोट के स्थान से केवल तीन मीटर दूर थी। आश्चर्य है कि उसे केवल मामूली सी खरोंचें ही आई थीं।

एक फेरेट सशस्त्र कार, जिस पर मशीनगन लगी थी, हमें कवर करने के लिए हमारे साथ थी। एक बम निरोधक विशेषज्ञ और विस्फोटकों की जांच कर रहा था। सड़क के किनारे के घर बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गए थे। एक नजदीक के स्कूल की सभी खिड़कियां टूट गई थीं, तथा अभिभावक अपने रोते हुए बच्चों को घर ले जा रहे थे।

लगभग आठ वर्ष का एक लड़का, जो सकते की स्थिति में था, सीधा एक टूटे हुए बिजली के तार की तरफ बेखबर चला जा रहा था। तार से चिंगारियाँ निकल रही थीं। उसे तार से बचाने के लिए मैं उसकी तरफ भागा। वह जोर-जोर से आँसू बहाते हुए रोने

लगा। मैं उसके पास घुटनों पर बैठ गया।

'तुम कहाँ रहते हो, बेटा?'

उसने मेरी तरफ देखा, अपनी बांहें मेरे गले में डाल दी और सुबकने लगा।

'अच्छे बेटे, चलो चुप हो जाओ, अभी सब ठीक हो जाएगा।' लेकिन मैं झूठ बोल रहा था । हम इस बात को ज्यादा देर तक नहीं भूल सकते थे।

वह पीछे हटा और रोते हुए पूछा, 'क्यों ?' और लम्बी गहरी सांस लेते हुए पूछा, 'सैनिक भैया, ऐसा क्यों होता है ?'

'मैं नहीं जानता बेटे, चलो, हम तुम्हें घर पहुंचा दें।'

एक व्यक्ति ने बच्चे का हाथ पकड़ा और निकल गया। मैं उस जवान मैरिन की तरफ मुड़ा, जो एक कार के ड्राइवर से रोड़ ब्लाक का पालन करवाने में असमर्थ था। बच्चे के बारे में सोचकर, मैं क्रोधित मूड में ड्राइवर के पास गया।

'क्यों?' में चिल्लाया। उस आदमी ने मेरे चेहरे की तरफ देखा, धीरे से अपना हाथ मेरे कंधे पर रखा और कार आगे बढ़ा दी।

हमने लोगों को उनके घरों में हुए नुकसान के बाद सफाई आदि करने के लिए सहायता देनी चाही। एक औरत ने हमें अपनी खिड़की के टूटे शीशे साफ करने के लिए कहा । जब हम घर के अन्दर गए, तो वह फूट-फूट कर रोने लगी।

'यह सब कब खत्म होगा बेटा ?' वह सुबकने लगी, "मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकती। हमें इस तरह क्यों रहना पड़ता है ?'

'मैं नहीं जानता, मैं बिलकुल नहीं जानता।' "मैंने धीरे से कहा, क्या हम तुम्हारे लिए कुछ कर सकते हैं? क्या आपको डाक्टर की जरूरत है ?"

पहले तो उसने हमे आभारपूर्ण दृष्टि से देखा, फिर भय से। बाहर, आतंकवादियों के समर्थक खिलखिलाते हुए छींटाकशी कर रहे थे।

"जाओ"। वह बोली—"तुम्हें जाना होगा।"

एक हफ्ते बाद वह हमें सड़क पर मिली, मगर उसने हमें पहचानने से इन्कार कर दिया।

क्रमशः

1983 दि रिडर्स डाइजेस्ट एसोसिएशन (कनाड़ा) लि० की अनुमति से मुद्रित ।

रजि० 47167/87



वाटरपोलो प्रतियोगिता में बल के तैराकों का सी० सु० बल के गोल पर धावा

सम्पादक : एच०एस० सेठी । **सम्पादक** : एम०पी० नर्थनियल तथा अनिल गुप्ता । **मुद्रक** : सी०आर०पी०एफ० प्रेस, झड़ोदा कलाँ, नई दिल्ली-110072
स्वत्वधारक तथा प्रकाशक : महानिदेशक, के०रि०पु०बल, ब्लाक-1, सी०जी०ओ० काम्पलेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से एच०एस० सेठी ।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की मासिक पत्रिका

सीआरपीएफ समाचार

मूल्य—1.60 खण्ड II अंक—6

30 सितम्बर, 1988 8 आश्विन शक 1910



“हिंदी के उत्थान में योगदान दें”

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के कार्यालयों में समय-समय पर हिंदी में कार्य करने के लिए निर्देश जारी किए जाते रहे हैं। इस संबंध में समय-समय पर हिंदी कार्यशालाएं भी आयोजित की जाती रही हैं। इसी संबंध में बल के महानिदेशक श्री प० ग० हलर्नकर की तरफ से एक पत्र जारी किया गया है, जिस में महानिदेशक महोदय ने हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग पर बल देते हुए, कुछ आवश्यक निर्देश जारी किए हैं, नीचे वही पत्र अपने मूल रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है--

प्रिय बन्धु अधिकारी,

सी० आर० पी० में सरकारी काम-काज में हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग के संबंध में समय-समय पर गृह मंत्रालय,राजभाषा विभाग से महत्वपूर्ण आदेश जारी किए जाते हैं। इन आदेशों के अनुपालन की जिम्मेदारी कार्यालय अध्यक्षों को सौंपी गई है। राजभाषा अधिनियम व नियमों की व्यवस्थाओं के क्रियान्वयन की प्रगति की प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में केन्द्रीय हिन्दी सलाहकार समिति द्वारा समीक्षा होती रहती है। समिति की बैठकों में इस मुख्यालय के प्रतिनिधियों को भी हिन्दी के प्रगामी प्रयोग की प्रगति का लेखा जोखा देना होता है। हिन्दी की प्रगति की समीक्षा हेतु बनी संसदीय राजभाषा समिति भी समय-समय पर कार्यालयों में हिन्दी की प्रगति पर निगरानी रखती है। अपेक्षित प्रगति न होने पर विभागाध्यक्ष/ कार्यालयाध्यक्ष को जवाब तलब होना पड़ता है और कभी-कभी तो कटु आलोचना का सामना भी करना पड़ता है।

2. सी० आर० पी० में हिन्दी से संबंधित साविधिक व्यवस्थाओं व सरकारी निर्देशों को कार्यरूप देने की दिशा में काफी कुछ किया गया है। इन प्रयत्नों के बावजूद कई मामलों में कुछ कमियां देखने में आई हैं। ये कमियाँ सहजता से दूर हो सकती हैं यदि आप सभी राजभाषा संबंधी आदेशों का निष्ठापूर्वक अनुपालन सुनिश्चित कर लें। राजभाषा अधिनियम 1963 व नियम 1976 का अध्ययन कर लेना भी कार्यालयाध्यक्ष की जिम्मेदारी बनती है। सरकार ने राजभाषा नियमों में दी गई व्यवस्थाओं के अनुपालन के लिए सभी सुविधाएं व प्रोत्साहन सुलभ करा दिए हैं। केवल आपकी ओर से मात्र पहल करने की देर है। मुझे उम्मीद है कि आप सभी के सहयोग से राजभाषा के क्षेत्र में अपेक्षित प्रगति प्राप्त करने में हम सफल हो पाएंगे।

3. सभी सैक्टर कार्यालयों व ग्रुप केन्द्रों में स्वतंत्र हिन्दी एकक की स्थापना की जा चुकी है। हाल ही में इन कार्यालयों में हिन्दी टाइपिस्ट के पद बन जाने से मुझे उम्मीद है कि मूल हिंन्दी पत्राचार में काफी वृद्धि होगी। मैं चाहूंगा कि सभी अधिकारी छोटे-छोटे नोट, फाइलों पर टिप्पणियाँ/अभ्युक्तियाँ हिन्दी में ही लिखें तथा अपने अधीनस्थ कार्मिकों को भी हिन्दी में काम करने के लिए प्रेरित करें। यहां इस बात का भी उल्लेख करना चाहूंगा कि राजभाषा नीति के अनुसार आपको सरल हिन्दी का प्रयोग

करना है।

4. हिन्दी के प्रयोग के संबंध में निम्नलिखित कुछ महत्वपूर्ण कार्यों का उल्लेख इस आशय से किया जा रहा है कि आप इनका निष्ठापूर्वक अनुपालन सुनिश्चित करेंगे।

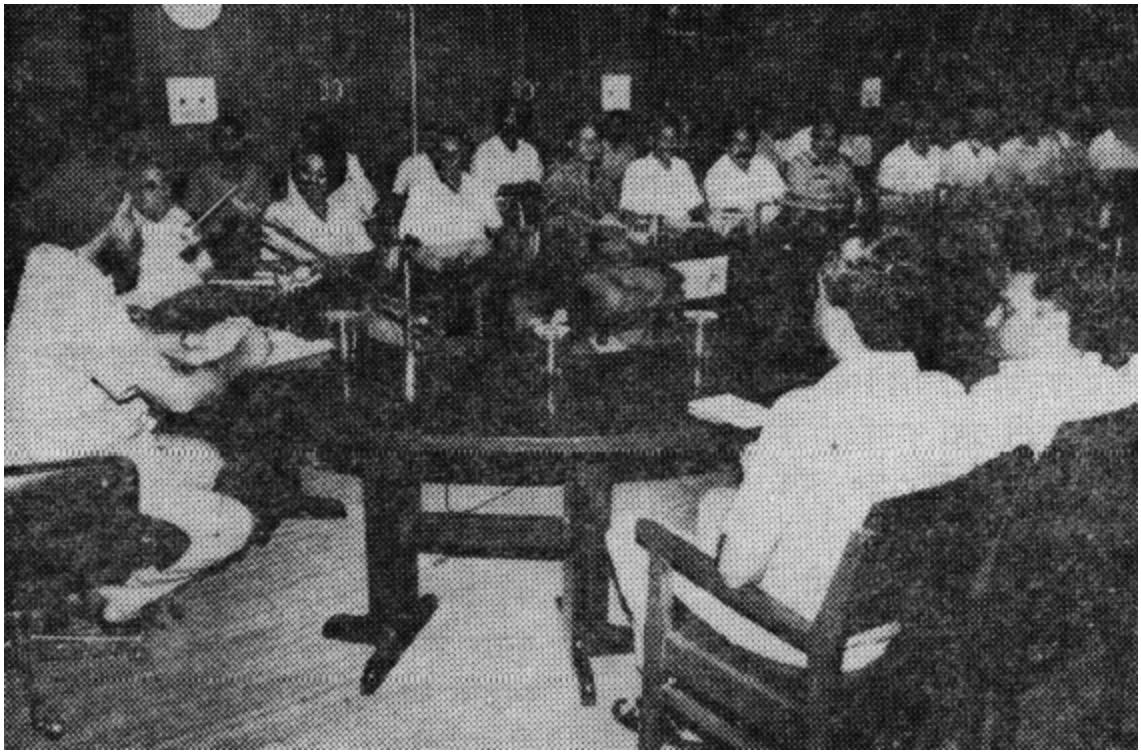
1. कहीं से भी हिन्दी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिन्दी में दिए जाएं।
2. राजभाषा अधिनियम-1963 की धारा 3(3) में उल्लिखित कागजात हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में साथ-साथ जारी किए जाएं।
3. जिन कार्यालयों में 80% या इससे अधिक कर्मचारी हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखते हैं, उन कार्यालयों को राजपत्र में अधिसूचित किया जाए।
4. प्रक्रिया साहित्य, रजिस्टरों के शीर्ष, पत्र शीर्ष, रबर मोहर, नामपट्ट, वाहनों पर बल का नाम, सम्मान नामावली, नेमटेब, आदि द्विभाषी रूप में तैयार किए जाएं।
5. अंग्रेजी के टाइपराइटर कंडम होने पर देवनागरी के ही टाइपराइटर खरीदे जाएं।
6. इलैक्ट्रानिक टाइपराइटर व टेलीप्रिंटर द्विभाषी ही खरीदे जाएं।
7. अधीनस्थ सेवाओं तथा पदों के लिए भर्ती परीक्षाओं में, वैकल्पिक माध्यम के रूप में हिन्दी के प्रयोग की व्यवस्था की जाय। इसी प्रकार विभागीय परीक्षाओं में भी हिन्दी का विकल्प दिया जाय। इनके अतिरिक्त प्रशिक्षण संस्थानों में हिन्दी माध्यम से प्रशिक्षण देने की व्यवस्था की जाए।
8. जो कर्मचारी हिन्दी का प्रयोग करने से हिचकते हैं उनकी हिचक दूर करने के लिए वर्ष में कम से कम 2 बार हिन्दी कार्यशाला अवश्य आयोजित की जाय।
9. हिन्दी/हिन्दी टाइप/आशुलिपि प्रशिक्षण के लिए प्रशिक्षण दिलाने के लिए समयबद्ध कार्यक्रम निरिचित किया जाय।
10. वर्ष में एक बार हिन्दी सप्ताह/हिन्दी दिवस मनाया जाय।
11. सभी कार्यालय अपने पुस्तकालय अनुदान का कम से कम 50% हिन्दी पुस्तकों की खरीद के लिए अवश्य खर्च करें।
12. प्रिंटिंग साइकलोस्टाइलिंग सामग्री द्विभाषी तैयार की जाय।
13. मूल पत्राचार हिन्दी में तथा फाइलों पर छोटी-छोटी टिप्पणियां हिन्दी में लिखी जायें।
14. राजभाषा से संबंधित आदेशों के कार्यान्वयन के लिए प्रस्तावित जांच बिन्दुओं पर सख्ती से अमल किया जाय।
15. सभी अधिकारी व कार्मिक राजभाषा अधिनियम-1963 व नियम 1976 का पूरी तरह अनुपालन सुनिश्चित करें।

5. अतः आशा है कि सभी अधिकारी राजभाषा अधिनियम और उसके अधीन बने नियमों के अन्तर्गत जारी उपर्युक्त महत्वपूर्ण निर्देशों/तथ्यों का पूर्णतया अनुपालन सुनिश्चित करेंगे तथा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग की दिशा में समुचित वातावरण स्थापित करने में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करेंगे।

शुभकामनाओं सहित।

आपका
प० ग० हलनकर•

महानिदेशालय में हिंदी कार्यशाला



कार्यशाला के दौरान अधिकारियों को सम्बोधित करते महानिरीक्षक श्री बी. जे. एस. स्याल

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल महानिदेशालय में 7 से 9 अगस्त, 1988 तक संयुक्त सहायक निदेशक एवं अनुभाग अधिकारी स्तर की तीन दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए महानिरीक्षक (मुख्यालय) श्री बीजे०एस० स्याल ने महानिदेशालय में अधिकारी स्तर की इस तीसरी कार्यशाला के आयोजन पर हर्ष व्यक्त किया।

उन्होंने आशा व्यक्त की कि इस कार्यशाला के माध्यम से अधिकारियों के मन में हिन्दी कार्य के प्रति विश्वास एवं जागृति उत्पन्न होगी। महानिरीक्षक महोदय ने बताया कि राजभाषा नीति व राजभाषा नियम, अधिनियम का ज्ञान प्रत्येक अधिकारी व कर्मचारी के लिए अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि जब तक अधिकारियों को राजभाषा नियमों का व्यापक ज्ञान नहीं होगा, वे राजभाषा के सम्बन्ध में अधीनस्थ कार्मिकों को दिशा निर्देश नहीं दे पाएंगे। उन्होंने नोटिंग/ड्राफ्टिग में सरल सुबोध हिंदी के प्रयोग पर बल दिया। उन्होंने प्राशा व्यक्त की कि कार्यशाला समाप्ति के बाद सभी अधिकारी

अधिक से अधिक काम हिंदी में निपटा कर कार्यशाला को सार्थकता प्रमाणित करेंगे। उन्होंने कहा कि हिंदी में हस्ताक्षर करने में किसी को भी कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए।

कार्यशाला का संचालन हिंदी अधिकारी श्री प्रेमचंद धस्माना ने किया। इस कार्यशाला में लगभग 20 अधिकारियों ने भाग लिया। 12 अगस्त, 1988 को एक परीक्षा का आयोजन किया गया जिसमें पहले तीन स्थानों पर आए अधिकारियों को महानिदेशक महोदय द्वारा नकद पुरस्कार व प्रशस्ति पत्र प्रदान करने की घोषणा की गई।•

नीमच में हिंदी कार्यशाला

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के नीमच ग्रुप केन्द्र में 1 व 2 जुलाई, 1988 को पहली बार अधिकारियों व कर्मचारियों की दो दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में 19 राजपत्रित अधिकारियों तथा 40 अन्य कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया गया। इस केन्द्र में होने वाली यह हिन्दी की सबसे बड़ी कार्यशाला थी।

कार्यशाला का उद्घाटन श्री त्रिलोचन सिंह बाहद, उप महानिरीक्षक, नीमच रेंज ने किया। इस अवसर पर श्री बाहद ने कहा कि यह हमारा कर्तव्य है कि हम अपना सरकारी कामकाज हिंदी में करें। यह हमारी कानूनी आवश्यकता है और इसका उल्लंघन किसी स्तर पर मान्य नहीं है। यह हमारा परम दायित्व है कि राजभाषा की प्रगति में अपना पूरा योगदान दें और अधिक से अधिक काम हिंदी में करना प्रारम्भ कर दें।

कार्यशाला के प्रारम्भ में नीमच ग्रुप केंद्र के अपर उप पुलिस महानिरीक्षक श्री देवेन्द्र कुमार सूरी ने नीमच केन्द्र पर इतनी बड़ी कार्यशाला आयोजित किए जाने पर हर्ष व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि हिंदी में काम करना एक संवैधानिक आवश्यकता है और हिंदी का भविष्य उज्ज्वल है।

कार्यशाला में महानिदेशालय के हिंदी अधिकारी श्री प्रेमचंद धस्माना ने हिंदी की संवैधानिक स्थिति, राजभाषा नियम, अधिनियम, वार्षिक कार्यक्रम, लक्ष्य और विभिन्न पूरस्कार योजनाओं पर प्रकाश डालते हुए हिंदी कार्य की प्रगति से सबको अवगत कराया। इसके साथ ही हिंदी में काम करने के लिए कई महत्वपूर्ण सुझावों और तरीकों की जानकारी दी गई। कार्यशाला में हिंदी वर्तनी, व्याकरण, कार्यालय टिप्पण/आलेखन, पत्र इत्यादि लिखने का अभ्यास कराया गया। •

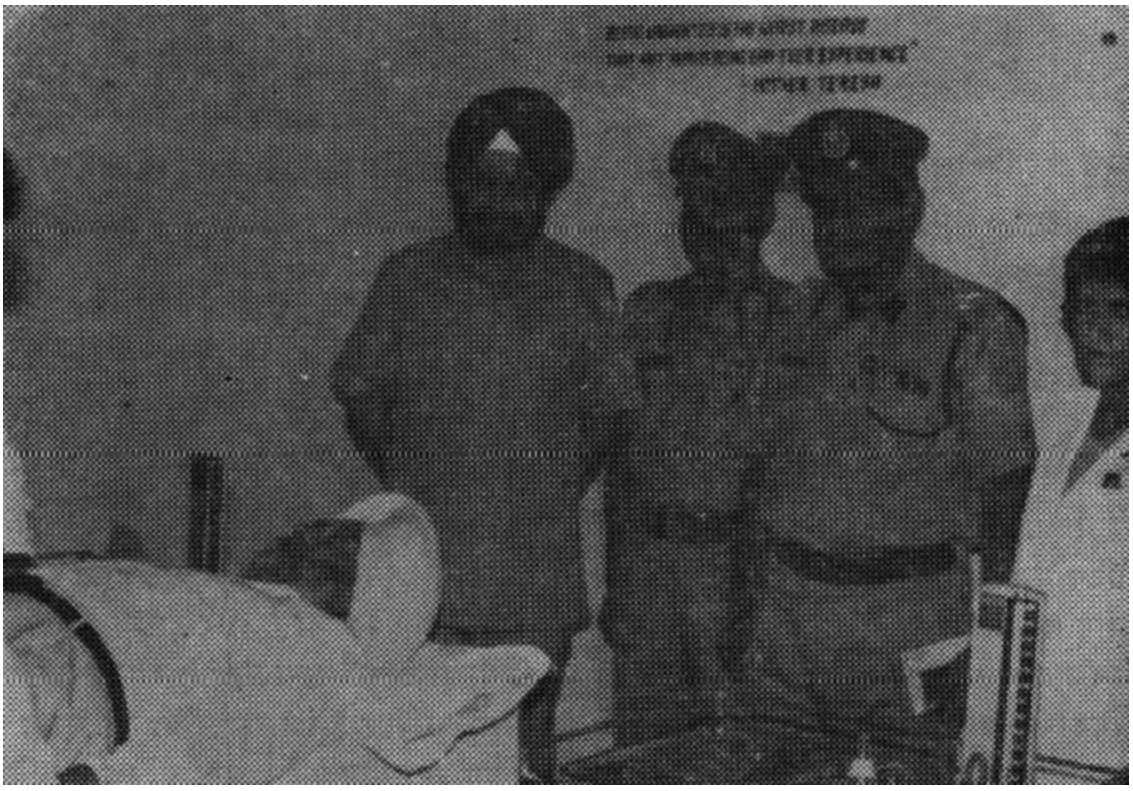
ग्र० के० बनतलाब का 20वां स्थापना दिवस

31 अगस्त व 1 सितंबर, 1988 को ग्रुप केन्द्र बनतलाब का 20वां स्थापना दिवस

हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस मौके पर बल के अपर महानिदेशक श्री भिंडर के अतिरिक्त उत्तरी पश्चिमी क्षेत्र के पुलिस महानिरीक्षक श्री जोगिंदर सिंह व कई अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। इस मौके पर एक परेड का आयोजन किया गया, जिस की सलामी श्री जोगिंदर सिंह ने ली। 1 सितम्बर को दोपहर बाद दिल्ली से पधारने पर अपर महानिदेशक श्री भिंडर ने एक रक्तदान शिविर का उद्घाटन किया। श्री भिंडर रक्तदान करने वाले पहले व्यक्ति थे, उन के बाद बल के 52 अन्य अधिकारियों व कार्मिकों ने रक्तदान किया।

बच्चों के खेलने के एक पार्क का उद्घाटन करते हुए अपर महानिदेशक महोदय ने केन्द्र में आयोजित चित्रकला प्रतियोगिता के विजेता बच्चों को पुरुस्कार भी वितरित किए। शाम को आयोजित किए गए एक सांस्कृतिक कार्यक्रम में अपर महानिदेशक व बल के कई वरिष्ठ अधिकारियों सहित जम्मू जिले के कई अन्य महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों ने भी भाग लिया।

इस मौके पर भेजे अपने एक शुभकामना संदेश में जम्मू कशमीर के मुख्य मंत्री श्री फारुक अब्दुल्ला ने बल के अधिकारियों और कार्मिकों को बधाई दी है, उन्होंने कहा कि संवेदनशील इलाकों में कानून व व्यवस्था बनाए रखने तथा नागरिकों को सुरक्षा प्रदान करने में के० रि० पु० बल की भूमिका सराहनीय है।



रक्तदान शिविर में रक्तदान करते बल के अपर महानिदेशक श्री भिंडर

अपने संदेश में जम्मू कशमीर के राज्य-पाल श्री जगमोहन ने कहा कि विषम

परिस्थितियों में बल की टुकड़ियां जिस प्रकार उन्हें सौंपे गए कार्य को पूरा कर रही है वह प्रशंसनीय है।•

उच्च चिकित्सकिय शिक्षा हेतु निर्देश

महानिदेशालय से जारी एक परिपत्र आदेश के द्वारा यह निर्देश दिए गए हैं कि 5 वर्ष से कम सेवा वाले चिकित्सा अधिकारियों को सामान्यतःअध्ययन छुट्टी मंजूर नहीं की जा सकती, अतः सिर्फ वही चिकित्सा अधिकारी पोस्ट ग्रेजुएट कोर्स में नामांकन कराने के योग्य होंगे जिन्होंने बल में 5 बर्ष की सेवा पूरी कर ली है।

बल में 5 वर्ष की सेवा पूरी कर चुके पोस्ट ग्रेजुएट कोर्स के इच्छुक चिकित्सा अधिकारी मान्यता प्राप्त मेडिकल कालिज मैं नामांकन के लिए स्थान सुरक्षित करने का प्रयास कर सकते हैं।

सामान्यतः पोस्ट ग्रेजुएट कोर्स के लिए प्रयास करने वाले चिकित्सा अधिकारियों को उनकी वरीयता के अनुसार तथा समयानुसार प्रशासनिक व अन्य कार्यों की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए ही अनुमति दी जाएगी।

विशेषज्ञों की आवश्यकता एवं कमी को ध्यान में रख कर चिकित्सा अधिकारियों को निम्नलिखित विशेषज्ञ शिक्षण के लिए नामांकन लेने की अनुमति दी जाएगी :-

1. शल्य चिकित्सा विशेषज्ञ
2. दवा विशेषज्ञ
3. स्त्री रोग विशेषज्ञ
4. निश्चेत विशेषज्ञ
5. हड्डी विशेषज्ञ
6. नेत्र विशेषज्ञ
7. महानिदेशालय की राय से किसी अन्य शिक्षण के लिए।

बल के कार्मिकों के लिए विशेष सुविधा

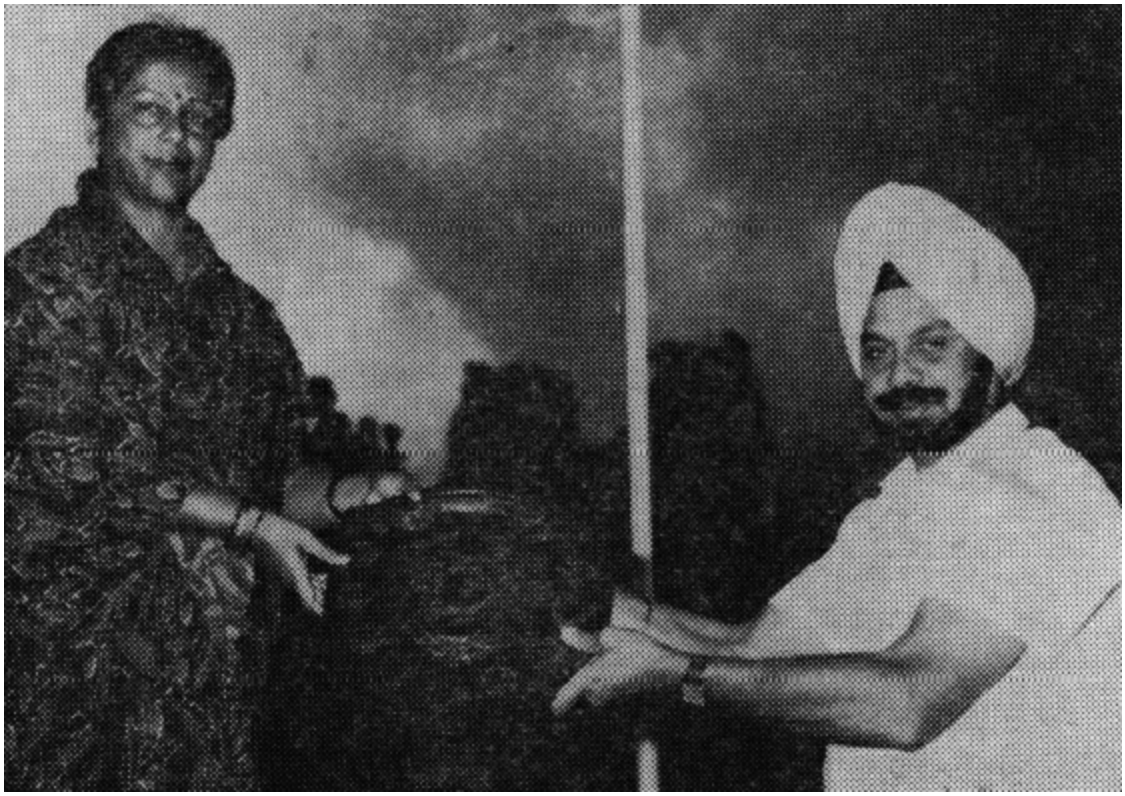
रेल मंत्रालय ने श्रीलंका में कार्य करते हुए घायल हुए सी. आर. पी. एफ. कार्मिकों के दो नजदीकी रिश्तेदारों को उनके निवास से, उस अस्पताल तक आने जाने की निशुल्क रेल यात्रा उपलब्ध कराने का निर्णय लिया है, जहां कि उन कार्मिकों का इलाज चल रहा है। यह सुविधा घायल कार्मिक के दो रिश्तेदारों को उपलब्ध कराई जाएगी। यात्रा का सारा खर्चा रेल मंत्रालय उठाएगा। उन्हें उसी श्रेणी में यात्रा करने की सुविधा प्रदान की जाएगी, जिस श्रेणी में यात्रा की सुविधा घायल कार्मिक को मिली हुई है। इन मामलों में आरक्षण शुल्क, शयनयान शुल्क या सुपर फास्ट शुल्क जैसा कोई भी अतिरिक्त शुल्क नहीं लिया जाएगा। यह आदेश तत्काल लागू हो गए हैं।•

कर्तव्य परायणता के लिए सराहना

गत अक्तूबर, 1987 में के० रि० पु० बल की 35 बटालियन को भारतीय शांति रक्षक सेना के एक अंग के रूप में श्रीलंका भेजा गया था। तभी से 35 बटालियन की टुकड़ियाँ जाफना के विभिन्न इलाकों में महत्वपूर्ण स्थलों पर तैनात हैं। इस बटालियन की 'ए' कम्पनी की टुकड़ियों को पल्लई हवाई क्षेत्र, विमानों तथा महत्वपूर्ण स्थानों की सुरक्षा की जिम्मेदारी उस समय सौंपी गई थी, जबकि तमिल विद्रोहियों की गतिविधियाँ चरम पर थीं।

इस कम्पनी ने उपाधीक्षक अमीरसिंह जटराना के नेतृत्व में सौंपे गए सभी कार्यों को बेहद कार्यकुशलता व तत्परता से निभाया। उनके इस कार्य की सेना के उच्च अधिकारी तथा स्थानीय नागरिक समय-समय पर प्रशंसा करते रहे हैं। उपाधीक्षक अमीरसिंह की कर्तव्यपरायणता तथा ड्यूटी के लिए समर्पण की भावना की भी काफी प्रशंसा हुई है। उनके इस सेवाभाव तथा सराहनीय सेवाओं के लिए उन्हें भारतीय थल सेनाध्यक्षक की ओर से प्रशंसापत्र प्रदान किया गया।•

नवगठित बटालियन का अभूतपूर्व प्रदर्शन



94 बटालियन की ओर से श्रीमती सक्सेना से ट्राफी ग्रहण करते कमांडैंट एम०एस० तूर।

25 से 28 अगस्त, 1988 तक ग्रुपकेन्द्र भुवनेश्वर में हुइ 17 वीं कलकत्ता रेंज इंटर बटा० दौड़कूद प्रतियोगिता में नवनिर्मित 94 बटालियन का प्रर्दशन अद्‌भुत रहा। इस प्रतियोगिता में 10, 39, 41, 43, 66 तथा 94 बटालियन सहित ग्रुप केन्द्र दुर्गापुर तथा भुवनेश्वर की टीमों ने भी भाग लिया था। 1987 में यह ट्राफी 10 बटा० ने जीती थी।

94 बटालियन के नए रंगरूटों ने लगभग हर प्रतियोगिता में पिछली अनुभवी बटालियनों के खिलाड़ियों से जम कर टक्कर ली, तथा लगभग हर प्रतियोगिता में पहला या दूसरा स्थान अर्जित किया। द्वितीय स्थान पर रहने वाली 10वीं बटालियन के 169 अंकों के मुकाबले 203 अंक प्राप्त कर 94 बटालियन ने इस चैम्पियनशिप ट्राफी पर अपना अधिकार जमाया। 94 बटालियन ने पहली बार बल की किसी प्रतियोगिता में हिस्सा लिया था, और पहली ही बार उसने अपनी श्रेष्ठता साबित कर दी।

प्रतियोगिता के अन्तिम दिन विजेता टीम की से ओर 94 बटालियन के कमांडैंट श्री एम० एस० तूर ने ट्राफी ग्रहण की । इस मौके पर पुरुस्कारों का वितरण कर रही थीं ग्रुप केन्द्र भुवनेश्वर के अपर उप पुलिस महानिरीक्षक की पत्नी श्रीमती आर० एन० सक्सेना। 94 बटा. की इस विजय की चर्चा कई स्थानीय समाचार पत्रों में भी हुई।

सस्ता तरीका

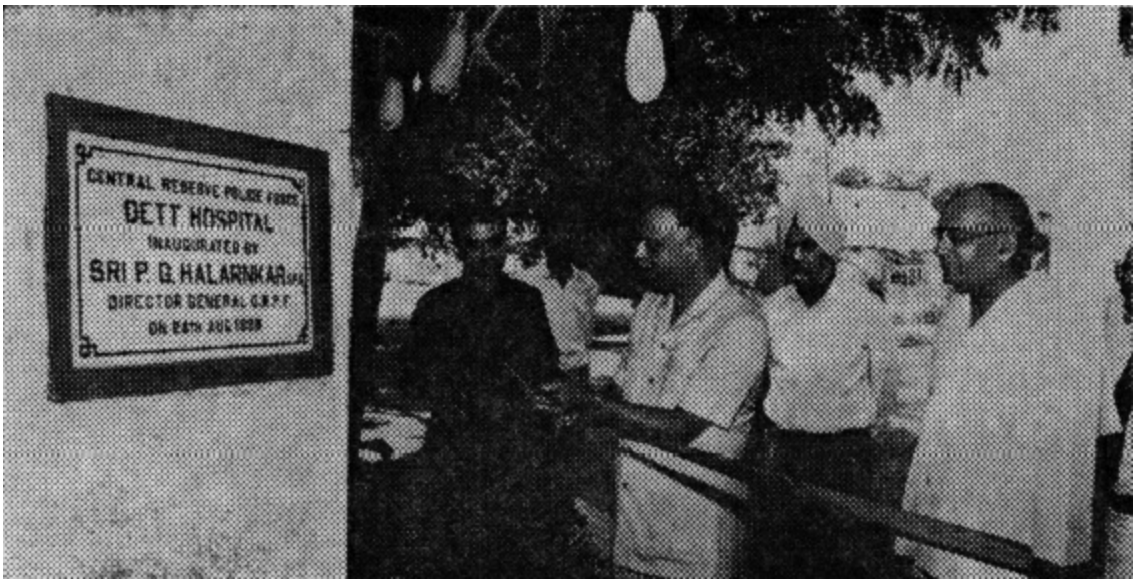
एक आधुनिका ने ब्यूटी पार्लर में जा कर पूछा, मेरे चेहरे के दाग मिटाने के कितने पैसे लगेंगे?'

'एक हजार रुपये' जवाब मिला,

'कोई सस्ता तरीका नहीं है ?'

'जी हां है, आप कल से बूंघट निकालना शुरू कर दीजिए'।

बल के कार्मिकों हेतु नया अस्पताल



अस्पताल का उद्घाटन करते महानिदेशक श्री प० ग० हलर्नकर।

24 अगस्त, 1988 को बल के महानिदेशक श्री प० ग० हलर्नकर ने सैक्टर 7, आर० के० पुरम, नई दिल्ली में बल के डिटैचमैंट बेस अस्पताल का उद्घाटन किया।

यह अस्पताल सी० आर० पी० एफ० के उन कार्मिकों को काफी राहत प्रदान करेगा, जिन्हें अपने छोटे-छोटे इलाज के लिए भी झड़ौदा कलाँ स्थित बेस अस्पताल में भागना पड़ता है।

बैरकस् में बना यह अस्पताल सभी सुविधाओं से युक्त है । इस में सभी तरह की प्रयोगशालाएं हैं। तथा जल्द ही एक्सरे मशीनें भी लगा दी जाएंगी। निकट भविष्य में अस्पताल का और विकास किया जाएगा। तब यहाँ आपरेशन सुविधाएं भी उपलब्ध हो सकेंगी।

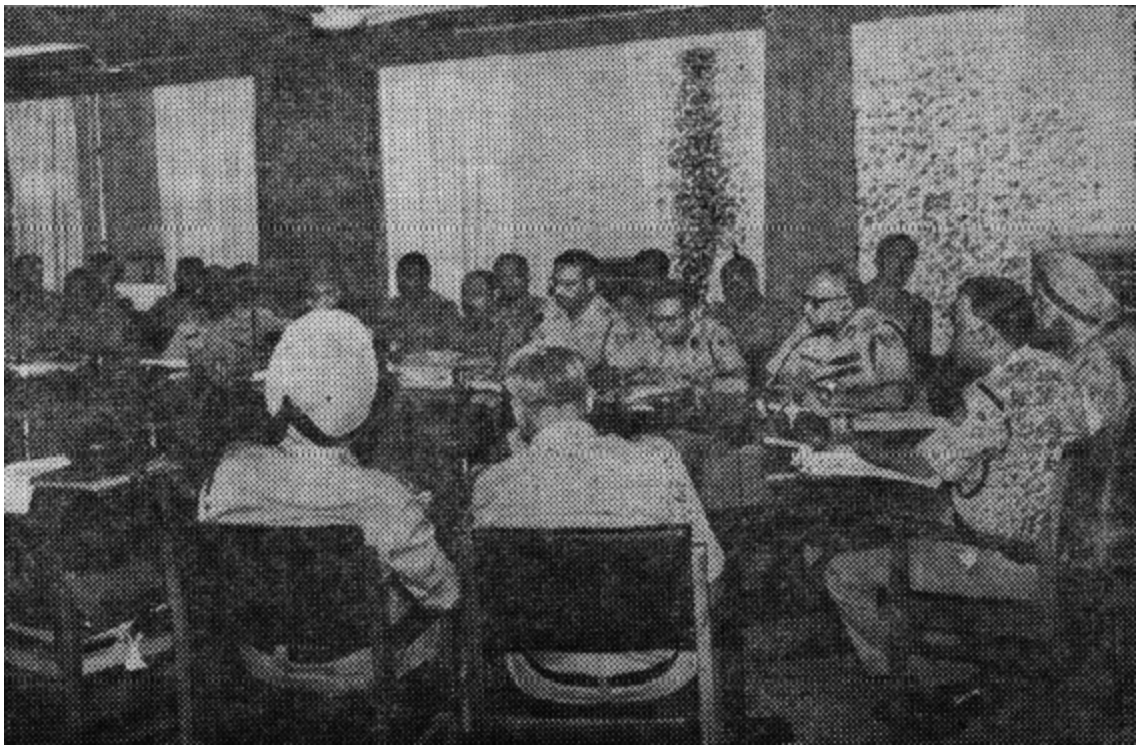
चिकित्सा अधिकारियों को कानफ्रेन्स

महानिदेशालय में दिनांक 11,12 अगस्त, 1988 को बल के चिकित्सा अधिकारियों की पहली वार्षिक कान्फ्रेंस संपन्न हुई, कानफ्रेस की अध्यक्षता बल के महानिदेशक श्री प. ग. हलर्नकर ने की। इस कान्फ्रेंस में दो पुलिस महानिरीक्षकों, महानिदेशालय के अधिकारियों तथा 26 चिकित्सा अधिकारियों ने भाग लिया।

महानिदेशक महोदय ने सभी उपस्थित प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए बल में उपलब्ध स्वास्थ्य सुविधाओं को और बेहतर करने पर जोर दिया। महानिदेशक महोदय ने कहा कि हमारे कई अस्पतालों में उपलब्ध सुविधाओं जैसे आपरेशन थियेटर आदि का भी सही उहयोग नहीं हो पाता । इस उपेक्षा के कारण यहां उपलब्ध उपकरणों का भी प्रयोग नहीं हो पा रहा है। उन्होंने समस्याओं को मूल से समझने की आवश्यकता पर बल दिया।

उन्होंने चिकित्सा अधिकारियों के सामने दिन प्रतिदिन की जिन्दगी में पेश आने

वाली दिक्कतों का भी जिक्र किया और बताया कि इस सम्बन्ध में पहले ही आदेश जारी किए जा चुके हैं आशा है आने वाले समय में स्थिति में और सुधार होगा। इसके साथ ही उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि चिकित्सा अधिकारियों को भी अपनी तरफ से मरीजों की समस्याओं को समझना चाहिए और अपनी व्यवसायिक प्रतिबद्धता और पेशे के प्रति ली गई ईमानदारी की शपथ को नहीं भूलना चाहिए। उन्होंने जोर दिया कि बल के अंदर परिवार नियोजन कार्यक्रम को और तेजी से चलाया जाना चाहिए । इसके बाद उन्होंने घोषणा की कि चिकित्सा अधिकारियों की यह कानफ्रेन्स अब प्रति वर्ष हुआ करेगी।



चिकित्सा अधिकारियों को सम्बोधित करते महानिदेशक श्री प० ग० हलर्नकर।

भा. पु. से. के प्रशिक्षणार्थी बल की यूनिटों में

पंजाब पुलिस के महानिदेशक के एक निर्णय के बाद भारतीय पुलिस सेवा के कुछ प्रशिक्षणार्थियों (प्रोबेशनर्स) को जुलाई व अगस्त माह में पंजाब स्थित बल की टुकड़ियों के साथ संबद्ध किया गया, ताकि वे न केवल अर्द्धसैनिक बलों की कार्यपद्धति से परिचित हो सके, अपितु यह भी जान सके कि ये बल पंजाब में किस प्रकार आतंकवादी गतिविधियों पर काबू पाने में लगे हैं।

प्रशिक्षणार्थियों का एक बैच जिस में 40 प्रशिक्षणार्थी थे। 29 जुलाई से 5 अगस्त, 1988 तक बल की यूनिटों के साथ तथा दूसरा बैच, जिसमें 45 प्रशिक्षणार्थी थे 12 से 19 अगस्त तक पंजाब में स्थित बल की यूनिटों के साथ संबद्ध रहा । आतंकवादी

गतिरोधियों से निबटने के सीधे तरीकों की जानकारी के लिए इन प्रशिक्षणार्थियों को दो से चार के समूहों में बांट कर विभिन्न यूनिटों के साथ लगाया गया था।



एक बैठक के दौरान भा० पु० सेवा के प्रशिक्षणार्थी

ओ मेरे युग मीत सहारे

ओ मेरे युग मीत सहारे,
मुझे सता कर क्या पाओगे।
साथी मुझ को यह बतला दो,
मुझे रुला कर क्या पाओगे।
मेरे इस खंडित जीवन के,
तुम थे केवल एक आधार ।
नैया में मुझ को बैठा कर,
छोड़ दिया क्यों मंझधार ।
नाविक मेरे तुम बतला दो,
मुझे डुबो कर क्या पाओगे।

तुम बिन कोरा कागज जीवन,
क्यों न इस को तुम पढ़ पाए।
खिला हुआ जो सुन्दर उपवन,
क्यों बसंत आते मुरझाए ।
माली मेरे, तुम बतला दो,
मुझे सुखा कर क्या पाओगे ।
धड़कन बन कर गूँज रहा है,
रोम रोम में तेरा नाम,
कैसे तुम को अलग करूं मैं,
मैं तेरा ही हूँ उपनाम ।
प्रियतम मेरे, तुम बतला दो,
मुझे त्याग कर क्या पाओगे।

—ओ० पी० पांडेय उ. नि. (मि०)
प्रशासनिक अनुभाग के० रि० पु० बल महानिदेशालय

एक योजना व कार्यक्रम के तहत इन लोगों को प्रशिक्षण के लिए रात्रि पैट्रोल, नाकाबंदी, छापामारी, काम्बिंग आपरेशन, ऐम्बुश, मुठभेड़ों तथा जाँच ड्यूटी के दौरान तैनात रहने वाली बल की टुकड़ियों के साथ लगाया गया था। हर ड्युटी पर जाने से पहले यूनिट कमांडर ने स्वयं प्रशिक्षणार्थियों को ड्यूटी के विषय में बताया विभिन्न मौकों पर इन प्रशिक्षार्थियों को पंजाब सीमा पुलिस के महानिरीक्षक श्री चमन लाल, बल के उप महानिरीक्षक श्री एस. एस. विर्क तथा विभिन्न जिलों के वरिष्ठ पुलिस अधिक्षकों ने भी संबोधित किया।

इन प्रशिक्षणार्थियों को सैक्टर स्कीम, तथा अन्य आपरेशनों जैसे नाका, वाहन जांच, पैट्रोल, आतंकवादियों के अड्डों पर छापामारी, पिकेट तथा गार्डस्, एम्बुश लगाना, सर्च आपरेशन तथा काम्बिंग आपरेशन आदि की प्रैक्टिकल जानकारी उपलब्ध कराई गई।

इन अधिकारियों को प्रशिक्षण के दौरान के रि० पु० बल के उत्तर पश्चिमी क्षेत्र के पुलिस महानिरीक्षक श्री जोगिंदर सिंह ने भी सम्बोधित किया। उन्होंने अधिकारियों को सभी महत्वपूर्ण विषयों पर जानकारी दी।

प्रशिक्षण के अंत में पहले बैच को 5 अगस्त, 1988 को श्री जोगिंदर सिंह ने सम्बोधित किया, जबकि दूसरे बैच को 15 अगस्त को पंजाब पुलिस के महानिदेशक श्री के. पी. एस. गिल ने।

अफसर ने, जो एक बड़े मंत्री का पुत्र था, धौंस जताते हुए अपने मातहत से कहा, जानते हो मेरा बाप कौन है।

'मेरी नजर में आप एकमात्र ऐसे व्यक्ति हैं, जो अपने पिता के बारे में दूसरों से पूछते रहते हैं, मातहत ने कहा।

बाल भवन केंद्र का दो दिवसीय कैम्प

बाल भवन केन्द्र (उत्तरी क्षेत्र) द्वारा -19 व 20 अगस्त, 1988 को बाल भवन केन्द्र के.रि.पु० बल झड़ौदा कलां ग्रुप केन्द्र में दो दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया।

इस शिविर में दिल्ली के विभिन्न बाल भवन केन्द्रों के 60 बच्चों ने भाग लिया । इनमें से 10 बच्चे के० रि० पु० बल बाल भवन केन्द्र के थे। शिविर का शुभारंभ 19 अगस्त को प्रातः बल के कल्याण केन्द्र में किया गया। इस अवसर बोलते हुए ग्रुप केन्द्र के अपर पुलिस उपमहानिरीक्षक श्री जे. एस. नेगी ने युवा देश भक्त विषय पर अपने विचार प्रकट कर बच्चों को उत्साहित किया। बाद में शिविर में शामिल बच्चों ने 'मेरा देश महान' विषय पर अपने विचार लिखे।

दोपहर को पोस्टर निर्माण कार्यशाला में बच्चों ने कई आर्कषक स्कैच व पोस्टर बनाए। शाम को बच्चों ने सी. आर. पी. बैंड की धुनों का आनन्द लिया।

बाद में बच्चों द्वारा बनाए गए पोस्टरों की एक प्रदर्शनी को लगभग 800 लोगों ने देखा व सराहा। इनमें से अधिकांश पोस्टर 'शांति व पर्यावरण' विषय पर बनाए गये थे। बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए। रात में कैम्प फायर का आयोजन किया गया, जिसमें बच्चों ने काफी उल्लास के साथ भाग लिया।

20 अगस्त को शिविर की शुरुआत बच्चों द्वारा योगाभ्यास द्वारा की गई। उसके बाद फिर से 'शांति एवं पर्यावरण' विषय पर बच्चों ने पोस्टर बनाए। 20 अगस्त को ही प्रधान मंत्री श्री राजीव गांधी का जन्म दिवस भी था जिसे इस शिविर में शांति एवं पर्यावरण दिवस के रूप में मनाया गया। इसके बाद शिविर के कार्यक्रमों में राजधानी के विभिन्न स्कूलों के लगभग दो हजार बच्चों ने भाग लिया।

शिविर के दूसरे दिन ही बाल भवन केन्द्र की निदेशिका श्रीमती पद्मा सेठ ने एक प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। प्रदर्शनी में बच्चों द्वारा बनाए गए पोस्टर व विभिन्न कलाकृतियां प्रदर्शित की गई।

बच्चों ने वृक्षारोपण में भाग लेने के बाद शांति व पर्यावरण मार्च में भी भाग लिया। शाम को एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें विभिन्न केन्द्रों के बच्चों ने भाग लिया।

प्रथम आवरण : कैम्प में बच्चों द्वारा बनाई गई कलाकृत्तियाँ

पृष्ठ आवरण : कलाकृत्तियां बनाते बच्चों के बीच बाल भवन केन्द्र की निदेशिका श्रीमती पद्मा सेठ।
छाया : इन्स्पेक्टर सतीश खन्ना।

---

9 आतंकवादी गिरफ्तार

के० रि० पु० बल तथा सी. आई. ए. के जवानों ने एक खाली पड़े घर में छापा मार कर भारी संख्या में गोला बारुद बरामद करने के साथ ही 9 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया।

7 जून, 1988 को बल की 4 बटा० के जवानों तथा सी. आई. ए. स्टाफ ने फिरोजपुर में गुरुद्वारा गुरुशाह के पीछे स्थित एक छोड़े गए घर पर छापा मारा। एक छोटी सी मुठभेड़ के बाद इस घर से 9 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया गया। उनके पास से एक 12 बोर की बंदूक, 2 टाइम बम, 2 विस्फोटक एक स्टेनगन, एक .32 बोर की पिस्तौल एक 12 बोर की पिस्तौल तथा 7 डैटोनेटरों सहित काफी संख्या में गोली बारुद बरामद किया गया।

बल का एक जवान मरा

दो आतंकवादियों द्वारा किए गए हमले में 49 बटा० के० रि० पु० बल का एक जवान मारा गया तथा जवानों द्वारा की गई जवाबी कार्रवाई में दोनों हमलावर आतंकवादी भी मारे गए।

14 जून, 1988 को दोपहर लगभग पौने दो बजे स्वर्ण मंदिर परिसर के गेट नं० 1 से हाथ में नंगी तलवारें लिए दो व्यक्ति बाहर आए तथा उन्होंने ड्यूटी पर तैनात 49 बटा० के दो जवानों पर हमला कर दिया। जब उन्होंने अन्य जवानों पर हमला करना चाहा, तो जवानों ने अपनी सुरक्षा में गोली चलाई, जिस से दोनों ही हमलावरों की घटनास्थल पर ही मृत्यु हो गई। दोनों घायल जवानों को तत्काल श्री गुरु तेग बहादुर अस्पताल ले जाया गया, जहां एक जवान की मृत्यु हो गई।

बाढ़ राहत कार्यों में सहायता

25 जुलाई की रात पटियाला जिले के देवीगढ़ इलाके में आई बाढ़ के दौरान वहाँ स्थित बल की 82 बटालियन की 'ई' कम्पनी के जवानों ने अपूर्व साहस का परिचय देते हुए बाढ़ राहत कार्यों में हिस्सा लिया।

जवानों के इस साहसपूर्ण कारनामे के लिए पटियाला जिले के डिप्टी कमिशनर महोदय ने जवानों को तीन हजार रुपए के नकद पुरुस्कार प्रदान किए।

पंजाब में आई प्रलयकारी बाढ़ के कारण सतलुज नदी के बंध के टूट जाने से खतरा काफी बढ़ गया था। इस दरार को भरने के लिए अन्य लोगों के साथ-साथ बल के जवानों ने भी भरपूर योगदान दिया। 82 बटालियन के 130 जवानों तथा उनके साथ पंजाब होम गार्डस् के 44 जवानों ने इस कार्य में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया।

उनके इस साहसपूर्ण कार्य के लिए पंजाब के राज्यपाल के सलाहकार श्री रिबेरो ने इस कार्य में शामिल प्रत्येक व्यक्ति की 100-100 रुपए का पुरुस्कार देने की घोषणा की है। इस के अतिरिक्त 82 बटालियन के कमांडेट सी. एम. बहुगुणा, उपाधीक्षक बी. एस. धालीवाल तथा एम. ओ. एस. के० बांदी को भी उनकी सराहनीय सेवाओं के लिए सम्मानित किया।

बहादुरो को नकद पुरुस्कार

पंजाब स्थित के० रि० पु० बल की 40 बटालियन के 13 कार्मिकों को इस वर्ष मार्च माह में आतंकवादियों से हुई एक मुठभेड़ में दिखाई गई वीरता व साहस के लिए 900 रुपए के नकद पुरुस्कार प्रदान किए गए।

यह सूचना प्राप्त होने पर की जालंधर। शहर के नूर महल क्षेत्र में आतंकवादियों का एक गुट खतरनाक हथियारों के साथ बैंक डकैती व बड़ी संख्या में हत्याओं की योजना बना रहा है, बल की 40 बटालियन की 'सी' कम्पनी के दो सैक्शन, व स्थानीय पुलिस की एक टुकड़ी ने बल के निरीक्षक राम किशन के नेतृत्व में 11 मार्च को दोपहर लगभग 12-30 बजे जंडियाला गांव के डेरा नाथ साहब में छापा मारा। पुलिस पार्टी को देखते ही आतंकवादी विभिन्न दिशाओ की ओर भागे, लेकिन जवानों ने उनका पीछा कर 6 आतंकवादियों को गिरफ्तार कर उन से भारी संख्या में हथियार व गोला बारूद बरामद कर लिया।

इस मुठभेड़ में शामिल निरीक्षक राम किशन को 200 रुपए, ला. ना. छोटू राम व राम चन्दर को 100-100 रुपए तथा कांस्टेबल नंदलाल, गोविंद सिंह, बदन सिंह, बहादुर सिंह, गुरदेव सिंह, बुद्ध लाल, किशन लाल, रामजीलाल व कांस्टेबल ड्राइवर ए. सत्यराज और के. रामाचन्द्रन को उनकी बहादुरी व साहस के लिए 50-50 रुपए के नकद पुरुस्कार दिए गए।

---

18 मई, 1988 को पंजाब स्थित 29 बटालियन की 'डी' कम्पनी के दो सेक्शन व स्थानीय पुलिस की एक टुकड़ी ने बल के उपाधीक्षक सदानंद सिंह के नेतृत्व में गांव इकलगड्डा के नजदीक एक नाले पर एम्बुश लगाया। रात लगभग 10 बजे तीन संदिग्ध व्यक्ति इकलगड्डा की तरफ से आते दिखाई दिए। पार्टी ने जब उन्हें रुकने के लिए कहा, तो वे रुकने के स्थान पर गोलियां चलाने लगे। जवानों ने भी जवाब में गोलियां चलाई, परिणाम स्वरूप दो आतंकवादियों की घटनास्थल पर हो मृत्यु हो गई। मृतक आतंकवादियों के पास से दो ए. के. 47 राइफलों सहित काफी गोला बारूद बरामद किया गया। इस मुठभेड़ में शामिल जवानों के साहस व वीरता के लिए उन्हें 710 रुपए के नकद पुरुस्कार प्रदान करने घोषणा की गई। ये पुरुस्कार प्राप्त करने वाले जवान हैं

नायक प्रभु राम, एम. आर. भास्करन और एस. वी. गायकवाड़ 50-50 रुपए, ला. नायक किशनपाल सिंह, के. सिद्दापे, राम आसरे तथा कांस्टेबल आर. मनी, एस. वी. घोष, डी. एन. दुरगड़े, के. चन्द्रन, विजय सिंह, ए. डी. चौधरी, एम. आर. शेवाले, जी. एम. नायर, जी. वी. रमन, रिछपाल सिंह व राम सेवक को 40-40 रुपए नकद प्रदान किए गए।

पंजाब स्थित बल की 52 बटालियन की 'ई' कम्पनी और स्थानीय पुलिस की एक पार्टी ने 30 अप्रैल, 1988 की रात गांव दाद के नजदीक एक नाका लगाया। 1 मई, प्रातः लगभग पौने तीन बजे तीन संदिग्ध व्यक्ति लुधियाना की तरफ से आते दिखाई दिए, जब जवानों ने उन्हें रुकने के लिए कहा तो जवाब में वह गोली चलाने लगे। जवानों ने भी तत्काल फायर का जवाब दिया। इस गोली बारी में एक कुख्यात आतंकवादी जगरूप सिंह उर्फ रूपी उर्फ नच्छत्तर सिंह मारा गया। अन्य दो आतंकवादी भारी रूप से घायल होने के बावजूद अंधेरे का फायदा उठाते हुए भागने में कामयाब हो गए। मृत आतंकवादी के पास से एक ए० के० 47 राइफल सहित काफी मात्रा में गोला बारूद व एक बजाज चेतक स्कूटर बरामद किया गया।

इस मुठभेड़ में शामिल जवानों को उनकी बहादुरी व साहस के लिए 1,000 रुपए के नकद पुरुस्कार प्रदान किए गए। ये पुरुस्कार प्राप्त करने वाले जवान हैं हैड कांस्टेबल मोहर सिंह और नायक महेंद्र ओरेन 100-100 रुपए' ला० नायक सिलाकांत झा, लोकपाल तथा हुक्मराम 75-75 रुपए, कांस्टेबल भगवान चौबे 200 रुपए, कांस्टेबल गुलाम मुहम्मद, राजेंद्र राय, महेंद्र सिंह, प्रशोक कुमार व शौकिन अली 75-75 रुपए।

पंजाब पुलिस के महानिदेशक ने जालंधर स्थित बल की 32 बटालियन के 12 अराजपत्रित तथा अधीनस्थ अधिकारियों को 1,175 रुपए के नकद पुरुस्कार देने की घोषणा की। इन कार्मिकों को यह पुरुस्कार वर्ष 1987-88 के दौरान पंजाब में अपनी ड्यूटी को पूर्णतया समर्पण, ईमानदारी और कार्यकुशलता के साथ निभाने के लिए दिया गया।

जालंधर स्थित 32 बटालियन की एक पार्टी ने एक नाकाबंदी के दौरान तीन कुख्यात आतंकवादियों को धर दबोचा और उनसे तीन ए. के. 47 राइफलें एवं अन्य विस्फोटक सामग्री बरामद की। 11 अगस्त, 1988 को यह पार्टी अपने कमांडर के साथ बंगा पुलिस स्टेशन के अन्तर्गत आने वाले क्षेत्र में पैट्रोल एवं नाका ड्यूटी पर थी। पार्टी ने मुकन्दपुर से हकीमपुर की तरफ जाने वाली सड़क के मोड़ पर नाका लगाया। रात लगभग 12 बजे तीन आदमी नाका-पार्टी की तरफ आते हुए दिखाई दिए । रुकने का संकेत करने पर तीनों विपरीत दिशाओं में भागने लगे। उन पर गोली चलाने के स्थान पर 'सी' कंपनी के ओ० सी० तथा कांस्टेबल आर० वेणु, कुलदीपसिंह तथा अन्य ने

उनका पीछा किया और एक को धर दबोचा। बाद में इस व्यक्ति की मक्खन सिंह उर्फ मोहिंदर सिंह खालसा के रूप में शिनाख्त हो गई। यह 'बी प्लस' श्रेणी का आतंकवादी था । यह बब्बर खालसा का कपूरथला क्षेत्र का कमांडर था इसके सिर पर 50,000 रुपए का इनाम था। पुलिस को इसकी कई मामलों में तलाश थी।

इस आतंकवादी के दो अन्य साथियों हरमैलसिंह तथा मनजीतसिंह को भी बल के जवानों ने दबोच लिया। इन आतंकवादियों से 3 ए० के० 47 राइफलें, 9 मैगजीन, ए. के० 47 के 181 राउन्ड, 2 किलो प्लास्टिक विस्फोटक, तीन टाइमर, 2 डेटोनेटर (इलेक्ट्रिक) तथा 5 सेल बरामद किए गए।

अंतिम किस्त

आतंक और आंस

मार्क लिनैल व राबर्ट कालिंस अनु०—अनिल गुप्त

दो ब्रिटिश सैनिकों द्वारा अपने आयरलैंड के अनुभवों के आधार पर लिखे गए संस्मरण का अन्तिम भाग। इस संस्मरण की पहली कड़ियां आप सी. आर. पी. एफ. समाचार के पिछले अंकों में पढ़ चुके हैं। यह शृंखला आपको कैसी लगी, कृपया हमें लिखें।

-सम्पादक

9 नवम्बर, बृहस्पतिवार को पैट्रोल ड्यूटी के दौरान संगीत का शौकीन, शान्त, सौम्य, जल्द ही विवाह सूत्र में बंधने वाला 19 वर्षीय मैरिन गरी वैडन, जब अपने साथियों को सड़क पार करने के लिए कवर दे रहा था, तो उस पर पूरी ताकत से एक रिमोट कंट्रोल बम फेंका गया। अपने रेडियो पर मैंने स्कॉट कंपनी कमांडर जो कि शायद ही कभी सोता हो, तथा जो हर समय अपने आदमियों के प्रति चिंतित रहता था —को चिल्लाते सुना "अपने हैलीकाप्टर को वहाँ नीचे ले जाओ।"

गैरी के दोनों बाजू टूट गए थे, तथा उसे आंतरिक चोटें आई थीं, लेकिन कहा जा रहा था कि वह ठीक भी हो सकता था। मैरिनस ने फौरन उसकी माँ को इंग्लैंड से विमान द्वारा हमारी जगह पहुंचा दिया। इस विस्फोट के तीन दिनों बाद, जब मैं अपने आदमियों को पैट्रोल ड्यूटी से पूर्व कुछ समझा रहा था, तो हमारा हट्टा-कट्टा सार्जेंट मेजर मैलकम हैरिस, जिसे हम पीठ पीछे अंकल मैलकम कहते थे—हमारे पास आया।

“माफ करना मार्क, मुझे तुम्हारे आदमियों से बात करनी है।” उसने हिचकते हुए कहा। यह अंकल मैलकम का वह रूप नहीं था, जबकि उन्हें बोलने के लिए शब्दों की कमी महसूस हो।

“दोस्तो, मेरे पास तुम्हें देने के लिए एक बुरी खबर है। गैरी की अभी-अभी मृत्यु हो गई है...जब यह हुमा तब गैरी की मां उसके पास थी।” वह रुका थोड़ी देर बाद फिर बोला, “ठीक है मार्क, तुम अपना काम जारी रखो।”

शोक में डूबी फुसफुसाहटों के बन्द होने के लिए मैं रुका रहा।

“ठीक है, हमें अपनी ब्रीफिंग यहीं समाप्त करनी चाहिए।” लेकिन उनके दिमाग वहां नहीं थे। “ठीक है दोस्तो, अभी के लिए इतना ही काफी है, मैं इस पर एक घंटे बाद बात करूंगा।’

मेरा अपना कमरा भी शांत बैठे मैरिनस से भरा था। मैं एक वरिष्ठ अधिकारी के आगे से गुजरा और अपराध भावना लिए फिर लौट आया। वह बड़ा हट्टा-कट्टा आदमी घुटनों के बल बैठा प्रार्थना कर रहा था। मैं आब्सर्वेशन पोस्ट की ओर बढ़ चला। यह पोस्ट लम्बे-लम्बे खम्बों के सहारे ऊंचाई पर थी। इसी के नीचे बड़े शान्त वातावरण में, मैं अक्सर सोच विचार किया करता था। वहाँ पर थोड़े मैरिनस् सट कर बैठे हुए थे, कुछ सुबक रहे थे, सभी अपने साथी गैरी के लिए अंतिम संवेदनाएं व्यक्त कर रहे थे। मैं भी उन्हीं में शामिल हो गया, और एक बार फिर सोचने लगा, “क्यों ?”

क्या अलस्टर के लिए अभी भी कोई उम्मीद है, अंत में यह केवल आयरिश लोगों को ही यह मौका मिल सकता है कि वे शांति स्थापित करें। लेकिन क्या आतंकवादी भी शांति चाहते हैं ? उनके लिए तो भय और यंत्रणा एक लाभदायक व्यापार है। मैंने कभी कोई गरीब आतंकवादी लायलिस्ट या रिपब्लिकन नहीं देखा।

अलस्टर में जब तक ब्रिटिश सैनिक हैं, तब तक आतंकवादी उन्हें परास्त नहीं कर सकते। फिर भी ब्रिटिश सैनिक-और रायल अलस्टर कांसटेबुलरी (आर. यू. सी.) जिसे ब्रिटेन अधिक से अधिक जिम्मेदारी देता जा रहा है—भी शायद कभी आतंकवाद को जड़ से न उखाड़ पाएं। ये लोग तो तब तक केवल कानून व व्यवस्था बनाए रख सकने का प्रयास भर कर सकते हैं, जब तक कि आयरलैंड के लोग अपनी सदियों पुरानी आदत को तोड़कर एक साथ किसी समाधान के लिए प्रयास नहीं करते। उनके बीच में काफी अच्छे संबंध हैं। गेरी की मृत्यु के बाद, क्रोसमेगलन में सड़क पर मेरी बगल से गुजरते हुए लोग सीधे सामने देखते हुए, मेरी बगल से यह फुसफुसाते हुए गुजर जाते थे कि तुम्हारे दोस्त की मृत्यु पर अफसोस हुआ।

हत्यारों के खिलाफ एक जुट होकर न खड़े होने के लिए मैं उन्हें दोष नहीं देता। वे आयरलैंड से बाहर नहीं जा सकते। मैं जा सकता हूं और मैं गया भी। जैसे ही हैलीकाप्टर हमें क्रोसमेगलन से लेकर ऊपर उड़ा, मुझे लगा कि मेरे कुछ जवान साथी भावुक होकर कुछ बोल न पाए, लेकिन मैं उनकी तरफ देख भी नहीं सकता था, क्योंकि मेरा गला रंध गया था। हम काफी समय तक एक साथ रहे थे। बेसब्रुक में मैंने कुछ शब्द कहने के बाद अन्त में कहा, “धन्यवाद दोस्तों, मेरी शुभकामनाएं।”

हम में से अधिकतर गैरी के अन्तिम संस्कार में गए। एक छोटी लड़की ने अपनी लिखी प्रार्थना जोर से पढ़ी—इसमें बीच में कहा गया—"हम उम्मीद करते हैं कि आई० आर० ए० वह सब करना बन्द करेगी, जो कि वह करती रही है।" और यह सुनकर कई अधेड़ व्यक्ति भी रो पड़े।

मैं और मेरे साथी अन्तिम बार मिले और हमने कई पैग शराब पी और अपने मन की बातें की।

"मार्क" मेरी साथियों में से एक ने अन्त में कहा, "अपने सब बिछड़े दोस्तों की याद में हमारे लिए एक गाना गाओ।" अतः उनका नेतृत्व करते हुए, मैं गा उठा—

"कहां गए सब फूल ?" पूरा माहौल गा रहा था और कई आदमी रो रहे थे।

फिर वे सब रात को बाहर निकल आए। नागरिक हमें न समझते हुए, हमेशा की तरह सोच रहे थे—"इन ब्लडी शराबी अंग्रेज सैनिकों को तो देखो।"

और मैरिन सोच रहे थे उस अंतहीन आतंक के बारे में जो उनके सामने था और उत्तरी आयरलैंड के असहाय नागरिकों के बारे में।

समाप्त

1983 दि रिडर्स डाइजेस्ड एसोसिएशन (कनाड़ा) लि० की अनुमति से मुद्रित।

एक कुख्यात आतंकवादी मरा

24 जुलाई, 1988 को पंजाब स्थित 29 बटालियन के कमांडैंट को चोला साहिब के नजदीक गांव पाखोपुरे में आतंकवादी गतिविधियों की सूचना प्राप्त हुई। सूचना प्राप्त होने पर एक सर्च पार्टी 29 बटा. के कमांडैंट व सहायक कमांडैंट के नेतृत्व में संदिग्ध स्थल की और कूच कर गई। पार्टी में एक उपाधीक्षक, 2 निरीक्षक, लगभग ढाई प्लाटून तथा स्थानीय पुलिस के जबान थे। सर्च पार्टी ने संदिग्ध इलाके में ट्यूबवैल के आस-पास के इलाके में छानबीन शुरू की, जब छानबीन चल ही रही थी, तो नहर से खेतों की तरफ पानी ले जाने वाले नाले के साथ-साथ 5 आतंकवादी छुपते दिखाई दिए। पुलिस पार्टी को देखते ही आतंकवादियों ने गोलियां चलानी शुरू कर दी। पुलिस कर्मियों ने भी तत्काल जवाब में गोलियाँ चलाई। पुलिस बल द्वारा गोली चलाए जाने पर एक आतंकवादी की मृत्यु हो गई तथा तीन खेतों की तरफ भागने लगे। एक आतंकवादी ने स्वयं को खेतों में छिपा लिया। इस छिपे हुए आतंकवादी ने बाकी तीनों आतंकवादियों का पीछा करने वाले जवानों पर गोलियां चलाई, जिस से कांस्टेबल हिंगोले किशन घायल हो गया। 29 बटा. के कमांडैंट फिर भी अपने जवानों के साथ आतंकवादियों का पीछा करते रहे, लगभग 4-5 किलोमीटर की दूरी तय करने के बाद मंड क्षेत्र में फिर दोनों दलों के बीच गोलीबारी हुई जिन के परिणामस्वरूप दो आतंकवादी भारी रूप से

घायल होने के बावजूद अपनी ए. के. 47 राइफलों के साथ पानी में कूद गये और उस के साथ बहते हुए आगे निकल गये। अन्य दो आतंकवादी भी गोलियों से घायल होने के बावजूद भागने में कामयाब हो गए।

मृतक आतंकवादी की शिनाख्त बाद में सतनाम सिंह उर्फ सत्ता के रूप में हो गई। वह 'ए' श्रेणी का कुख्यात आतंकवादी तथा खालिस्तान लिबरेशन फोर्स का स्वयंभू ले. जनरल था। उस के सिर पर 25,000 रुपए का इनाम था। इसके पास से एक स्टेन गन, तीन हैंड ग्रनेड तथा काफी मात्रा में गोला बारूद बरामद हुआ।

इस मुठभेड़ में दिखाई गई वीरता व साहस के लिए मुठभेड़ में शामिल 17 कार्मिक को 945 रुपये के नकद पुरुस्कार प्रदान करने को घोषणा की गई। ये पुरुस्कार प्राप्त करने वाले कार्मिक है निरीक्षक जगलाल 200 रुपये, है. कांस्टेबल बी. बी. पांडे 75 रुपये, नामक के. पी. देवेश 50 रु०, कांस्टेबल कुशासिंह, ला० ना० साम्बिका सिंह, किशन सिंह, राम आसरे, किशन पाल, एस. एन. यादव, 40-40 रुपये, कांस्टेबल सोनवाना, तोमचा सिंह, उमेद सिंह, टी० रामू वेदप्रकाश, पी० डी० गुप्ता, एन० डी० वादगे 40-40 रुपये तथा कांस्टेबल हिंगोले किशन (मरणोपरांत) 100 रुपये।

रोचक खबरें

चोरी का रिकार्ड

पश्चिम जर्मनी के एक चोर माइकल शैपर्स ने चोरियों का रिकार्ड कायम किया है। पुलिस के एक प्रवक्ता के अनुसार जर्मनी के अपराध इतिहास में उसने अपने जीवन में अब तक 2,039 चोरियां की हैं। और लगभग 20 लाख डालर का सामान चुराया है। शैपर्स ने चोरी का यह धंधा 19 वर्ष की उम्र में शुरू किया था, आज वह 40 वर्ष का है। चोरी के दौरान उसने एक बार भी किसी हथियार का प्रयोग नहीं किया। शैपर्स की नजर में चोरी एक कला है और कला में खून खराबा करने वाले सच्चे चोर नहीं हो सकते।

तस्कर बन्दर

पाकिस्तान के इस्लामाबाद, शहर में मादक द्रव्यों के अवैध धंधे के एक मामले में एक बन्दर को उसके दो सहयोगियों के साथ गिरफ्तार कर लिया गया।

बन्दर का प्रशिक्षक मोहम्मद नईम खान बन्दर का इशारा पाकर भागने में सफल हो गया। मादक द्रव्यों का धंधा करने के इस अनोखे ढंग के पीछे उसी का दिमाग काम कर रहा था। यह बंदर रंगे हाथों पकड़ा गया। अब नारकोटिक्स कंट्रोल बोर्ड बंदर पर मुकदमा चलाएगा।

—पुलिस मानीटर से साभार

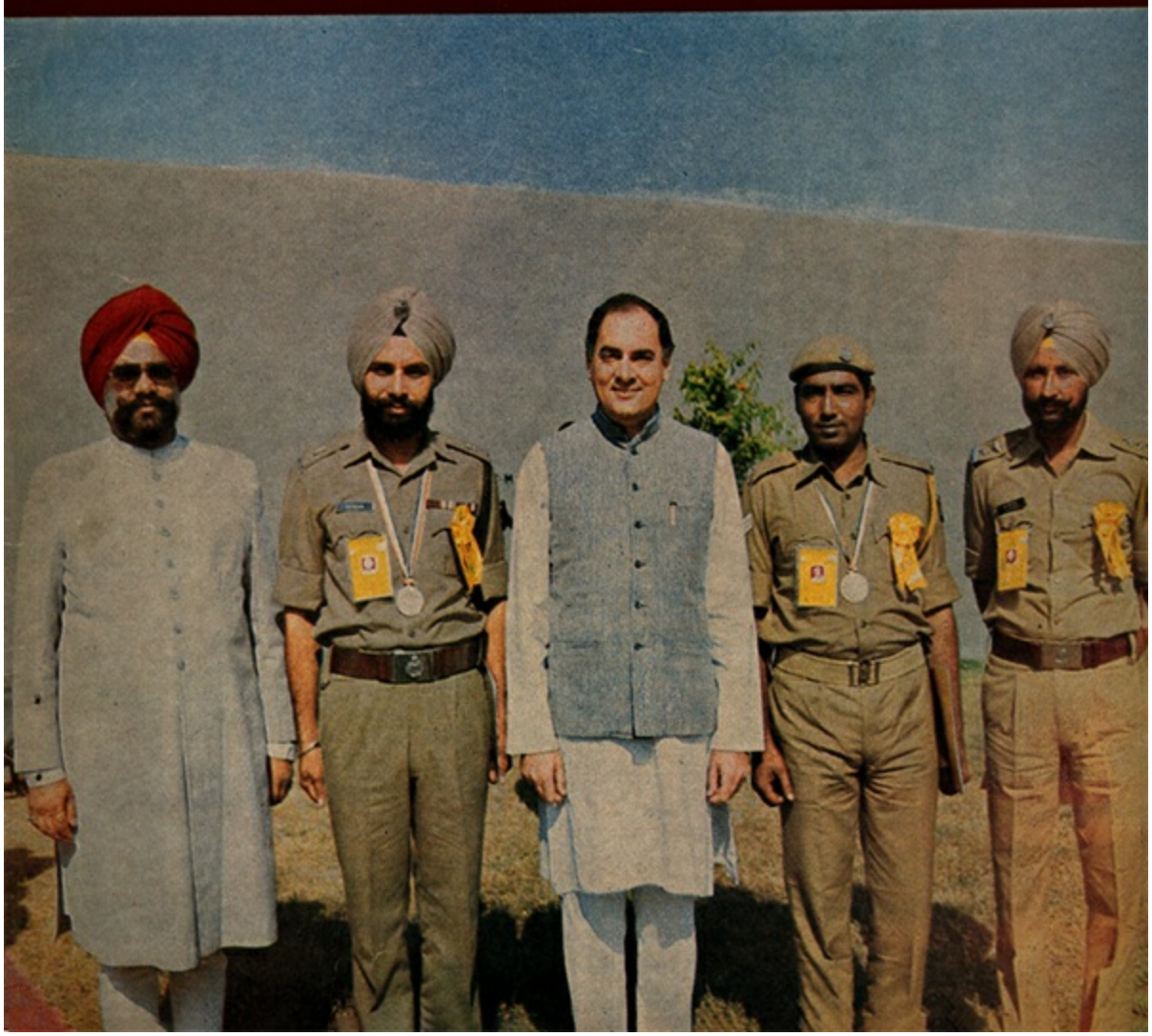
मुख्य सम्पादक : एच. एस. सेठी।

सम्पादक : एम. पी. नथैनेयल तथा अनेल गुप्ता।
मुद्रक : सी. आर. पी. एफ. प्रेस, झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-110072
मुद्रक तथा प्रकाशक : महानिदेशक, के०रि०पु० बल, ब्लाक-1, सी. जी. ओ. काम्पलेक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से एच. एस. सेठी।


रजि० नं० 47161/87

CRPF SAMACHAR

CRPF Newsletter & Magazine Vol. 2 No. 3 OCt 31, 1988 (Karti Ka 9, 1910)





Central Reserve Police Force men patrolling the area demolished around the Golden Temple.

THE
CRPF Samachar



CRPF
Newsletter & Magazine

Vol 2. No. 3

Quarterly

October 31, 1988
Kartika 9, 1910

Chief Editor : H. S. Sethi

cover : The Prime Minister and the Union Home Minister with the CRPF shooting team.

Editorial Office :
C/o Director General,
Central Reserve Police Force,
Block 1, CGO Complex,
Lodi Road,
New Delhi-110003.

Printed and published by :
H. S. Sethi on behalf of
Director General, CRPF.
Printed at the CRPF Press,
Group Centre, New Delhi-110072.

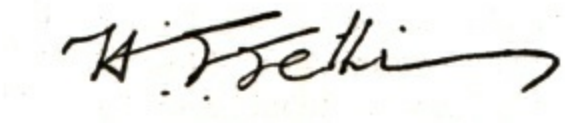
Letter from the editor

During the last quarter, the CRPF in Punjab has fought on two fronts—the terrorists as well as floods— and in both has done work that speaks volumes for its courage in facing grim challenges and for its service to humanity. Featured prominently in this issue are reports on these counts.

Through the article, “The Terror and the Tears”, the concluding part of which appears in this issue, we have highlighted a sensitive account of what terrorism has meant to a civil population as also to the security forces in another part of the globe. Human beings—whether civilians or those in uniform—have the same sensibilities everywhere and we hope that the readers have drawn their own lessons by going through this series.

No compensation is good enough for the loss of a life—any life for that matter. Yet it is the duty of every government to see that the widows of the jawans who die at the call of duty do not suffer further on account of lack of finances. Featured in this issue is a report of grant-in-aid to a widow. More such reports will follow in future issues.

Plus pen portraits of our relatively new Additional Director General and some Inspector-Generals of Police, award of medals and victory again in All India Police Aquatics.



CONTENTS

The Terror and the Tears
by Mark Linnell with Robert Collins
Punjab Round-up
Saga of Service *by H. S. Sethi*
Low Cost Housing *by H. S. Sandhu*
All India Police Aquatics

THE TERROR AND THE TEARS

by

Mark Linnell with Robert Collins

Reproduced here is the fourth and concluding part of this article written by two British soldiers about their experiences in combating terrorism in Ireland.

JULY 7, 1978. As our helicopter thudded above rolling green hills and little farms I wondered how this beautiful land could be called “Bandit Country.” Yet it is one of the most dangerous spots in Northern Ireland. We were bound for Cross-maglen in County Armagh, three kilometers from the Republican border, for my last tour of duty in Ulster, and the worst.

In 12 years I had become a good Marine. In fact, I had just finished a stint as instructor at the Commando training school. It was time for a new career. Next spring I would retire from the Marines and go to Canada to join the Royal Canadian Mounted Police. But this last tour would be etched in my memory for ever.

We were relieving the crack 1st Battalion of the Parachute Regiment; Britain sends only its best units into Bandit Country. At Crossmaglen terrorists could shoot from a speeding car and be safe across the border in less than two minutes. Most of the population was Republican; the rest were totally cowed. Bombs were built into the roads and more were added as fast as we cleared them. Only the locals, tipped off by the Provos, know when they were fused and set to go off. All troops and supplies came in by helicopters, which then left fast and straight up until they were out of weapons range. The Provo arsenal, we suspected, now included hand-held ground-to-air missiles.

On arrival we jumped out into knee-deep mud, a dreary omen. Our living conditions were the worst in my nine years in Ulster. Mud was everywhere; keeping clean was a feat. The camp, blazing with arc lights to prevent sneak

attacks, was fitted with double blast-doors and anti-rocket wire. It had been repeatedly shelled with mortars.

A typical room held 18 Marines, squeezed into triple-tier bunks made of one solid piece of metal, to serve as shelter during attacks. It was going to be a grit-your-teeth-and-bear-it tour. On the white wall beside my slot of a bunk, I scratched off the days and kept a grim diary of the shootings and bombings.

The 1st Paras had almost come to the end of their tour with no fatalities. As some of our unit settled in beside them for the change-over, their record fell apart. With 40 minutes left on his last patrol, Jack Fisher, standing close to the main gate of a school, was blown to pieces by a remote-control bomb. It was a gruesome preview of what we could expect in the next four months.....

We jump into a wet field on a starless night, and listen to the helicopter sputter away. Now we are alone in Bandit Country, with sleeping-bags, rucksacks and a radio, our link with safety. We will patrol by night and rest by day, searching for terrorists sneaking over the border, for hidden arms and ammunition caches, for booby traps,

Death can come any time, anywhere from anyone or anything. Our enemy wears no distinctive uniform; he could be that ordinary-looking man in a tweed jacket.

The Irish Republican tricolour— green, white and orange—-flutters from trees and lamp-posts here on the British side, taunting us. We dare not pluck it down; it may be booby-trapped. So sometimes, are parked cars; we walk past them with clenched teeth and let out a little sigh when nothing bangs. A favourite Provo trick is to pack a farmer's milk tin with remote-controlled explosives.

We dare not use the gates or roads (225-kilo bombs lie in many a culvert), so we claw through prickly hedgerows two and a half metres high. Sometimes they, too, are booby-trapped. Except for a rare white marker we cannot see the border. To venture over that invisible line would be a breach of relations with the Republic, so we pore over maps with coded markings and photos of local landmarks, our only guides.

Four days later we return, dirty, weary but alive.

GRATEFULLY, I got permission for an early R&R to attend a wedding in Birmingham. On the way out my friend Keith "Dusty" Miller, a dark cheerful

Welshman, joined me for drinks at Bessbrook camp, more drinks at Belfast airport, and more again at Birmingham, where my uncle met us.

I met Dusty on the way back. As we parted at Bessbrook he shouted, “Best of luck, Mark, keep your head down. See you in Plymouth in November.”

“See you later, pal. Take care.” I then gave him the thumbs-up farewell.

The next day it was on the television news, then on our bulletin board.

Dusty had been killed by a remote-controlled bomb as he walked past a parked car. I hunted out a quiet place and cried for my friend.

WE WERE like soldiers in a fortress: continually under attack. In August mortar bombs sailed towards camp from a truck launcher just outside.

Fortunately, half of them missed. In September a radio-controlled bomb in a hedge blew a four-man patrol all over the road, but no one was seriously hurt. In October the Provos planted a bomb right below one of the camp’s tall stiltlegged sentry posts, near the helicopter pad and fuel dump. Apart from one shaken guard, no harm was done.

On October 23 a booming explosion in the centre of Crossmaglen brought my patrol on the run. We found a handful of dazed Marines near a huge hole in a hedge. One of our young troop commanders, fresh out of officer training school had been three metres away when the bomb went off. Amazingly, he had only minor scratches.

A Ferret armoured car pulled up to cover us with its machinegun. A bomb-disposal expert checked for more explosives. Houses across the street were badly damaged. A nearby school had lost its windows and parents were leading crying children home.

A boy of about eight, seemingly in shock, walked straight for a broken electric cable that was spitting sparks. I ran to steer him around it. He began to cry floods of tears. I knelt beside him.

“Where do you live, son ? Where’s your Mum and Dad ?”

He looked at me, hugged me hard around the neck and started to scream.

“Come on, son, don’t cry. You’ll be all right now.” But I’m lying. You won’t forget this for a long time.

He pushed back and sobbed, “Why ?” He took a deep struggling breath. “Why does this happen, soldier ?”

“I don’t know, son. Let’s get you home.”

An adult took his hand. Seething, I turned back to a young Marine who couldn’t make a motorist obey the road-block. I squared up to the driver, livid with rage, still thinking of the child.

“Why?” I shouted. The man looked at my face, paled, put his hand gently on my shoulder and drove away.

We offered to help the owners clean up their damaged houses. A woman asked us to take splinters of glass from her shattered window. Once indoors, she collapsed in tears.

“Son, when will it end ?” she sobbed. “I can’t stand it any more! Why do we have to live through this?”

“ I don’t know, I just don’t know”, I said softly. “Can we do anything for you ? Do you need a doctor ?”

She looked up, gratefully at first, then in fear. Outside, known Provo supporters were laughing and taking notes.

“Go!” she said. “You’ll have to go!”

A week later we met her on the street but she ignored us.

Singing—and Weeping

WHILEout on patrol on Thursday, November 9, Marine Gary Wheddon —a nice quiet boy of 19, fond of music, engaged to be married—crouched near a wall to cover his pals as they crossed a road. A remote-controlled bomb struck him full force. Over my radio I heard the company commander —a Scot who never seemed to sleep, he worried so much about his men— shouting, “Get that helicopter down in there”.

Gary had two broken arms and severe internal injuries but would probably recover, they said. The Marines flew his mother over from England.

Three days after the blast I was briefing my men before patrol when our hefty Sergeant-Major Malcolm Harris—Uncle Malcolm, we called him behind his back but never to his face—broke in.

“Excuse me, Mark, I’ve got to talk to your men. He hesitated. It was not like Uncle Malcolm to be at a loss for words.

“I’ve some bad news, lads. Gary just died...His mother was with him when it happened...” He stopped and there was a long pause. “Well, carry on,

please, Mark...”

I waited for the babble of scho-cked voices to subside.

“Okay, we must finish this briefing”. But their minds were not on it. “All right, lads that’s it for now. I will finish off in an hour’s time.”

My own room was filled with Marines sitting silent. I passed a senior officer’s room and backed away guiltily : that big tough man was kneeling in prayer. I headed for the observation post; under its stilt--leg supports was a quiet place I had used before to think things out. There crouched a little huddle of Marines, some sobbing, all paying their last respects to Gary. I joined them, once more thinking, Why ?

IS THERE hope for Ulster ? In the end only the Irish people—Mai-read Corrigan and Betty Williams a million times over—have a chance of winning peace. But do the terrorists want peace ? For them, fear and suffering is a profitable industry. I never once saw a poor terrorist, Loyalist or Republican.

The Provos will never defeat the British forces as long as they are in Ulster. Yet British troops—and the RUC, which Britain is giving more and more responsibility—will probably never weed out terrorism. They can only hope to keep a measure of law and order until, perhaps, the Irish people break the habit of centuries and work out a solution together. There is much goodwill among them. After Gary died, people in Crossmaglen passed me on the street, always looking straight ahead but muttering from the corners of their mouths, “Sorry about your friend.”

I don’t blame them for not standing up to the killers. They can’t get out of Ireland. I could and did. As the helicopter whirled us from Crossmaglen I knew some of my younger men were choked up and I couldn’t look at them for the lump in my throat. We had been through a lot together. At Bess-brook I said a few words, ending up with, “Thanks, lads, good luck.”

Most of us went to Gary’s funeral. A little girl read aloud a prayer she had written—it went, in part, “We hope the IRA will stop doing what it is doing”—and many a grown man cried.

My mates and I unwound one last time at a bar, over many a pint of ale.

“Mark,” said one of the boys at last, “sing us a song for all the lads we lost.” So I stood up and led them in *Where Have All the Flowers Gone ?* The whole place was singing, and a lot of men were weeping.

Then they staggered out into the night. Civilians, still not understanding,

thought as they had often thought before. “Look at those bloody drunken Marines!” And the Marines thought about the endless terror ahead for them and for the helpless people in Northern Ireland.

* Britain has trimmed its torce in Ulster from 22,000 to 9,500, while the RUC has been strengthened.

(CONCLUDED)

(C) 1983 by the Readers Digest Association (Canada) Ltd. Reprinted by permission.

HRA IN NAGALAND

House rent allowance at the rate of 7½ percent of the revised pay would be admissible to all Central Government employees working in Nagaland. This will be in lieu of rent free accommodation.

The Ministry of Finance has also clarified that Kohima cannot be treated as a ‘C’ class city for payment of HRA.

M0NTESS0RI TUITION FEE RAISED

Tuition fees for children studying in Montessori schools in CRPF camps stand enhanced from January 1. 1989.

The tuition fees would be Rs. 10, 15 and 20 for Other Ranks, Subordinate Officers and Gazetted Officers, respectively, instead of Rs. 8. 10 and 12.

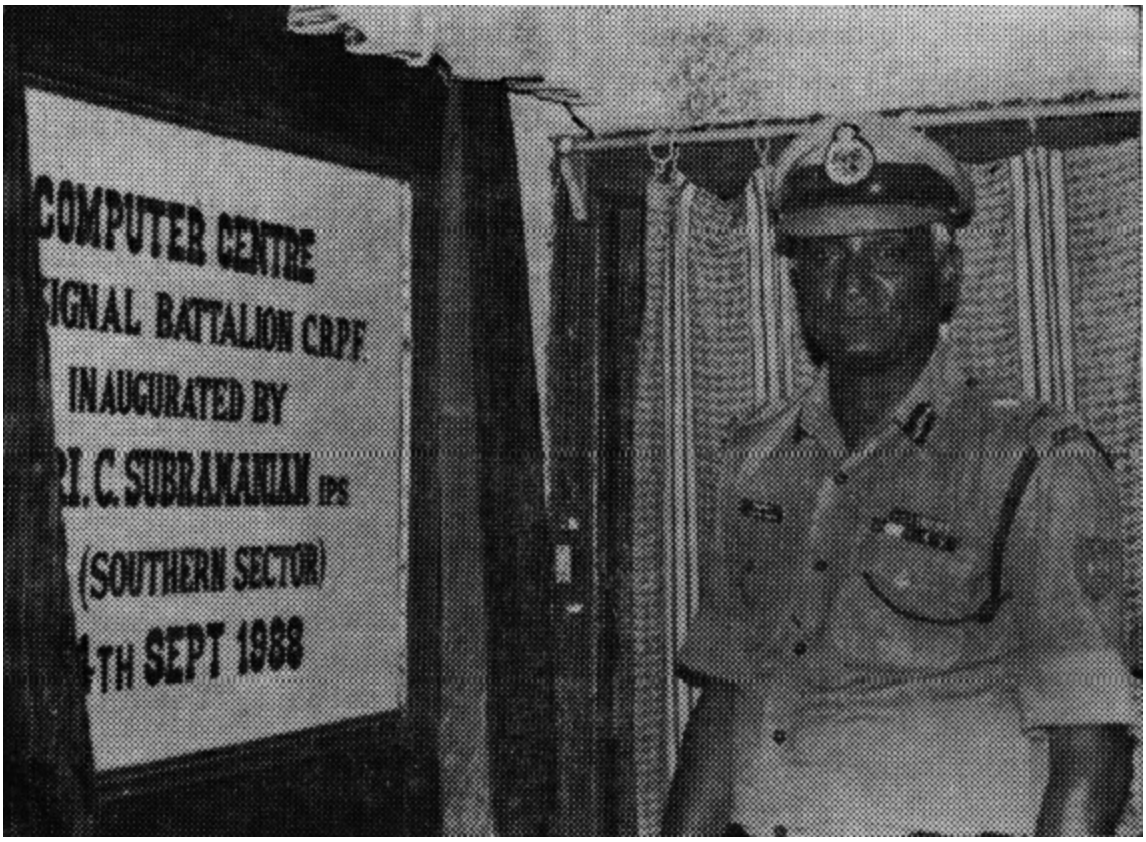
This decision was taken in a meeting of CRPF Education Fund held din September 1988.

It was also decided that the staff employed in these Montessori schools will not be paid any salary for the duration of summer vacations.

Guidelines have been issued for selection of staff to the schools.

A Board under the chairmanship of Range DIGs with the Additional DIGP of the Group Centres and the Principals of Kendriya Vidyala-yas in the campuses as members will select the teachers.

Priority would be given to trained nursery teachers or for trained graduates. If such teachers are not available, untrained teachers with experience in English medium schools are to be selected. Well qualified but untrained teachers would be given last priority.



A computer centre was inaugurated in the 1st Signal Battalion campus at Hyderabad by the IGP of Southern Sector Shri C. *Subramaniam on September 14, 1988.*



Officers and men of 29th Battalion, CRPF with the arms and ammunition recovered by them in Punjab in recent months.

Big haul by 29 Battalion men

29th Battalion, CRPF personnel recovered a huge haul of arms and ammunition during June, July and August this year in Punjab.

Five AK-47 rifles, two revolvers, a 12 bore pistol, three 12 bore guns, a Sten, a Thomson gun, a Mauser pistol, a Springfield gun, 12 magazines of AK-47 rifle and 5 of Thomson gun, 200 rounds of AK-47,200 of Thomson gun, 126 of .303 and 10 rounds of .315 were recovered besides nine hand grenades and seven time explosive devices.

The unit apprehended 20 terrorists in 1986, 47 in 1987 and 16 till September 1988. Of these, 27 terrorists were killed in different encounters including four who were ‘A’ category men.

Two terrorists were killed and one captured after a heavy encounter with a combined party of civil police and CRPF personnel in Walian Manjpur village of Verowal on August 25, 1988.

On receipt of information, a party of 29 Battalion, CRPF along with civil

police raided a number of farm houses. When they encircled a farm house in Walian Manjpur village, they were fired upon by terrorists hiding inside. The CRPF men returned the fire.

In the course of exchange of fire, the terrorists jumped out of the house and fired from the nearby paddy fields.

Soon re-inforcements from 12, 29, 48 and 76 Battalions of CRPF and civil police arrived. After two and half hours exchange of fire, the area was searched. Two dead bodies were recovered while one was apprehended.

Five Chinese assault rifles with 12 magazines and 200 rounds, a Thomson gun with 5 magazines and 200 rounds, two revolvers, a Mauser pistol, three 12 bore guns, a Spring field gun, six grenades and Rs. 40,000 in cash were recovered from venue of encounter.

12 Battalion Captures 14

Fourteen terrorists, one of them a 'B' plus category, were apprehended by personnel of 12th Battalion, CRPF in Punjab during August and September this year.

Two other terrorists were killed by 12th Battalion in joint operation with 29th Battalion on August 25, 1988.

Following arms and ammunition were recovered. AK-47 rifles-7; AK-47 magazines-14; revolvers and pistols-8; .303 rifles and 12 bore guns-4; Sten gun-1; HE 36 grenades-6; binocular-1 and assorted ammuni-tion-1758.

Nine KLF men held

Nine terrorists of Khalistan Liberation Force were arrested by a combined party of CRPF (29th Battalion) and the civil police from a farm house in Tur village in Verowal on September 3, 1988.

The nine were involved in 21 killings, two dacoities and many other crimes. They were planning to kill innocent civilians when they were arrested.

Rocket-launchers recovered

Two rocket - launchers with Afghan markings were recovered when a CRPF party led by DIGP, CRPF, Jalandhar searched the house of Milkha

Singh in Dhariwal village in Patti area of Punjab on September 23, 1988.

Milkha Singh, who tried to escape was nabbed after a hot chase for about a kilometer.

Two CRPF men were killed and three injured in the area in a terrorist ambush on September 22, 1988.

Rockets, rifles recovered

A wooden box containing arms and ammunition was recovered from the kitchen of one Kundan Singh in Sur Singh village under Bikhiwind police station in Punjab by a CRPF party on October 2, 1988.

On receipt of information, a Section of 38 Battalion, CRPF alon-gwith three officers raided the house despite heavy rains and slush. The box was recovered after interrogation of children.

Two AK-47 rifles, 13 AK-47 magazines, 10 cleaning kits of AK-47, five AK-47 keys, 7 rockets RPG, 12 rocket chargers and a dry battery were hidden in the box.

Further search of area yielded 1,057 rounds of AK-47 hidden in a PVC pipe of 10 meters length.



Shri C. Subramaniam, IGP, Southern Sector has a look at the arms recovered by 29 Battalion while the Commandant R.K. Sharma looks on.

Harbourer arrested, arms recovered

Three AK-47 rifles with seven magazines and 611 rounds were recovered from a hay stack by a combined party of civil police and 48 Battalion, CRPF in Bath village in Taran Taran on September 10, 1988.

On receipt of specific information, a special operation was carried out in Sadar police station area.

Two suspects were apprehended. On interrogation one was found innocent and let off. The other, under the pressure of interrogation, led the party to his house where three terrorists had stayed the previous night and showed them the spot where arms and ammunition had been hidden. He was arrested and handed over to civil police along-with the recovered arms and ammunition.

5 SIGNALS IN PUNJAB

The 5th Battalion of CRPF Signals has been sanctioned by the Government.

The unit will be raised in Mohali in Chandigarh.

CRPF man killed

Constable Ram Niwas Sharma of ‘A’ Company, 76 Battalion, CRPF was killed when terrorists opened fire near Dubbian canal bridge in Tarn Taran on August 16, 1988.



The jawan, who was in a CRPF ambush party challenged a terrorist who

was approaching the ambush site. The terrorist and a few of his accomplices who were following him, fired at the Constable, killing him on the spot.

Other men in ambush party returned the fire and the terrorists escaped under cover of darkness.

Miscreant held

A miscreant was chased and caught by a Section of ‘F’ Company, 36 Battalion, CRPF when he was seen firing in Golukhpur Mushairy area of Jehanabad on August 29, 1988.

A country-made pistol with an empty case was recovered from him.



48 Battalion personnel with the dead extremist Pargat Singh

Terrorist killed in encounter

One terrorist Pargat Singh alias Pagga of Kasel village was killed after a two-hour long encounter with a party of 48 Battalion, CRPF in Kasel village of Tarn Taran on September 9, 1988.

Five platoons of the unit with two officers carried out search operations

starting from Chabal.

The Company Commander of ‘B’ Company on spotting a suspicious looking man near a farm house on the outskirts of Kasel village approached him. On being questioned the suspect gave evasive replies.

The officer then saw a person lying on a cot in the farm house. On being challenged, he fired from an AK-47 rifle through window.

After a two-hour long encounter, the terrorist was ultimately killed. An AK 47 rifle with a magazine and 155 rounds were recovered from him.

Terrorist commits suicide

Malkiat Singh, an ‘A’ category terrorist of the outlawed Khalistan Commando Force (KCF) committed suicide after he was overpowered by a Section of ‘E’ Company, 40th Battalion, CRPF in Jalandhar on June 23, 1988. The dead terrorist who was involved in incidents of mass killings, bank robberies and attempts on the lives of senior police officials carried a reward of Rs. 50,000 on his head.

The CRPF Section with a Company Commander was proceeding to the city in a vehicle when they noticed two men on a scooter crossing them. They chased the two men, who fired at the CRPF party on getting too close. The CRPF men returned the fire. The two then left the scooter and ran.

When the Company Commander was about to overpower Malkiat Singh, he swallowed poison. He was evacuated to civil hospital where he died.

The other scooterist escaped, taking advantage of the traffic on GT road.

Villagers help CRPF kill terrorist

Two terrorists were killed in an encounter in Dakala village in Patiala on September 12, 1988.

On receipt of information, a CRPF party rushed to the village. Seeing the CRPF posse, the two extremists left the cycle and ran to a nearby sugarcane field from where they fired at the CRPF men. The CRPF men returned the fire and killed one. The other terrorist was killed by the villagers when he tried to escape.

A Chinese Mauser with 90 rounds, a .32 revolver and a 12 bore DBBL gun with 22 cartridges and 14 cases were recovered.



The IGP (Border) of Punjab Police Shri Chaman Lal and DIGP, CRPF Shri S. S. Virk being shown the weapons captured by 48 Battalion, CRPF.

3 Terrorists, CRPF Inspector killed in encounter

Inspector Ram Avtar of 19th Battalion, Central Reserve Police Force and three terrorists were killed in an encounter near Chan Chak village in Patti (Amritsar) on August 27, 1988.

The Inspector was checking all out-posts at night when he learnt of firing sounds having been heard from Chan Chak village side.

Alongwith his two Sections, Ins-pector Ram Avtar rushed to Chan Chak village where he learnt that 3 or 4 terrorists were resting in the house of one Meja Singh.



Having cordoned the house, Inspector Ram Avtar along with four men tactically entered the house and found three men in a dark room, talking in a low tone. When the Inspector challenged them, they fired at the CRPF men. A burst of bullets hit the bulletproof jacket of the Inspector causing no harm. The CRPF men returned the fire, killing one terrorist on the spot while others took to their heels. While fleeing, the terrorists continued to fire at the CRPF men. Another burst of fire hit Inspector Ram Avtar on the jacket but, one bullet ricocheted and pierced his neck. He died on the spot.

Head Constable Rajdev Singh took stock of the situation and fired at the fleeing terrorists, killing two of them.

Re-inforcements reached the spot soon after. In the search operations, following arms and ammunition were recovered: AK-47 rifle-1; AK-47 magazine-4; AK-47 rounds-97; AK-47 cases-10; DBBL gun-l; DBBL cartidges-48; Pakistani pistol-1; .38 pistol rounds-97 and .32 bore rounds-6.

The three terrorists killed were identified as Attar Singh, Virsa Singh and Bhagwant Singh.

The IGP of North Western Sector, Shri Joginder Singh, gave a reward of Rs. 5,000 to the CRPF men involved in the encounter.

Head Constable Killed

Head Constable Hiralal of 19th Battalion, CRPF and three terrorists were killed in an encounter near Nathu Chak village in Patti on September 13, 1988.

A CRPF party led by the Company Commander was patrolling the area near Nathu Chak village when they saw a tractor approaching.

A hasty ambush was laid and the men in tractor were challenged by the

CRPF men. Soon the men in the tractor started firing at the CRPF men which was promptly returned.

In the ensuing encounter, two terrorists were killed on the spot. Head Constable Hiralal suffered fatal bullet injuries, as he continued firing at the men on the tractor.

One terrorist who tried to escape in cover of darkness was chased and caught by Constable Gopal Singh. Another terrorist who was injured was found dead in the morning, while others escaped.

Following arms and ammunition were recovered from the dead and apprehended terrorists and from the place of encounter:—

AK-47 rifle-I, AK 147 magazines; 4; AK-47 rounds-288; revolver-1 and .32 rounds-12.

AVTAR SINGH BRAHMA HELD

Avtar Singh Brahma, a dreaded terrorist was killed in an encounter with a combined party of 41 Battalion, CRPF and the Rajasthan Armed Constabulary in Kesri Singipur area in Sri Ganganagar (Rajasthan) on July 21, 1988.

A .32 loaded revolver was recovered from his person.

On search of the area of encounter, the following arms and ammunition were recovered : AK-47 rifles-5; rifle-1; revolvers-3; grenades-24; AK-47 magazines-37, AK-47 rounds-2700 (approx) and revolver rounds-120.

The dead terrorist was identified as Avtar Singh Brahma only on August 21, 1988 when the CRPF men apprehended another terrorist, Bhupinder Singh Canadian in Amritsar and he revealed the identity.

Bhupinder Singh, a Canadian citizen and an active member of the Khalistan Liberation Force, was arrested by a CRPF party in an ambush in Amritsar on August 20, 1988.

Led by two officers, a special squad of CRPF laid an ambush alongwith civil police near a bridge between Thande and Sangana villages, when information was received of terrorists movement in the area.

At 2310 hrs, a person approaching the bridge was challenged. He fired upon the CRPF men. Fire was returned. The area too was illuminated.

On being warned, the suspect threw his weapon and surrendered. He was

then arrested. An AK-47 rifle with two magazines, 26 rounds and 10 cases were recovered.

The IGP of North West Sector sanctioned a reward of Rs. 485 to the men who took part in the operation.

ONE GOs' Mess only

Only one dry canteen and one Gazetted Officers' Mess will be run in Group Centre locations.

In a Circular Order (No. 19/88) dated 30th August, 1988, it is stated that training institutions at such locations will, however, have their own dry canteen.

Wet canteens are permitted in all units.

Profits of canteens and co-operative shops will be distributed as follows: —

(i) 50% to be retained as addition to corpus of fund for capital expansion,;

(ii) 10% to Officers' Mess;

(iii) 10% to Station and Battalion SOs' Messes out of profit of respective canteens, and

(iv) 30% to all ORs' Messes in the station. Head Constables' Messes wherever functioning will receive 10% with 20% going to OR Messes.

Man with a mission

He is a man with a mission and is more than halfway towards achieving it.

The mission is to swim the seven seas—and Taranath Shenoy has successfully crossed the north sea (English Channel-thrice in '83, '84, and '85), the Indian Ocean (Palk Strait between India and Sri Lanka in '81), the Red Sea (Suez Canal in '86), the Pacific Ocean (Catalina Channel-'87) and

the Strait of Gibraltar.

The 29-year-old partially blind swimmer from Bombay is attempting to complete his task by conquering the remaining two seas—the Strait of Dardanelles (strait north-west of Turkey connecting sea of Marmara with the Aegean) and the Strait of Bosporus (strait connecting Turkey in Europe with Turkey in Asia)—by the end of next month. (Source : PTI Aug. 9, 1988).

BHINDAR TAKES OVER AS ADDITIONAL D.G.



P. S. Bhindar

Shri P. S. Bhindar took over charge as Additional Director General of CRPF on August 12, 1988. An IPS officer of 1958 batch, he is from Haryana cadre.

Born on September 11, 1934, Shri Bhindar joined the IPS after completing M.A.

Having served in the erstwhile United Punjab, he was subsequently

allotted the Haryana cadre.

On deputation to Delhi Police, he took over as DIGP in February 1975 and continued in that capacity till March 1977. From January 1980 to December 1981, he was Delhi's Police Commissioner.

For a little over a year, he remained IGP (Law and Order) in Punjab in 1983-84.

In December 1984, he joined the Bureau of Police Research and Development as Director (Training) and remained posted as such till July 1988. For a brief period prior to his joining the CRPF, he was Director General (Prosecution) in Haryana Police.

Shri Bhindar is a recipient of Police Medal for Meritorious Service.

Refresher course for MOs

Refresher courses of three months will henceforth be held for the CRPF medical officers at various locations under the arrangement of Sector IGPs. This is stated in Circular Order No. 24 of 1988.

While the general duty medical officers will attend the course after every three years, the specialists will undergo the course after every five years.

Four doctors from each Sector will be nominated for the courses that will be held at Osmania General Hospital, Hyderabad; Medical College, Bhubaneswar; Safdarjang Hospital, New Delhi; Gauhati Medical College, Gauhati; and Medical College, Jammu.

Post-graduate courses for CRPF doctors

Medical officers with a minimum of five years service can make efforts to secure admission in postgraduate courses.

This is stated in Circular Order No. 18/88 issued by the Directorate General.

Permission will, however, be granted on the basis of seniority, keeping "in view the administrative functional requirement at any point of time," the circular clarifies.

Specialization in surgery, medicine, gynaecology, anaesthesiology,

orthopaedics and opthamology alone will be allowed. Other disciplines too may be permitted if the Director General feels it essential.



Ram Chandra Jha

An IPS officer of Madhya Pradesh cadre, Shri Ram Chandra Jha is presently the Director of Internal Security Academy at Mount Abu.

Born on January 2, 1937, Shri Jha, a gold medalist in M. A. (History) joined the IPS on June 1, 1961.

He served in various capacities in Madhya Pradesh Police and was also associated with Shah Enquiry Commission as DIGP and with the special investigation team of Smt. Indira Gandhi assasination case as Additional Commissioner.

Based on an article written by him in Madhya Pradesh Police journal, questioning the validity of a particular judgement, the Supreme Court revised its orders in the case. Two other research papers on policing written by him were circulated through the Criminal Intelligence Gazette, seeking revision of another judgement of the Supreme Court.

He has attended senior officers course, vertical interaction course and top management development programme at the SVP National Police Academy and orientation course in research methodology at the Institute of

Criminology and Forensic Science.

Shri Jha is a recipient of Meritorious Service Medal and the President's Police Medal for Distinguished Service.



Pratap Singh

Shri Pratap Singh, IPS took over charge as IGP of Eastern Sector, CRPF in August 1988. Prior to this he was IGP, North Eastern Sector.

Born on October 13,1936, Shri Pratap Singh joined the Indian Police Service (Madhya Pradesh cadre) in 1961 after graduating with honours in history from Delhi's St. Stephen's College.

As Assistant Superintendent of Police, he served in the dacoit-infes-ted Morena district with distinction. After stints as S. P. of Guna, Khargone and Ujjain districts, he served in the far north-eastern corners in Arunachal Pradesh and Nagaland, commanding M. P. Special Armed Force Battalions.

For nearly seven years he remained on deputation with the Intelligence Bureau whereafter he joined the Nagaland Police as DIGP. He was there for two years, after which he was repatriated to the Madhya Pradesh to serve in Chief Minister's Secretariat.

He joined CRPF on deputation as DIGP of Ajmer Range, in December

1983 and held the post till his promotion in 1987.

He bagged cups for sports and musketry in the then Central Police Training College at Mount Abu.

A recipient of Police Medal for Meritorious Service, he takes keen interest in natural history, particularly in the study of birds.



M. P. Singh

On promotion as Inspector General of Police, Shri M. P. Singh took over charge of North-Eastern Sector on July 14,1988. He was working in the Directorate General as Deputy Director (Operations) prior to his promotion.

Born on May 3,1938, Shri Singh joined the Central Reserve Police Force on December 5,1961 as a Deputy Superintendent after obtaining M. Sc. degree.

He was promoted as Assistant Commandant in December 1967 and after two years became Commandant.

On promotion as DIGP in September 1980, he took over charge of Gauhati Range. In August, 1983 he was posted to Directorate General as Deputy Director (Provisioning).

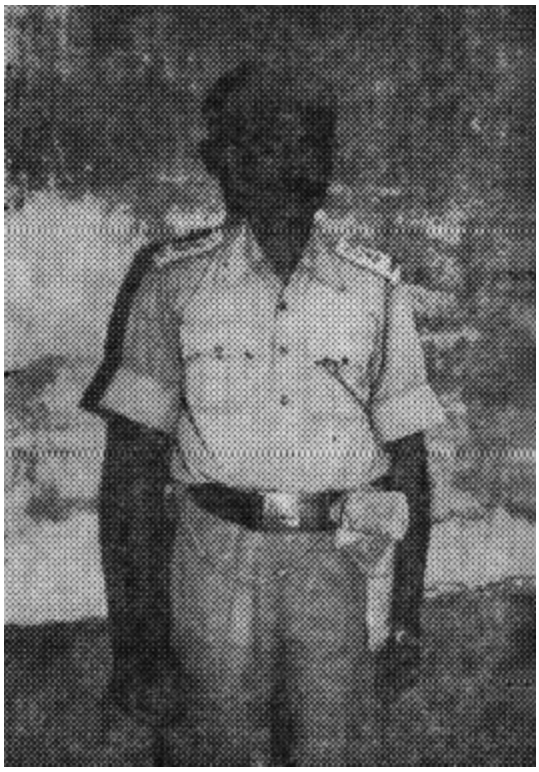
He has undergone courses in weapon and tactics, development administration, programming, computer application in law and order administration and internal security. He has specialized in EDP programming and system analysis.

Shri Singh is a recipient of Police Medal for Meritorious Service and President’s Police Medal for Distinguished Service.

He loves touring.



Asstt. Comdt. Babu Rao



Insp. K. G. Varghese

SAGA OF SERVICE

by

H. S. Sethi

September 25 was like any other day in Mand-Kasu, a part of the sensitive Mand area of the Punjab, It was dusk time. Shining stainless steel plates and mugs in their hands, the soldiers of a CRPF platoon post were waiting for dinner. What came instead was water in all its fury.

It was a flash flood that had already broken the strong Dhussi bund and was heading in all directions. Within two hours, that is by 8.30 p.m. water was as high as eight feet. The men at post were flashing signal upon signal to Commandant Tilak Raj Arora headquartered 36 Kms away at Nakodar. Thereafter followed more panicky SOSs, each time telling the Commandant that that was perhaps their last message.

“I was receiving such messages every half an hour and each time I

received it, my blood pressure increased. The Govt, had given me everything but not the boats. If I fail to rescue even one man I would have thought it a personal failure. I was knocking at every door to get a boat but no help seemed to be forthcoming", said Arora.

Finally at 1 a. m. the efforts of Arora and his team of officers succeeded when the local Sub Divisional Magistrate provided a boat. Uncertainty was writ large on their faces for nobody could tell as to whether or not the men of the platoon would be there when the boat could reach them. But reach they must.

Assistant Commandant Babu Rao was entrusted with the responsibility of personally leading the rescue. Fifty-year-old Babu Rao, a reputed sportsman who had once battled for honours in war as also in kabaddi, athletics, basketball and football in many a national meet, had another battle ahead of him.

Depending upon the road breaches and level of floods, Babu Rao and his team carried the boat on trucks, on shoulders, or pushed and pulled it through shallow water or ferried it across (where water was deep) till it reached in the vicinity of the post bv 4 a.m.

But then it was pitch dark and the rescuers could not locate the post. They did not know what to do. This was conveyed on wireless to the marooned men who fired a Very Light Pistol to signal their location.

It took Babu Rao and his men another two and a half hours to reach the post. When Babu Rao reached the site he saw five men on one tree, five men on the other and remaining twelve on the roof of the post built of mud. Water was about to touch the roof and it was still pouring. It was indeed a miracle as to how the mud building had withstood the fury of the floods.

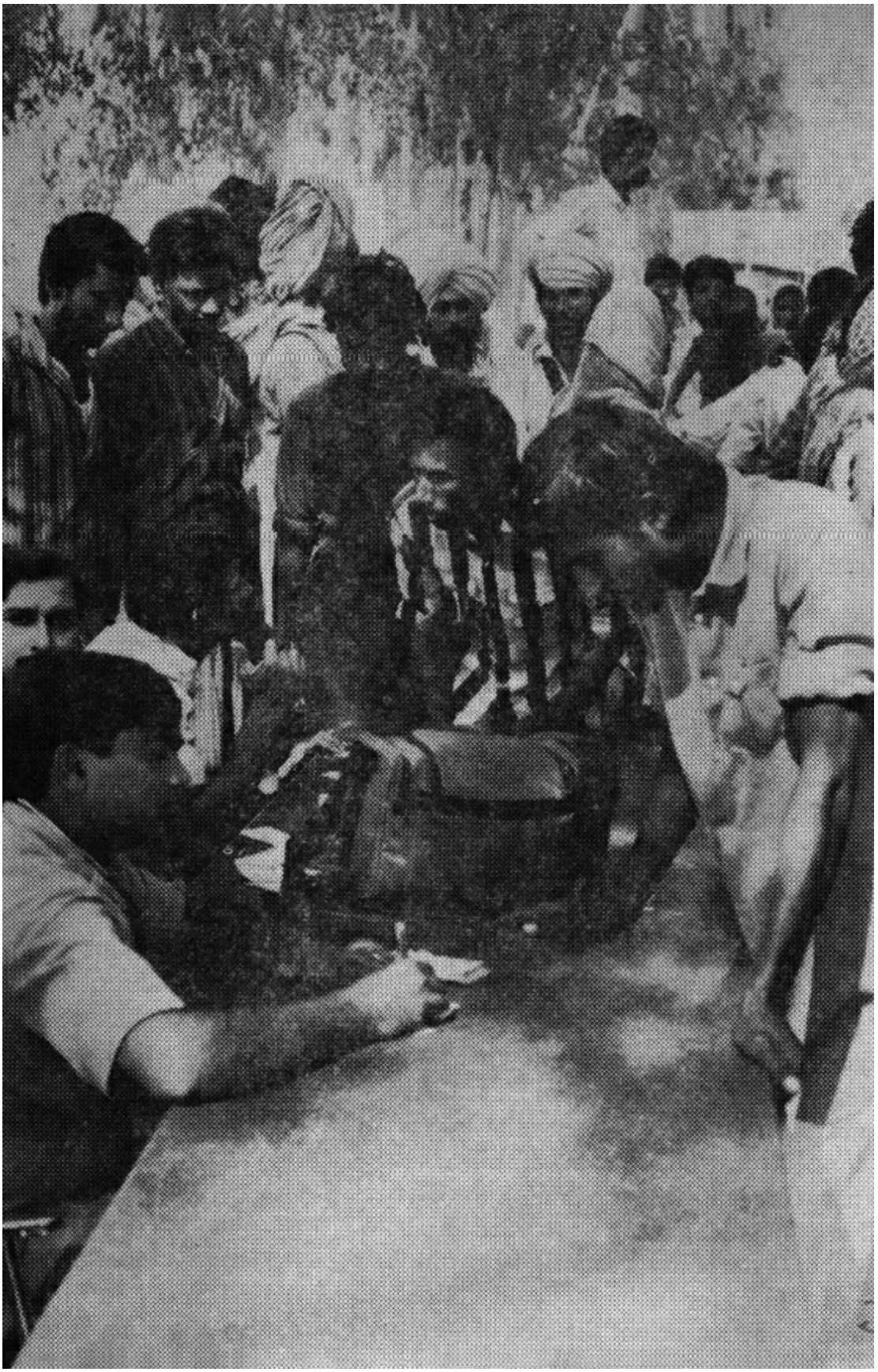
As the boat reached one such tree, the first man who came down from his precarious perch embraced Babu Rao and cried like a child.

"We had thought we would never see you", he said amidst sobs as more men boarded the boat. In the midst of the flood fury all distances between the officer and his subordinates were sunk and they hugged each other heartily.

They told Babu Rao that they had lived in fear of not only drowning but also of getting bitten by snakes who were washed away by the swift current and climbed trees that came their way. In one case where a man observed two snakes closing in on him, he fell down the tree in panic. It was a job for his

colleagues to hold the tree with one hand and haul up their drowning colleague with the other.

Meanwhile from Sutlej Bridge came Inspector K. G. Varghese rowing a boat. Being the Company Commander of the platoon and realising his special responsibility, he had risked his life alongwith that of two hand-picked expert swimmers in a bid to save his men. They had rowed upstream all the way.



CRPF doctors attend to patients in a relief camp.

Ten round trips were made to take the men and their equipment to a bund which had not breached so far. Like a true leader, Babu Rao was last to get himself evacuated. As Babu Rao and the last batch of rescued men rowed towards safety, they saw the mud post crumble and sink into oblivion.

The saga of service rendered by Babu Rao, Varghese and their teams of rescuers did not end. Thereafter the two boats were pressed into service and as many as 500 inhabitants from the nearby marooned villages were rescued on September 26 and 300 on September 27. The process of making round trips ended only when the light faded after 6 p.m. that day. Meanwhile army boats arrived and pressure on these teams decreased.

Babu Rao and his teams reached the headquarters only at midnight. By this time they were totally exhausted. It was only when they got time to relax that they realised that their physical state was in a shambles. But they had a sense of satisfaction unsurpassed.

DARING FEATS

Three CRPF men and two civilians spent 32 agonising hours in the flood waters to save seven marooned residents on September 25 when the Dhusi bundh on the Sutlej overflowed and there was a breach near Khurshaidpur village. They were stranded because they did not vacate their houses despite a warning.

The three CRPF Constables—Dev Singh, Ram Kumar and Jagdamba Tripathi—accompanied by Mr. Chamkaur Singh, Head Clerk in the Jagraon SDM’s office, and Dr. Ajit Singh of the area found a boat and fitted an engine to it. Mr. Chamkaur Singh, an ex-serviceman, started driving the boat. After driving kms in the deep, furious flood waters they found the seven persons who had taken shelter on a tree and asked them to jump in the boat. As they jumped in, the boat overturned. But the five brave men managed to get hold of them and put them back in the boat. They tied the boat to a tree and kept sitting in it the whole night. The water current was so strong that all trees in the area, except the one to which the boat was tied, were uprooted and carried away.

When the five persons did not return to their base, reports were flashed that the three CRPF men and two civilians had been shed away. An IAF helicopter was sent to rescue them but its two attempts failed.

Finally, the five built up courage and started driving to the base camp at Khurshaidpur. One of the rescued persons, an old man, was drowned while trying to pick up his bag which had fallen into the water.

There were scenes of jubilation when the 11 persons reached their base camp. Among the survivors were two women.

Dr. Ajit Singh accompanied the team as a guide because he belongs to the area and knew the route.

(Courtesy : The Tribune of October, 1988)



Camping on a bund during the floods.

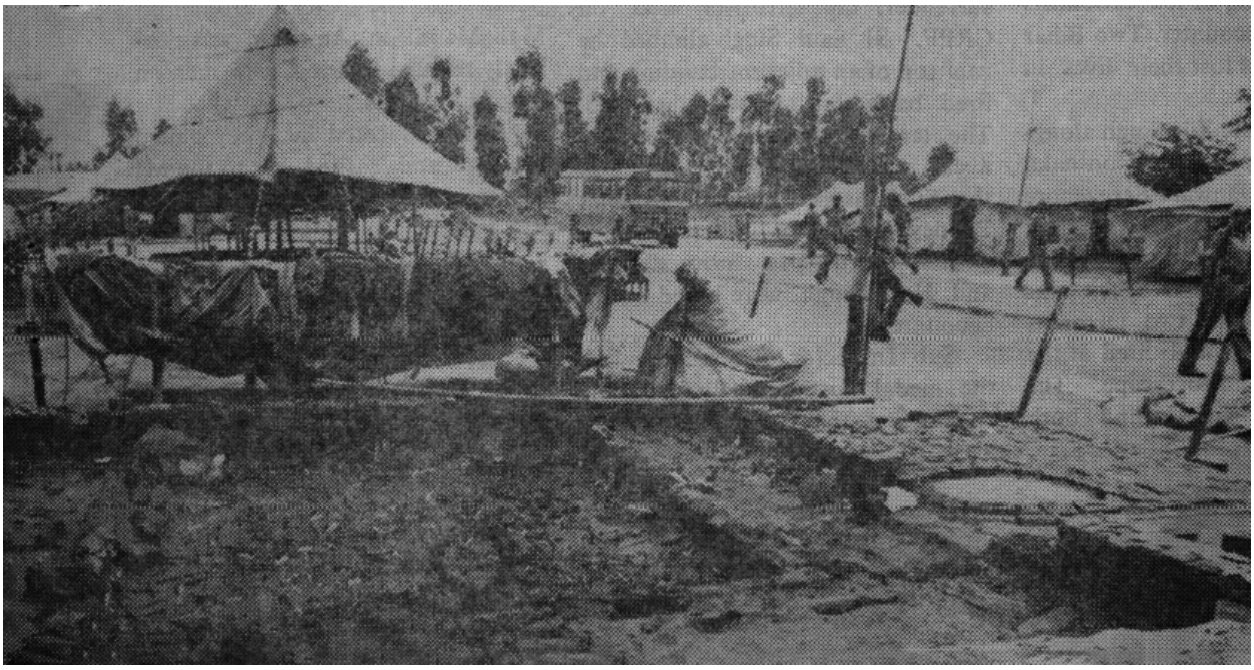
CRPF MEN'S EFFORTS COMMENDED

The Deputy Commissioner of patia1a has sanctioned Rs. 3,000 for the men of 82 Battalion, CRPF for their commendable efforts in plugging a breach on Devigarh road on July 25 last.

When the villages in Devigarh area were inundated by flash floods in July, rescue operations were in full swing.

The Devigarh road, which was the lifeline in the area, developed a major breach disrupting the only line of communication. While other departments like the Drainage Department pleaded helplessness, the CRPF men rushed to the spot under the command of Shri Jaman Singh, DySP and began plugging the breach on war footing. Soon the breach was plugged and the communication restored, making it possible for rescue operation to continue unhindered.

In a letter addressed to Commandant, 82 Battalion, **CRPF** the **DC** has stated that the CRPF men have "exhibited a rare sense of exceptional initiative and drive" in plugging the breach.



This is what remains of a sand model of 24 Battalion washed away by heavy rains.

Fifteen get gallantry medals

Fifteen officers and men of the Central Reserve Police Force have been awarded gallantry medals for the courage and devotion to duty displayed by them in various encounters.

Inspector Mohan Singh and Constable Abdul Rashid Khan, both of 68

Battalion and Head Constable Zile Singh of 85 Battalion get the President's Police Medal for Gallantry. The Police Medals for Gallantry have been awarded to Assistant Commandant Inderjit Bhatia and Constable G. Soman Pillai (both of 12 Battalion); Deputy Superintendent Dushyant Singh and Inspector Jagir Singh (both of 36 Battalion); Deputy Superintendent Hari Singh, Naik Bindeshwar Shah and Constable Robin Peter (all of 49 Battalion) Sub-Inspector Saul Singh; late Sub-Inspector Banta Ram, Constables O.N. Rajan and Bajarangi Pandey (all of 48 Battalion) and Head Constable Megh Raj of 20th Battalion.

Inspector Mohan Singh and Constable Abdul Rashid Khan have been honoured for their gallant role in an encounter against armed extremists in Aurangabad district of Bihar on December 31, 1984.

In a joint operation alongwith Bihar Police they were responsible for the liquidation of ten extremists in a day-long encounter. Two Bihar Police Constables lost their lives in this encounter.

Head Constable Zile Singh alongwith a CRPF party was on naka duty on Mallanwala-Ferozepore Road on March 2, 1987. He fired at a truck that did not stop when signalled to do so. The truck was forced to stop and two terrorists jumped out of it and fired at the CRPF men in a bid to escape. The fire was returned, killing both terrorists. Another terrorist trying to escape from the other side of the vehicle was spotted, chased and shot dead by Head Constable Zile Singh at grave risk to his life.

Assistant Commandant Inderjit Bhatia and Constable G. Soman Pillai displayed bravery in killing a hardcore terrorist following an ambush laid by CRPF near Mallowal village in Jandiala on April 16, 1987.

Deputy Superintendent Dushyant Singh and Inspector Jagir Singh get the medal for their role in a joint operation with Bihar Police and BMP which resulted in the killing of a dreaded dacoit Chhangur Dushad and his accomplice in an encounter in Thiloi village in Rohtas district of Bihar on April 19, 1987.

For the courage shown in killing a terrorist and capturing another after an encounter near village Patlok in Amritsar on February 7, 1987, Deputy Superintendent Hari Singh, Naik Bindeshwar Shah and Constable Robin Peter stand honoured.

Sub Inspector Saul Singh alongwith a CRPF party was combing the villages in Mallowal area on July 4, 1986 when he learnt of a terrorist gang in

a house. The CRPF party surrounded the house and sealed escape routes. Asked to surrender, the terrorists fired on CRPF. SI Saul Singh climbed the roof top of an adjacent building and fired back, hitting two terrorists. The terrorists' attempt to escape in a car was then foiled by the fire of the Sub Inspector and Constables Pandey and Rajan.

Two hard core terrorists Billa and Hari Singh were killed in this encounter.

Sub Inspector Banta Ram gets the medal posthumously for boldly challenging the terrorists who had ambushed a CRPF vehicle in Tarn Taran on January 10, 1987. Though hit fatally on his chest, he fired at the terrorists with his pistol and then with a light machine gun till he breathed his last. Head Constable Megh Raj chased a dreaded terrorist near a railway crossing in Rama Mandi area in Punjab on July 16, 1987 and shot him dead in a brief encounter.

(Photographs will be published in Anniversary issue)

Army Chief's Commendation to CRPF Officer



Shri Amir Singh Jatrana, Deputy Superintendent of Police in the 35th Battalion of CRPF, has been awarded the Commendation by the Chief of Army Staff, General V. N. Sharma on the occasion of Independence Day this year.

This is in recognition of his distinguished service in Sri Lanka as a member of the Indian Peace Keeping Force.

GIRL RESCUED

A 7-year-old girl who fell into a pond near the CRPF ground at Mal

Mandi in Amritsar was promptly rescued by five CRPF men on August 16, 1988.

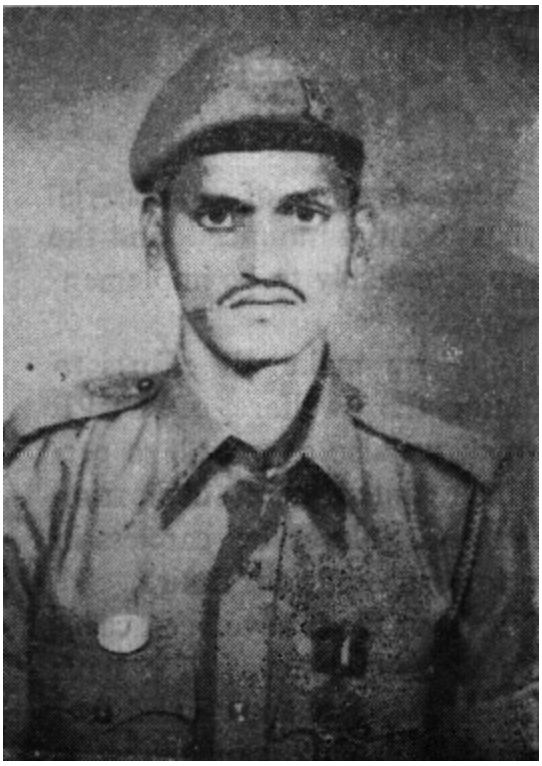
Having located her, they pulled her out and rushed her to the MI Room, where she recovered after first aid.

Opium recovered

A person, Satwant Singh. was arrested when 50 Kgs of opium was recovered from his truck by a CRPF Section in Sangrur on August 8, 1988.



P.G. Murgeshan



Moti Singh

PM's Life-Saving Medal for two CRPF men

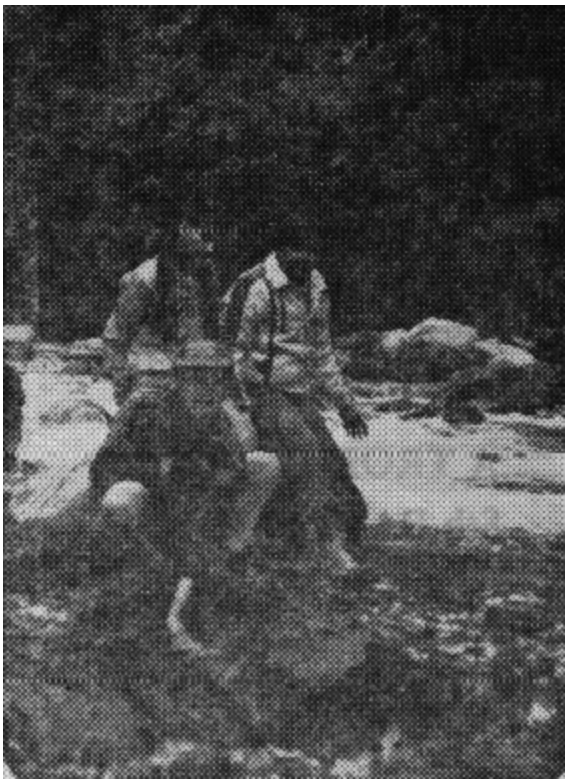
The Prime Minister's Police Medal for Life-saving has been awarded to Head Constable P. G. Murgeshan and Constable Moti Singh of the Internal Security Academy of the Central Reserve Police Force at Mount Abu.

They have been honoured for the exemplary courage and devotion to duty displayed in rescuing five students of St. Xavier Engineering College, Ahmedabad from a deep gorge near Mt. Abu on May 15, 1986.

The students who were attending a rock climbing course at the Gujarat Mountaineering Institute in Mount Abu lost their grip when bitten by a swarm of bees and fell into a 100 feet deep gorge.

A CRPF detachment was rushed to the spot. Head Constable Murgeshan and Constable Moti Singh, who were trained rock climbers went down the gorge at grave risk to their safety. Though badly bitten by the bees in their endeavour, they succeeded in rescuing four students without much loss of time. The fifth student, who was unconscious and was in a serious condition,

was carried up the gorge and rushed to the Medical College Hospital, Ahmedabad where his life was saved.



Two CRPF children who took part in the Himalayan Adventure Trail are seen with their guide.

Children's camp in CRPF campus

A two-day camp for children of Bal Bhavan Kendras was organized in CRPF Group Centre campus in Jharoda Kalan by the Bal Bhavan Kendra of Northern Region on August 19 and 20, 1988.

Of the 60 children who attended the camp, 10 were from the Bal Bhavan Kendra of CRPF Group Centre.

The children took part in poster competition and declamation contest. About 800 people later went around the exhibition of posters organised on the occasion.

About 2,000 children from different schools of the capital joined the campers in their activities on August 20.

A tree-plantation drive and cultural programme were also organized.



Two children of CRPF personnel took part in the Himalayan Adventure Trail 1988, organized by the Delhi Centre of Bal Bhavan Kendra from June 5 to 16, 1988. They are Gyan Bahadur, 16, and Manmohan Singh, 16.

They were among a batch of 20 children who trekked upto Yamu-notri under the leadership of their guide, Shri O.P. Sharma.

DG addresses Sainik Sammelan at Ajmer

On October 6, 1988, the Director General, CRPF, Shri P.G. Halarn-kar, addressed a sainik sammelan attended by officers and men from various formations in the Group Centre I campus at Ajmer.

Formations that took part in the sammelan were Group Centre I and II, 5 Battalion, 85 Battalion, 96 Battalion and office of DIG (Ajmer). As many as 34 Officers and 1,627 Subordinate Officers and Other Ranks attended the sammelan.

Following is the text of his address to the men :—

“I am glad to be here to address you.

“Our Force has aquitted itself well in Operation Black Thunder and has earned a good name for its role. I am aware that our Force personnel are performing their duties amidst difficulties and problems. Keeping these

problems in view, we are trying to get more facilities for them. We are purchasing land in different places and are getting buildings constructed. We are giving them better medical cover. CRPF children's education being so important, we have started a school in Rohini for them where 60 percent of seats are reserved for children of CRPF personnel. We have also set up a hostel for the children at Malviya Nagar in New Delhi. Efforts are afoot to get other facilities for CRPF personnel.

"The award of a medal to all CRPF personnel serving in Punjab has been announced by the Govt. We are trying to get the Delhi Police pay scales for the CRPF men also. We hope to succeed in this endeavour.

"Cadre review of ministerial staff has been announced and the SIU report is likely to be implemented soon.

"While we make all efforts to look after the welfare of CRPF personnel, we also expect all to perform their duties with dedication and alertness. Never be careless in the performance of your duties.

"Whenever there have been casualties among our men, we have enquired into them and found that 80 percent of these incidents were due to their carelessness."

The DG then spoke to them about various points raised by the men.

CRPF IN GUJARAT

In the wake of 'Rath Yatra' festival in Gujarat, 47 Companies of CRPF were rushed to the State in July, 1988. These were withdrawn from Punjab, Chandigarh and Delhi hurriedly and sent there.

After assisting the State police in the peaceful conduct of Rath Yatra festival the CRPF men handled a very delicate situation—the strike by Gujarat policemen. The firmness with which it was curbed was praised by the State Government and the press.

A TROPHY FOR 8th BATTALION

In recognition of the excellent services rendered to the Arunachal Pradesh

Government by 8th Battalion, CRPF during its four years deployment in the state, the Governor, Shri R. D. Pradhan, presented a trophy to the Unit on August 24, 1988.

Two terrorists accounted for

Satnam Singh, alias Satta, an 'A' category terrorists with a reward of Rs. 30,000 on his head and Avtar Singh, a 'B' category terrorist were killed in an encounter with four platoons of 48 Battalion, CRPF on October 31, 1988.

On receipt of information that some terrorists were camping in a farm house near Dargapur village in Tarn Taran, the CRPF platoons rushed to the area.

Seeing the CRPF men, the terrorists started running towards Dargapur village.

Two terrorists were chased by a party led by two officers. Even while running the terrorists fired at the CRPF men. After about six kilometers, the two hid in a pump house. Finding the CRPF men close in on them, the terrorists tried to flee but were shot dead. While one was identified as Satnam Singh, the other was believed to be Sukhwinder Singh alias Sukha.

Another terrorist who was running in another direction was shot dead by another party led by a Sub-Inspector, after a chase for about three kilometers. The deceased was identified as Avtar Singh.

An AK 47 rifle with three magazines, 222 rounds and 21 cases, a .315 rifle and a 12 bore gun with two cartridges and seven cases were recovered from the dead terrorists.

The terrorists owed allegiance to KCF led by Bakshish Singh. They were responsible for two bank robberies, killing of seven villagers and were involved in an encounter with CRPF earlier at Gandiwind.

Self trust is the essence of heroism.

—Emreson

Flattery corrupts both the receiver and the giver.

—Burke

LOW COST HOUSING IN CRPF

by

H. S. Sandhu

In April 1988 I attended the United Nation's Conference on Housing Settlement where I had the opportunity to share the concern of delegates from 84 countries and to hear the views of delegates from United Kingdom, France, Australia, New Zealand, China, USA, African and Latin American countries.

It was a pleasant surprise for me to know that most countries felt that they had a great deal to learn from India in low cost housing technology for the reason that almost 85% of India's population lives in low cost houses. I was astonished to hear that the developed countries with small populations were feeling the pinch of the financial constraints in solving their housing problem.

It was in June 1986 when Shri Satish Dutt Pandey, former Director General of CRPF, introduced the low cost housing technology concept in the Central Reserve Police Force. The idea was to construct low cost houses with compressed mud blocks. Shri Pandey gave me all the encouragement and material and monetary backing to undertake this project, and gave the go ahead signal.

I quickly constructed the first mud house with compressed bricks of uniform size at a low cost of Rs. 6,500 only. This house was seen by a cross section of engineers and planners in the Capital and the experts from the National Building Construction Company, Development Alternatives, HUDCO and a number of private organisations and in their view this house was a dream come true.



The author with house models

The HUDCO, which is an offi-cial body of the Ministry of Urban Development, sent its officers—Mr S.K. Sharma (from HUDCO), Mr Ashok Khosla and Mr. Pradeep Kashyap (from Development Alternatives) plus their teams of engineers who minutely inspected the technique introduced and material used in our construction and reported to Shri S. D. Pandey that Central Reserve Police Force low cost houses in 73 Battalion location were the cheapest housing project in the country and added that even if the cost of labour was added to the cost of construction, the CRPF low cost houses were 30 to 40% cheaper than those made by others including CPWD.

73 Battalion, CRPF has also designed some low cost buildings like Other Ranks' living barracks, Subordinate Officers' Mess, Other Ranks' dining hall, Unit hospital and officers' living accommodation.

These constructions have also been rated by experts in the field to be the cheapest. The experts were highly impressed by the workmanship and quality of buildings built by our combatant staff and acknowledged the CRPF as the first to introduce low cost building technology in civil and para-military forces.

It was an honour for me when HUDCO nominated me for representing the country as one of the delegates in the United Nations Conference for Housing Settlement and invited me to participate in the world body conference on human settlement-1988.

How much money does the CRPF spend on tentage to accommodate troops ? Approximately a sum of Rs. 4 to 5 crores is spent to provide and arrange replacements of tentage annually. We cannot go on incurring such huge recurring expenditure indefinitely and it is high time that, at least in the first stage, the field Units plan the construction of buildings with low cost technology.

Incurring expenditure of approximately Rs. 30,000 per barrack, we can save the recurring expenditure on tentage. For example to replace two EPIP tents annually, it costs approximately Rs. 4,060 and the life-span of an average tent is barely nine months to one year, whereas the life of a low cost barrack will be at least 15 years. It is true that though in the first year the department will spend a little more than what it does annually to accommodate troops under canvas, but there will be a saving of expenditure on tentage in the subsequent 15 years, for cost of repair and maintenance of these low cost barracks will be nominal.

Shri P. G. Halarnkar, the present Director-General, CRPF has shown equal concern for constructing low cost mud houses for troops as this is the only practical way to provide shelter for men.

A number of Commandants have thoroughly inspected these low cost houses at 73 Battalion CRPF Headquarters and a beginning has been made by some to construct the low cost houses for their troops in their Units.

Mr. Halarnkar has further given me a go ahead signal to construct the first low cost housing colony. I plan to undertake construction of 30 family quarters in Lado Sarai in New Delhi. The work will start immediately after the monsoons are over, as dry weather is required to fabricate compressed mud blocks and dry these up before construction.

I can say without hesitation that this is the only way we can provide family quarters to the majority of troops. If the troops live out of the Force camps, performance of daily duties gets jeopardised, as men are not available for routine law and order duties at short notice. It is therefore high time that we plan to construct low cost housing colonies within the Battalion campus for troops. This will greatly help the Unit personnel who can be charged a moderate rent. In this way troops will not only get good, hygienic family accommodation but the Battalion will also be in a position to deploy them at short notice.



Stabilized soil blocks being made by the men of 77 Battalion, CRPF in Bangalore.

Low Cost Family Quarters In Bangalore

Personnel of 77 Battalion, CRPF have started construction of twelve residential houses in their campus in Yelahanka in Bangalore. These are for the families of Other Ranks.

These low cost houses involving an expenditure of about Rs. 10,000 each

are being constructed with the technical advice of the National Buildings Organization.

Stabilized soil blocks are made out of mud mixed with cement and hydrated lime. These blocks are used in construction instead of the usual bricks. Quarry dust, surki powder, Cudappa stone slab for roofing and RCC door frames are also being used in the construction.

Consisting of a bed room, kitchen, toilet and bathroom, each house is being built in an area of about 200 sq. ft.

Masons of the Peace-Keeping Elements of Southern Sector, CRPF are engaged in the masonry work.

While six of these houses are expected to be ready by mid-September, the construction of other six houses will be completed by December 31, this year.

Rs. 1 lakh to deceased jawan's mother

A cheque of Rs. 1 lakh and another cheque of Rs. 2,000 were presented to Shrimati Mundi, mother of late Constable P. R. Arjunan of 63 Battalion, by Shri C. Subramaniam, IGP, Southern Sector at a function in Group Centre, Pallipuram on October 5, 1988.

Constable Arjunan was killed in an encounter with extremists in Rattaguda in Patti (Punjab) on April 16,1988.

While the amount of Rs. 1 lakh was an ex-gratia grant by the Punjab Government, the amount of Rs. 2,000 was sanctioned by the President in appreciation of the courage and sacrifice of Constable Arjunan.

A commendation card from the Director General was also presented to the bereaved mother.

Training institutions under Ranges /Sector

Training institutions that were hitherto functioning under the direct control of Deputy Director (Training) will now be working under the supervision of Range DIGs and IGP of Southern Sector.

Central Training College (CTC)-I and Recruits Training Centre (RTC)-I at

Neemuch are allotted to DIGP of Neemuch Range while CTC-II and RTC-II at Madras and RTC-III at Pallipuram are allotted to Madras Range.

“The Range DIGs and IGP will exercise all disciplinary, administrative, financial powers, etc. over these institutions as they do over other establishments”, saysJStanding Order No. 8/88 which has superseded S. O. No. 2/87.

The IGP and Range DIGs will also be responsible for implementation of training policies, programmes and quality of training, adds the the S. O.



Shri Joginder Singh, IGP, North West Sector presents a sewing machine to the wife of late Constable Khem Singh.

Raising Day of G. C. Jammu

Group Centre, CRPF at Banta-lab in Jammu celebrated its Raising Day on September 1, 1988.

Shri Joginder Singh, Inspector General of North West Sector, took the salute at an impressive parade in the campus. This was followed by on-the-spot painting competition, blood donation drive and a cultural programme.

Shri Joginder Singh presented a cheque of Rs. one lakh and a sewing machine to Smt. Basant Kaur, the widow of Constable Khem Singh who died in Punjab.

Shri K.L. Dubey, DIGP, CRPF, Srinagar Range was also present on the occasion.

Later speaking to the press, Shri Joginder Singh said that 40 Battalions of CRPF were deployed in Punjab alone for law and order duties while four units were based in Jammu and Kashmir.

Expressing difficulties faced by CRPF men, he said that they did not know the terrorists whom they were fighting and thus were at a great disadvantage. “We do not have the option to fire first, but always have to retaliate when attacked by terrorists”, he said.

He spoke at length about the various incentive schemes launched in recent times for CRPF personnel.

Risk Fund

REMITTANCE BY DEPUTATIONISTS

CRPF personnel on deputation to other organizations who receive final payment due to default in timely remittance of subscription to Risk Fund contributions will not be allowed fresh membership on repatriation. This decision was taken at a meeting of the executive committee of the Central Welfare Risk (Premia) Fund at the Directorate-General.

Non-remittance of subscription for more than six months could lead to termination of membership to the fund. However, defaulting subscribers could avoid termination by paying the subscription due along with penal interest of 18 per cent per annum.

These decisions will be effective after ratification by the governing body.

Addl DIGP escapes ambush attempt

Shri P. K. Menon, Additional DIGP, CRPF, Amritsar and Shri P. Damodaran, Commandant, 48th Battalion, CRPF and their escort party escaped an ambush attempted by elements of the outlawed Babbar Khalsa in Tarn Taran on October 19,1988.

After checking the deployment of CRPF Companies, Shri Menon and Shri Damodaran were returning around 2000 hrs to the Battalion Headquarters of 48 Battalion when they were ambushed near Kot Dharamchand Kalan on Tarn Taran—Chabal road.

The initial brust from automatic weapons by the terrorists was immediately retaliated by Constable Mantu Bora who was operating an LMG. Soon the vehicles were stopped and the officers and men jumped out and fired in the direction where the terrorists were believed to be hiding.

Risk Fund Payment

The next of kin of 24 deceased personnel of CRPF were paid a total of Rs. 8 lakhs in September 1988. This includes Rs. 10,000 each paid in 22 cases from the Central Welfare and Benevolent Fund.

Thirteen CRPF men have been paid Rs. 25,000 each on their invalidation.

They left us

It is with deep sorrow and regrets, we give below the list of CRPF personnel who lost their lives in September this year :

Constable Satyawan (58 Battalion); Constable R. U. P. Chau-dhary (35 Battalion); Lance Naik Raghubir Singh (86 Battalion); Head Constable Dayal Singh (54 Battalion); Head Constable Sabaran Lal (93 Battalion); Constable Mohammed Mehboob Khan (37 Battalion); Constable Mohammed Sher (22 Battalion); Constable Ram Kumar (83 Battalian); Naik/Radio Operator N. Kamraj (3rd Signal Battalion); Recruit Rafikul Islam (89 Battalion); Head Constable Hira Lal Yadav (76 Battalion); Lance Naik Dinesh-war Ram (49 Battalion); Constable Suresh Singh (Group Centre, New Delhi); Head Constable K. B. Chetri (29 Battalion); Constable Dhan Bahadur Gurung (SWS Gauhati); Constable Purna Bahadur (13 Battalion); Recruit Subash Raghunath Patil (Group Centre, Nagpur); Constable Jagdish Singh (38 Battalion); Constable Nem Singh (38 Battalion), Sub-Inspector Jagir Singh (90 Bn.); Naik Abdul Aziz (Group Centre, Gauhati); Recruit Sheikh

Mohammed Khatal (95 Battalion); Constable Raj Kumar (64 Battalion); and Head Constable J. P. Verma (26 Battalion).

BASIC PAY DURING HOSPITALISATION

Ex-gratia amounts to the next of such CRPF personnel who are killed in action will be paid to the beneficiaries at their native places. If for some reason, the amount is paid at places other than the native places, the journey fare and TA/DA/ will be paid to the beneficiaries out of the Unit Welfare Fund.

These decisions were taken in the governing body meeting of the CRPF Welfare Fund held in New Delhi on May 4, 1988.

It was also decided to revise the subscription for the Central Welfare Fund and to deduct the annual subscription in one lot.

Honorarium of Rs 100 that was hitherto being paid to Smt. Manjeet Kaur and Shri G. S. Soni has been raised to Rs. 150.

As regards financial assistance to CRPF personnel during hospitalization, it was decided that full basic pay in the revised pay scales would be paid.

Suggestion by Subedar Major (OS) C. S. Bhimasena Rao of Group Centre, CRPF, Hyderabad to provide financial assistance to NOKs of deceased CRPF personnel for attending the last rites was considered. It was decided that such expenses as are not recoupable from Government grants should be met from the Battalion Welfare Fund.

Cattle rearing in CRPF campus prohibited

Rearing of cattle including pigs is prohibited in CRPF camps.

This is stated in Circular Order No. 7 of 1988 dated August 12, 1988.

Maintaining poultry on large scale for commercial purposes is prohibited, though a small number of birds may be allowed subject to their not affecting the tranquility and sanitation in area. Sale of meat and eggs of such birds is not allowed, says the circular.

On keeping the boss happy

Never mind if your boss is not happy with you.

Here are some *Ulta Pulta* suggestions for you :—

(a) Learn to laugh on the joke told by your boss—37th time.

(b) Even if your boss can hardly drag himself from one corner of the tennis court to the other, learn to praise his game frequently. You may like to say “I can guess sir, you must have been a good player in your college days”. And I bet, you will see the pleasant smile on his face even if he has’nt seen a tennis racket or a college.

(c) If you see an ordinary painting in the drawing room of your boss, make it appear extraordinary by asking, “Where from have you got this, Sir ? How natural ! How beautiful!” If it happens to be a work of his wife or sister-in-law, you may add a few more sentences.

(d) If he comes to your house

  (i) remove expensive things from your drawing room. It is discourteous to look richer than your senior.

  (ii) Make a little “rona-dhona” about your bad financial position —lack of big property back home, difficulty to cope with daily expenditure etc. Remember that “a satisfied you can harm you”.

  (iii) Don’t forget to repeat the word ‘boss’, specially when his wife (not yours) is around.

  (iv) Try to show a little panic when he comes to visit your house, thereby reassuring him how much he matters for you.

  (v) Ask your wife to appreciate the sari, jewellery or any other embellishment of the wife of your boss, saying, “I would like to purchase a saree like yours’ mam. Where from did you purchase it”, etc.

  (vi) You . can then tell your wife to learn a few things from your

senior's wife in the latter's presence. But be careful to tell your wife later on to forget about it.

(vii) If your wife happens to be more educated than that of your boss or if your wife has a good job, you should be careful not to mention these. After all you can't afford to have a better wife than your senior can.

—Smt. Sudesh Ramchander

Terrycotton muftis for CRPF jawans

Two sets of white terrycotton mufti dress have been authorised for CRPF jawans. The serviceability period of these is six years.

The dress will replace the cotton mufti dress hitherto authorised. Mufti caps stand withdrawn.

Music Room in RTC-3

A channel music-cum-announce-ment room was inaugurated in the Recruits Training Centre-3 by the Director General, Shri P. G. Halarnkar, in Pallipuram in August this year.

With the installation of this system, music and announcements can be heard in all barracks and dining halls simultaneously. There is provision for channelising the music and announcements to particular barracks also independently.

Inaugurating the system, the DG expressed happiness over this welfare measure and desired that such systems should be installed in other Units too.

Going round the training institution which was raised two years back, Shri Halarnkar applauded the efforts of the officers and men and advised them on training matters.

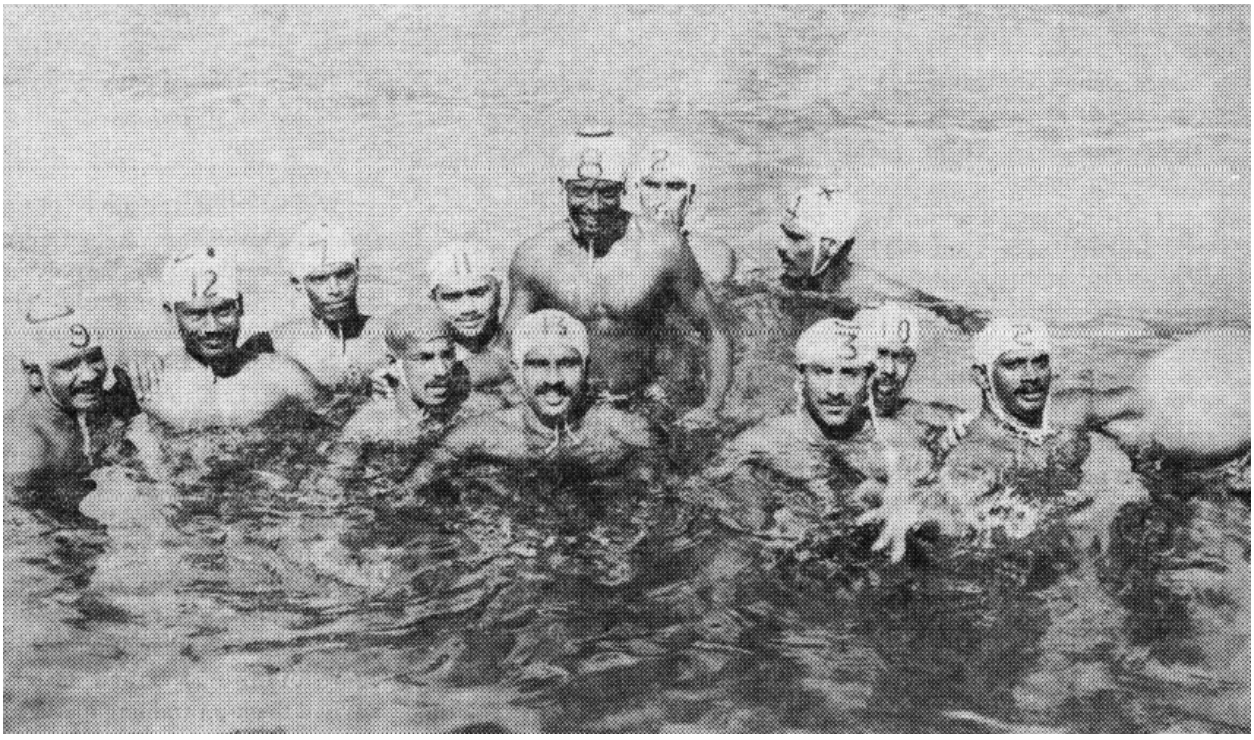
Shri C. Subramaniam, IGP Southern Sector and Shri P. V. Subba Rao, DIGP, Madras Range accompanied the Director General on his visit to Pallipuram.

DO letters to DIGs

All Additional DIGs of Group Centres, Commandants of Battalions and Principals of training institutions will henceforth send demi-official letters to their respective DIGs in the first week of each month.

This is stated in Circular Order No. 26 of 1988 issued by the Directorate General. The letter will, among other things, include information about vacancies in each rank, disciplinary cases, dues payable to next of kin of deceased personnel, MT position, deficiencies in arms, ammunition, clothing and tentage, feedback on training in Unit and physical and mental health of the Unit.

The DIGs will take necessary action and send replies at suitable intervals.



The victorious CRPF waterpolo team

A-I Police Aquatics

CRPF remain champions

In the All-India Police Aquatics held at Trivandrum from August 3 to 7, 1988, CRPF retained the team title for the eleventh consecutive year. Border Security Force came second while ITBP came third.

Of the 15 gold medals at stake, 11 were bagged by CRPF swimmers alone. 8 silver and 5 bronze medals were also added.

K. Somasekharan won the 100 meters event clocking 59.9 secs. Surinder Singh Tokas of BSF was second clocking lm 01.6 secs and CRPF's Radhakrishnan was third clocking lm 01.9 secs.

In 1,500 meters race, Mohinder Kumar (CRPF) stood first. He clocked lm 49.2 secs. ITBP's Hira Lal and BSF's Prem Kumar were second and third, respectively.

In 4 X 100 meters free style, CRPF quartet came first with timing of 4m 04.3 secs while CISF was second with 4m 11.9 secs and ITBP was third with 4m 19.1 secs.

B.S. Ravi Sekhar (CRPF) won the highboard diving event with 412.05 points. T. Suresh (BSF) with 340.15 points was second and Ishwar Dev Narain Rai was third with 337.50 points.

In waterpolo finals CRPF defeated BSF by 10 goals to 4. Punjab Police was third.

CRPF won cross country championship also. BSF was second and U.P. Police was third.

The CRPF Director General Shri P.G. Halarnkar announced a cash reward of Rs. 5,000 to the swimming and cross country teams for their commendable performance.

The complete results :— *100 M Free Style* : 1. K. Somasekharan (CRPF) 0.59.9 sec; 2. Surinder Tokas (BSF) 1.01.6 sec; 3. S. Radhakrishnan (CRPF) 1.01.9 sec; 4. R. Padmanabhan (CISF) 1.02.1 sec; 5. V. O. Rajan (CISF) 1.02.7 sec and 6. Champalal (MP) 1.03.5. secs.

200 M Free Style : 1. Surinder Tokas (BSF) 2.12.0 sec; 2. S. Radhakrishnan (CRPF) 2.16.4 sec; 3. Mohinder Kumar (CRPF) 2.17.3 sec; 4. B. Hari Lal (ITBP) 2.18.1 sec; 5. R. Padmanabhan (CISF) 2.18.5 sec and Premlal (UP) 2.200 sec.

400 M Free Style : 1. Surinder Tokas (BSF) 4.41.0 secs; 2. Mohinder Kumar (CRPF) 4.44.5 secs; 3. S. Radhakrishnan (CRPF) 4.51.1 secs; 4. B. Harilal (ITBP) 4.52.1 secs; 5. R. Padmanaban (CISF) 4.56.5 secs and 6. Prem

Singh (BSF) 4.57.5 secs.

1,500 M Free Style : 1. Mohinder Kumar (CRPF) 18.49.2 secs; 2. B. Hari Lal (ITBP) 19.03.8 secs; 3. Prem Singh (BSF) 19.14.1 secs; 4. S. Radhakrishnan (CRPF) 19.15.5 secs; 5. Surinder Tokas (BSF) 20.09.5 secs and 6. B. Mohanan (CISF) 20.18.1 sec.

100 M Back Stroke : 1. Ajit Sangwan (CRPF) 1.07.9 secs; 2. P. Padmanabhan (CRPF) 1.10.4 secs; 3. Surinder Tokas (BSF) 1.11.1 secs; 4. Subash Chandra (CISF) 1.13.5 secs; 4. Harikuttan (BSF) 1.14.2 secs and 6. Manoharan (Tamilnadu) 1.14.5 secs.

200 M Back Stroke : Ajit Sangwan (CRPF) 2.31.7 secs; 2. Surinder Tokas (BSF) 2.34.7 secs; 3. P. Padmanabhan (CRPF) 2.39.1 secs; 4. Sanjiv Kumar (Punjab) 2.40.8 secs; 5. Harikuttan (BSF) 2.43.7 secs and 6. Ramhit Yadav (UP) 2.44.3 secs.

100 M Breast Stroke: 1. Radhakrishnan (CRPF) 1.14.3 secs; 2. Rajesh Sharma (BSF) 1.17.2 secs; 3. Satpal Singh (Punjab) 1.18.9 secs; 4. G. R. Sherry (CRPF) 1.19.0 secs. 5. Champalal (M.P.) 1.19.17 secs and 6. Anilkumar (ITBP) 1.20.0 secs.

200 M Breast Stroke : 1. S. Radhakrishnan (CRPF) 2.43.4 secs; 2. G.R. Sherry (CRPF) 2.47.6 secs; 3. Satpal (Punjab) 2.48.1 secs; 4. Anil Kumar (ITBP) 2.51.0 secs; 5. Rajesh Sharma (BSF) 2.52.6 secs and 6. Anil Kumar B (ITBP) 2.58.1 secs.

100 M Butterfly Stroke : 1. Surinder Tokas (BSF) 1.03.6 secs; 2. T J Jacob (CRPF) 1.05.5 secs; 3. B. K. Sharma 1.07.3 secs; 4. Padam Pal (CRPF) 1.07.5 secs: 5. Jayakumar (ITBP) 1.10.5 secs and 6. Thomas Grigary (CISF) 1.11.0 secs.

200 M Butterfly Stroke : 1. Surinder Tokas (BSF) 2.22 .0 secs; 2. Padampal (CRPF) 2.27.0 secs; 3. TJ Jacob (CRPF) 2.29.1 secs; 4. BK Sharma (BSF) 2.29.5 secs; 5. Ram Niranjan (UP) 2.48.9 secs; and 6. Thomas Grigary (CISF) 2.59.1 secs;

200 M Individual Medley: 1. TJ Jacob (CRPF) 2.28. secs 2. S. Radhakrishan (CRPF) 2.31.3 secs; 3. Surinder Tokas (BSF) 2.32.8; 4. Champalal (MP) 2.35.9 secs; 5. Rajesh Sharma (BSF) 2.36.8 secs; and 6. Anil Kumar (ITBP) 2.39.8 secs;

400 M Individual Medley: 1. T J Jacob (CRPF) 5.24.9 secs; 2. Mohinder Kumar (CRPF) 5.30.0 secs; 3. Surinder Tokas (BSF) 5.40.2 secs; 4. Anil

Kumar (ITBP) 5.51.2 secs; 5. Ram Niranjan (UP) 6.00.9 secs; and 6. Lalji Tripathy (UP) 6.03.0 secs;

4 X 100 M Free Style Relay : 1. CRPF 4.04.3 secs; 2. CISF 4.11.9 secs; 3: ITBP 4.19.1; 4. UP 4.21.0 secs; 5. Punjab 4.21.4 secs; and 6. Tamil Nadu 4.29.0 secs;

4 X 200 M Free Style Relay : 1. CRPF 9.12.2 secs; 2. BSF 9.20.2 secs: 3. CISF 9.29.0 secs; 4. UP 9.39.2 secs; 5. ITBP 9.49.5 secs; and 6. Punjab 10.10.0 secs;



4 X 100 M Medley Relay: 1. CRPF 4.32.4 secs; 2. BSF 4.40.6 secs; 3. ITBP 4.52.1 secs; 4. UP 4.52.3; secs; 5. Punjab 5.04.2 secs; and 6. Tripura 5.06.8 secs.

Spring Board Diving : 1. Ramesh Chand (Delhi) 354.45 points; 2. Hoshiar Singh (BSF) 332.10 points; 3. Vinod Kumar (ITBP) 305.00 points; 4. P D Nath (ITBP) 298.05 points; 5. Ramakant Yadav (UP) 296.00 points; and 6. Suresh Chander (CRPF) 290.15 points.

High Board Diving: 1. B.S. Ravisekhar (CRPF) 412.05 points; 2. Suresh T (BSF) 340.15 points; 3. Ishwar Devnarain Rai (UP) 337.50 points; 4. Subhash Yadav (UP) 285.45; 5. Sankarnath Ghosh (Bengal) 275.9 points; and 6. BT Jadava (Maharashtra) 215.35 points;

Waterpolo : 1. CRPF; 2. BSF; 3. Punjab; and 4. ITBP

Team Championship : 1. CRPF-266 points; 2. BSF-143 points; 3. ITBP-49; 4. CISF-41 points; 5. UP-25 points; and 6. Punjab-23 points;

CRPF officer in Seoul Olympics

Shri Khajan Singh, Deputy Superintendent of Police, represented the

country in the 24th Olympics at Seoul in September this year.

He clocked 2 m 09. 0 secs in the heats of 200 meters butterfly and failed to qualify for the final.

The officer underwent a yearlong training in Australia under the expert guidance of the renowned Australian coach, Eric Arnold, prior to his participation in the Olympics.

Ajmer hoopsters on top

Ajmer range won the 22nd Inter-Range Basketball Competitions held at Gauhati from August 21 to 31, 1988. Hyderabad and Training Ranges trailed in the next two positions in that order.

Ajmer Range won the Inter-Range Volleyball competitions held at Pinjore from August 5 to 10, 1988.

Madras and Training Ranges trailed in that order in the next two positions.



Ladies of Family Welfare Centre in Jharodakalan being taught low-cost nutritious recipes.

Nutrition week at Jharoda Kalan

The Seventh National Nutrition Week was observed at the CRPF Family Welfare Centre at Jharoda Kalan in New Delhi from September 7,1988.

An exhibition on the preservation of fruits and vegetables was organized. Demonstrations on nutritious low cost recipes and diets for different age groups were also arranged for the ladies of the Welfare Centre. Film shows on nutrition drew large crowds.

Thirty children participated in a painting competition organized in collaboration with the Bal Bhavan Kendra of the Group Centre campus. An essay competition on “Malnutrition causes, Impacts and Remedies” was also held.

Shri J. S. Negi, Additional DIGP of CRPF Group Centre, New Delhi was the chief guest at the inauguration ceremony. Shri M. R. Maha-devan, Assistant Technical Adviser, Food and Nutrition Board (Northern Region) and Shri Baljeet Kumar Sharma, Assistant Commandant (Adm) were actively involved in the week-long celebrations.

FREE TRAVEL

Two relatives of CRPF men who are injured in operations in Sri Lanka will be allowed free rail travel facility from the station nearest to place of residence to the station nearest to the hospital where the injured person is admitted.

This follows a decision taken by the Ministry of Railways recently.

Laxman bags gold in combat shooting

With a full 100 points, Head Constable Laxman Sarkar of CRPF won a gold medal in the pistol shooting events in the Second Prime Minister’s Gold Cup Shooting Competitions held at Tughlakabad ranges in New Delhi from October 5 to 12, 1988.

Sub-Inspector Sarabjeet Singh received a cash prize of Rs. 1,000 for his overall performance while the team manager, Shri T. S. Dhillon, Assistant

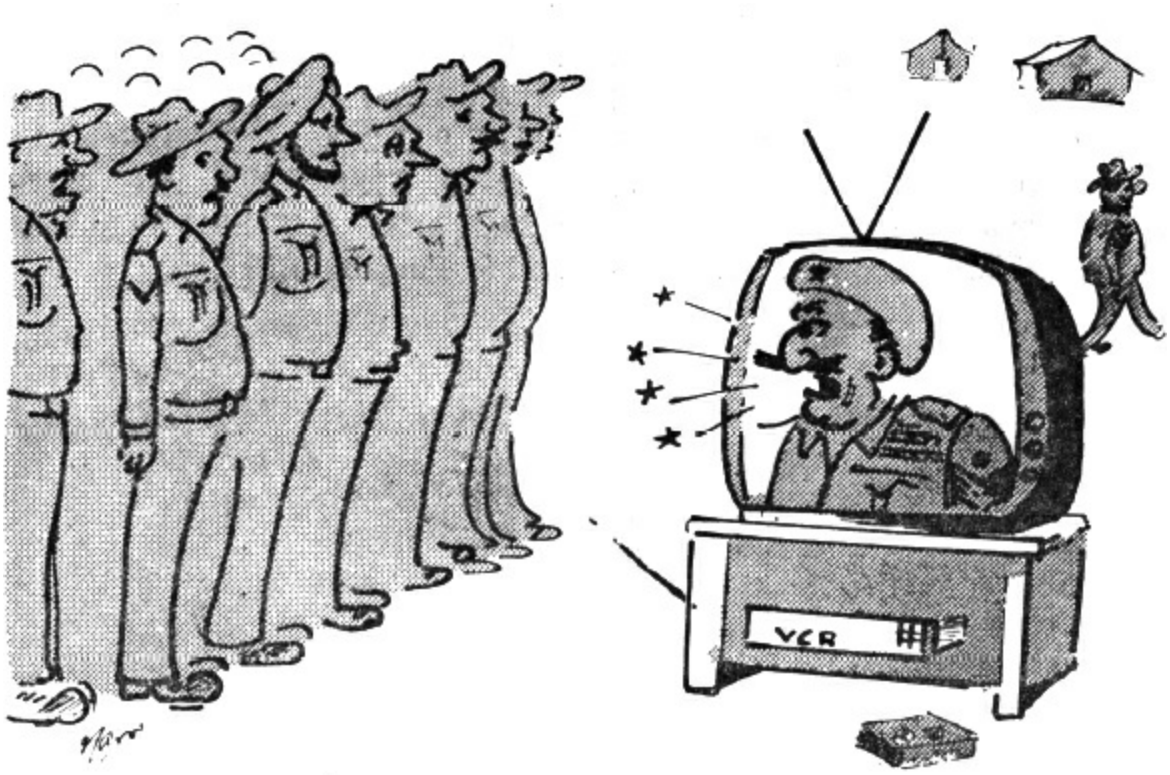
Commandant clinched the silver for his 196.2 out of 200 performance in battle-run carbine shooting.

The CRPF team was graded fifth.

The Home Minister, Shri Buta Singh, inaugurated the meet while the Prime Minister Shri Rajiv Gandhi gave away the prizes.

Children's park in Hyderabad

A Children's park was inaugurated in Group Centre campus in Hyderabad by the Inspector General of Southern Sector, Shri C. Subram-aniam, on August 31, 1988.

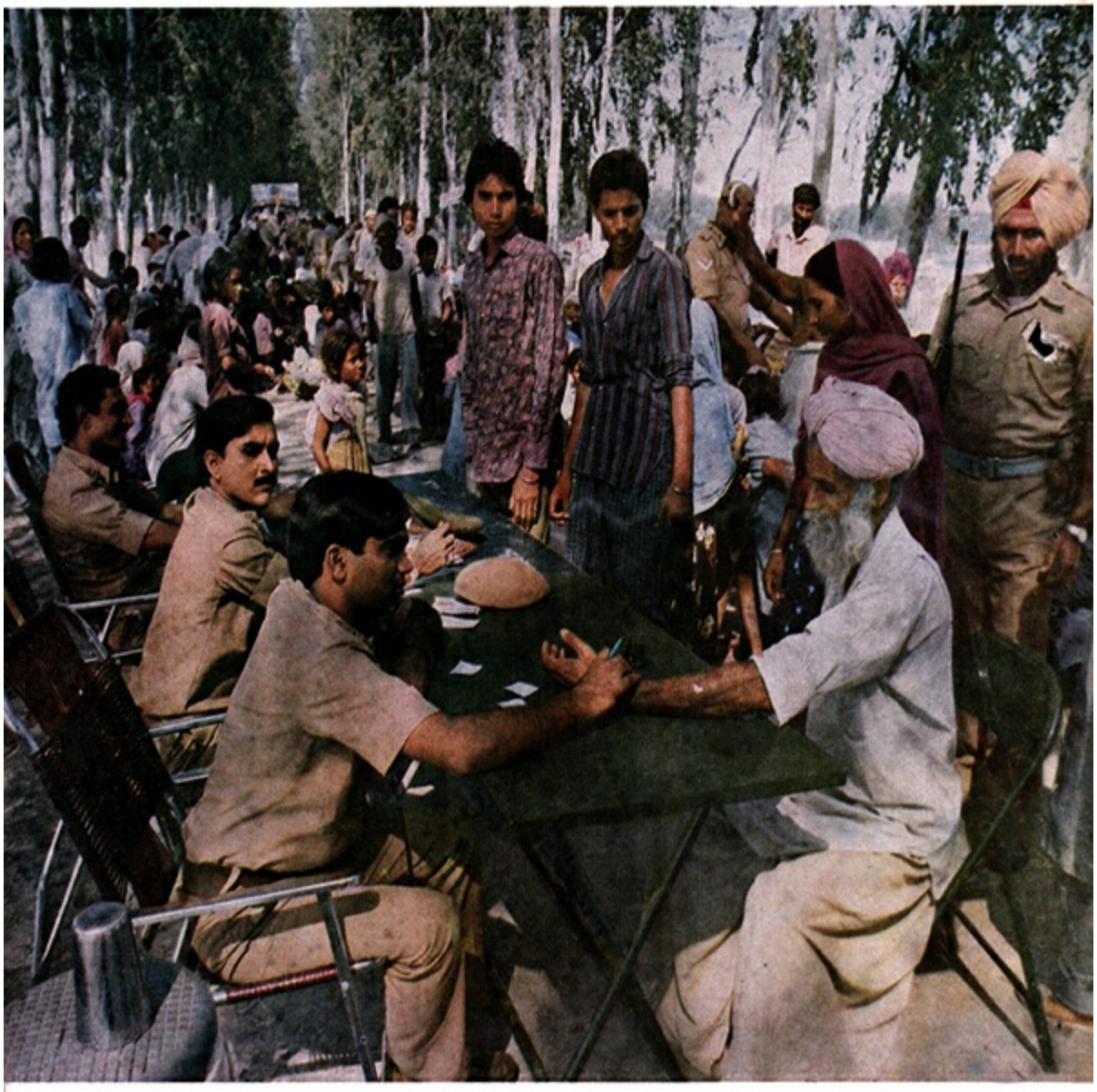


"That is CHM's idea of our entertainment."



Central Reserve Police Force men around the Golden Temple complex in the wake of operation "Black Thunder".

Regd. No. 45950/87



A team of Central Reserve Police Force doctors providing medical relief to flood-hit population near Nakodar in Punjab.

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की मासिक पत्रिका

सीआरपीएफ समाचार

उत्कृष्ट सेवाओं के लिए
पुलिस पदकों से सम्मानित
कार्मिकों की सूची

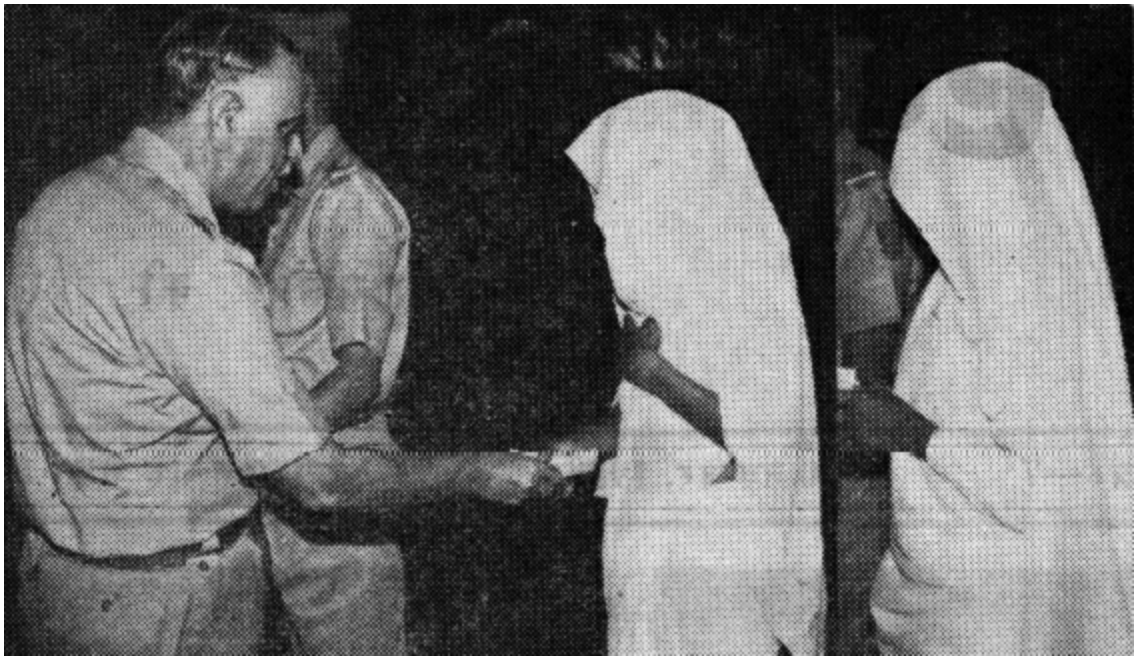
मूल्य—1.60 खण्ड II अंक—7 30 नवम्बर, 1988 1 अग्रहायन शक संवत् 1910



पंजाब में मृत दो जवानों की विधवाओं को सांत्वना देते महानिदेशक पी. जी. हलनंकर, अपर महानिदेशक पी. एस. भिंडर तथा उपनिदेशक (प्रशासन) बी. एल. बोहरा

(छाया : सतीश खन्ना)

मृत जवानों के आश्रितों को नकद अनुदान



ग्रुप केन्द्र झाड़ौदा कलां नई दिल्ली में महानिदेशक श्री प. ग. हलर्नकर पंजाब में मृत दो जवानों कां० बाने सिंह तथा कां० भगवान सिंह की विधवाओं को पंजाब सरकार द्वारा प्रदान की जाने वाली एक-एक लाख की राशि के चैक भेंट करते हुए।

दो विधवाओं को अनुदान

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के अपर महानिदेशक श्री पी. एस. भिंडर ने 18 नवम्बर, 1988 को बल के रामपुर ग्रुप केन्द्र में एक समारोह में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के दो जवानों की विधवाओं को एक एक लाख रुपए के चैक भेंट किए।

19 बटालियन के कांस्टेबल चन्द्रपाल सिंह तथा नायक रामप्रकाश इसी वर्ष अप्रैल माह में पंजाब के रत्तागुड़ा गांव में आतंकवादियों से लड़ते हुए शहीद हुए। इन दोनों की विधवाओं श्रीमती कौशल्या देवी तथा श्रीमती दुर्गावती देवी ने ये चैक प्राप्त किए। यह राशि कर्तव्य पर मृत बल के कार्मिकों के नजदीकी संबंधियों को अन्य अनुदानों के अतिरिक्त पंजाब सरकार द्वारा प्रदान की जाती है।

इस मुठभेड़ में जिस में दोनों जवानों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा, कुख्यात आतंकवादी 'जनरल' हरी सिंह अपने पांच साथियों सहित मारा गया था तथा 5 ए. के. 47 राइफलें और एक थामसन कारबाईन गन बरामद की गई थी।

इस अनुदान राशि के अतिरिक्त प्रत्येक विधवा को केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के

विभिन्न अनुदानों से 35,000 रुपए पहले ही दिए जा चुके हैं।

इसके अतिरिक्त ये विधवाएं केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जोखिम निधि फंड से 20 वर्ष तक 400 रुपए प्रतिमाह पाती रहेंगी। पेंशन स्वरूप मृत कार्मिक द्वारा मृत्यु के समय ली जा रही वेतन राशि के बराबर पेंशन भी वे अपनी मृत्यु या पुनर्निवाह तक पा सकेंगी।

कांस्टेबल अर्जुनन की मां को एक लाख

16 अप्रैल, 1988 को अमृतसर जिले के रत्तागुड़ा गांव में 19 व 63 बटालियन की टुकड़ियों के साथ हुई आतंकवादियों की मुठभेड़ में जहां बल के जवानों को भारी सफलता मिली थी, वहीं बल को अपने तीन बहादुर जवानों से भी हाथ धोना पड़ा। इसी मुठभेड़ में शहीद हुए 63 बटालियन के कांस्टेबल पी. आर. अर्जुनन की मां को ग्रुप केन्द्र पल्लीपुरम में 5 अक्तूबर, 1988 को आयोजित एक सादे समारोह में पंजाब सरकार द्वारा प्रदत्त एक लाख रुपए का चैक भेंट किया गया।

कांस्टेबल अर्जुनन की मां श्रीमती मुन्डी को यह चैक दक्षिण क्षेत्र के पुलिस महानिरीक्षक श्री सी. सुब्रह्मण्यम ने यह चैक भेंट किया।



कां० पी. अजुर्नन की मां श्रीमती मुंडी पुलिस महानिरीक्षक श्री सी. सुब्रह्मण्यम से एक लाख का चैक स्वीकार करते हुए।

वर्ष 1988 में उत्कृष्ट सेवाओं (Meritorious services) के लिए पुलिस पदकों से सम्मानित कार्मिक 26 जनवरी, 1988 को घोषित



कमांडेंट जी० जी० ए० शर्मा 25. बटा०



कमांडेन्ट सो० एस० बरार, 40 बटा०



स० कमांडेन्ट एफ० सावरियप्पा 64 बटा०



उपाधीक्षक, भागसिंह ग्रु० के० गुवाहाटी



उपाधीक्षक रामसिंह 49 बटा०



सहा० कमांडेन्ट प्यारासिंह 49 बटा०



सू० मे० ख्वाजू खान महानिदेशालय



नि० जयानन्द शर्मा ग्रु० के० रामपुर



नि० पी० कुन्हामन 2 सिगनल बटा०



नि० एन० एल० पाटिल 44 बटा०



नि० जगमाल सिंह ग्रु० के० हैदराबाद



है० कां० रामस्वरूप 8 बटा०



है० कां० किरलू राम ग्रु० के० रामपुर



है० का० ड्रा० एम० पी० कुशलप्पा 6 बटा०



कां० बनवारी लाल 49 बटा०

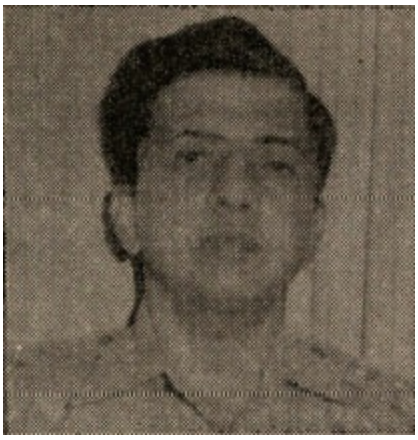


बारबर जगन नाथ 76 बटा०

15 अगस्त, 1988 को घोषित



उ० पु० महा० नि० इम्फाल टी० के० मिसाओ



कमांडेंट एम० के० धगत 19 बटा०



कमांडेंट बलवन्त सिंह 79 बटा०



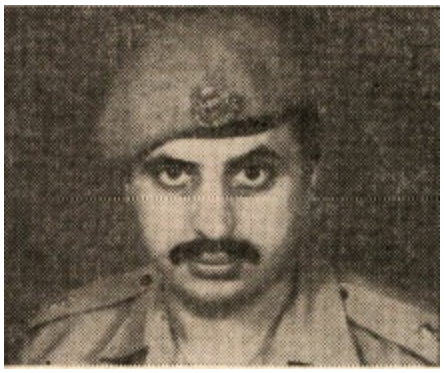
कमांडेंट ए० सी० सीताराम 24 बटा०



डा० डी० एन० कार मु० चि० अ० बे० अ० II



सहा० कमांडेंट एन० के० बड़थ्वाल 14 बटा०



सहा० कमांडेंट आर० सी० सेठी एस० ओ०, डी० आई० जी० अमृतसर



उपाधीक्षक रामजीवन यादव 24 बटा०



उपाधीक्षक हरीचन्द 14 बटा०



उपाधीक्षक चन्दरभान 42 बटा०



उपाधीक्षक जे० एस० रावत 12 बटा०



सू० मे० के० पी० एस० नायर ग्रु० के० पल्लीपुरम



सू. मे. राम भालसिंह 63 बटा०



नि. बलवंत सिंह 16 बटा०



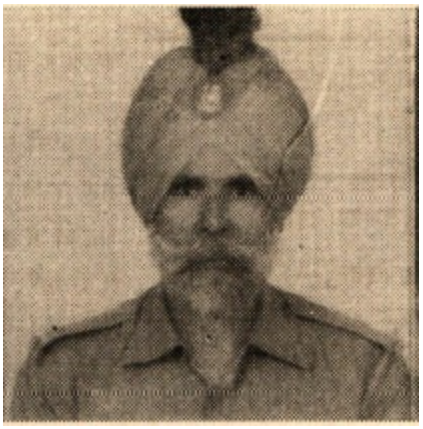
उ. नि. मूलचंद 20 बटा०



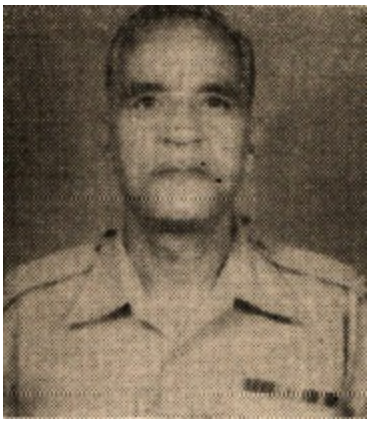
उ. नं. रामसुरेश सिंह ग्रु० के० नागपुर



है. कां. नरपत सिंह 47 बटा०



है. कां. रतन सिंह 20 बटा०



है. कां. फौजा सिंह 1 सिगनल बटा०



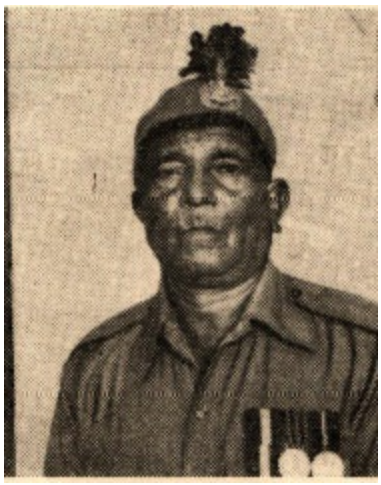
नायक शहाबुद्दीन खान 38 बटा०



ला. ना. गंगासिंह रावत 22 बटा०



कां० बलवंत सिंह 45 बटा०



कां० गंगया हीरामथ 26 बटा०



कुक रेवाधर जोशी 1 सिगनल बटा०

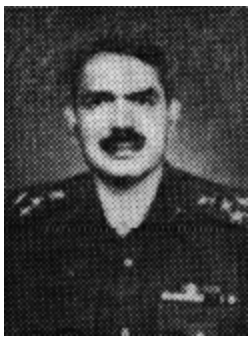


उपाधीक्षक पी. एस. डाबर 72 बटा० (वर्तमान में उ० पु० पुलिस अकादमी में प्रतिनियुक्ति पर ।)

इन के अतिरिक्त 26 जनवरी के अवसर पर एस. डी. जी. के कमांडेंट एम. पी. चिटनिस, 47 बटा० के सहायक कमांडेंट मोहन सिंह तथा 42 बटा० के है० कां०

शमशेर गुरंग और 15 अगस्त के अवसर पर घोषित 79 बटा० के उपाधीक्षक नरसिंह खत्री को भी उन की उत्कृष्ट सेवाओं के लिए पुलिस पदक दिए गए।•

दो अधिकारियों को स्वर्ण पदक



श्री सी. एम. पांडे



श्री एस. आर. साहनी

कोहिमा स्थित केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के उप पुलिस महानिरीक्षक श्री सी. एम. पांडे तथा कमांडेन्ट (स्टाफ) श्री एस. आर. साहनी को नागालैंड सरकार के राज्यपाल के स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया है। इन्हें ये पदक स्वतन्त्रता दिवस 1988 के अवसर पर इनकी सराहनीय एवं अद्वितीय सेवाओं के लिए दिए गए। श्री पांडे 1981 में उत्कृष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति का पुलिस मेडल भी प्राप्त कर चुके हैं। इसी प्रकार श्री साहनी भी 1967 में सेनाध्यक्ष का प्रशंसापत्र एवं पदक प्राप्त कर चुके हैं।

सराहनीय सेवाओं तथा शौर्यवीरता के लिए पुलिस पदक प्राप्त करने वाले कार्मिकों की सूची अगामी अंक में देखें।

---

20 बटालियन सर्वश्रेष्ठ

वर्ष 1987-88 के लिए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल को 20 बटालियन को सर्वश्रेष्ठ बटालियन घोषित किया गया है। सर्वश्रेष्ठ बटालियन की ट्राफी 20 बटालियन के कमांडेंट नई दिल्ली ग्रुप केन्द्र में बल के 49वें वार्षिकोत्सव में ग्रहण करेंगे।

अक्तूबर माह में मृत बल के कार्मिक

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित कार्मिकों के परिवारजनों के प्रति हम हार्दिक संवेदना व्यक्त करते हैं। इन कार्मिकों का अक्तूबर, 1988 माह में देहान्त हुआ।

कॉंस्टेबल बदरूल अमीन (38 बटा०), कां. देव नारायण पांडेय (68 बटा०), कां० सोहन लाल (35 बटा०), है० कां०/फिटर के० के० पुजारी (1 बटा०), है० का० मोहन सिंह (ग्रुप केंद्र 1 अजमेर) रंगरूट चन्द्रमणी बिजली (ग्रप केन्द्र बनतलाब) वाटर-कैरियर भूपल चन्द्र चौधरी (10 बटा०), कां डी. सुधाकरण (62 बटा०) रंगरूट विशम्भर दास (92 बटा०), उपनिरीक्षक सी० एल० मोया (87 बटा०), ला० ना० जगत राम (80 बटा०), नायक के बालाकृष्णन (ग्रुप केंद्र नागपुर) कांस्टेबल एम० के० एन० कुट्टी (77 बटा०) तथा है० कां० पेंबा मुक्तन (गु. के. गुवाहाटी)।•

विजेता सिगनल टीम

24 से 30 अक्तूबर, 1988 तक श्रीनगर जम्मू कश्मीर में हुई अखिल भारतीय पुलिस ड्यूटी मीट में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की वायरलैस टीम ने टीम इवेंट में चैम्पियनशिप ट्राफी जीत ली।

इस ड्यूटी मीट में विभिन्न राज्यों व संघ क्षेत्रों की 24 टीमों ने भाग लिया था। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस की टीम में शामिल 3 सिगनल बटालियन के उ०नि० रेडियो आपरेटर रामपाल सिंह, 2 सिगनल बटालियन के उ०नि० रेडियो आपरेटर बलबीर सिंह तथा नायक रेडियो आपरेटर सरजीत सिंह तथा 1 सिगनल बटालियन के नायक रेडियो आपरेटर सुरेन्द्र सिंह ने ड्यूटी मीट में स्वर्ण पदक जीते।

चिंता

पद्मावती को उस दिन बहुत उदास देख कर उनकी एक सहेली ने सबब पूछा, पद्मावती कहने लगीं, 'क्या बताऊं बहन। मेरे पति बहुत भुलकड़ हैं, आज सुबह नाश्ता करने के बाद उन्होंने मेज पर टिप रख दिया।'

'तो इससे परेशानी की क्या बात है ? यह उसकी आदत में शुमार हो गया होगा,' सहेली ने कहा। 'यह तो कुछ भी नहीं था,' पद्मावती ने कहा, 'असली चिंता तो मुझे तब हुई, जब मैं उन्हें जूते पहनाने लगी और वे मुझे छेड़ने लगे।'

कारण

जज : तुमने दुकान से गहने क्यों चुराये ?

अभियुक्त : क्योंकि दुकान पर लिखा था। दीपावली के शुभ अवसर का लाभ उठाइए।



ड्यूटी मीट में भाग लेने वाली वायर लैस टीम।

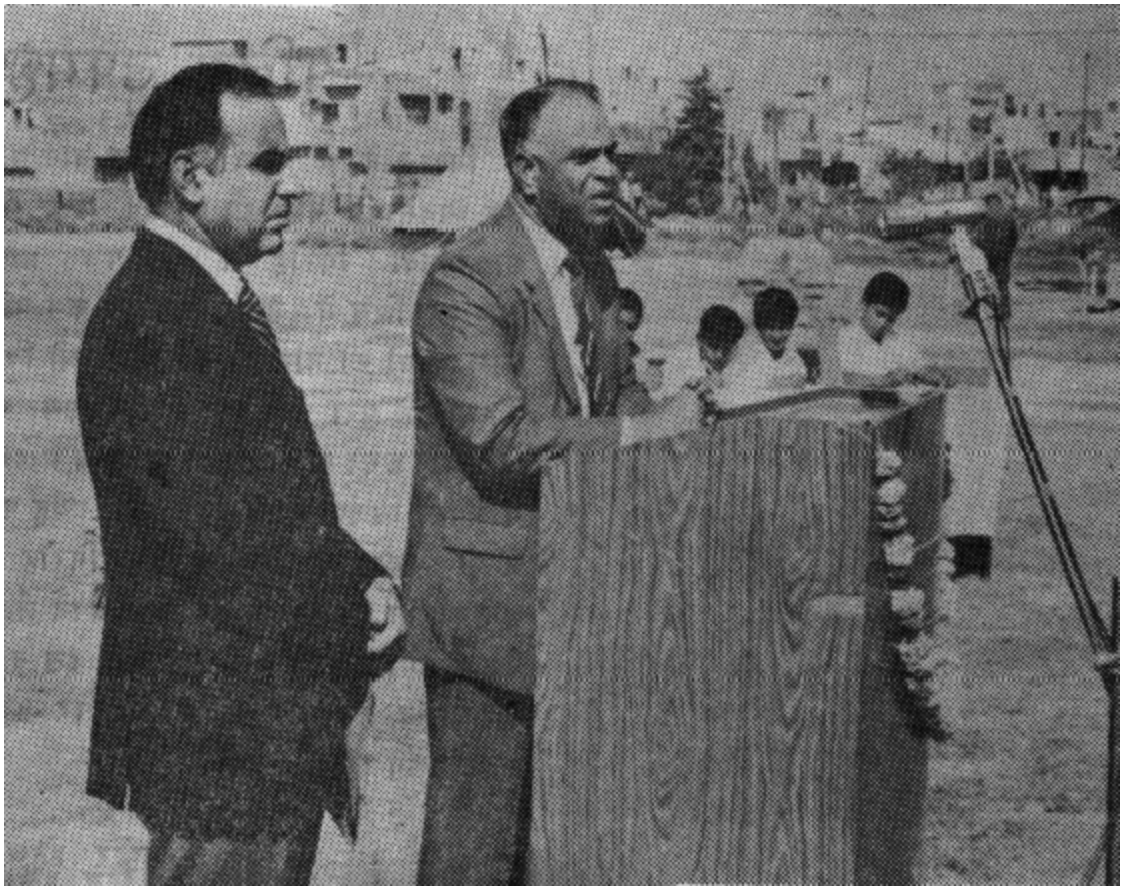
सी० आर० पी० स्कूल में बाल दिवस

14 नवम्बर, 1988 को पंडित जवाहर लाल नेहरू का जन्म दिवस सी० आर० पी० स्कूल में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

इस मौके पर बल के महानिदेशक श्री प. ग. हलर्नकर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। बच्चों को संबोधित करते हुए श्री हलर्नकर ने पंडित नेहरू की नीतियों और विचारों पर प्रकाश डाला तथा स्कूल के प्रधानाचार्य एवं उनके स्टाफ को इतना अच्छा समारोह आयोजित करने के लिए धन्यवाद दिया। इस मौके पर श्री प. ग. हलर्नकर ने छोटे बच्चों से पंडित नेहरू के बताए रास्ते पर चलते रहने के अतिरिक्त 'निर्भय और सत्यवान' बने रहने का आह्वान किया।

इस मौके पर बच्चों ने कुछ सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए। सांस्कृतिक

कार्यक्रम के अन्त में प्रस्तुत भंगड़ा व गिद्दा नृत्यों का उपस्थित आतिथेयों ने भरपूर आनन्द उठाया। बच्चों द्वारा व्यायाम प्रदर्शन भी किया गया।

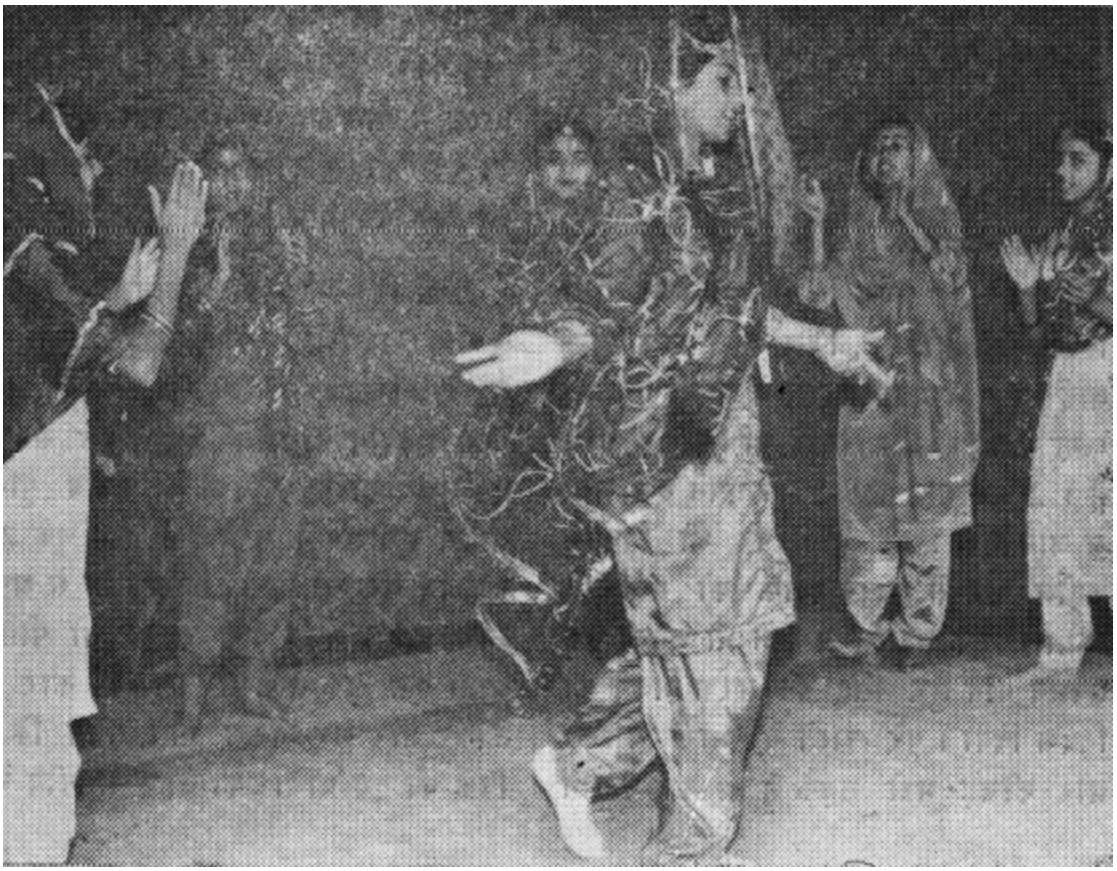


उपस्थित समुदाय को संबोधित करते हुए महानिदेशक। साथ में खड़े हैं विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री सूरज प्रकाश।

उपस्थित अतिथियों को सम्बोधित करते हुए विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री सूरज प्रकाश ने श्री प. ग. हलर्नकर के प्रति अपना आभार प्रकट किया और कहा कि उनकी उपस्थिति इस बात का प्रतीक है कि वे स्कूल की गतिविधियों में कितनी रुचि लेते हैं। श्री सूरज प्रकाश ने कहा कि स्कूल की शुरूआत काफी प्रभावशाली ढंग से हुई है, और मुझे आशा है कि यह स्कूल भविष्य में शिक्षा का एक आदर्श केन्द्र साबित हो सकेगा। लेकिन अभी हमें बहुत दूर जाना है।

श्री हलर्नकर ने विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता बच्चों को पुरुस्कार भी बांटे।

श्री हलर्नकर के अतिरिक्त इस मौके पर अपर महानिदेशक श्री भिंडर, महानिरीक्षक (मुख्यालय) श्री बी. जे. एस. स्याल, महानिरीक्षक (उत्तरी क्षेत्र) श्री सी. एस. द्विवेदी, उप निदेशक श्री बी. एल. बोहरा तथा उनकी धर्मपत्नी तथा बल के कई अन्य अधिकारी उपस्थित थे।



स्कूल के बच्चों प्रस्तुत आकर्षक गिद्दा नृत्य

“आतंकवाद से बिना सर पर कफन बांधे नहीं लड़ा जा सकता।”

भेंट—एच० एस० सेठी

—पुलिस उपमहानिरीक्षक एस. एस. विर्क



श्री एस. एस. विर्क

श्री एस.एस. विर्क आज पंजाब में सर्वाधिक चर्चित व्यक्तिव हैं। केवल इस कारण नहीं कि आतंकवादियों द्वारा उन पर किया गया आक्रमण ही अंततः 'आपरेशन ब्लैक थंडर' के जन्म का कारण बना, अपितु श्री विर्क वह धुरी हैं जिस के चारों तरफ पंजाब की बेहद संवेदनशील आतंकवाद विरोधी गतिविधियां संचालित होती हैं। और इसी कारण जहां एक ओर श्री विर्क जवानों और पुलिस कर्मियों के चहेते हैं, वहीं दूसरी तरफ आतंकवादियों के मनों में वे डर भी पैदा करते हैं।

जब मैं श्री विर्क से अमृतसर कैनाल रेस्ट हाऊस स्थित के० रि० पु० बल कंट्रोल रूम में मिला, तो वहां के हालात की जानकारी प्राप्त करने के लिए एक पत्रकार पहले ही से वहां बैठा था। ऐसा माना जाता है कि श्री विर्क सर्वाधिक जानकारी वाले पुलिस अधिकारियों में से एक हैं, और इन जानकारियों को एकत्र करने के लिए उनके अपने स्रोतों का एक जाल है । पत्रकार के वहां से विदा होने के थोड़ी ही देर बाद वहां एक व्यवसायी बंधु आ पहुंचे। उन्हें एक आतंकवादी गिरोह से एक पत्र प्राप्त हुआ था, जिस में उनसे कम से कम पांच लाख रुपयों की मांग की गई थी। श्री विर्क ने ध्यान से पूरा पत्र पढ़ा, और उस का निरीक्षण करने के बाद बेहद परिपक्व अन्दाज में अपना निर्णय बताते हुए कहा, "यह पत्र जाली लगता है, क्योंकि इस गिरोह के आतंकवादी पत्र लिखने के लिए अपने लैटर पैड इस्तेमाल करते हैं। फिर भी, इस बात के बावजूद, हम आप के मकान पर कड़ी नजर रखेंगे।"

इसके बाद श्री विर्क ने बाहर इंतजार कर रहे बल के एक कमांडेट को अंदर बुलवाया और उन्हें बताया कि उनके क्षेत्र के अन्तर्गत आने वाले एक बाजार में आतंकवादियों द्वारा आक्रमण किए जाने की संभावना है। श्री विर्क ने उन्हें आवश्यक निर्देश दिए कि वे किस प्रकार आपरेशन का संचालन करें कि वे आतंकवादी जो बाजार पर आक्रमण करने वाले हैं, बाजार से बाहर न निकल पाएं और उन्हें गिरफ्तार किया जा सके।

श्री विर्क न केवल सुरक्षा बलों का निर्देशन ही करते हैं अपितु आतंकवाद विरोधी कार्रवाइयों में वे स्वयं सीधे भी जुड़े रहते हैं। जब कभी भी कोई ऐसी स्थिति पैदा होती है, जिस में तत्काल कार्रवाई की आवश्यता हो, तो वे बिना एक भी क्षण गवांए स्वयं कार्रवाई का निर्देशन करते हैं। 2 अक्तूबर, 1988 को अपने एक स्रोत से जानकारी प्राप्त होने पर, श्री विर्क ने कट्रोल रूम से अपने स्टाफ को संचालित किया। एक बटालियन को भी अपना एक सेक्शन गाँव सुर सिंह की तरफ भेजने का निर्देश दिया। पूरे रास्ते में भारी बारिश और कीचड़ भरी सड़क से हो कर उन्होंने मुठभेड़ में हिस्सा लिया। यहां पर उन्होंने दो ए. के. 47 राइफलों और 9 आर पी जी राकेट बरामद किए, जिन्हें एक रसोई के नीचे दबाया गया था।

आपरेशन 'ब्लैक थंडर' के समय जब उनकी ढोड़ी पर गोली लगी तो उन्होंने केवल एक रुमाल को अपने घाव पर रख कर जबाव देने का आदेश दिया। मैंने पूछा, "अगर आप पर गोली चलाने वाला आतंकवादियों का गिरोह आत्मघाती दस्ता होता तो...?"

"हम स्वयं आत्मघाती दस्ते से कम नहीं है। आतंकवाद से बिना सर पर कफन बाँधे नहीं लड़ा जा सकता।" उन्होंने मेरी बात काटते हुए जवाब दिया।

"आप आतंकवादियों की हिट लिस्ट में काफी ऊपर हैं, आप इस स्थिति में क्या महसूस करते हैं ?"

"यदि किसी को आतंकवादियों की हिट लिस्ट में आने से डर लगता है, तो उस के लिए बेहतर यही है कि वह वर्दी पहनना छोड़ दे। यदि किसी व्यक्ति को कोई पदक दिया गया हो और उसे हिट लिस्ट में आने का डर सता रहा हो तो उस का पदक वापस ले लिया जाना चाहिए।" श्री विर्क ने जवाब दिया।

श्री विर्क पर कई प्राणघाती हमले हो चुके है । पद्मश्री से सम्मानित श्री विर्क एक सभ्रांत परिवार से ताल्लुक रखते हैं (श्री विर्क के पिता भारतीय प्रशासनिक सेवा के एक अधिकारी थे तथा वे पंजाब पुलिस सर्विस कमीशन के अध्यक्ष भी रह चुके हैं।) गत वर्ष जब श्री विर्क सड़क मार्ग से अपनी कार द्वारा सफर कर रहे थे तो पीछे से आता एक ट्रक तेजी से उन की कार को टक्कर मार कर निकल गया, जब कि श्री विर्क की इस यात्रा को बेहद गोपनीय रखा गया था, और उनकी कार पर कोई झंडा भी नहीं था। यह केवल 'आपरेशन ब्लैक थंडर' के बाद ही ज्ञात हो पाया, जबकि एक गिरफ्तार आतंकवादी ने उन्हें बताया कि यह उन्हें मारने के लिए योजनाबद्ध रूप से की गई एक कार्रवाई थी। इसके अलावा भी वे कई बार भारी गोलीबारी के बीच से निकल कर पाए हैं । श्री विर्क मानते हैं कि आतंकवादियों के पास सुरक्षा बलों से कहीं बेहतर हथियार

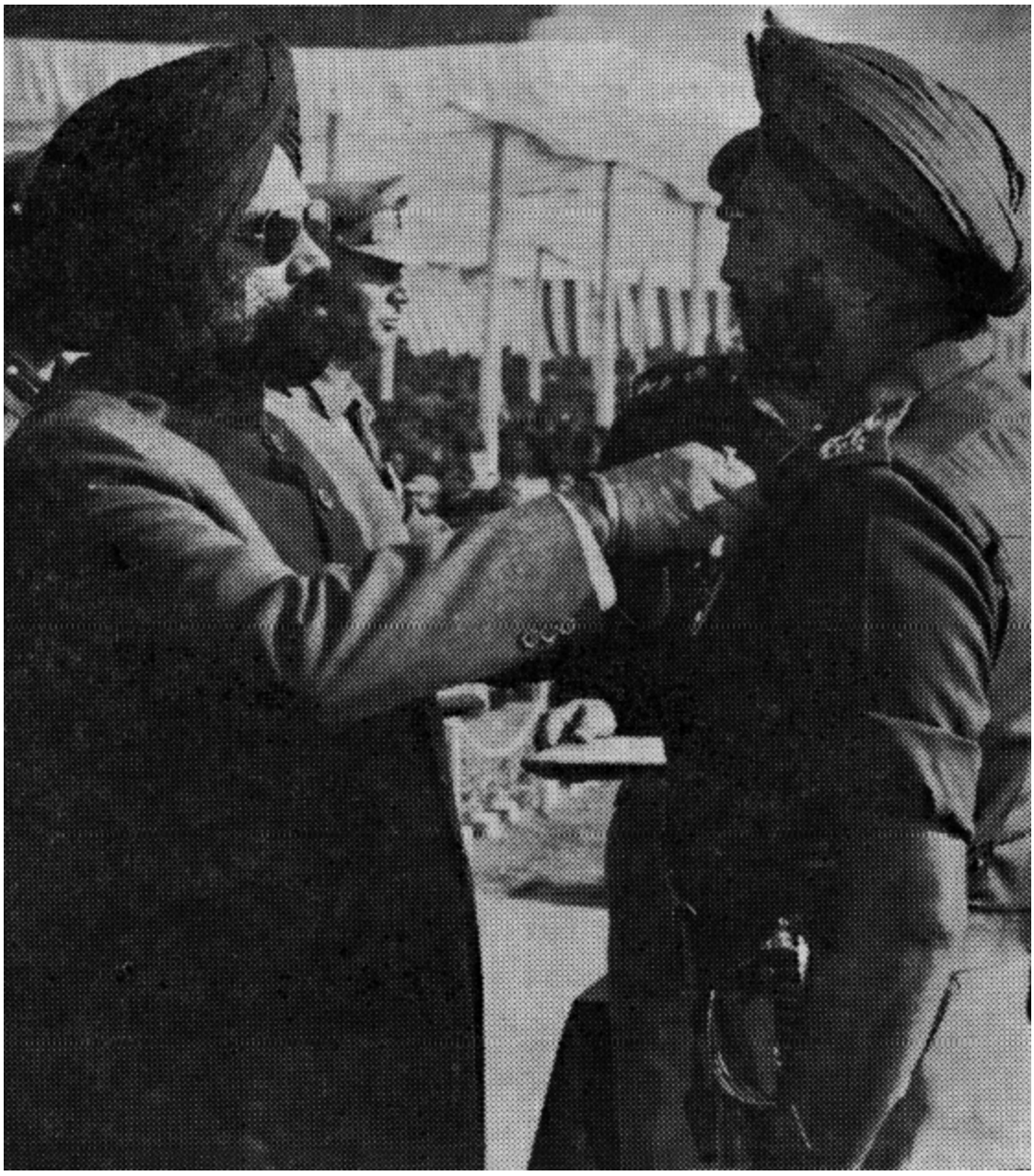
हैं। एसाल्ट हाथेयारों के अलावा उनके पास राकेट जैसे शस्त्र भी हैं, हालांके वे उन्हें ठीक से चलाना भी नहीं जानते।

श्री विर्क इस बात से इनकार करते हैं कि पंजाब में निर्दोष लोगों को सताया जा रहा है, "हम इस के प्रति सचेत हैं, यह अत्याचार नहीं हैं बल्कि कभी कभी आतंकवादियों का, पता लगाने के लिए की गई पूछताछ का भी गलत अर्थ लगा लिया जाता है, लेकिन इस के परिणाम अच्छे ही , होते हैं।"

मैं पूछता हूं, "तो फिर उन नागरिकों का हृदय जीतने के लिए क्या करते हैं।" "मानसिक स्तर पर एक लड़ाई जारी है। हम एक हजार से अधिक ऐसे युवा लोगों को भर्ती कर रहे हैं, जो सीमा पर छोटे मोटे कार्यों में लिप्त रहे हैं। (ये वही लोग हैं, जिनका हाथ किसी बड़े अपराध में नहीं रहा है। श्री विर्क का दावा है कि इस तरह के लड़के काफी बड़ी संख्या में सामने आए हैं लेकिन उनकी सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए उनके नाम गोपनीय ही रखे गए हैं ।) और हर उस स्थान पर सहायता पहुंचाने की कोशिश की जाती है, जहां कि उसकी जरूरत है।

श्री विर्क का कहना है कि पंजाब में इस समय सुरक्षा बलों का पलड़ा भारी है। यह सीमा पर कड़े निरीक्षण तथा ब्रह्मा तथा लभ सिंह जैसे कुख्यात आतंकवादियों के सफाए, आतंकवादी गिरोहों की आपसी फूट तथा सब से मुख्य बात जनरल जिया की मृत्यु के बाद पाकिस्तानी शासन के इस तरफ ज्यादा ध्यान न दे पाने के कारण ही संभव हो पाया है।

लेकिन श्री विर्क का कहना है, कि आतंकवाद की चुनौती से निबटने का मतलब एक लम्बे युद्ध की शुरूआत है। आतंकवाद भविष्य की एक नई अपराध शैली है । आने वाले दिनों में यह पुलिस बलों के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती होगा। देश के हर राज्य को इस संबंध में उचित सलाह दी जानी चाहिए ताकि वह समय रहते अभी से इस क्षेत्र में कुछ योजनाएं बना सकें।



उत्कृष्ट सेवाओं के लिए गृह मंत्री श्री बूटा सिंह से पुलिस पदक प्राप्त करते श्री विर्क।

हिन्दी प्रतियोगिता के विजेता कार्मिक सम्मानित



स. उ. नि. सुनीता दुग्गल महानिरीक्षक महोदय से पुरुस्कार ग्रहण करते हुए

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल महानिदेशालय में 7 से 14 सितंबर, 1988 तक हिंदी सप्ताह मनाया गया। इस दौरान आयोजित एक हिंदी कार्यशाला में संयुक्त सहायक निदेशक एवं अनुभाग अधिकारी स्तर के 20 अधिकारियों ने भाग लिया। कार्यशाला के अंत में आयोजित परीक्षा में प्रथम स्थान सम्भरण शाखा के संयुक्त सहायक निदेशक श्री जोगिंदर सिंह तथा अनुभाग अधिकारी प्रेम चन्द जैन को मिला, जबकि द्वितीय व तृतीय स्थान पर क्रमशः श्री एम. टी. सेवक-रामानी (अनुभाग अधिकारी) तथा श्री एस. हेमराजानी (अनुभाग अधिकारी) रहे।

टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता में महानिदेशालय के 25 कर्मचारियों ने भाग लिया। इन में प्रथम स्थान पर सूबेदार मेजर सीताराम शर्मा, दूसरे स्थान पर स० उ० नि० उदय शंकर मिश्रा तथा तीसरे स्थान पर उ० नि० ज्ञान चन्द भारद्वाज एवं वीरेंद्र सिंह नेगी रहे।

हिंदी टाईपिंग प्रतियोगिता में 10 कर्मचारियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान स० उ० नि० सुनीता दुग्गल, द्वितीय स्थान स० उ० नि० सुरेश कुमार, तृतीय स्थान स० उ० नि० चितरंजन को प्राप्त हुआ, जबकि स० उ० नि० कुमारी सुमन को प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

विजेताओं को पुरस्कारों का वितरण महानिरीक्षक श्री बी० जे० एस० स्याल ने किया।

शूटिंग का स्वर्ण लक्ष्मण को

बल के हैड कांस्टेबल लक्ष्मण सरकार ने 100 में से 100 अंक प्राप्त करके प्रधान मंत्री स्वर्ण कप शूटिंग प्रतियोगिताओं की पिस्टल शूटिंग प्रतियोगिता में स्वर्णपदक जीत लिया। ये प्रतियोगिताएं दिल्ली के तुगलकाबाद रेंज में 5 से 12 अक्तूबर 1988 को हुई।

अपने सम्पूर्ण प्रदर्शन के लिए उपनिरीक्षक सरबजीत सिंह ने 1000 रुपये का नकद पुरुस्कार प्राप्त किया, जबकि टीम मैनेजर सहायक कमांडेंट श्री टी० एस० ढिल्लन ने 1962 अंक प्राप्त कर रजत पदक प्राप्त किया।

पूरी प्रतियोगिता में बल की टीम पाँचवें स्थान पर रही।

गृह मंत्री श्री बूटा सिंह ने प्रतियोगिताओं का उद्घाटन किया, जबकि प्रतियोगिता के अंत में प्रधान मंत्री श्री राजीव गाँधी ने विजेताओं को पुरुस्कार वितरित किए।

दो जवानों को प्रधानमंत्री का जीवन रक्षा पदक

केंद्रीय रिर्जव पुलिस बल की माउंट आबू स्थिति आंतरिक सुरक्षा अकादमी के हैड कांस्टेबल पी. जी. मुरुगेसन एवं कांस्टेबल मोतीसिंह को प्रधान मंत्री के जीवन रक्षा पुलिस पदक से सम्मानित किया गया है ।

उन्हें यह सम्मान 15 मई, 1986 को माउंट-आबू में सेंट जेवियर इंजीनियरिंग कालिज, अहमदाबाद के पांच विद्यार्थियों को गहरी खाई से बचाते हुए दिखाई गई वीरता एवं साहस के लिए दिया गया ।

ये विद्यार्थी माउंट आबू के गुजरात माउंटेनियरिंग इंस्टीट्यूट में पर्वतारोहण का प्रशिक्षण ले रहे थे। प्रशिक्षण के दौरान मधुमक्खियों के हमले से रस्सी पर पकड़ ढीली पड़ जाने से वे एक सौ फुट गहरी खाई में जा गिरे।

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की एक टुकड़ी तत्काल घटना स्थल पर पहुंची। हैड-कांस्टेबल पी. जी. मुरुगेसन एवं कांस्टेबल मोती सिंह जो प्रशिक्षित पर्वतारोही हैं; अपनी जान जोखिम में डालते हुए तत्काल खाई में उतर गए। मधु मक्खियों द्वारा बुरी तरह काटे जाने के बावजूद वे चार विद्यार्थियों को बिना समय गवाए बचाने में सफल रहे पांचवां विद्यार्थी जोकि अचेतावस्था में था, उसे तत्काल खाई से ऊपर लाकर मेडिकल कालिज अस्पताल अहमदाबाद ले जाया गया जहां उसके प्राणों की रक्षा की जा सकी।

जोखिम निधि लाभ

अक्तूबर, 1988 में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में मृत्यु के 18 मामलों में कुल पांच लाख 94 हजार रुपए जोखिम निधि फंड से देने स्वीकृत किए गए।

इसी प्रकार अक्षमता के 6 मामलों में 90,000 रुपए देने स्वीकृत किए गए।

दो कार्मिकों को शौर्यता पदक

गत वर्ष पंजाब में आतंकवादियों की धर पकड़ के लिए केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के दो कार्मिकों को शौर्यवीरता के पदकों से सम्मानित किया गया है।

65 बटालियन के सब-इंस्पेक्टर ओम प्रकाश को गत वर्ष 11 व 13 जून को जिला फरीदकोट के अजीतवाल गांव में तीन आतंकवादियों को धराशायी करने तथा भारी मात्रा में हथियार एवं गोली बारूद बरामद करने के लिए राष्ट्रपति के पुलिस पदक से सम्मानित किया गया है।

11 जून, 1987 को यह सूचना प्राप्त होने पर कि कुछ आतंकवादियों ने उनकी बटालियन के गश्ती दल पर घात लगाकर आक्रमण किया और ट्रक में बैठकर फरार हो गए, तो सब-इंस्पेक्टर ओमप्रकाश, बल के सात कार्मिकों के साथ अजीतवाल के पास वाहनों की चैकिंग करने लगे।

रात के समय जब एक ट्रक नाका पार्टी का उल्लंघन कर निकलने का प्रयास करने लगा, तो उसे जबरन रोका गया। सब इंस्पेक्टर ओमप्रकाश ने जल्दी से ड्राइवर पर कूद कर उसे काबू में कर लिया, चैकिंग करने पर ड्राइवर की सीट के पीछे बनाए गए एक गुप्त स्थान से भारी संख्या में गोली बारूद एवं हथियार बरामद किए गए।

एक बार फिर 13 जून, 1987 की सुबह जब वे स्थानीय पुलिस के साथ नाका ड्यूटी पर थे, तो स्कूटर पर सवार तीन आतंकवादी जब उनके निर्देश पर नहीं रुके और गोली चलाने लगे तो जवाब में गोली चलाने पर वे तीनों मारे गए।

25 बटालियन के उपाधीक्षक पूरन चन्द शर्मा को आल इंडिया सिख स्टूडेंट्स फेडरेशन के दो कुख्यात आतंकवादियों का पीछा कर उन्हें गिरफ्तार करने के लिए शौर्यवीरता के पुलिस पदक से सम्मानित किया गया है। यह मुठभेड़ 18 फरवरी 1987 को अमृतसर जिले के सुलतान विंड क्षेत्र में हुई।

तीन आतंकवादी मरे

31 अक्तूबर, 1988 को आतंकवादी गतिविधियों की सूचना प्राप्त होने पर 48 बटालियन तथा स्थानीय पुलिस की टुकड़ी ने गांव दुर्गापुर तथा थथियान महंता में जांच व छानबीन का कार्य शुरू किया। एक फार्म हाऊस के बाहर एक आतंकवादी ने जब अपनी ओर बढ़ते पुलिस दल को देखा तो उसने फार्म हाउस स्थित अपने बाकी दो साथियों को सतर्क कर दिया। तीनो आतंकवादी विभिन्न दिशाओं की ओर भागने लगे। बल के जवानों ने उनका पीछा किया। भागते आतंकवादी ने बल के जवानों पर गोलियां

चलाई । जवानों द्वारा जवाब में गोली चलाने पर एक आतंकवादी मारा गया। बाद में उसकी शिनाख्त 'बी' श्रेणी के कुख्यात आतंकवादी अवतार सिंह के रूप में कर ली गई। उसके सिर पर 30,000 रुपए का इनाम था। बाकी दोनों आतंदवादियों ने एक फार्म हाऊस में शरण ले ली थी। थोड़ी देर की गोली बारी के बाद जब वे दोनों आतंकवादी खेतों की तरफ गोलियां चलाते हुए भागने लगे, तो जवानों द्वारा अपनी सुरक्षा में चलाई गई गोलियों से वे दोनों आतंकवादी भी मारे गए । इन दोनों आतंकवादियों में से एक 'ए' श्रेणी का कुख्यात आतंकवादी सतनाम सिंह उर्फ सन्ता था। जिसके सिर पर 30,000 रुपए का इनाम था। तीसरे आतंकवादी की शिनाख्त भी सुखविंदर सिंह उर्फ सुखा के रूप में कर ली गई। तीनों मृतक आतंकवादियों के पास से एक ए० के० 47 राइफल, एक .315 राइफल तथा एक 12 बोर सिंगल कट बैरल गन सहित भारी संख्या में गोली बारूद बरामद किया गया।

कुख्यात आतंकवादी मरा

पंजाब स्थित केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 48 बटालियन तथा स्थानीय पुलिस की टुकड़ियों के साथ 5 नवम्बर, 1988 को तरन तारन जिले के गांव दोवरजी में हुई एक मुठभेड़ में कुख्यात आतंकवादी परगट सिंह उर्फ पग्गा मारा गया। उसके दो साथी अन्धेरे का फायदा उठाकर भाग निकलने में कामयाब हो गये।

मृत आतंकवादी की शिनाख्त कुख्यात आतंकवादी परगट सिंह उर्फ पग्गा के रूप में कर ली गई। उसके सिर पर 30,000 रुपए का इनाम था। मृतक के पास से एक ए०के० 47 राइफल तथा अन्य गोला बारूद बरामद किया गया।

छुट्टी तुम्हें सलाम

नींद रायफलों को मिली, कपड़ों को आराम ।
दिवस ड्यूटी के गए, छुट्टी तुम्हें सलाम ।
लडूड से दिन लग रहे, पेड़े जैसी रात ।
रंग-बिरंगी हो रही, सपनों की बरसात ।
कंचे कैरम ताश हैं, धमा चौकड़ी सैर।
आम इमलियों की नहीं, अब तो भइया खैर ।
डर ना सर की डांट का, ना गोली की मार।
हर दिन अब तो लग रहा, जैसे हो त्यौहार ।
इधर-उधर की बात कर, रंग करो ना भंग ।
नई उमंगों की सदा, उड़ती रहे पतंग ।

उप निरीक्षक हरीनाथ सिंह
सी०टी०सी० प्रथम

रजि० 47167/87



रामपुर केन्द्र में मृत कास्टेबल चन्द्रपाल की विधवा श्रीमती कौशल्या देवी को श्री भिंडर एक लाख का चेक भेंट करते हुए।

सम्पादक : एच०एस० सेठी। सम्पादक : एम०पी० नथैनियल तथा अनिल गुप्ता। मुद्रक : सी०आर०पी०एफ० प्रेस, झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-110072
मुद्रक तथा प्रकाशक : महानिदेशक, के०रि०पु०बल, ब्लाक-1, सी०जी०ओ० कॉम्पलेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से एच०एस० सेठी।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की मासिक पत्रिका

सीआरपीएफ समाचार

49वें
वार्षिकोत्सव पर
विशेष

मूल्य—1.60 रुपए खण्ड—II अंक—8 31 दिसम्बर, 1988 10 पौष शक संवत 1910



विज्ञान भवन में आयोजित पदक वितरण समारोह में बोलते हुए महानिदेशक श्री पी.जी. हलनंकर, साथ में बैठे हैं आन्तरिक सुरक्षा राज्य मन्त्री श्री पी. चिदम्बरम् व अपर महानिदेशक श्री पी. एस. भिंडर



श्रीलंका में चुनाव के दौरान तैनात बल की एक महिलाकर्मी एक महिला की तलाशी लेते हुए।

सी. आर. पी. एफ. समाचार

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल
की
मासिक पत्रिका

खंड II

अंक 8

31 दिसम्बर, 1988

10 पौष, शक संवत 1910

मुख्य सम्पादक :

एच० एस० सेठी

सम्पादक :

एम० पी० नथैनियल, अनिल गुप्त

आवरण छाया : एस. के. खन्ना

विषय सूची

संदेश
पुलिस पदक विजेता
के०रि०पु० बल–इतिहास और भूमिका
पंजाब में बाढ़
45 कार्मिकों को पुलिस पदक
22वीं अंतररेंज दौड़ कूद प्रतियोगिताएं
पुलिस स्मारक दिवस
पंजाब में हम

सम्पादकीय—

सी.आर.पी.एफ. समाचार का 49वां वार्षिक अंक आपके हाथ में है। यह वर्ष केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के लिए काफी चुनौती भरा रहा है। अकेले इसी एक वर्ष में बल के कार्मिकों ने एक वीर चक्र, एक सेना पदक तथा 33 शौर्यवीरता के पदक जीते । यह किसी भी बल के लिए गौरव की बात है, लेकिन इस सबके लिए बल के कुछ बहादुर जवानों को अपनी कुर्बानी देनी पड़ी है । दूसरी और श्रीलंका में भी हमारे जवान और महिलाएं भारतीय शान्ति रक्षक सेना के एक अंग के रूप में अपने कार्यों को अंजाम दे रहे हैं। जहां एक और हमने इन सब उपलब्धियों को इस अंक में समेटने की कोशिश की है, वहीं हम 1959 में हाट स्प्रिंग्ज में शहीद हुए अपने बहादुर जवानों को भी भूले नहीं हैं, हम आपको अपने एक लेख के माध्यम से एक बार फिर याद दिला रहे हैं अपने उन अमर वीर रण बांकुरों की।

इन वीरों द्वारा सींची गई बल की परम्पराएं आज तक पल्लवित पुष्पित हो रही हैं, इसका एक उदाहरण है, 6 दिसम्बर, 1988 को दिल्ली के विज्ञान भवन में सम्पन्न हुआ पदक वितरण समारोह, जिसमें बल के 45 कर्त्तव्यपरायण कार्मिकों को उनकी निष्ठा पूर्वक की गई उत्कृष्ट और लम्बी सेवाओं के लिए पुलिस पदकों से सम्मानित किया गया। ये पदक गृह राज्य मन्त्री श्री चिदम्बरम ने प्रदान किए। इस समारोह की संक्षिप्त रिपोर्ट भी हमने इस अंक में संजोई है।

खेल कूदों में बल ने अभी भी अपनी श्रेष्ठता बनाई हुई है । बल के खिलाड़ी समय समय पर अपनी श्रेष्ठता को विभिन्न प्रतियोगिताओं के माध्यम से जाहिर भी करते रहते हैं। 22वीं अंतरक्षेत्रीय दौड़ कूद प्रतियोगिताओं में दो नए रिकार्डों का टूटना इसी बात का प्रमाण है। इन खेलों की रिपोर्ट भी आप इस अंक में पाएंगे।

इस के अतिरिक्त बल के सेवा कार्यों व कल्याण कार्यों के कुछ विवरण भी हमने इस अंक में समेटे हैं। आशा है, यह अंक आपको बल का सर्वांगीण परिचय देने में सफल होगा।

आने वाले नूतन वर्ष में बल अपने स्वर्ण जयन्ती वर्ष में प्रवेश कर रहा है। इस अवसर पर हम अपने सहृदय पाठकों, वरिष्ठ सहयोगियों और साथियों के मंगल भविष्य की कामना सहित यह अंक आपके हाथ में सौंप रहे हैं।

—एच. एस. सेठी

-ओ० प्र० पांडेय

(प्रशासनिक अनुभाग महानिदेशालय)



सत्यमेव जयते

राष्ट्रपति
भारत गणतंत्र
PRESIDENT
REPUBLIC OF INDIA

संदेश

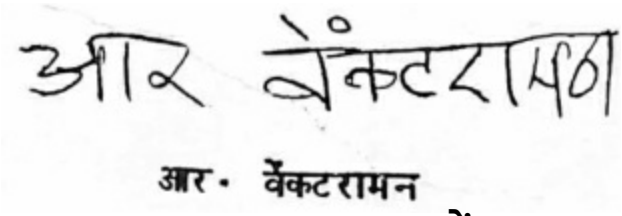
मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल अपनी 49वीं वर्षगांठ मना रहा है।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों का देश में आंतरिक सुरक्षा बनाये रखने में

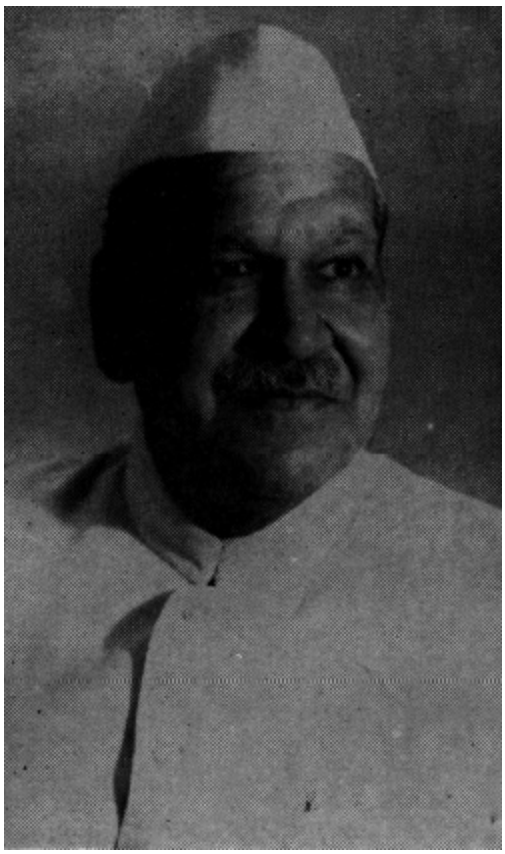
हमेशा ही अनुपम योगदान रहा है। कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी बल के जवानों ने सदैव अपने उच्च मनोबल का परिचय दिया है। श्रीलंका में भारतीय शांति सेना के एक अंग के रूप में इस बल के जवान जो ऐतिहासिक भूमिका निभा रहे हैं, वह वास्तव में अत्यन्त प्रशंसनीय है।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के उज्ज्वल एवं गौरवशाली भविष्य के लिए शुभकामनाएं।

नई दिल्ली
26 नवम्बर, 1988



आर. वेंकटरामन





संदेश

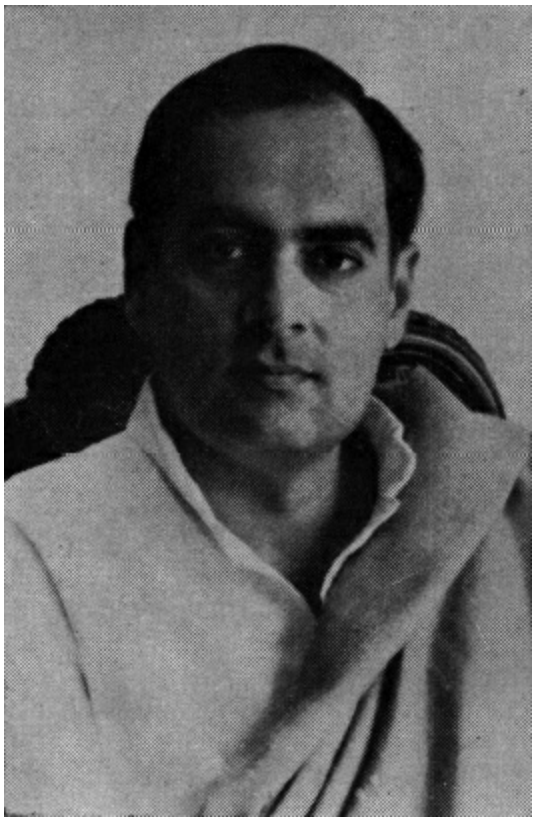
अपनी समर्पण भावना तथा सेवा से केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी उच्चकोटि की कार्यकुशलता का परिचय देते हुए प्रशंसा अर्जित की है।

मुझे इस बात का हर्ष है कि बल समय की बदलती आवश्यकताओं के अनुसार स्वयं को भी उसी प्रकार ढाल रहा है।

बल में महिला बटालियन का गठन अपने में अद्वितीय उदाहरण है। बल भविष्य में भी अपनी गौरवशाली परम्पराओं को बनाए रखेगा, इसी आशा के साथ मेरी शुभकामनाएं।

शंकर दयाल शर्मा

शंकर दयाल शर्मा



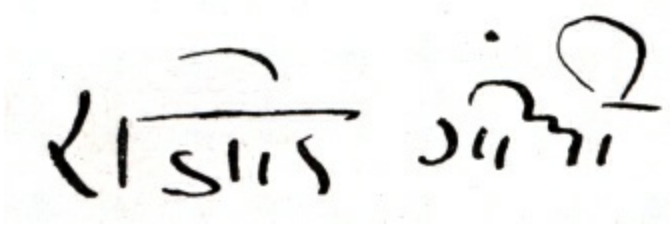
सत्यमेव जयते

प्रधान मंत्री

सन्देश

केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस को अत्यन्त कठिन परिस्थितियों में भी कानून और व्यवस्था बनाए रखने तथा आन्तरिक सुरक्षा की रखवाली करने की कड़ी ज़िम्मेदारी सौंपी गई है । पूर्व में इस बल के अधिकारियों और जवानों ने अनेक चुनौतीपूर्ण स्थितियों में साहस तथा गौरव के साथ अपना कर्तव्य निभाया है । आतंकवादियों तथा अन्य विघटनकारी तत्वों द्वारा उत्पन्न खतरों के कारण हमारा भविष्य चुनौतियों से भरा है । इन चुनौतियों का सामना करने के लिए उच्चतम कोटि की समर्पण भावना की आवश्यकता होगी ।

केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस की 49वीं वर्षगांठ के अवसर पर मैं इस बल के सभी अधिकारियों और जवानों को अपनी शुभकामनायें देता हूँ।



नई दिल्ली
14 दिसम्बर, 1988

संदेश

यह अत्यन्त ही गौरव की बात है कि केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने देश में अलगाववादी, साम्प्रदायिक, विघटनकारी तथा आतंकवादी ताकतों का सामना करते हुए कठिन परिस्थितियों में कानून और व्यवस्था बनाए रखने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है और इस प्रकार बहुत ही जिम्मेदारी के साथ 49 वर्ष पूरे किए हैं। देश की कठिन से कठिन परिस्थितियों में बल के जवानों ने जिस साहस एवं कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया है वह प्रशंसनीय है । पंजाब, उत्तर पूर्व के राज्यों तथा देश के अन्य भागों के अतिरिक्त श्रीलंका में भी भारतीय शांति रक्षक सेना के एक अंग के रूप में बल के जवानों ने सराहनीय कार्य किया है । बल की महिला बटालियन की युवतियों का कार्य भी उल्लेखनीय है।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 49वीं वर्षगांठ के अवसर पर बल के जवानों एवं अधिकारियों को मेरी शुभकामनाएं।



ह०

(बूटा सिंह)

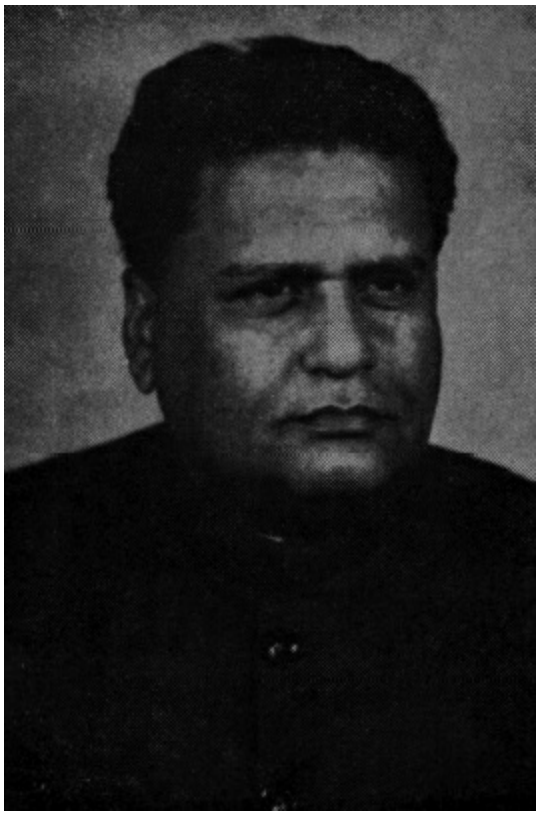
गृहमंत्री, भारत सरकार

सन्देश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल अपना 49वाँ वार्षिक उत्सव मना रहा है।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल देश का सबसे पुराना अर्द्धसैनिक सुरक्षा संगठन है, इसकी परम्पराएं अत्यन्त समृद्ध एवं गौरवशाली हैं। बल के जवानों ने अपने साहस, वीरता व समर्पण के बल पर इन परम्पराओं को सींचा है। पंजाब व देश के आतंकवाद से प्रभावित इलाकों में बल के जवानों की भूमिका निस्संदेह प्रशंसनीय है।

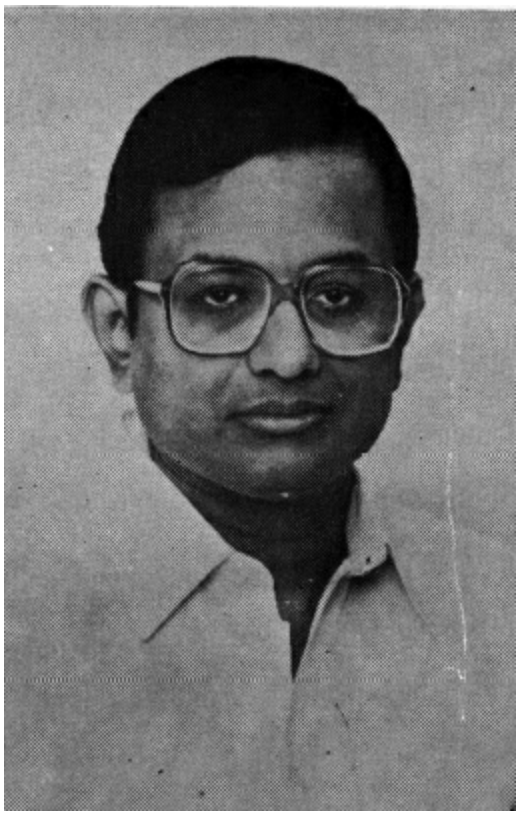
मैं बल के जवानों व अधिकारियों को उनके भविष्य के लिए अपनी शुभकामनाएं देता हूँ।



ह०

(संतोषमोहन देव)

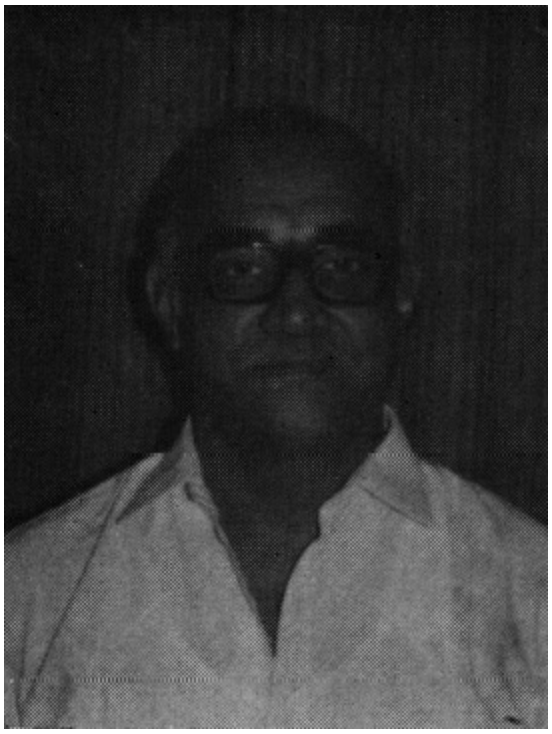
गृह राज्य मन्त्री, भारत सरकार



संदेश

देश के सबसे पुराने अर्द्धसैनिक सुरक्षा संगठन केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की अपनी अनेक बहुमूल्य परम्पराएं हैं। ईमानदारी, सहयोग, धर्मनिरपेक्षता, राष्ट्रीय एकता, कर्त्तव्यपरायणता, वीरता व साहस के कई उदाहरण बल ने प्रस्तुत किए हैं। मैं उम्मीद करता हूं कि बल की ये भावनाएं भविष्य में भी बनी रहेंगी।

बल की 49वीं वर्षगाँठ पर बल के सदस्यों को मेरी शुभकामनाएं।



ह०

(जे०ए० कल्याणकृष्णन)

गृह सचिव, भारत सरकार

संदेश

मुझे अपने बल की 49वीं वर्षगांठ के अवसर पर सभी अधिकारियों, कर्मचारियों और जवानों को हार्दिक बधाई देते हुए अत्यन्त हर्ष हो रहा है । इस दौरान फोर्स ने प्रतिकूल और विषम परिस्थितियों में देश तथा विदेश में दृढ संकल्प एवं निष्ठापूर्वक ड्यूटी निभाई है । विशेष रूप से पंजाब में आपरेशन ब्लैक थंडर के दौरान इस वर्ष हमारे अधिकारियों और जवानों ने अच्छा काम किया । माननीय प्रधान मंत्री और गृह मंत्री जी ने सी. आर. पी. एफ. के योगदान की अत्यंत प्रशंसा की है। फोर्स के अफसरों, ओहदेदारों और जवानों ने इस वर्ष एक वीर चक्र, एक सेना मेडल तथा शौर्यवीरता के 33 पुलिस पदक प्राप्त किए। पिछले वर्ष की तुलना में इस वर्ष हमने अपनी वीरता और कर्तव्यपरायणता का सब से ऊँचा कीर्तिमान प्रदर्शित किया है। यह उपलब्धि हम सभी के लिए महान गौरव और शान की बात है।

सी० आर० पी० एफ० ने देश को अपनी अमूल्य सेवाएं अर्पित करते हुए ऊंचे दर्जे की निष्ठा, ईमानदारी तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया है। यही कारण है कि

आज देश के नागरिकों का हमें विश्वास प्राप्त है और सरकार ने बड़ी बड़ी चुनौतियों से निबटने की जिम्मेदारी इस बल को सौंपी है।

बल के उज्ज्वल एवं स्वर्णिम भविष्य के लिए मेरी शुभकामनाएं।



ह०

(प० ग० हलर्नकर)

महानिदेशक, के. रि. पु. बल

वर्ष 1988 के पदक विजेता

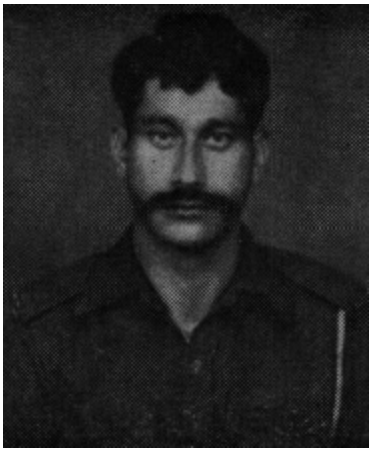
राष्ट्रपति का पुलिस पदक



निरीक्षक मोहन सिंह 68 बटा०

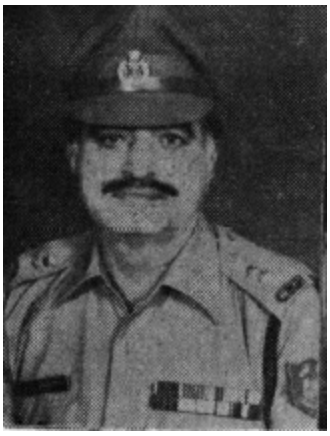


है. कां. जिले सिंह 85 बटा०



कां. अब्दुल रशीद खान 68 बटा०

शौर्यवीरता के पुलिस पदक



स० कमांडेंट इन्द्रजीत भाटिया 12 बटा०



स० कमांडेंट के. सी. शर्मा 25 बटा०



उपा० रामसिंह 24 बटा०



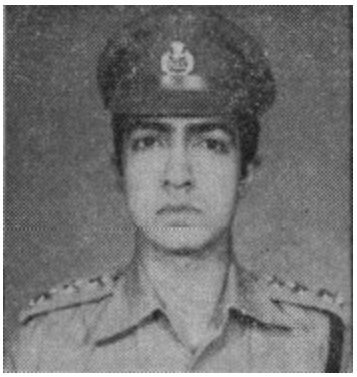
उपा० बरनसिंह 24 बटा०



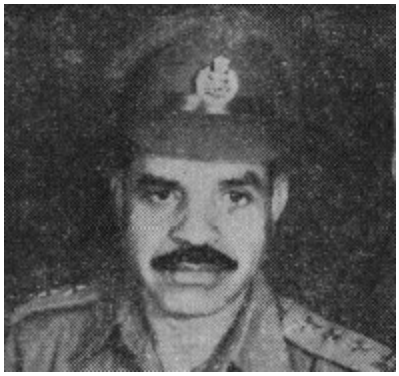
उपा० जे. एस. रावत 12 बटा०



उपा० हरीसिंह 48 बटा०



उपा० दुष्यंत सिंह 36 बटा०



उपा० पूरन चन्द शर्मा 25 बटा०



नि० जागीर सिंह 36 बटा०



उ. नि. जितेन्द्र सिंह 24 बटा०



उ. नि. (अब. नि.) सोल सिंह 48 बटा०



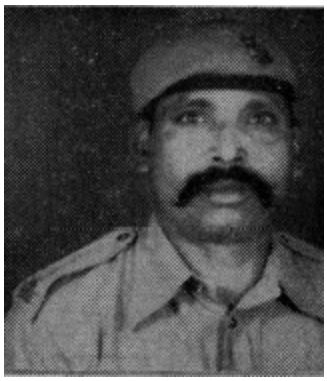
उ. नि. रामप्रताप साही 25 बटा०



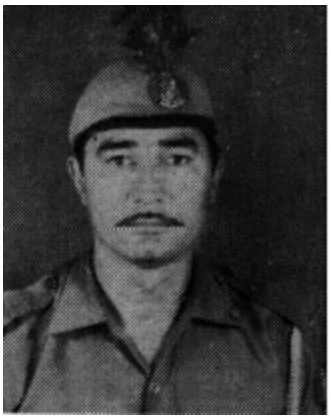
उ. नि. ओम प्रकाश 65 बटा०



है. कां० रोहताश सिंह 25 बटा०



है० कां० जवाहर यादव 49 बटा०



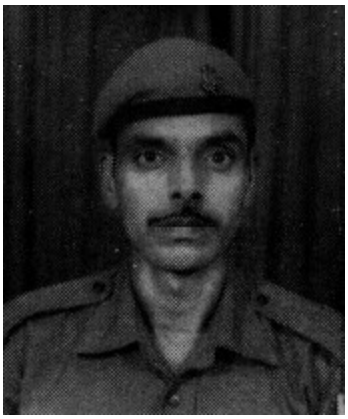
है. का. मेघराज 20 बटा०



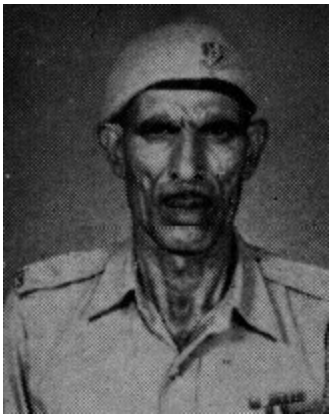
ना० सोत्तम दास 49 बटा०



ना० मुन्शीखान 25 बटा०



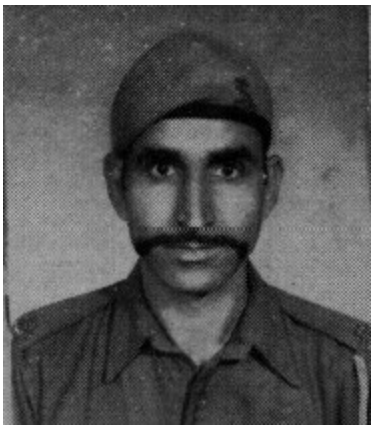
ना०/ड्रा० रसीला राम 25 बटा०



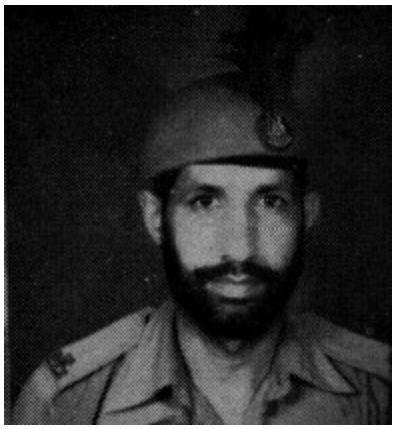
ना० बिन्देश्वर शाह 48 बटा०



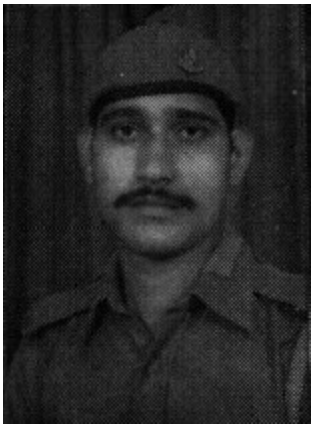
ना० गुलजारी लाल 79 बटा०



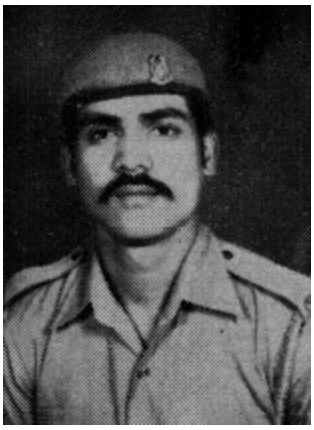
ला० ना० उमेर अहमद 79 बटा०



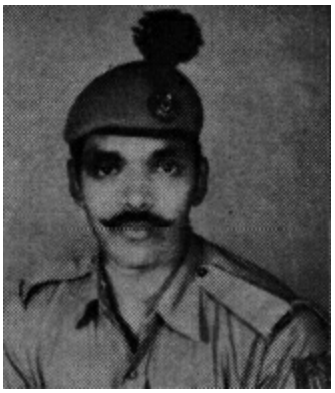
का० बाबूदीन 25 बटा०



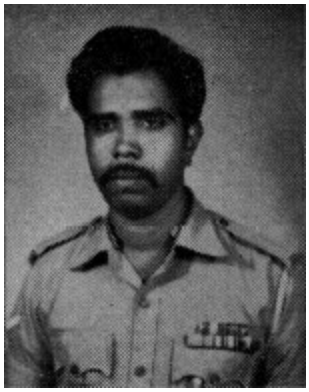
का० खुर्शीद आलम 25 बटा०



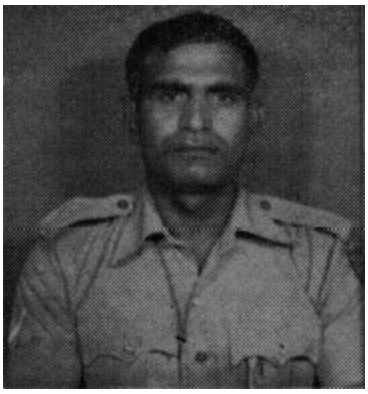
का० पी. जी. गवाली 25 बटा०



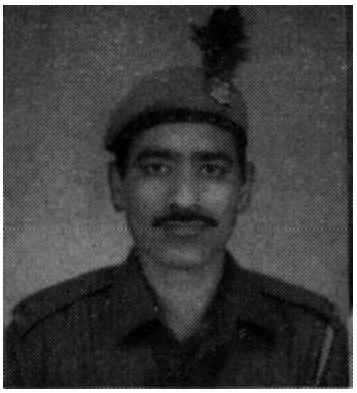
का० लल्लन गौड़ 25 बटा०



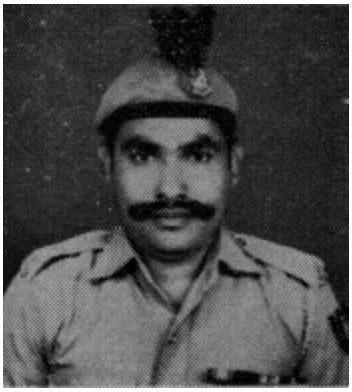
का० ओ. एन. राजन 48 बटा०



का० बजंरगी पांडे 48 बटा०



का० रोबिन पीटर 48 बटा०



कां० जी. सोमन पिल्लई 12 बटा०

इसके अतिरिक्त 79 बटा० के स० कमांडेन्ट अनुराग सक्सेना, 31 बटा० के नि० एस० पी० शर्मा, 48 बटा० के उ० नि० (स्व०) बंतासिंह, 78 बटा० के है. कां० एम० बी० थापा तथा 36 बटा० के कां० होशियार सिंह को भी शौर्यवीरता के पुलिस पदक प्रदान किए गए।

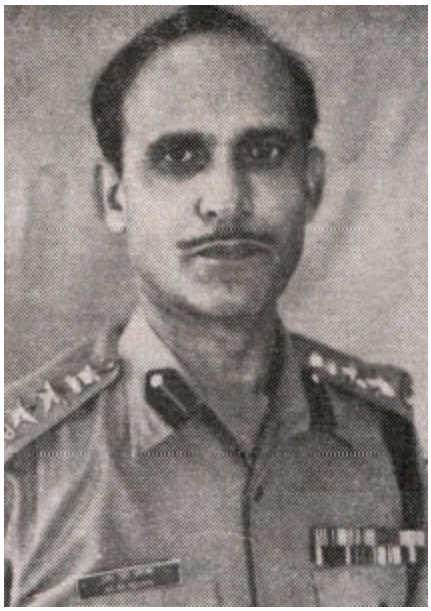
सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक



श्री आर. सी. झा निदेशक भारतीय सुरक्षा अकादमी



श्री पी. वी. सुब्बाराव उप पुलिस महा निरीक्षक के. रि. पु. बल मद्रास



श्री एम. एम. खान सहायक निदेशक (प्रशासन) के. रि. पु. बल महानिदेशालय



श्री वाई. पी. बक्शी अपर उप महानिरीक्षक ग्रु. के. दीमापुर ।

इनके अतिरिक्त श्री कुलदीप सिंह सहायक कमांडेंट 47 बटालियन के. रि. पु. बल को भी उनकी सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक प्रदान किया गया।

बाढ़ पीड़ितों की सहायता



महानिदेशक श्री प० ग० हलर्नकर पंजाब के राज्यपाल श्री सिद्धार्थ शंकर रे को बाढ़ राहत कार्यों के लिए 2.21 लाख रुपए का चैक भेंट करते हुए। यह राशि पंजाब में कार्यरत बल के कार्मिकों ने बाढ़ पीड़ितों की सहायतार्थ एकत्र की थी।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल

इतिहास और वर्तमान भूमिका

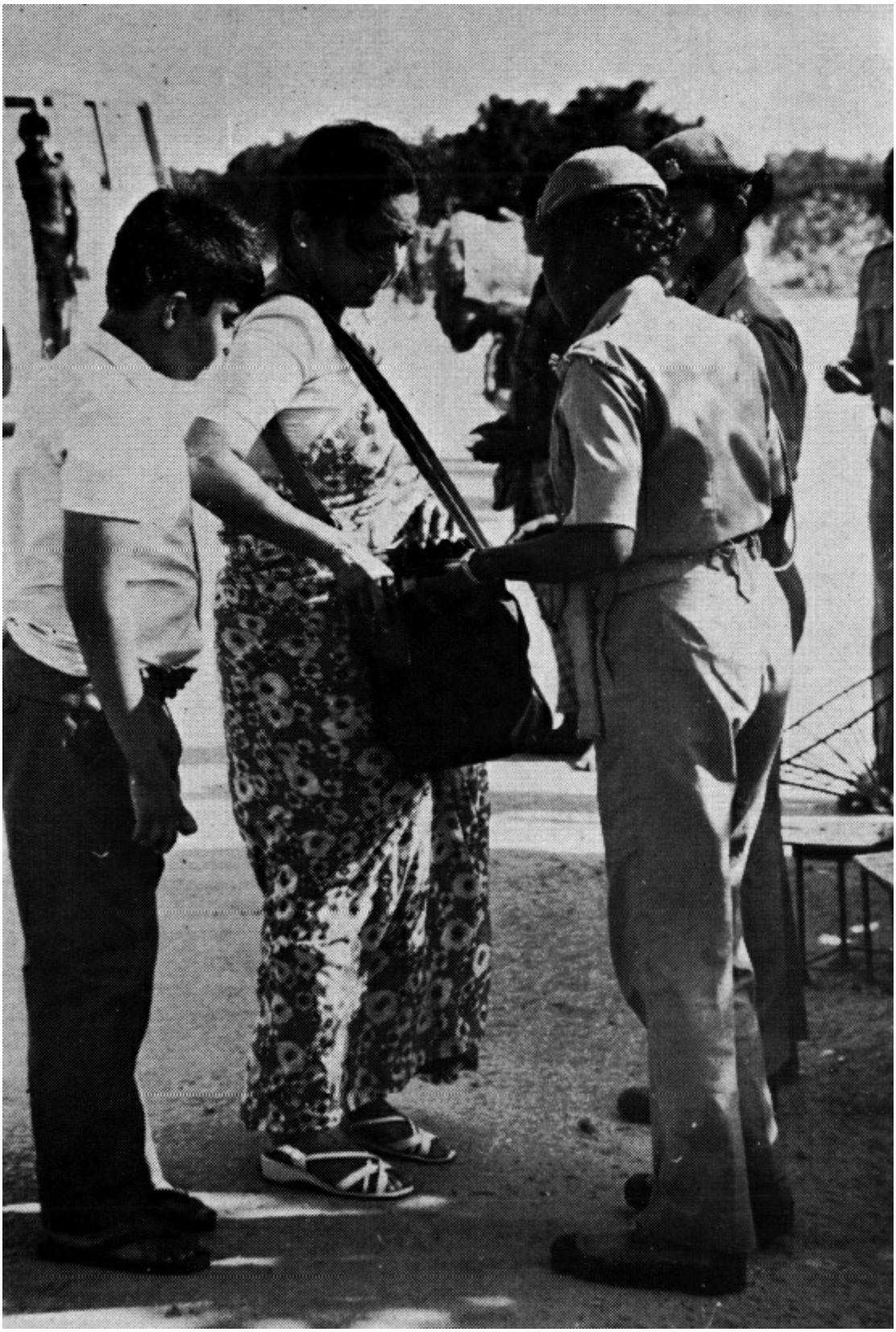
आजादी से पूर्व क्राउन रिप्रेजेन्टेटिव पुलिस के नाम से जाने जाने वाले केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का जन्म 27 जुलाई 1939 को हुआ। सेना के ही समान इस संगठन को तैयार किया गया, और उसी तरह प्रशिक्षित, लेकिन इस का उद्भव मुख्यतः तत्कालीन देशी राज्यों को कानून व व्यवस्था बनाये रखने में सहायता देने के लिए ही हुआ था।

पूरी तरह देशी राज्यों की सहायता के लिए बनाये गये इस बल ने जल्दी ही कानून व व्यवस्था बनाये रखने में अपनी उत्कृष्ट भूमिका का परिचय देते हुए अपनी क्षमताएं जाहिर कर दी। स्वतंत्रता से पूर्व इस बल के कार्मिकों ने एक जोर्ज क्रास, तीन किंग्स

पुलिस मेडल (शौर्यवीरता के लिए) तथा अपनी विभिन्न भूमिकाओं के लिए 3 भारतीय पुलिस पदक प्राप्त किए।

स्वतन्त्रता के बाद, तत्कालीन गृह मंत्री सरदार बल्लभ भाई पटेल की दूरदर्शिता ने इस बल के महत्व को एक आरक्षित पुलिस बल के रूप में राज्यों में कानून व व्यवस्था बनाए रखने के लिए पहचाना, और इसे नया नाम सेंट्रल रिजर्व पुलिस फोर्स दिया।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल जो अगले वर्ष से अपने स्वर्ण जयंती वर्ष में प्रवेश कर रहा है, का अपना एक गरिमामय व गौरव पूर्ण इतिहास है। 1950 में बल की कुछ बटालियनें मुख्यत: अरावली तथा चम्बल के क्षेत्रों में डाकू समस्या से जूझने, जम्मू कश्मीर में अशांति को दबाने तथा लद्दाख की बर्फीली विवाद ग्रस्त सीमाओं पर प्रहरी के रूप में तैनात थी। बल को सब से पहले सबसे बड़ी कुर्बानी 21 अक्टूबर, 1959 को हाटस्प्रिंग में देनी पड़ी। जहाँ एक चीनी टुकड़ी के हमले में बल के 19 जवानों को अपना बलिदान देना पड़ा। तभी से 21 अक्टूबर देश के सभी पुलिस बलों द्वारा पुलिस स्मारक दिवस के रूप में मनाया जाता है। 1965 के भारत पाक युद्ध में भारतीय सेना के साथ बल के जवान रन आफ कच्छ की सरदार पोस्ट पर कंधे से कंधा मिला कर लड़े। बल ने 1971 के भारत पाक युद्ध में काफी बहादुरी से भाग लिया और अपनी वीरता के लिये दो सेना मेडल तथा कई शौर्यवीरता के पुलिस पदक प्राप्त किये।



श्रीलंका में चुनावों के दौरान तैनात बल की एक महिला कर्मी।

बंगलादेश को आजादी दिलवाने में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

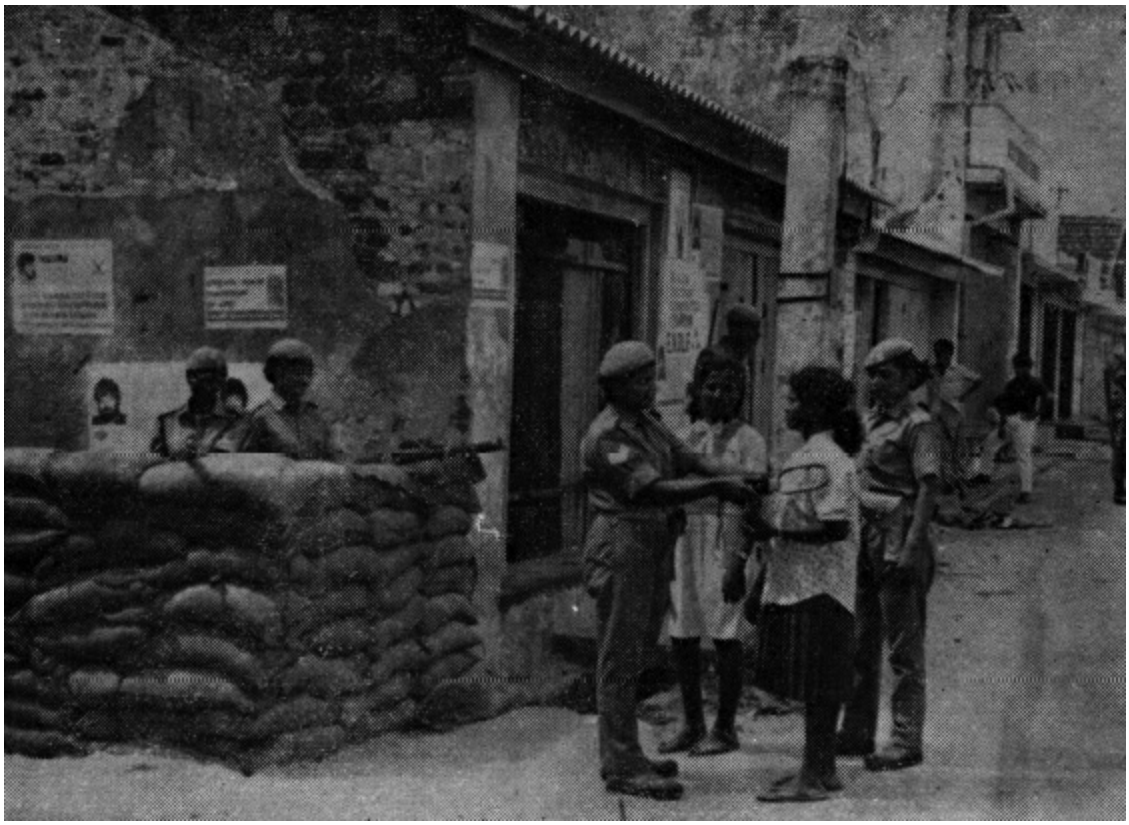
वर्तमान समय में अपनी 1,20,000 कार्मिकों की शक्ति के साथ केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल कई महत्त्वपूर्ण कार्यों को अंजाम दे रहा है। बल आज साम्प्रदायिक दंगों, पूरे देश में कठिन कानून व व्यवस्था की स्थिति, उत्तरपूर्व के राज्यों में राजद्रोह तथा पंजाब में आतंकवाद से निबटने के साथ ही श्रीलंका में भारतीय शांति रक्षक सेना को सहयोग देते हुए अरुणाचल में सीमा की सुरक्षा तथा अन्य पुलिस कार्यों को भी मुस्तैदी से निभा रहा है। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की धर्मनिरपेक्ष तथा निष्पक्ष छवि के कारण इस की मांग देश के सभी राज्यों में बनी हुई है।

1983 से केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल मुख्य रूप से पंजाब में सक्रिय है। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल इन सालों में पंजाब पुलिस के बाद आतंकवादियों से सीधी भिड़ने वाली पहली पुलिस फोर्स रही है। इस वर्ष (1988) पंजाब में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों के साथ हुई विभिन्न मुठभेड़ों में अब तक 207 आतंकवादी मारे गए (जिंनमें 27 'ए' और 'बी' श्रेणी के थे) तथा 2,181 आतंकवादी गिरफ्तार किए गए, (जिन में 30 'ए' तथा 'बी' श्रेणी के थे)। इसी बीच बल ने 800 हथियार बरामद किए, जिन में 321 पिस्तौलें, 64 राइफलें, 186 ए०के० 47 राइफलें, 21 स्टेनगनें; 10 राकेट लाँचर, 25 एम० जी० तथा एक एम०एम०जी० शामिल हैं।

लेकिन केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल को इन उपलब्धियों की कीमत देनी पड़ी है। बल के 20 जवानों को पंजाब में तथा 20 को देश के अन्य भागों में अपनी जान से हाथ धोना पड़ा। देश के अन्य भागों में बल के जवानों ने 56 विद्रोहियों को मार गिराया और 251 हथियार बरामद किए।

इस वर्ष बल के 33 कार्मिकों को शौर्यवीरता के पदक मिले जब कि अमृतसर क्षेत्र के उप महानिरीक्षक केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल श्री एस०एस० विर्क पद्मश्री से सम्मानित किए गए।

श्रीलंका में बल भारतीय शांति रक्षक सेना के एक अंग के रूप में कार्य कर रहा है। हालांकि यहाँ बल के कार्मिक सामान्य पुलिस कार्यों के लिए तैनात किए गये थे, लेकिन यहाँ तैनात बल की दो बटालियनों को अपने आगमन के साथ ही युद्ध की सी ही स्थिति का सामना करना पड़ा है। लिट्टे के पहले सबसे बड़े आक्रमण का निशाना केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ही के जवान थे। इस में बल को अपने चार जवान खोने पड़े। इस तथा अन्य मुठभेड़ों में बल के जवानों ने लिट्टे के आक्रमणों का जम कर मुकाबला किया। इन मुठभेड़ों में शामिल बल के कॉस्टेबल टी० मोहनन को वीरचक्र तथा इंस्पेक्टर बी०पी० शर्मा को उनकी वीरता के लिए सेना पदक प्रदान किए गये । केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की महिला बटालियन की एक कम्पनी को भी भारतीय शांति रक्षक सेना की सहायतार्थ श्रीलंका भेजा गया । श्रीलंका में इस टूकडी के कार्यों की सर्वत्र प्रशंसा की गई। हाल ही में महिला बटालियन की एक और कम्पनी को भेजा गया, जिसने वहां पर सम्पन्न हुए मतदान को सुचारु रूप से चलाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।



श्रीलंका में तैनात बल की महिला बटालियन की महिलाएं।

जांबाज महिलाओं की उपलब्धि

बल की महिला बटालियन की श्रीलंका स्थित 'ए' कम्पनी की एक टुकड़ी 31 अगस्त, 1988 को ऐलीफेंट चैक पोस्ट पर उपनिरीक्षक हयातसिंह की देखरेख में तलाशी लेने की ड्यूटी पर तैनात थी।

सुबह लगभग 8.25 बजे एक बस इस पोस्ट पर आयी, जिसे बल की लड़कियों ने तलाशी लेने के लिए रोका। बल की जवानों ने सभी यात्रियों को बस से नीचे उतरने के लिए कहा। बस में बैठी एक महिला यात्री काडरा उमा ने बूढ़ी होने के कारण बस से नीचे उतरने में असमर्थता जाहिर की। इससे बल की इन जवानों को कुछ संदेह हुआ। ला० नायक राजवंती, कां० लीलाबाई व कां० बिमला देवी ने तत्काल उस महिला की तलाशी ली और उस महिला के कपड़ों से 27 नंबर के 1192 डेटोनेटर बरामद किए।

महिला बटालियन की लड़कियों की इस भारी सफलता पर भारतीय सेना के उच्च अधिकारियों ने उनकी भूरि भूरि प्रशंसा की और तीनों कार्मिकों को एक एक ट्रांजिस्टर पुरस्कार स्वरूप प्रदान किये गये।

<u>संदर्भ पंजाब की बाड़</u>

हमारा जीवन समर्पित है पीड़ित मानवता की सेवा को

लेख–एच० एस० सेठी

पंजाब के संवेदनशील इलाके मंड के अंतर्गत आने वाले मंड कसु क्षेत्र के लिए 25 सितम्बर, 1988 का दिन अन्य सामान्य दिनों की ही तरह था। धीरे धीरे गहराती सांझ पर रात की कालिमा लहराने लगी थी। अपने अपने हाथ में स्टील के मग और प्लेटें लिए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की प्लाटून पोस्ट के जवान भोजन का इन्तजार कर रहे थे। लेकिन अचानक उनकी आँखों के सामने लहरा गया विनाशकारी जल।

यह उस विनाशकारी बाढ़ का पानी था, जो पहले ही घुस्सी बंध के किनारे तोड़कर चारों ओर बढ़ रहा था। केवल दो घंटों के अन्दर अन्दर शाम 8.30 बजे के आसपास पानी 8 फुट ऊपर बह रहा था। पोस्ट स्थित बल के जवान 36 किलोमीटर दूर बटालियन मुख्यालय नकोदर में अपने कमांडेंट तिलकराज अरोरा को सिगनल पर सिगनल भेज रहे थे। उनका हर सिगनल अपने प्राण बचाने के उपाय के लिए तात्कालिक सहायता की गुहार कर रहा था, वे प्रत्येक सिगनल में कह रहे थे कि शायद ये उनका अन्तिम सिगनल है।

कमांडेंट अरोरा उस समय की याद करते हुए बता रहे थे, "मुझे हर आधे घंटे के बाद इस तरह के सन्देश मिल रहे थे। हर बार सन्देश मिलता और मेरा रक्तचाप बढ़ जाता। सरकार ने हमें हर सुविधा दी थी, लेकिन हमारे पास नौकाएं नहीं थीं। मैं सोच रहा था कि यदि हमारे एक भी आदमी का नुकसान हुआ, तो मुझे सोच लेना चाहिए कि ये मेरी व्यक्तिगत असफलता होगी। मैं हर दरवाजे पर नौकाएं पाने के लिए गुहार लगा रहा था, लेकिन कहीं से भी कोई भी सहायता मिलती नजर नहीं आ रही थी।"

अन्त में रात लगभग 1 बजे कमांडेंट अरोरा और उनके सहायक अधिकारियों की मशक्कत रंग लाई, जब स्थानीय सब डिवीजनल मजिस्ट्रेट ने उन्हें एक नौका प्रदान कर दी। हम सबके चेहरे पर असमंजसता की परतें चढ़ीं थीं, क्योंकि ये बात कोई भी नहीं बता सकता था कि नाव के पहुंचने तक हमारे आदमी सकुशल होंगे भी या नहीं, लेकिन हमें उन तक पहुंचना तो था ही।

इस राहत दल का नेतृत्व करने का दायित्व सहायक कमांडेंट बाबू राव को सौंपा गया। पचास वर्षीय प्रतिष्ठित खिलाड़ी बाबू राव कई खेलों कबड्डी, दोड़ों, बास्केट बाल तथा फुटबाल आदि में कई सम्मान प्राप्त कर चुके हैं। उन्हें एक बार युद्ध में लड़ने का भी गौरव प्राप्त हुआ है, उनके सामने अब एक और लड़ाई थी।

टूटी सड़कों, बंध की दरारों, बाढ़ के पानी तथा अन्य असुविधाओं के चलते बाबू राव तथा उनके दल को अपनी मंजिल तक पहुंचने के लिए नाव को ट्रकों पर अपने कंधों पर, छिछले पानी में धकेल कर, तथा गहरे पानी में खे कर ले जाना पड़ा, और इन सब

मुसीबतों को पार कर वे सुबह 4 बजे अपनी पोस्ट पर पहुंचे।

लेकिन इस समय गहरा अन्धेरा छाया था, इस कारण उन्हें अपनी पोस्ट ढंढने में कठिनाई हुई। वे समझ नहीं पा रहे थे कि वे क्या करें, ये सन्देश जल में फंसे कार्मिकों को वायरलैस पर दिया गया, जिसके जवाब में बाढ़ में फंसे जवानों ने लाईट पिस्टल से फायर कर अपनी स्थिति के बारे में जानकारी दी।



बाढ़ से प्रभावित इलाकों में राहत कार्यों में जुटे केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के अधिकारी व जवान।

इसके बाद भी बाबूराव तथा उनके साथियों को पोस्ट तक पहुंचने में ढाई घंटे लगे। जब बाबूराव उस स्थल पर पहुंचे तो उन्होंने पाँच आदमियों को एक पेड़ पर तथा पाँच को एक अन्य पेड़ पर लटके पाया। तथा बाकी के 12 आदमी मिट्टी और गारे से बनी पोस्ट की छत पर बैठे थे। बाढ़ का पानी पोस्ट की छत को छूना ही चाहता था, वर्षा लगातार जारी थी। यह अपने आप में आश्चर्य का विषय था कि इतनी तेज बाढ़ में मिट्टी की वह पोस्ट अभी तक कैसे खड़ी थी।

जब नाव एक पेड़ के पास पहुंची तो पहला आदमी जो पेड़ से उतरा वह बाबूराव के गले लिपट कर बच्चों की तरह रोने लगा। “हम सोच रहे थे, कि अब हम आप लोगों को कभी नहीं देख पाएंगे।” उसने सुबकते हुए कहा। प्रलयंकारी बाढ़ के इस जल में एक नाव पर सवार एक अधिकारी तथा जवानों के बीच की सारी दूरियाँ मिट गई थीं, सब एक दूसरे के गले मिलते हुए एक दूसरे को ढ़ाढ़स दिला रहे थे।

इन जवानों ने बाबूराव को बताया कि यह समय उन्होंने कितने भय और आतँक के बीच बिताया है। उन्हें न केवल बाढ़ में डूब जाने का ही खतरा था, अपितु उन सांपों द्वारा काट लिए जाने की आशंका भी बराबर बनी हुई थी, जो बाढ़ की तीव्र धार में बहते हुए आए थे और जिन्होंने रास्ते में पड़ने वाले इन पेड़ों पर शरण ले ली थी। एक बार तो एक सांप को अपने बहुत नजदीक देखकर मारे डर के एक व्यक्ति नीचे पानी की तेज धार में जा गिरा। ये उसके साथी ही थे, जिन्होंने एक हाथ से पेड़ को थाम कर दूसरे हाथ से उसे सम्भाल लिया।

इसी बीच सतलुज पुल की तरफ से इन्स्पेक्टर वर्गीज भी एक नाव को लेकर आ पहुंचे। प्लाटून के कम्पनी कमांडर होने के नाते तथा अपनी विशेष जिम्मेदारी को

समझ कर, अपनी जान को खतरे में डालते हुए वे अपने साथ बल के दो कुशल तैराकों के साथ अपने आदमियों को बचाने आ पहुंचे थे। पूरे रास्ते वे तेज धारा के विपरीत संघर्ष करते हुए यहां तक पहुंचे थे।

सभी जवानों व उनके सामान को एक सुरक्षित बंध तक जो कि अभी तक बाढ़ की तेज धारों से भी टूटा नहीं था, पहुंचाने के लिए दोनों नावों को 10 चक्कर लगाने पड़े। एक सच्चे नेता की तरह बाढ़ की उस विभीषिका से बाहर आने वाले अंतिम व्यक्ति बाबू राव थे। जैसे ही बाबू राव व उनके कुछ अन्य साथी नाव में सवार हो बाहर की ओर निकले उन्होंने देखा मिट्टी और गारे से बनी पोस्ट की दीवार भरभरा कर बैठ गई।

लेकिन बाबू राव, वर्गीज तथा उनके साथियों की ये सेवा यात्रा अभी समाप्त नहीं हुई थी। इसके बाद ये दोनों नावें बाढ़ में फँसे नागरिकों की सहायतार्थ निकल पड़ी। 26 सितंबर को निकटवर्ती जलमग्न गांवों से इन बहादुर बाकुंरों ने 500 नागरिकों को बाहर निकाला, और 27 सितंबर को 300 नागरिकों की जान इन जवानों और अधिकारियों की सेवा व कार्यकुशलता से बच सकी। लोगों को बचाने का यह अभियान उस शाम 6 बजे उसी समय रुका, जबकि चारों तरफ घना काला अंधेरा फैल गया। इसी बीच वहां पर सेना की नावें भी पहुंच गईं, इस प्रकार इन दोनों नावों पर दबाव कुछ कम हो गया।

बाबू राव और उनका दल अपने मुख्यालय पर मध्य रात्रि को ही पहुंच पाया। इस समय तक ये सभी लोग थक कर चूर हो चुके थे। इस समय जब कि उन्हें आराम के कुछ क्षण मिले थे तभी वे जान पाए कि उनका शरीर बुरी तरह से पस्त हो चुका है, लेकिन फिर भी अपने कर्तव्य को पूरी मुस्तैदी के साथ अंजाम देने की एक संतुष्टी उन सभी के चेहरों से झलक रही थी।•

जोखिम निधि लाभ

माह नवंबर, 1988 में मृत्यु के कुल 16 मामलों में, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल जोखिम निधि से 5,24,000 रु० देने स्वीकृत किए गए।

इसी प्रकार अक्षमता के 10 मामलों में 1,60,000 रुपए देने स्वीकृत किए गए।

वे नहीं रहें

नवम्बर, 1988 माह में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्न कार्मिकों की मृत्यु हुई। सी० आर० पी०एफ० समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

स० उ० नि० (मि०) जितेन्द्र कुमार (ग्रु० के० मोकामाघाट), कां० निहाल सिंह (97 बटा०), कां० मोहम्मद अलत्ताफ (87, बटा०); नायक उस्मान खान (69 बटा०), नायक शेरसिंह (ग्रु०के० बनतलाब), कुक ओंकारसिंह (ग्रुप के० I अजमेर), नायक सवाई सिंह

(80 बटा०), रिक्रूट/कां० रामानेवास (75 बटा०), कां० राजबीर सिंह (11 बटा०), ला० नायक सुन्दर लाल (47 बटा०), कां० सोमपाल (80 बटा०), वाशर मैन प्यारे लाल (71 बटा०), का. बी. अशोक (35 बटा०), है० कां० लक्ष्मण सिंह (8 बटा०), कां० रामसिंह (20 बटा०) और बाटर कैरियर बालकिशन (24 बटा०)।

कैंसर पीड़ितों को सहायता

बंगलौर स्थित 91 बटालियन के कार्मिकों ने कैंसर पीड़ितों की सहायतार्थ 5,341 रुपए एकत्र कर कैसर पेशेंट ऐड एशोसिएशन बम्बई की जन संपर्क अधिकारी श्रीमती गुर्टू को सौंपे। बल के कार्मिकों के इस कार्य की प्रशंसा करते हुए यूनिट के कमांडेट को भेजे गए एक पत्र में एसोसिएशन ने बल के कार्मिकों को कैंसर पीड़ितों की सहायता के लिए राशि एकत्र करने के लिए धन्यवाद दिया है और आश्वासन दिया है कि इस राशि का उपयोग गरीब और जरूरतमंद कैंसर पीड़ितों के सहायतार्थ ही किया जाएगा।

ठग

डाक्टर : "सेठ जी, इन्हें नकली सांस देनी पड़ेगी।"

सेठ : "ठगते क्यों हो भइया। क्या तुम्हारे पास असली सांस नहीं? इन्हें असली सांस ही दो रुपयों की चिंता मत करो।"

आवरण कथा

बल के 45 कार्मिक उत्कृष्ट सेवाओं के लिए पुलिस पदकों से सम्मानित

6 दिसम्बर, 1988 को दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित एक समारोह में आंतरिक सुरक्षा राज्य मंत्री श्री पी. चिदंबरम् ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 45 कार्मिकों को उनकी उत्कृष्ट सेवाओं के लिए पुलिस पदकों से सम्मानित किया। ये पदक उन कार्मिकों को प्रदान किए गए, जिन्होंने अपनी नि:स्वार्थ सेवा से केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की गरिमा को बढ़ाया है।

पुलिस पदक प्राप्त करने वालों में पुलिस महानिरीक्षक जोगिंदर सिंह तथा कमांडेंट जी. जी. ए. शर्मा व एम. के धगत भी शामिल थे, इन्हें ये सम्मान पंजाब में आतंकवाद के

विरुद्ध उनकी भूमिका के लिए दिया गया। सहायक कमांडेंट आर. सी. सेठी को यह पदक अमृतसर कंट्रोल रूम में उनकी कार्यकुशलता के लिए तथा पुलिस उप महानिरीक्षक टी. मिसाऊ और कमांडेंट ए. सी. सीताराम को पश्चिमी बंगाल में नक्सली हिंसा के विरुद्ध उनके संघर्ष व नेतृत्व के लिए प्रदान किए गए।

ये पदक सहायक कमांडेंट फ्रांसिस सावरयप्पा को महत्त्वपूर्ण आपरेशनों के संगठन तथा महत्त्पूर्ण सूचनाएं एकत्र करने के लिए, सहायक कमांडेंट मोहन सिंह को पी० ए० सी० की बगावत के खिलाफ उनकी भूमिका के लिए तथा हैड कांस्टेबल किरलू राम को (जो कि पहले ही 29 नकद पुरस्कार तथा 6 प्रशंसा पत्र प्राप्त कर चुके हैं) उनकी सेवाओं के लिए दिए गए। पदक प्राप्त करने वालों में डा० एन० कार भी शामिल हैं। डा० कार जवानों के साथ मिजोरम में सूदूर इलाकों में स्थित बल की पोस्टों तक पैदल जाया करते थे। पदक प्राप्त करने वालों में दो खिलाड़ी भी शामिल हैं, ओलंपियन हरीचंद तथा सहायक कमांडेंट एन० के० बड़थ्वाल। श्री बड़थ्वाल 1960 से 1970 के दशकों में प्रमुख हाकी खिलाड़ी रहे हैं।

इस अवसर पर ब्यूरो आफ पुलिस रिसर्च एन्ड डेवलपमेंट के भूतपूर्व महानिदेशक श्री टी० ए० सुब्रह्मण्यम को भी उनकी सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक प्रदान किया गया।

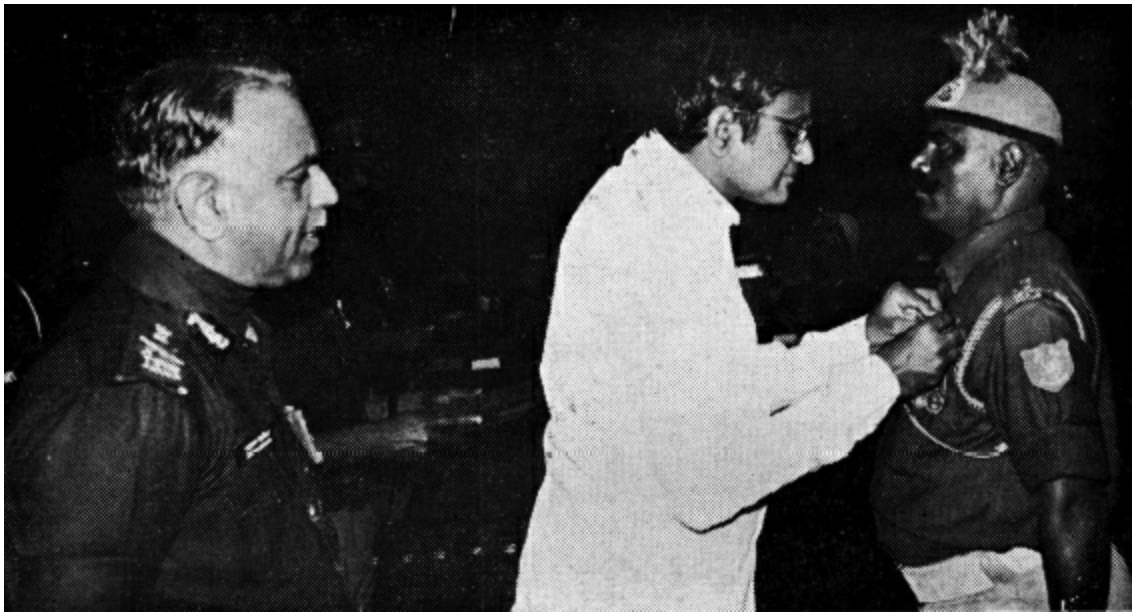
मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए महानिदेशक महोदय ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के गौरवशाली इतिहास व इसकी वर्तमान भूमिका पर प्रकाश डाला। महानिदेशक महोदय ने बताया कि आज केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल एक बहुमुखी बल बन गया है। यह बल आज कई तरह की भूमिकाएं निभा रहा है। उत्तर पूर्वी राज्यों में विद्रोह की स्थिति से बल बड़ी कुशलता से निबटा है। बल ने विषम व दुर्गम सीमा की चौकसी की है और देश के विभिन्न इलाकों में साम्प्रदायिक तनावों के दौरान स्थिति पर काबू पाने में मदद दी है। पंजाब में बल की आतंकवादी विरोधी भूमिका से सभी भली भांति परिचित हैं। इस वर्ष पंजाब में बल के जवानों ने 800 हथियार बरामद किए हैं, जिन में 186 ए. के. 47 राइफलें भी शामिल हैं। बल ने भारी संख्या में आतंकवादियों का सफाया कर बड़ी संख्या में उन को गिरफ्तार भी किया है। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल श्रीलंका में भारतीय शांति रक्षक सेना के एक अंग के रूप में भी काम कर रहा है, वहां पर वर्तमान समय में बल की दो बटालियनें तथा एक महिला कम्पनी तैनात है।

हाट स्प्रिंग्ज में 1959 में बल के बहादुर जवानों की शहादत का जिक्र करते हुए महानिदेशक महोदय ने बताया कि बल की यह परम्परा अभी तक बनी हुई है। इस वर्ष पंजाब, मणिपुर, दार्जीलिंग तथा श्रीलंका में आतंकवादियों से हुई विभिन्न मुठभेड़ों में अब तक हम अपने 40 बहादुर जवानों को खो चुके हैं। महानिदेशक महोदय ने बताया कि इन सभी बहादुरों का सम्मान हम इस माह 28 तारीख को होने वाली वार्षिकोत्सव परेड में करेंगे।

महानिदेशक महोदय ने बताया कि इस वर्ष हमारे बल के कार्मिकों ने 33 शौर्यवीरता के पदक जीते हैं जोकि एक रिकार्ड है। यह किसी भी तरह संभव नहीं था

के 33 शौर्यवीरता के पदक, सराहनीय सेवाओं के पदक तथा 45 उत्कृष्ट सेवाओं के पदक एक ही समारोह में दिए जाते। इसी लिए उत्कृष्ट सेवाओं के पदक प्रदान करने के लिए इस अलग समारोह का आयोजन किया गया। इसके बाद महानिदेशक महोदय ने उपस्थित समुदाय, प्रेस, दूरदर्शन तथा आकाशवाणी को उनकी उपस्थिति के लिए धन्यवाद देते हुए मंत्री महोदय को बल के 45 कार्मिकों को उनकी उत्कृष्ट सेवाओं के लिए पुलिस पदक प्रदान करने के लिए आमंत्रित किया।

कार्मिकों को पदक प्रदान करने के बाद उपस्थित समुदाय को संबोधित करते हुए मंत्री महोदय ने कहा कि बल के लिए यह गर्व की बात है कि हम आज यहां केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के कार्मिकों को उनकी विशिष्ट सेवाओं के लिए पुलिस पदक प्रदान करने हेतु एकत्र हुए हैं। पिछले कुछ समय से देश के विभिन्न भागों से बल की लगातार माँग बनी हुई है। और मुझे यह बताते हुए गर्व होता है कि बल ने हर अपेक्षित कार्य को कुशलता से पूरा किया है। हर चुनौती का दृढ़ता से सामना किया है और अपने अपूर्व कौशल तथा क्षमता से हर उलझन को सुलझाया है, तथा इसके लिए निर्धारित लक्ष्यों को कुशलता से पूरा किया है। मैंने पंजाब में इनका कार्य देखा है, मैंने इनके साथ कई घंटे गुजारे हैं, जबकि इन्हें अहमदाबाद, मेरठ और अन्य स्थानों पर भेजा गया था।



बारबर जगन्नाथ को पुलिस पदक प्रदान करते श्री चिदम्बरम।

पंजाब की स्थिति बल के लिए एक बड़ी चुनौती है, के० रि० पु० बल का एक बड़ा हिस्सा पंजाब में तैनात है। वहां कई जिलों में आंतरिक सुरक्षा की पूर्ण जिम्मेदारी बल पर ही है। वहाँ बल पंजाब पुलिस के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य कर रहा है, निस्सन्देह पंजाब में बल के जवानों को जिन स्थितियों में काम करना पड़ रहा है, वे बहुत बेहतर नहीं हैं। वहां उन्हें निवास, सप्लाई, परिवहन आदि की समस्याओं के साथ-साथ समुचित विश्राम और प्रशिक्षण भी नहीं मिल पा रहा है। पिछले दो सालों से बल में

प्रशिक्षण एक आकस्मिक बात हो गई है। बल की शायद ही कोई कम्पनी वर्तमान में प्रशिक्षणरत हो। अतः जहाँ मैं बल के महानिदेशक तथा बल को विगत में उनकी उपलब्धियों के लिए बधाई देता हूं, तो वहीं यदि हमने समस्याओं का समाधान नहीं ढूंढा तो आने वाले खतरे के प्रति सचेत करना भी अपना कर्त्तव्य समझता हूं। हमने प्रशिक्षण पर विशेष जोर दिया है और मैं इस मौके पर प्रशिक्षण के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता को दोहराना चाहूंगा। केवल प्रशिक्षण से ही नित नई जानकारियों और उपलब्धियों से लाभ उठाया जा सकता है। और यह प्रशिक्षण केवल कांस्टेबल स्तर पर ही नहीं होना चाहिए अपितु इसमें अधिकारियों को भी शामिल होना चाहिए, जिन्हें कि इस बल की गरिमा को आगे भी बनाए रखना है। सरकार ऐसी किसी भी राशि को स्वीकृत करने या देने में किसी भी प्रकार का संकोच नहीं दिखाएगी, जिसकी मांग के०रि०पु०बल अपनी प्रशिक्षण सुविधाओं के लिए करेगा। यही बात अन्य केन्द्रीय पुलिस संगठनों पर भी लागू होती है। हम यह भी चाहेंगे कि हमारे सर्वश्रेष्ठ युवक व युवतियाँ बल में व अन्य संगठनों में भर्ती किए जाएं। मैं बताना चाहूंगा कि केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में अपनी तरह की पहली महिला बटालियन की रचना कर हमने इस क्षेत्र में शुरुआत की है। हमारे जवानों की ही तरह महिला बटालियन की लड़कियां भी आज पूरे देश में तैनात हैं और यहीं तक नहीं ये अपनी सेवायें भारतीय समुद्री सीमाओं से पार श्रीलंका तक में दे रहे हैं। हम अपने सर्वश्रेष्ठ युवकों व युवतियों की भर्ती केवल कान्सटेबल स्तर तक ही नहीं अपितु अधिकारी स्तर तक करना चाहेंगे।

मैं उम्मीद करता हूं कि बल व अन्य केन्द्रीय पुलिस संगठन सर्वश्रेष्ठ अधिकारियों को अपने यहां प्रतिनियुक्ति पर आने के लिए आकर्षित कर पायेंगे। मैं राज्यों के पुलिस मुखियों से भी अपील करना चाहूंगा कि वे अपने आदमियों को केन्द्रीय संगठनों में प्रतिनियुक्ति पर भेजें। इससे न केवल इन अधिकारियों व कार्मिकों को बेहतर कार्यक्षेत्र व अनुभव की प्राप्ति होगी अपितु वे अपने राज्य की समस्याओं को राष्ट्रीय परिपेक्ष्य में भी जान व समझ पायेंगे। और उन का यह अनुभव राज्यों की पुलिस के लिए काफी लाभप्रद सिद्ध होगा।

मैं जानता हूं कि नई बटालियन के गठन से केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल को अपने स्रोत्रों में चाहे वे मानवीय हो या सामग्री के स्तर पर कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है लेकिन हम इन समस्याओं को समझना चाहते हैं ताकि ग्रुप केन्द्रों का स्तर ऊपर उठाया जा सके, उनकी संख्या बढ़ाई जा सके, अधिकारियों को अधिक संख्या में केन्द्रों में प्रशिक्षण के लिए भेजा जा सके, बेहतर उपकरण व सुविधाएं जुटाई जा सकें।

मंत्री महोदय ने कहा कि उन्हें नहीं लगता कि धनराशि पुलिस बलों के लिए कोई समस्या है, क्योंकि प्रति वर्ष उन्हें आवंटित की गई धनराशि में से काफी वापस लौटा दी जाती है। उन्होंने कहा कि आज आवश्यकता दूरदर्शिता, सही योजना तथा सही बजट बनाने की है।

इसके बाद मंत्री महोदय ने महानिदेशक महोदय तथा पदक प्राप्त करने वाले

कार्मिकों को विशेष रूप से बधाई देते हुए अपनी बात पूरी की।

इस मौके पर बल के कुल निम्न कार्मिकों ने मंत्री महोदय से पुलिस पदक ग्रहण किए—

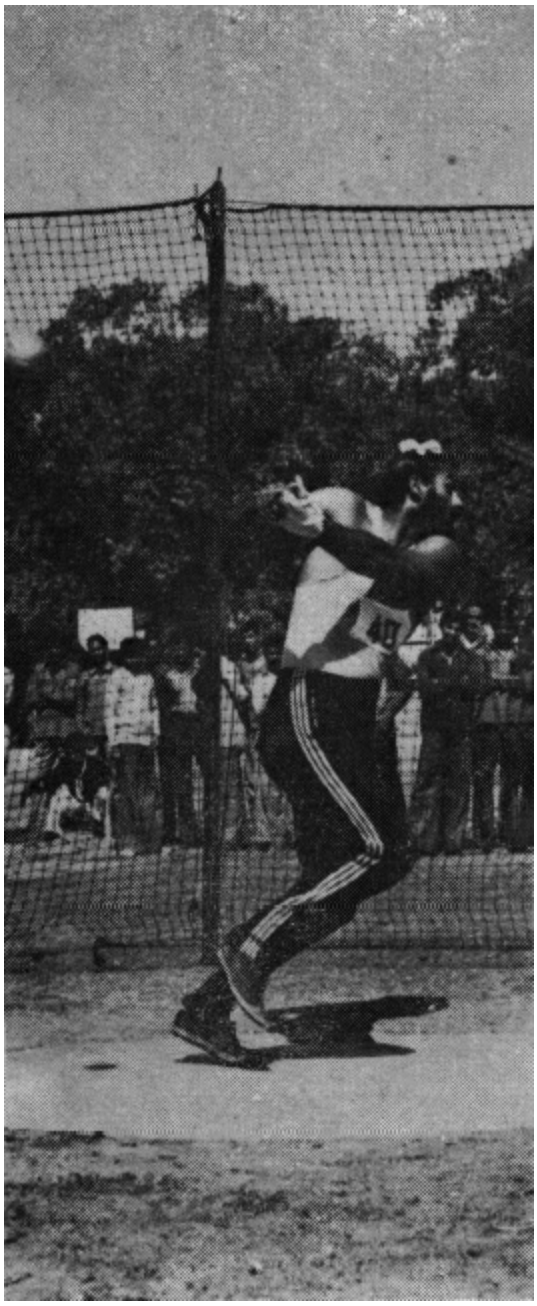
पुलिस महानिरीक्षक जोगिन्दर सिंह, पुलिस उप महानिरीक्षक टी०के० मिसाऊ, कमांडेंट जी०जी०ए० शर्मा, सी०एस० बरार, एम०के० धगत, एम०पी० चिटनिस, बलवंत सिंह, तथा सीताराम, डाक्टर जी०एन० कार, सहायक कमांडेंट एन०के० बड़थ्वाल, एफ० सवरयप्पा, आर० सी० सेठी, मोहन सिंह तथा प्यारा सिंह, पुलिस उपाधीक्षक भाग सिंह, राम सिंह, राम जीवन यादव, हरीचंद, चंदरभान, नरसिंह खत्री तथा जे० एस० रावत, सूबेदार मेजर के०पी०एस० नायर, रामभाल सिंह तथा ख्वाजू खान, इंस्पेक्टर जयानंद शर्मा, पी० कुन्हामन, एन०एल० पाटिल, जगमाल सिंह तथा बलवंत सिंह, सब-इंस्पेक्टर मूलचंद तथा राम सुरेश सिंह, हेड कांस्टेबल रामस्वरूप, शमशेर गुरंग, किरलू राम, एम० पी० कुशलप्पा, नरपत सिंह, रतन सिंह तथा फौजा सिंह, नायक शहाबुद्दीन खान, लांस-नायक गंगा सिंह रावत, कांस्टेबल बनवारी लाल, बलवंत सिंह तथा गंगया हीरामथ, बारबर जगन्नाथ व कुक रेवाधर जोशी।

22वी अंतर क्षेत्रीय दौड़ कूद प्रतियोगिताः

अजमेर ने वर्चस्व बनाए रखा

24 नवम्बर, 1988 को केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के अपर महानिदेशक श्री प्रीतम सिंह भिन्डर ने नीमच में बल की 6 दिवसीय 22वीं अंतर क्षेत्रीय दौड़कूद प्रतियोगिताओं का शुभारंभ किया। रंग बिरंगी आतिशबाजी सारे जहाँ से अच्छा की समधुर धुन, रंगा, माहौल और उपस्थित जनसमुदाय की भारी करतल ध्वनि के बीच यह प्रतियोगिताए शुरु हुईं।

सी० आर० पी० एफ० के नीमच केंद्र में स्थित मेहता स्टेडियम में बल के परम्परानुसार अनुशासित एवं गरिमापूर्ण माहौल में प्रारम्भ हुई इन प्रतियोगिताओं में बल की 14 रेंजों के 450 खिलाड़ियों ने 24 से 27 नवम्बर तक अपने जौहर दिखाए। इन स्पर्धाओं के लिए स्टेडियम में कुल 22 ट्रेक और फील्ड तैयार किए गए थे तथा स्टेडियम को बिलकुल नए सिरे से सजाया गया था।



आर० एस० बल : हैमर थ्रो में नया रिकार्ड



प्रतियोगिताओं के प्रारंभ में प्रस्तुत आर्कषक सांस्कृतिक कार्यक्रम

प्रतियोगिता के कुल अंतिम परिणाम इस प्रकार रहे।

100 मीटर दौड़ : (1) इंस्पेक्टर सुरेन्द्र सिंह (चंडीगढ़) 10.91 सैकंड, (2) कांस्टेबल जी. सी. मंडी (कलकत्ता)-11.27 सैकेंड, (3) नायक चौरे लाल (कलकत्ता) 11.60 सैकेंड।

200 मीटर दौड़ : (1) इंस्पेक्टर सुरेन्द्र सिंह (चन्डीगढ़) 22.41 सैकेंड, (2) सब इंस्पेक्टर गुरदेव सिंह (श्रीनगर) 22.98 सैकेंड, (3) कांस्टेबल के. पी. विलसन (मद्रास) 22.99 सैकंड।

400 मीटर दौड़ : (1) सब इंस्पेक्टर उम्मेद सिंह (नीमच) 50.23 सैकंड, द्वितीय कांस्टेबल गुरमैल सिंह (चंडीगढ़) 50.60, सैकेंड, (3) सब इंस्पेक्टर गुरदेव सिंह (श्रीनगर) 51.12 सैकेंड।

800 मीटर दौड़ : (1) कांस्टेबल अजहर मोहम्मद (अजमेर) 1:55.41 सैकेंड, (2) नायक चद्रवीर सिंह (अजमेर) 1:56.00 सैकेंड, (3) कांस्टेबल तरसेम सिंह (दिल्ली) 1:56.6 सैकेंड।

1500 मीटर दौड़ : (1) कांस्टेबल करतार सिंह (अजमेर) - 4:03.9 सेकेन्ड, (2) नायक चन्द्रवीर सिंह (अजमेर) 4:03.70 सैकेंड, (3) सब इन्सपेक्टर गुरमुख सिंह (गुवाहाटी) 4:03.85 सैकेंड।

3,000 मीटर स्टीपल चैस : (1) सब-इंस्पेक्टर शमसुद्दीन (अजमेर) 9:00.81 सैकेंड, (2) कांस्टेबल करतार सिंह (अजमेर) 9:20.4 सैकेंड, (3) नायक कुलविंदर

सिंह (श्रीनगर) 9:26.65 सैकेन्ड।

5,000 मीटर दौड़ : (1) सब-इंस्पेक्टर समसुद्दीन (अजमेर) 14:46.24 सैकेंड, (2) कांस्टेबल आई० डी० उमेश (चन्डीगढ़) 15:09.50 सैकेन्ड, (3) लांस-नायक गुरनाम सिंह (दिल्ली) 15:27.57 सैकेंड।

10,000 मीटर दौड़ : (1) नायक कुलविंदर सिंह (श्रीनगर) 31:24.48 सैकेंड, (2) ना. जीतराम (श्रीनगर) 31:26.45 सैकेंड, (3) कांस्टेबल रामकरन (अजमेर) 31:30.39 सेकेंड।

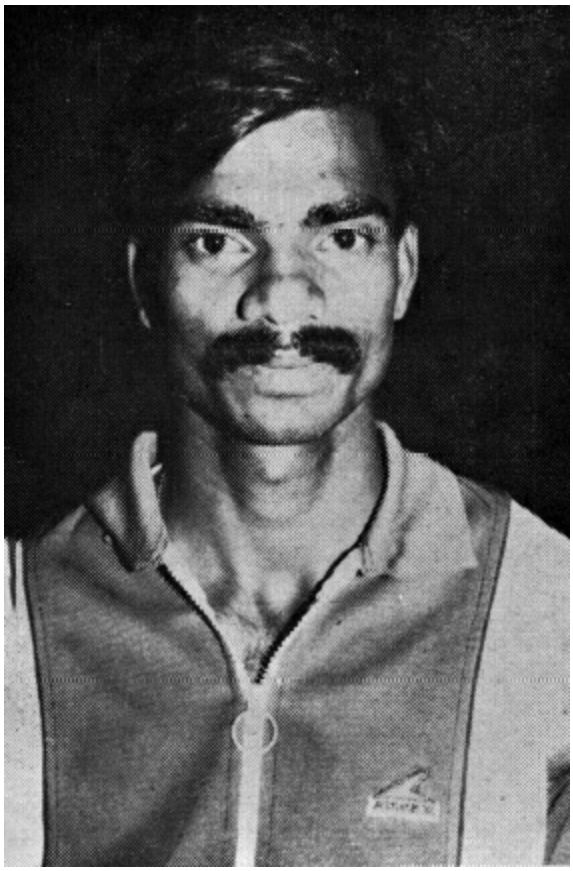
110 मीटर हाई हरडल : (1) इंस्पेक्टर तरनजीत सिंह (श्रीनगर) 15.29 सैकेंड, (2) हैड कांस्टेबल घासी राम (अजमेर) 15.35 सैकेंड, (3) लांस-नायक के. शियोधनन (दिल्ली) 15.69 सैकेंड।

400 मीटर बाधा दौड़ : 1. इन्सपेक्टर तरन जीत सिंह (श्रीनगर), 2. कांस्टेबल लक्षी टोकरे (अजमेर), 3. लांस नायक शिव चरण (दिल्ली)।

डैक्थलोन : 1. लांस नायक के० शियोधनन (दिल्ली) 6483 अंक (नया रिकार्ड), 2. कांस्टेबल हरमोहन (अजमेर) 6013 अंक, 3. हैड कांस्टेबल नासिर हुसैन (श्रीनगर) 5948 अंक।

पोल वाल्ट : 1. कांस्टेबल एम० पी० शाजीवन (मद्रास) 3.40 मीटर, 2. सब इंस्पेक्टर जनक चंद (मद्रास) 3.40 मीटर, 3. हैड कांस्टेबल नासिर हुसैन (श्रीनगर) 3.40 मीटर।

हाई जम्प : 1. हैड कांस्टेबल राम कुमार (अजमेर) 1.85 मीटर, 2. कांस्टेबल के०एस० गोकुल दास (मद्रास) 1.80 मीटर, 3. सब इन्सपेक्टर सतबीर सिंह (अजमेर) 1.80 मीटर।



के० शियोधनन : सर्वश्रेष्ठ धावक



अजमेर टीम के लिए श्रीमती शैलज़ा पी. हलर्नकर से ट्राफी ग्रहण करते हुए अपर उप महानिरीक्षक सतीश महेन्द्रू।

ब्रोड जम्प : 1. नायक के० सत्यशीलन (मद्रास) 7.02 मीटर, 2. लांस नायक के० शियोधनन (दिल्ली) 6.82 मीटर, 3. कांस्टेबल एच०एम० मेहतो (अजमेर) 6.67 मीटर ।

ट्रिपल जम्प : 1. नायक सत्यशीलन (मद्रास) 14.50 मीटर, 2. लांस नायक राजेन्द्र कुमार (श्रीनगर) 13.94 मीटर, 3. हैड कांस्टेबल बी० राबर्ट (मद्रास) 13.76 मीटर।

जेवलिन थ्रो : 1. सब इन्सपेक्टर रमा शंकर (अजमेर) 58.24 मीटर, 2. सब इन्सपेक्टर के० नटराजन (कलकत्ता) 55.08 मीटर, 3. उपाधीक्षक बी० सुशीलन (पटना) 52.50 मीटर।

शाट पुट : 1. इन्सपेक्टर ए०पी०एस० मान (हैदराबाद) 13.59 मीटर, 2. सब इन्सपेक्टर कमलदीप सिंह (मद्रास) 13.50 मीटर, 3. उपाधीक्षक एस० एस० बल (मद्रास) 13.03 मीटर ।

हैम्बर थ्रो : 1. उपाधीक्षक आर० एस० बल (कलकत्ता) 62.62 मीटर (नया रिकार्ड), 2. हैड कांस्टेबल ओम प्रकाश (अजमेर) 61.90 मीटर, 3. इन्सपेक्टर जे० एस० भुल्लर (दिल्ली) 46.32 मीटर ।

डिस्कस थ्रो: 1. उपाधीक्षक आर०एस० बल (कलकत्ता) 48.76 मीटर, 2. हैड कांस्टेबल अजीत भदौरिया (कलकत्ता) 45.00 मीटर, 3. सब इन्सपेक्टर कमलदीप सिंह (मद्रास) 44.40 मीटर।

4X100 मीटर रिले : 1. चन्डीगढ़ (43.65 सैकंड), 2. मद्रास (44.59 सैकंड) 3. कलकत्ता (45.17 सैकंड)।

4X400 मीटर रिले : 1. चन्डीगढ़ - (3:25.06 सैकंड), 2. मद्रास (3:25.98 सैकंड, 3. श्रीनगर (3:27.11 सैकंड)।

170 अंक अर्जित कर अजमेर रेन्ज ने चैम्पियनशिप ट्राफी पर अपना कब्जा जमाया, जबकि 151, और 121 अंक प्राप्त कर मद्रास और श्रीनगर रेन्ज क्रमशः दूसरे व तीसरे स्थान पर रहे।

प्रतियोगिता का सर्वश्रेष्ठ दौड़ाक दिल्ली । के के० शियोधनन को घोषित किया गया।

प्रतियोगिता के अंतिम दिन महानिदेशक श्री प०ग० हलर्नकर की उपस्थिति में पुरुस्कार वितरण समारोह सम्पन्न हुआ । विजेताओं को पुरुस्कार श्रीमती शैलजा हलर्नकर ने प्रदान किए।

संदर्भ-पुलिस स्मारक दिवस

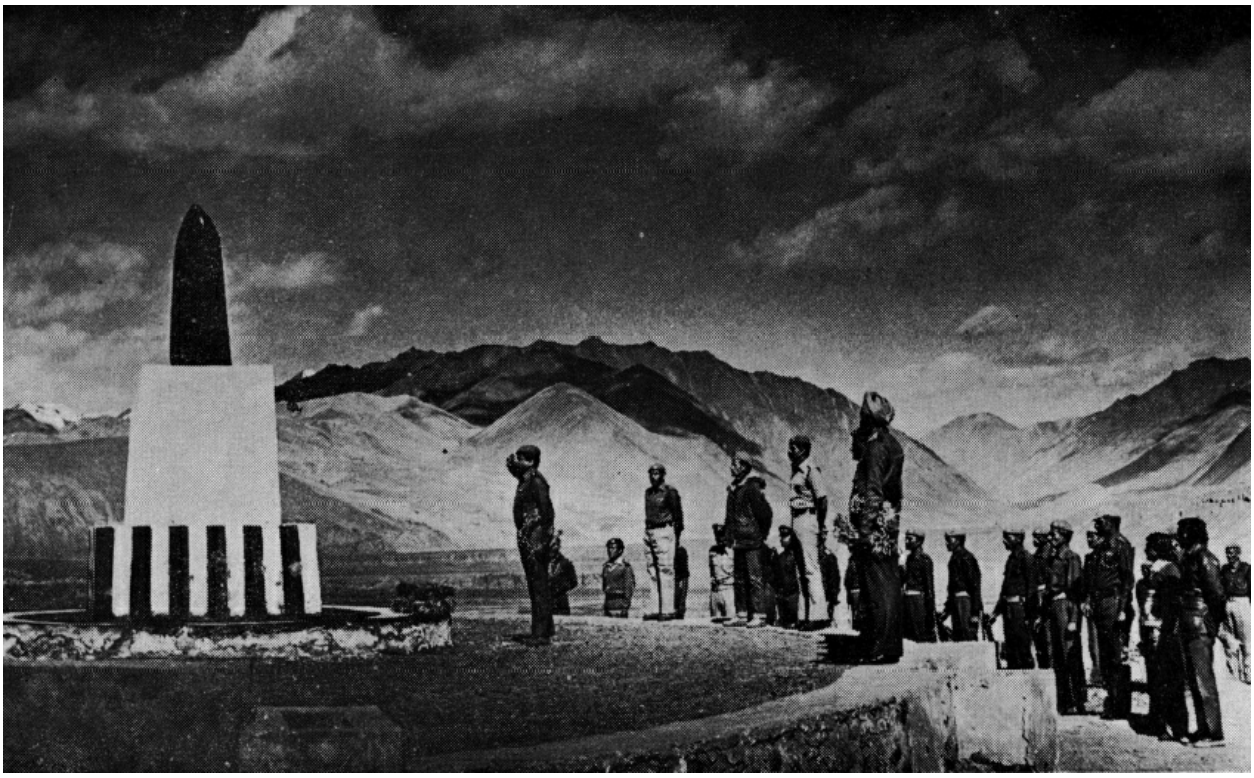
हम जीते हैं देश के लिए

मरते हैं देश के लिए

लेख--टी० जी० एल० अय्यर

21 अक्तूबर पुलिस स्मारक दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दिन 1959 में हाट स्प्रिंग, लद्दाख स्थिति केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के 10 जवानों की एक पोस्ट को चीनियों ने मटियामेट कर दिया था। यह 1962 में भारत पर चीनी आक्रमण का एक पूर्व संकेत था। देश को चीनी हमले की तीन वर्ष पूर्व ही सूचना देने के लिए सबसे पहले केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल ने ही अपना खून बहाया। ये जवान सीमा पर आजादी के सुरक्षा प्रहरी बने तैनात थे, लेकिन उनकी राष्ट्र भक्ति किसी मामले में कम नहीं थी, युद्धक्षेत्र में पीठ दिखाने के अपेक्षा उन्होंने अपने प्राण न्योछावर कर देना कहीं बेहतर समझा । और उन्होंने इस लिए अपने प्राण हंसते हंसते दे दिये ताकी हम लोग जी सकें। वे स्थान जहां वे शहीद हुए, एक स्मारक बन गया। और हर वर्ष इस दिन पूरे देश से अर्द्ध सैनिक बलों तथा अन्य पुलिस बलों की एक प्रतिनिधि टुकड़ी इस तीर्थ स्थल पर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करने जाती है। इन बहादुर वीरों ने बलिदान का एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत कर देश के सामने अनुकरण के लिए एक आदर्श स्थापित किया और यह साबित कर दिया कि आजादी की कीमत सतत-सजगता है। उनके बलिदान की यह गाथा अन्यों के लिए एक अनुकरणीय सबक है।

बाद में इन शहीदों का एक स्मारक नीमच मध्य प्रदेश में भी स्थापित किया गया। नीमच केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की जन्म स्थली है। जहां से महाभारत का एक सूत्र पूरे जीवन धुआँ धुआँ जलने की अपेक्षा, एक ही बार धधक कर गर्व के साथ जल जाना कहीं बेहतर है—का उद्गम होता है। यह सम्राट संजय की कथा है, जो युद्ध भूमि से पराजित हो कर जब लौटा तो उसकी मां विदुला ने ये जलता हुआ वाक्य उससे कहा । इन शब्दों से उद्वेलित हो कर संजय फिर युद्ध भूमि में लौट गया और अब की बार भारी विजय के साथ वापस लौटा। विजयी सम्राट का माता द्वारा भव्य स्वागत किया गया तथा माता ने सम्राट को उसके प्रजा के प्रति कर्त्तव्यों तथा दायित्वों का स्मरण कराया।



हाट स्प्रिंग्ज में वीर शहीदों को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते पुलिस कर्मी ।

नीमच से चल कर यह संदेश देश के दूर दूर स्थित भागों में पहुंचा । इस संदेश ने देश की सुरक्षा में लगे जवानों के जीवन में महत्त्वपूर्ण एवं संवेदनशील तथा वीरता से पूर्ण भावनाओं का संचार किया। इस संदेश से पूरी तरह से प्रभावित केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने अपने कार्य को एक महान लक्ष्य की तरह ले कर उस पर आगे कदम बढ़ाए। बल केवल आगे ही आगे बढ़ रहा है, उसका कोई भी कदम, कभी भी वापस पीछे नहीं लौटा है।

पुलिस बलों तथा अर्द्धसैनिक बलों द्वारा तभी से भारत में 21 अक्तूबर पुलिस स्मारक दिवस के रूप में मनाया जाने लगा है, इस दिन उन सभी वीर शहीदों को श्रद्धांजलियाँ अर्पित की जाती है, जिन्होंने हाट स्प्रिंग्स में अपने प्राण गंवा दिये थे। इस दिन विशेष रूप से बनाए गए स्मारक पर एक परेड का आयोजन किया जाता है, जिसमें सभी रैंकों के अधिकारी व जवान सम्मिलित होते हैं। इस अवसर पर एक वरिष्ठ अधिकारी सभी शहीद जवानों के नाम पढ़ कर सुनाता है। उसके बाद सभी जवान शहीदों के सम्मान में उन्हें अपने शस्त्र उल्टे कर सलामी देते हैं और दो मिनट का मौन रख कर शहीदों को याद करते हैं। शहीदों के सम्मान में बिगुल बजा कर सलामी शुरू की जाती है और बिगुल की चिरपरिचित ध्वनि के साथ ही सलामी सम्पन्न होती है। इसके बाद राष्ट्रीय गान के साथ साथ बैंड पर राष्ट्र भक्ति के गीतों की धुनें भी बजाई जाती हैं; जो न केवल मृतात्माओं की शांति के लिए प्रार्थना का काम ही करती हैं, अपितु जवानों के हृदय में राष्ट्रभक्ति के ज्वार का संचार कर उन्हें किसी भी बलिदान

के लिए तैयार रहने को प्रेरित भी करती हैं। इस मौके पर कोई भाषण नहीं दिया जाता। अधिकारी व जवान शांति से आत्मबलिदान व सेवा का संदेश ग्रहण कर शहीदों के प्रति मन में सम्मान लिए अपने अगले कर्त्तव्यों के लिए स्वयं को तैयार करते हुए वहाँ से धीरे धीरे विदा हो जाते हैं। कभी कभी यह सारी प्रक्रिया एक मशीनी अंदाज में सम्पन्न हो जाती है। दरअसल ये संदेश अपने आपमें बिल्कुल स्पष्ट एवं जगजाहिर है। दरअसल इस मौके पर जवानों को केवल विपरीत स्थितियों में बेहतर दक्षता की याद भर ही दिलाई जाती है। इम्फाल और कोहिमा के युद्ध स्मारकों पर लिखी इबारत बार बार याद आती है—"जब आप घर जाएं, तो उन्हें बताएं—कि तुम्हारे भविष्य के लिए हमने अपना वर्तमान दे दिया।" इस मौके पर देश के किसी भी हिस्से में भाग लेने वाले पुलिस कर्मी राष्ट्रप्रेम व सेवा की एक नई ज्योत अपने अन्दर जलती महसूस करते हैं। उन्हें अपने वीर होने पर गर्व होता है, उन्हें अपनी विरासतों की याद आती है और वे अपने राष्ट्र की सेवा के लिए कोई भी बलिदान कर उठने के लिए तत्पर हो जाते हैं। ये एक ऐसा संदेश है जिसे कुछ लोग अनदेखा कर जाते हैं—जैसे वे जंगल तो देख रहे हों, लेकिन पेड़ों को अनदेखा कर रहे हों।

इस दिन नागरिक भी जान पाते हैं कि पुलिस कर्मी भी नागरिकों के बीच नागरिक ही होते हैं। उनकी निर्दयी और जालिम व्यक्ति की छवि जो उन पर पोत दी गई। है, उसके पीछे उनका एक भावनात्मक रूप भी है। कि वे अपने कर्त्तव्यों को अंजाम देने के लिए किसी भी ऊंचाई पर जा सकते हैं चाहे वे सीमा से बाहर के शत्रुओं से बदला लेने की बात हो या फिर देश के अन्दर सिर। उठाते शत्रुओं का सामना करने की या फिर विघटनकारी, अलगावादी शक्तियों से ही क्यों न निबटना हो। यही नहीं प्राकृतिक आपदाओं, आतंकवाद, नक्सलवाद या राजद्रोह जैसे मामलों में भी वे ही आगे बढ़ कर उनका सामना करने के लिए स्वयं को प्रस्तुत करते हैं। हर जगह पर आज के दिन नागरिक पुलिस कर्मियों के इस रूप को भी जान पाते हैं। इस मौके की महत्ता इसी लिए और भी बढ़ जाती है क्योंकि आज नागरिक भी पुलिस के साथ इस मौके पर सम्मिलित होते हैं।

अंत में यह कहा जा सकता है कि ये दिन पुलिस और नागरिकों के बीच रिश्तों को स्थापित करने के लिए सिमेंट का काम करता है। यदि एक बार नागरिक पुलिस कर्मियों की अत्याचारी छवि की अपेक्षा मानवीय पक्ष को भी समझ लें, खूनी मुठभेड़ों के साथ साथ उन्होंने जो देश सेवा में अपना लहू बहाया है उसे भी देख लें, नागरिकों की आजादी की सुरक्षा तथा अराजक तत्वों के प्रति उसकी कार्यवाइयों से भी परिचित हो लें, तो यह बात दोनों को करीब लाने में कामयाब होगी। यह वह संदेश होना चाहिए, जो ऐसे मौकों पर लोग ग्रहण करें। नागरिक और पुलिस कर्मियों का सहयोग एक युग का सूत्रपात कर सकता है, जो मूल्य हीनता को जड़ से उखाड़ सकता है। ध्यान एक ऐसे समाज पर केंद्रित होना चाहिए जिसे मूल्यबोध हो और जिसका अस्तित्व एक स्वच्छ और उज्ज्वल भविष्य की और संकेत कर रहा हो।

बल के लिए और सुविधाएं

29 नवम्बर, 1988 को महानिदेशक श्री प. ग. हलर्नकर की तरफ से अधिकारियों के नाम जारी पत्र में, महानिदेशक महोदय ने सूचित किया है कि सरकार ने दो और आर्मवर्कशाप स्वीकृत किए हैं जो ग्रुप केन्द्र बनतलाब तथा गांधीनगर में खोले गए हैं। इन नये वर्कशाप से आरमोरर केडर में प्रगति रोध में काफी सुगमता आएगी तथा हथियारों की मरम्मत तथा उनके रखरखाव में सुधार होगा।

साथ ही सरकार ने तीनों बेस अस्पतालों तथा केन्द्रीय हथियार भंडार, रामपुर के लिए एक एक 3.5 के० वी० जेनेरेटर स्वीकृत किए हैं।

रसोइयों एवं जल वाहकों के पी० टी० शूज की मियाद को डेढ़ वर्ष से घटाकर 9 महीने करने के बल के प्रस्ताव को भी सहमति मिल गई है। महानिदेशक महोदय ने यह भी सूचित किया है कि बल सफाई कर्मचारियों को भी यह लाभ देने के लिए सरकार से बातचीत करने का प्रयास कर रहा है।

सरकारी कामकाज में हिन्दी कितनी सरल-कितनी कठिन

लेख—प्रेम चन्द धस्माना

वर्ष 1988, राजभाषा नीति के इतिहास में महत्वपूर्ण रहा है, क्योंकि इस वर्ष राजभाषा अधिनियम 1963 के 25 वर्ष पूरे हुए हैं और इस प्रकार यह वर्ष रजत जयंती के रूप में मनाया गया। राजभाषा अधिनियम 1963 राजभाषा कार्य की दृष्टि में बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है क्योंकि इस अधिनियम के बनने पर ही संविधान की राजभाषा सम्बन्धी व्यवस्था को कानून का रूप प्राप्त हुआ था ।

भारत के संविधान में सबसे अधिक बोली व समझी जाने वाली भाषा हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया गया है। राजभाषा नियम व अधिनियम बन जाने के फलस्वरूप सरकारी कर्मचारी का दायित्व इन नियमों में दी गई व्यवस्थाओं के अनुपालन के प्रति और अधिक बढ़ जाता है। अधिनियम में दी गई व्यवस्थाओं का पालन करना एक कानूनी जरूरत की पूर्ती ही नहीं अपितु एक अनुशासित फोर्स की संविधान के प्रतिनिष्ठा का घोतक भी है।

प्रयोग की दृष्टि से देखें तो हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है जो सरल उपयोगी व कामचलाऊ गुणों से सम्पन्न है। देवनागरी लिपि के समान वैज्ञानिक रूप से परिपूर्ण संसार की कोई दूसरी लिपि नहीं है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि हिन्दी का जैसा वर्ण होगा वैसी ही उसकी ध्वनी होगी अर्थात लेखानुकूल उच्चारण ।

सरकार की नीति भी स्पष्ट है कि पत्राचार में सरल और बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया जाय। सरकारी कार्यालयों में अधिकांश कार्रवाई टिप्पणी लिखकर या पत्रों के आदान-प्रदान द्वारा की जाती है। टिप्पणी लिखते समय हमें यह विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए कि जो कुछ भी हम लिख रहे हैं वह सरल, स्पष्ट और संक्षिप्त हो। जिस भाषा का प्रयोग हम बल के कार्यालयों में करते हैं उसका सम्बन्ध केवल हिन्दी में प्रवीण अधिकारियों व कर्मचारियों से ही नहीं होता, अपितु जो हिन्दी का कम ज्ञान व कार्यालयी ज्ञान रखते हैं उनसे भी इसका सम्बन्ध रहता है। अतः इन सब बातों पर ध्यान रखते हुए हमें ऐसे शब्दों का प्रयोग करना चाहिए जो सरल और प्रचलित हों। हमारे कार्यालयीन प्रयोग में यदि अन्य भारतीय भाषाओं यहाँ तक कि कोई शब्द अंग्रेजी का भी आ जाये जो कि प्रचलित है, तो हिन्दी के प्रचार प्रसार व्यवहार की दृष्टि से हमें खुलकर ऐसे शब्दों का प्रयोग करना चाहिए, क्योंकि जब माध्यम परिर्वतन होता हैं तो स्वाभाविक है कि अन्य भाषाओं के शब्द भी बराबर इस भाषा पर प्रभाव डालेंगे ही और अपनी बात दूसरों तक पहुंचाने में हमें सुविधा मिल जाएगी। हिन्दी भाषियों को भी इससे आसानी होगी और हिन्दी के व्यावहारिक पक्ष को मजबूत करने । के लिए यह बात बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगी। फोर्स में कमांडेंट, बटालियन, कम्पनी, सिगनल इत्यादि अंग्रेजी के शब्द इतने प्रचलित हो गए हैं कि उनके स्थान पर चमूपति, वाहिनी, समवाय, बेतार इत्यादि अनूदित शब्द अपनाएं तो वे व्यावहारिक ही नहीं अपितु भ्रान्ति उत्पन्न कर सकते हैं। कार्यालयों में जो अच्छी हिंदी जानते हैं उन्हें चाहिए कि वे कम हिन्दी जानने वाले कार्मिकों को भी प्रोत्साहित करें।

शुरू-शुरू में सरकारी पत्राचार में इनके द्वारा की गई हिन्दी की वर्तनी, व्याकरण सम्बन्धी भूलें नजरंदाज कर देनी चाहिए। बल में लगभग सभी को हिन्दी का कार्य-साधक ज्ञान प्राप्त है व कई अधिकारी हिन्दी में भी प्रवीण हैं। अतः सुगमता से हिन्दी में टिप्पणी लिखते समय कोई शब्द अंग्रेजी का आ जाता है तो उसको उसी रूप में देवनागरी लिपि में लिखा जा सकता है, परन्तु शब्द के लिए अटकने व हिन्दी शब्द कोष में शब्द ढूंढने से टिप्पणी लिखने की एकाग्रता भंग होती है । धीरे-धीरे स्वयं आपके मन में हिन्दी के शब्द आते जायेंगे और गढ़ते जाएगे। जटिल व बोझिल शब्दों के प्रयोग से जितना बचा जाय उतना अच्छा है क्योंकि अपनी बात दूसरों तक पहुंचने के लिए सिर्फ इतना ही काफी नहीं है कि लिखने वाला खुद समझ सके कि उसने क्या लिखा है, वरन् जरूरी तो यह है कि पढ़ने वाला समझ सके कि लिखने वाला क्या चाहता है। चिन्तन मौलिक हो तो भाषा स्वाभाविक होती है। अंग्रेजी के अटपटे अनुवाद से भी बचना चाहिए, क्योंकि जब हम हिन्दी में सोचते व मनन करते हैं, बातचीत हिन्दी में करते हैं, बैठकों में चर्चा हिन्दी माध्यम से होती है तो क्यों नहीं उसी भाषा में उसे ज्यों का त्यों लिपिबद्ध कर लिया जाये। तभी भाषा में रवानगी, स्वाभाविकता व निखार आयेगा।

सामान्यतः यह धारणा भी घर कर गई है कि हिन्दी में काम करने की जिम्मेदारी वस्तुतः उन मुट्ठी भर कर्मचारियों की है जो राजभाषा नीति को लागू करने के लिए

नियुक्त किए गए है। परिणामस्वरूप अंग्रेजी के पत्र अनुवाद के लिए हिन्दी अनुभाग व हिन्दी अनुवादक को भेज कर निश्चित होने की परम्परा चल पड़ी है। वे उस तथ्य को भुला देते हैं कि मूल पत्राचार हिन्दी में करना अनुभाग शाखाओं की जिम्मेदारी है, इसी प्रकार राजभाषा सम्बन्धी आदेशों का अनुपालन करना भी उन्हीं का दायित्व बनता है। हिन्दी अनुभाग को पत्र का अनुवाद करने के लिए भेज देने से दायित्व के प्रति उदासीनता ही परिलक्षित होती है। वैसे भी अनुवाद में वह स्वाभाविकता नहीं आ सकती जो कि मूल रूप से हिन्दी में लिखने में आयेगी। अनुवाद की भाषा में कृत्रिमता, दुरुहता और अटपटापन बना रहता है। इस प्रकार तो सरकारी कामकाज में हिंदी केवल अनुवाद की भाषा बनकर रह जाएगी। अतः इस प्रवृत्ति से हमें दूर रहना है। परिवर्तन में कठिनाई अवश्य होती है किन्तु यदि निष्ठापूर्वक राजभाषा के प्रति सजग रहें तो हिन्दी में सरकारी कामकाज करना अंग्रेजी की अपेक्षा अधिक सरल होगा और साथ ही साथ गौरव का अनुभव भी करेंगे।

जवानों की कलम से—

पंजाब में हम

—हैडकांस्टेबल राजनाथ पांडेय

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल आज देश में कानून व व्यवस्था बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। समस्या चाहे किसी भी तरह की क्यों न हो, बल के जवानों ने उसे अपने अपूर्व साहस व वीरता से सुलझाया है। देश की एकता एवं अखंडता को खतरा चाहे बाहर से हो या भीतर से, या फिर प्राकृतिक आपदाओं के सामने प्रशासन असहाय हो गया हो, हर जगह, हर समय एक ही बल सेवा के लिए तत्पर दिखाई देता है, और वह है-केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ।

दलगत, जातिगत, भाषागत, क्षेत्रीयता की भावनाओं से दूर रह कर बल ने निष्पक्षता, कर्तव्यपरायणता, ईमानदारी, वफादारी, वीरता तथा साहस के क्षेत्र में नई मिसालें कायम की हैं। यही कारण है कि यह बल देश ही नहीं बल्कि पड़ोसी देश श्रीलंका तक के नागरिकों का चहेता बन बैठा है।

देश के जिस किसी भी हिस्से में जब जब भी किसी आतंकवादी या विघटनकारी ताकतों ने अपना सिर उठाया है, तो उनका सामना सबसे पहले बल के जवानों ने ही किया है। देश के उत्तर पूर्वी क्षेत्रों तथा पंजाब में आतंकवादियों से निबटने में बल की भूमिका को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

मिजोरम, असम, त्रिपुरा, तथा दार्जिलिंग जैसे आशांत इलाकों में शांति स्थापना के बाद आज देश की निगाहें पंजाब पर लगी हैं। यही कारण है कि आज पंजाब स्थित बल

के जवानों का दायित्व काफी बढ़ जाता है। पंजाब में स्थित बल का हर जवान हर पल अपने कर्तव्य का निर्वाह ईमानदारी और मुस्तैदी से करते हुए अपने उत्तरदायित्वों के प्रति सचेत है।

पंजाब में बल के जवानों को स्थानीय पुलिस के साथ सामंजस्य स्थापित कर काम करना पड़ता है, हालांकि कुछ मामलों में बल की अपनी स्वतंत्र भूमिका भी है। पंजाब में बल के जवानों का एकमात्र ध्येय समाज विरोधी तत्वों, आतंकवादियों तथा तथाकथित खालिस्तानी समर्थकों से निबटना है । इस कार्य में बल के जवान विशेष रूप से ध्यान रखते हैं कि निर्दोष व मासूम नगरिकों को किसी तरह की कोई परेशानी न हो। पंजाब के चप्पे-चप्पे पर बल के जवानों के छा जाने के कारण यहाँ हिन्दी का माहौल स्थापित करने में भी मदद मिली है।

पंजाब स्थित बल के जवानों के लिए व्यायाम व मनोरंजन आदि का विशेष ध्यान रखा जाता है। व्यायाम प्रशिक्षण के लिए विशेष व्यवस्था है। मनोरंजन के लिए विभिन्न पत्र पत्रिकाएं, दूरदर्शन, वीडियो आदि निरंतर जवानों को उपलब्ध कराए जाते हैं। कई वाहिनी पुस्तकालयों के अलावा चल पुस्तकालयों की भी व्यवस्था है, जिससे दूरदराज इलाकों में तैनात जवानों को आसानी से पुस्तकें उपलब्ध कराई जा सकें।

पंजाब स्थित बल के जवान सभी राष्ट्रीय पर्व व त्योहार पूरे जोश व उल्लास के साथ मनाते हैं । लुधियाना में 16वीं, 63वी वं 82वीं बटालियन का संगम स्थल हर समय चहकता रहता है। यहां का माहौल एक पूरे ग्रुप केन्द्र सा है। यहां इस वर्ष कृष्ण जन्माष्टमी का त्योहार अत्यधिक हर्षोल्लास व भक्ति भाव के साथ मनाया गया। फगवाड़ा स्थित 78वीं बटालियन के जवान, जिन पर आतंकवादियों द्वारा दो बार राकेट लांचरों द्वारा हमला किया जा चुका है हर समय चुस्त व चौकस रहते हैं । उन्होंने अपने क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण उपलब्धियां भी हासिल की हैं। लुधियाना स्थित बटालियनों की ही तरह यहाँ के जवानों को भी अपने परिवार को अपने पास रखने की अनुमति प्राप्त है।

यही कारण है कि शारीरिक व मानसिक 1 रूप से स्वस्थ जवान कुख्यात आतंकवादियों के अड्डों एवं उनके शरणस्थलों से उन्हें बाहर खदेड़ लाते हैं। फिर चाहे ये शरण स्थल मंड़ जैसे दुर्गम इलाकों में हों, या फिर लुधियाना, अमृतसर, जालंधर या चन्डीगढ़ जैसे शहरों में।

इस के साथ ही बल महानिदेशालय द्वारा भी जवानों के कल्याण कार्यक्रमों इत्यादि का भरपूर ध्यान रखा जाता है, ताकि उनके मनोबल में किसी तरह की गिरावट न आए, यही कारण है कि चाहे, आपरेशन-ब्लू स्टार हो, आपरेशन ब्लैक थंडर हो, कुख्यात आतंकवादियों की धर-पकड़ हो या फिर प्रलंयकारी बाढ़ के बीच राहत कार्य हों, हर जगह अग्रिम पंक्ति में बल के जवान ही दिखाई देते हैं।

ढिल्लन अमरीका में

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के सहायक कमांडेट तथा के० रि० पु० बल की केन्द्रीय

शूटिंग टीम के प्रशिक्षक तथा मैनेजर तोजेंदर सिंह ढिल्लन हाल ही में अमरीका में आयोजित 4 दिवसीय अतंर्राष्ट्रीय शूटिंग प्रशिक्षकों की कानफ्रेंस में हिस्सा ले कर लौटे हैं। अमरीका के कोलोरोड़ो स्प्रिंग्ज स्थित यूनाइटेड स्टेटस ओलंपिक ट्रेनिंग सेंटर में नवम्बर माह के शुरू में आयोजित इस कानफ्रेंस में भाग लेने के लिए श्री ढिल्लन को गृह मंत्रालय ने चुना था । इस कानफ्रेंस में भाग लेने वाले श्री ढिल्लन न केवल अकेले भारतीय अपितु अकेले एशियाई थे, इस कानफ्रेंस में पूरी दुनिया से 201 प्रशिक्षकों ने भाग लिया, जिन में विश्व विख्यात प्रशिक्षक तथा ओलंपिक व विश्व चैंपियन भी शामिल थे। मई, 1988 में अमरीका के ओलंपिक ट्रेनिंग सेंटर में प्रशिक्षकों के लिए विशेष प्रशिक्षण ले कर श्री ढिल्लन को देश का पहला प्रशिक्षित एवं प्रमाणिक प्रशिक्षक होने का गौरव प्राप्त हुआ था। अंतर्राष्ट्रीय शूटिंग प्रशिक्षक संगठन की आजीवन सदस्यता प्राप्त करने का गौरव भी श्री ढिल्लन को प्राप्त है । वे इस संगठन के अकेले एशियाई सदस्य है ।

काव्य धारा—

तीर पराये

कितना और दुखों को रोऊं
कितना उनसे मन बहलाऊं
जीवन एक यंत्रणा भर है
किसको कितने घाव दिखाऊं।

कैसे जीवन दाव लगा दूं
इक-इक पल बन गया जुआरी
रात अभागी कलुषित मन सी
दिन ज्वर पीडित हुए भिखारी।

दिवास्वप्न सी बीती बातें
पतझड़ सा जीवन का उपवन
संशय में दिनकर का याचक
ठुकरा बैठा निशा निमंत्रण
मन आंगन चुग गयी चिरैया

कैसे मन में भाव जगाऊं ?

जब तक स्वप्न सयाने होते
निर्दय भोर जगाने आयी
खिजलाई सासू बन बैठी
उगते दिनकर की तरूणाई।

लेकर सहस्त्र बहाने मेरा
मन कर वैठा अजब ढिठाई
चौकीदार समय सा आया
तब यह बात समझ में आयी
अब बैठा हूं बाट किनारे
सोचू और पछताऊं।

मेरे मन की तड़प न देखी
अपने मन की सुनी कहानी
मैं ठहरा बौराया राही
तुम ठहरी फूलों की रानी ।

पथ के शूल भुला कर मैंने
स्वप्न सुवासित करने चाहे
पतझड़ पहरेदार के रहते
क्यों कर गीत मिलन के गाये
अब कांटों की चुभन की सोचूं
सोच-सोच शर्माऊं ।

मन के आंगन कुटी छवाकर
तन के नेह बिखेरे सारे
सारी उम्र तरसते बीती
कोई न आया मेरे द्वारे ।

मन का दिया जला कर मैंने
कितनी रात जगाये तारे
किसने व्यथा हमारी समझी
किसने समझे गीत हमारे
ज्योति स्तम्भ सा बना समुद्र में
किसको टेर लगाऊं?

जिन अपनों को मीत बनाया
दुख के बन बैठे हरकारे
सागर की गहराई सा मन
ले बन्सी आये मछुमारे।

मन की गठरी बांध चले तो
बटमारों से करली यारी
गठरी कहां छुपाऊं धर दूं
इसमें उम्र गंवा दी सारी
चारों और लूटेरे बैठे
कौन दिशा को जाऊं ?

कोई न मन की पीड़ा समझा
व्यर्थ गंवाया जीवन सारा
छूछे हाथों अब डर कैसा
शेष बचा क्या सब कुछ हारा

तुमको खुशियां सभी मुबारक
मेरा क्या चलता बंजारा
इस विस्तृत दुनिया में जाने
कौन दिशा हो वास हमारा
व्यर्थ हमारा पाती लिखना
निरर्थक मैं क्या अब गाऊं ?

—उमराव सिंह

सहायक कमान्डेन्ट-83 बटालियन के० रि० पु० बल, भुवनेश्वर (उड़ीसा)

रोचक खबरें

6 वर्ष तक जंजीरों में जकड़े रखा

दक्षिण अफ्रीका में एक पिता ने अपने बड़े बेटे को छह मास तक जंजीरों में जकड़ कर झोंपड़ी में बंद रखा।

पुलिस के अनुसार 47 वर्षीय पीटर चिरिकिम्बा को उसके 70 बर्षीय पिता मुनेतनी ने 1982 से जंजीरों में जकड़ रखा है। इस बीच वो कभी नहाया भी नहीं। पुलिस मामले की गम्भीरता से जांच कर रही है।

तीन सौ साल की सजा

बर्मा में एक व्यक्ति को विभिन्न अपराधों के लिए 307 साल की सजा सुनाई गई है। इस व्यक्ति पर एक भी हत्या का मामला नहीं है। इसे चोरी, डकैती, लूटपाट करने तथा लोगों को आत्महत्या के लिए उकसाने के कारण यह सजा दी गई है।

स्थानांतरण की युक्ति

एक युवा पुलिस अधिकारी ने मनीला को वेश्यावृति से मुक्त विश्व का पहला शहर बनाने की ठान ली है।

एक विदेशी संवाद समिति के अनुसार पुलिस स्टेशन के प्रमुख लेफ्टिनेंट कर्नल राबर्ट बारबर्स ने अपना यह लक्ष्य हासिल करने के लिए मनीला के पर्यटक केन्द्र सरमीना में रात्रि क्लबों और शराब खानों पर छापे मारने शुरु कर दिये हैं।

लेफ्टिनेंट कर्नल बारबर्स का कहना है कि मैं इन स्थानों पर छापे मारना तभी बन्द कर सकता हूं जब मुझे इस बारे में आदेश मिले या मुझे इस स्थान से हटा दिया जाये।

शव से सहवास

पाकिस्तान में एक शव के साथ सहवास करने के आरोप में एक सौ कोड़ों और मौत की सजा पाये एक व्यक्ति को इस्लामी अदालत ने रिहा कर दिया।

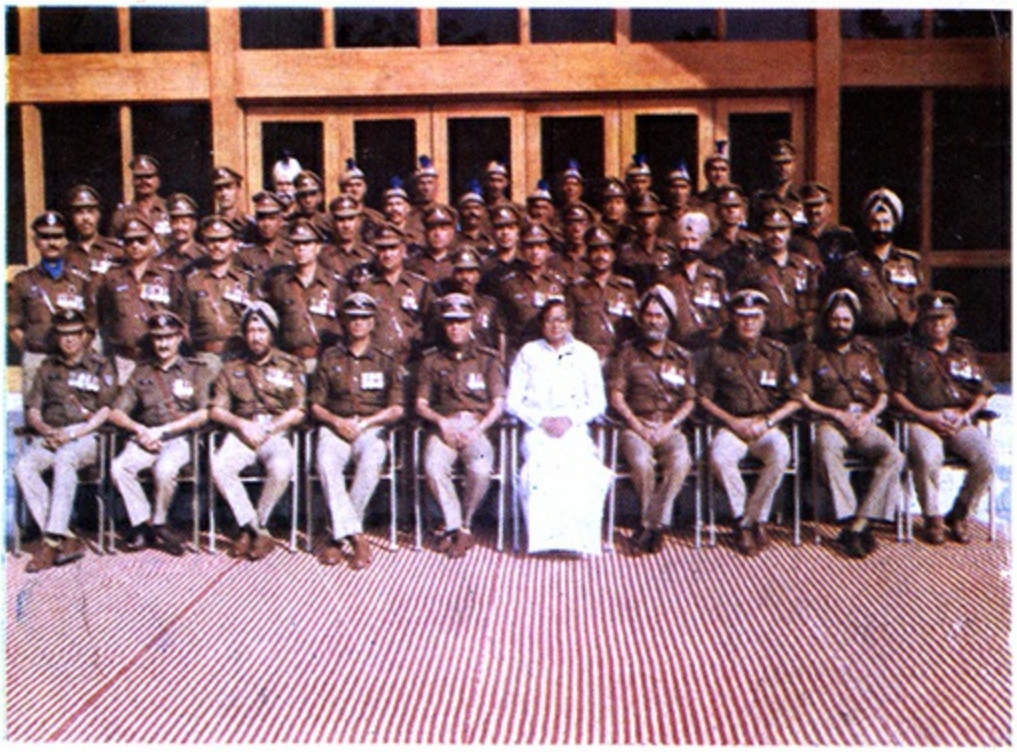
एक विदेशी समाचार एजेन्सी के अनुसार पुलिस ने मुहम्मद नसीर पर आरोप लगाया था कि उसने एक 18 वर्षीय लड़की को दफनाये जाने के कुछ देर बाद ही कब्र खोद कर उसका शव निकाला और उससे सहवास किया।

—पुलिस मानीटर से साभार


CHIEF GUEST

विज्ञान भवन नई दिल्ली में आयोजित बल के पदक वितरण समारोह में बोलते हुए आन्तरिक सुरक्षा राज्य मन्त्री श्री पी. चिदम्बरम् ।

रजि० नं० 47167/87



उत्कृष्ट सेवाओं के लिए पुलिस पदकों से सम्मानित कार्मिक गृह राज्य मन्त्री श्री पी. चिदम्बरम् तथा महानिदेशक महोदय के साथ ।

मुद्रक—सी० आर० पी० एफ० प्रेस, झरोदा कलां, नई दिल्ली-110072 मुद्रक तथा प्रकाशक—महानिदेशक, के० रि० पु० बल, ब्लाक 1
सी. जी. ओ. कांप्लेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली-11003 की ओर से एच० एस० सेठी ।